CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1997

CRPF SAMACHAR

CRPF Newsletter & Magazine

1997

Contents

28 February 1997 Vol. 10 No. 1

31 March 1997 Vol. 10 No. 2

31 May 1997 Vol. 10 No. 3

30 June 1997 Vol. 10 No. 4

31 August 1997 Vol. 10 No. 5

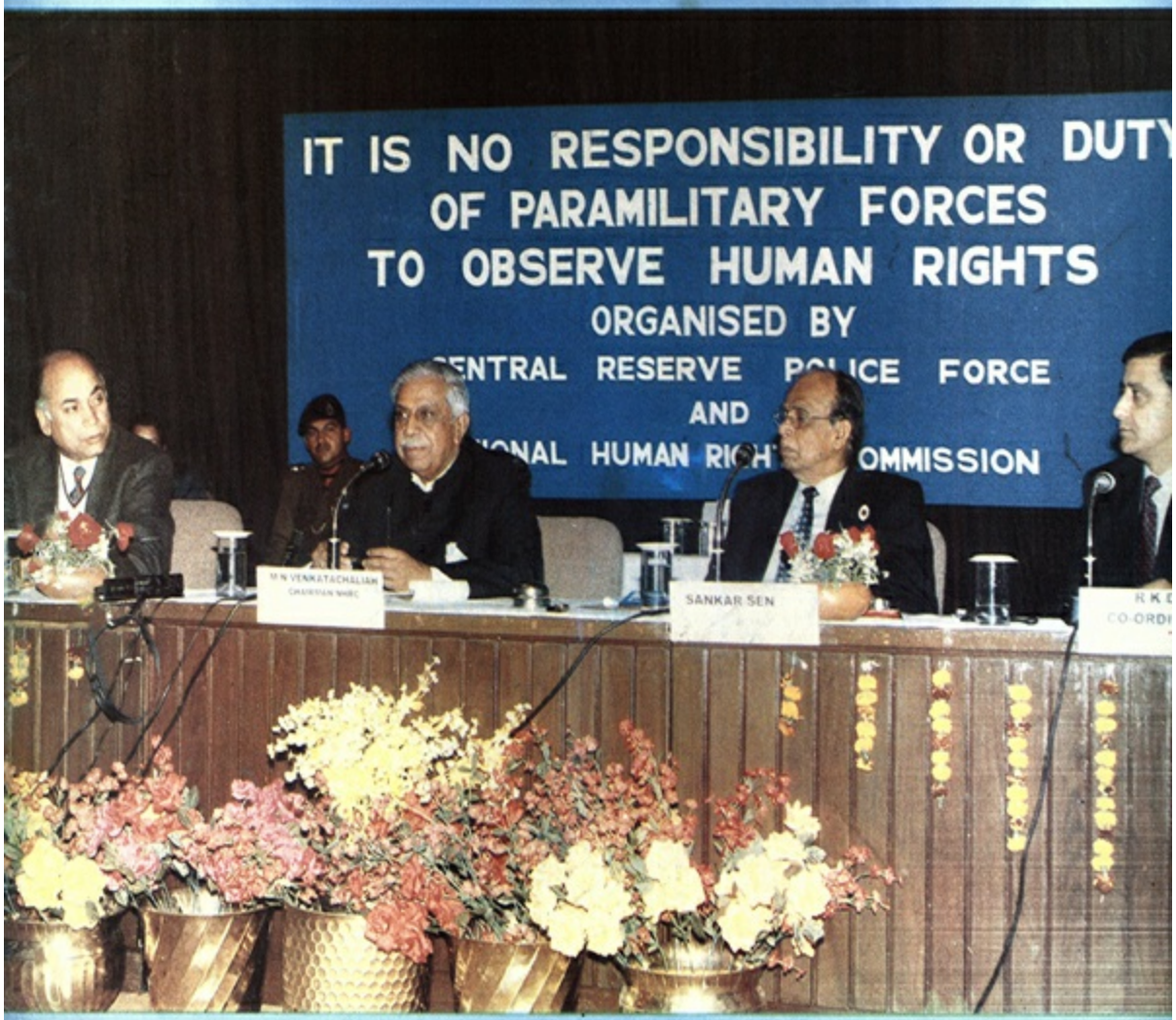
30 September 1997 Vol. 10 No. 6

30 November 1997 Vol. 11 No. 7

31 December 1997 Vol. 11 No. 8

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 10 अंक - 1 28 फरवरी, 1997 9 फाल्गुन, शक 1918



मानवाधिकारों पर आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता के अवसर पर बोलते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति एम.एन. वैंकटचलैय्या



अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर रही के.रि.पु. बल टीम बिहार के मुख्य मंत्री श्री लालू प्रसाद यादव के साथ

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-10 अंक-1
28 फरवरी, 1997
9 फाल्गुन, शक 1918

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो सेक्शन
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां,
नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस
1728 कूचा दखनीराय,
दरियागंज, नई दिल्ली-2
दूरभाष : 3262279

विषय सूची



सम्पादकीय

के.रि.पु. बल के 36 कार्मिकों को राष्ट्रपति के पुलिस पदक

४५वीं अखिल भारतीय पुलिस खेलकूद प्रतियोगिता

के.रि.पु. बल ने संजय ट्राफी जीती

सुरक्षा बलों को मानव अधिकारों का सम्मान करना चाहिए

बेस असपताल -२ द्वारा रक्तदान

आश्रिताओं को अनुदान

गणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकड़ियां

एड्स पर गोष्ठी

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

महानिदेशक की ओर से



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए *1996* का वर्ष चुनौतियों व अवसरों से भरा होने के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है।

वर्ष के दौरान जम्मू व कश्मीर में प्रजातांत्रिक प्रक्रिया बहाल करने में बल ने मुख्य भूमिका निभायी। त्रुटिहीन आवाजाही, क्रमबद्ध तैनाती तथा सभी केन्द्रीय बलों का कारगर प्रयोग तथा जम्मू व कश्मीर में संसदीय व विधान सभा चुनावों के लिए बाहर से भेजे गए पोलिंग कार्मिकों की आवाजाही, सुरक्षा तथा लॉजिस्टिक के लिए के.रि.पु. बल द्वारा समन्वय कार्य किया गया। आम चुनाव - *1996* के दौरान मतदान स्वतंत्र व निष्पक्ष सुनिश्चित करने में बल ने पूरी जिम्मेदारी निभाई। पूर्वोत्तर व आंध्रप्रदेश में विघटनकारी शक्तियों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने में बल ने सक्रिय भूमिका निभाई।

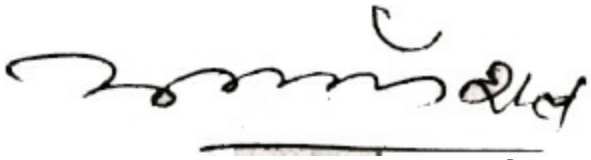
द्रुत कार्य बल ने दिल्ली में डेंगू के आतंक को नियंत्रित करने तथा आंध्रप्रदेश में तूफान से पीड़ित जनता को तत्काल राहत पहुंचाने व बचाव कार्य करने में प्रशंसनीय भूमिका निभाई। सरकार द्वारा चलाए गए "पोलियो-उन्मूलन कार्यक्रम" विशेषकर दूर-दराज के क्षेत्रों में के.रि.पु. बल द्वारा दिए गए योगदान को बहुत ही सराहा गया। उड़ीसा के बारबेरा वन में वनस्पति व जीव-जन्तुओं की सुरक्षा व रख-रखाव में बल के प्रयासों से अच्छे परिणाम मिले हैं क्योंकि इस क्षेत्र में वातावरण का क्षरण अब बिल्कुल बंद हो गया है।

आंतरिक सुरक्षा की उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए फोर्स की बढ़ती हुई मांग के कारण बल की तैनाती व आवाजाही चरम बिन्दु पर पहुंच चुकी है। बल कार्मिकों को आराम, थकावट दूर करने, तथा प्रशिक्षण जो कि ऑपरेशनल क्षमता बनाए रखने के लिए बहुत जरूरी है आदि के लिए समय नहीं मिल पा रहा है। यह लगातार हमारी चिन्ता का विषय बना हुआ है तथा सरकार भी प्राथमिकता से इस पर ध्यान दे रही है।

बल कार्मिकों तथा उनके परिवार के रहन-सहन में सुधार लाने के लिए प्रयास जारी हैं। कुछ उपाय जैसे कि 'पारदर्शी स्थानान्तरण-नीति' बनाने तथा शीघ्र पदोन्नति

देने पर जोर दिया जा रहा है। अराजपत्रित कार्मिकों के लिए रिहायशी मकानों में पर्याप्त वृद्धि करने के प्रस्ताव पर गम्भीरता पूर्वक विचार हो रहा है। बल कार्मिकों के बच्चों को उत्तम शिक्षा देने के लिए एक नई शिक्षा-नीति बनाई जा रही है।

मैं आप सभी की सफलता के लिए मंगल कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियों से निपटने के लिए के.रि.पु. बल में पूरे राष्ट्र ने जो विश्वास संजोया है आप हर कीमत पर उसे बनाए रखेंगे और राष्ट्र के शान्ति रक्षक के रूप में अपनी पहचान अक्षुण रखेंगे।



(मुकुन्द कौशल)

के.रि.पु. बल के 36 कार्मिकों को राष्ट्रपति के पुलिस पदक

गणतंत्र दिवस 1997 के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के 36 कार्मिकों को राष्ट्रपति के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है। इनमें से पांच कार्मिकों को विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक तथा 31 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं का पुलिस पदक प्रदान किया गया है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक हैं :-

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

महानिरीक्षक डी.पी. सिन्हा (उत्तरी क्षेत्र दिल्ली), महानिरीक्षक ए.आर.पंवार (परिचालन मणिपुर एवं नागालैंड), उपमहानिरीक्षक डी.के. सूरी (हैदराबाद), अपर उप महानिरीक्षक आर.सी. पुरी (ग्रुप केंद्र, नई दिल्ली), तथा अपर उप महानिरीक्षक आर.के. शर्मा (ग्रुप केंद्र बनतालाब)।

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

अपर उप महानिरीक्षक मोहिन्दर सिंह (उ.पू. क्षेत्र शिलांग), सहायक निदेशक डी.संपत (पु.म.नि. कार्यालय हैदराबाद), सहायक निदेशक महेंद्र कपूर (आर.ए.एफ. मुख्यालय दिल्ली), सहायक निदेशक (प्रशासन/लेखा) एस.एस. नैय्यर (महानिदेशालय), कमान्डेट रमेश चन्द्र (पु.उ.म.नि. नई दिल्ली कार्यालय), कमान्डेट/स.निदे (लेखा) बी.डी.एस. चौहान (उ.प. जोन चंडीगढ़), कमान्डेट जे.एस. गिल (123

बटा.), कमान्डेंट जोगेन्द्र सिंह (महानिदेशालय), द्वितीय कमान अधिकारी/ सं.स.निदेशक डी.आर. यादव (महानिदेशालय), उप कमांडेट जे.पी. लखेरा (ग्रुप केंद्र जालंधर), उप कमान्डेंट एस.पी. पोखरियाल (8 बटालियन), उप कमान्डेंट एस.पी. सिंह (5 सिगनल बटालियन), सहायक कमान्डेट एम.जैड.ए. खान (101 बटालियन), मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.पी. के. कार (भुवनेश्वर), मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. श्री हर्ष माझी (हैदराबाद), अनुभाग अधिकारी एम.आर. यादव (महानिदेशालय), निरीक्षक सोमदत्त (107 बटा. आर.ए.एफ.), निरीक्षक (तकनिकी) बी.एस. राणा (सिगनल ग्रुप केंद्र रांची), निरीक्षक बी.आर. सिंह (ग्रुप केंद्र लखनऊ), निरीक्षक रमेश चंद (65 बटालियन), निरीक्षक (एम) आर.वी. पाणीकर (महानिदेशालय), उपनिरीक्षक सी.पी. एंथोनी (60 बटा.), उपनिरीक्षक भोपाल सिंह नेगी (36 बटा.), उपनिरीक्षक तारा सिंह बिष्ट (9 बटा.), हैड कांस्टेबल (फिटर) डी.एम. पाटिल (महानिदेशालय), हैड कांस्टेबल मोहम्मद बशीर (106 बटा. आर.ए.एफ.), हैड कांस्टेबल पी. नारायणन नायर (ग्रुप केंद्र हैदराबाद), हैड कांस्टेबल पी.टी.योहनन (महानिदेशालय), नायक पी.एन. तुलसीधरन (4 बटालियन), नायक जे.एच. डूंग डूंग (2 बटा.) और सिपाही मोहर सिंह (67 बटा.)।

45वीं अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद प्रतियोगिता

के.रि.पु. बल उप विजेता

बिहार पुलिस के तत्वाधान में 14 से 17 फरवरी, 1997 तक पटना में हुई 45वीं अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद प्रतियोगिता में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम दूसरे स्थान पर रही। पंजाब पुलिस मात्र 3 अंकों के अंतर से विजेता घोषित की गयी।

प्रतियोगिता का उद्घाटन बिहार के राज्यपाल ने किया। प्रतियोगिता में विभिन्न राज्यों तथा केंद्रीय पुलिस बलों की टीमों ने भाग लिया।

पूरी प्रतियोगिता के दौरान, के.रि.पु. बल, पंजाब पुलिस तथा सी.सु.बल के बीच कड़ा मुकाबला रहा। बल के धावकों ने प्रतियोगिता में कुल छ: स्वर्ण, चार रजत तथा सात कांस्य पदक जीते जबकि बल की महिला टीम ने दो स्वर्ण, दो रजत तथा एक कांस्य पदक जीता।

इंस्पेक्टर प्रेम जीत सिंह ने 200 मीटर तथा 400 मीटर दौड़ में दो स्वर्ण पदक, इंस्पेक्टर प्रभजोत सिंह ने पोल वाल्ट में एक स्वर्ण तथा सब इंस्पेक्टर रूड़ी वर्गीज ने 100 मीटर में एक स्वर्ण पदक जीता। बाकी के दो स्वर्ण पदक बल की टीम ने रिले दौडों में जीते। महिला वर्ग में नायक मुक्ति राय ने 800 मीटर तथा 1500 मीटर मुकाबलों में दो स्वर्ण पदक जीते।

बल की महिला टीम भी महिला वर्ग में दूसरे स्थान पर रही।



प्रतियोगिता के समापन पर बल के अधिकारियों के परिचय प्राप्त करते हुए बिहार के मुख्य मंत्री श्री लालू प्रसाद यादव



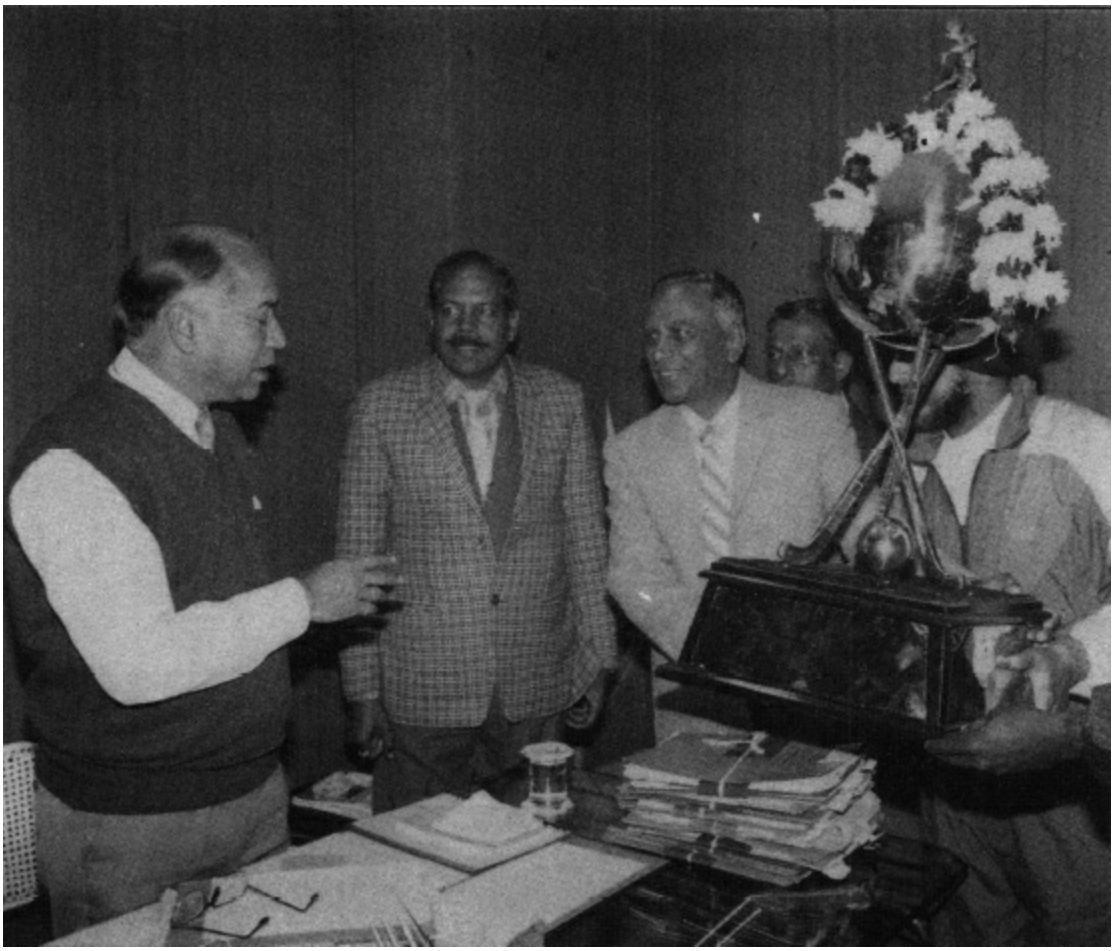
४०० मीटर दौड़ के अंतिम क्षणों में परमजीत सिंह

के.रि.पु. बल ने संजय हाकी ट्राफी जीती

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 3 जनवरी '97 को शिवाजी स्टेडियम नई दिल्ली में खेले गए संजय हाकी टूर्नामेंट के रोमांचक फाइनल मुकाबले में एयर इंडिया एकेडमी को 2-1 से पराजित कर ट्राफी जीत ली।

हालांकि एयर इंडिया एकेडमी ने पहले हाफ के शुरू में ही के.रि.पु. बल पर एक गोल दाग कर अपना दबाव बना दिया था। लेकिन के.रि.पु. बल के लूगोन जोसफ ने जल्दी ही एक पेनल्टी कार्नर को गोल में बदलकर के.रि.पु. बल को एकेडमी के बराबर ला दिया। इसके बाद दोनों ही टीमें अपनी बढ़त बनाने के लिए लगातार कोशिश में लगी रही। लेकिन इस कोशिश को सफलता में बदला के.रि.पु. बल के विन्सेंट हेमराम ने, जिन्होंने खेल के दूसरे हाफ में के.रि.पु. बल के लिए निर्णायक गोल दागा।

24 दिसंबर, 96 से शुरू हुए इस टूर्नामेंट में देश की चोटी की 20 हाकी टीमों ने भाग लिया। भाग लेने वाली टीमों में सीमा सुरक्षा बल, पंजाब राज्य विद्युत बोर्ड, जे.सी.टी. फगवाड़ा, रेल कोच फैक्टरी कपूरथला तथा उत्तर रेलवे जैसी चोटी की टीमें शामिल थीं।



के.रि.पु. बल टीम द्वारा जीती गयी संजय हाकी ट्राफी का अवलोकन करते हुए महानिदेशक

सेमी-फाइनल मुकाबलों में के.रि.पु. बल तथा एयर इंडिया एकेडमी क्रमश: सी.सु. बल तथा उत्तर रेलवे को सडन डैथ के जरिये पराजित कर फाइनल में पहुंचे थे।

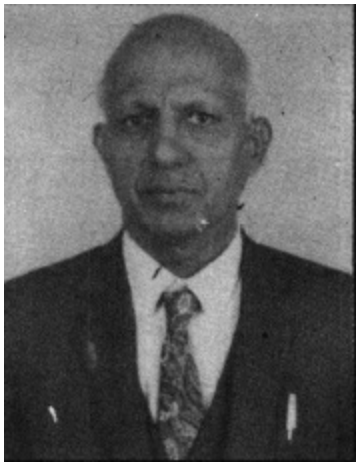
189 कार्मिकों को महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल ने 57वें के.रि.पु. बल दिवस के अवसर पर बल के 189 अधिकारियों व अन्य कार्मिकों को विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपलब्धियों के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया है।

नैय्यर सेवानिवृत्त

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सहायक निदेशक (प्रशासन एवं लेखा) श्री एस.एस. नैय्यर अपने 40 साल के शानदार सेवाकाल के बाद 28 फरवरी, 97 को

सेवानिवृत्ते हुए। श्री नैय्यर 28 माच, 1957 को बल के पारेवार में शामेल हुए थे। अपने कैरियर की शुरूआत एक कनिष्ठ श्रेणी लिपिक से शुरू करने वाले श्री नैय्यर अपने काडर के सर्वोच्च पद सहायक निदेशक से सेवानिवृत्त हुए।



सुरक्षा बलों को मानव अधिकारों का सम्मान करना चाहिए

-वैंकटचलैय्या



प्रतियोगिता के अवसर पर न्यायमूर्ति श्री एम.एन. वैंकटचलैय्या की अगवानी करते हुए महानिदेशक

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री एम.एन. वैंकटचलैय्या ने अर्द्ध सैनिक पुलिस बलों का आह्वान किया है कि वे कानून व्यवस्था की स्थितियों से निबटते समय कानून की सत्ता बनाए रखें तथा मानव अधिकारों का सम्मान करें।

श्री वैकटचलैय्या राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के तत्वाधान में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा 21 जनवरी '97 को नई दिल्ली स्कोप काम्पलैक्स में आयोजित-"मानव अधिकारों का पालन करना अर्द्ध सैनिक बलों की ना तो जिम्मेदारी है, ना उनका कर्त्तव्य"-विषय की वाद-विवाद प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। प्रतियोगिता का आयोजन केंद्रीय अर्द्ध सैनिक बलों के कार्मिकों के लिए किया गया था।

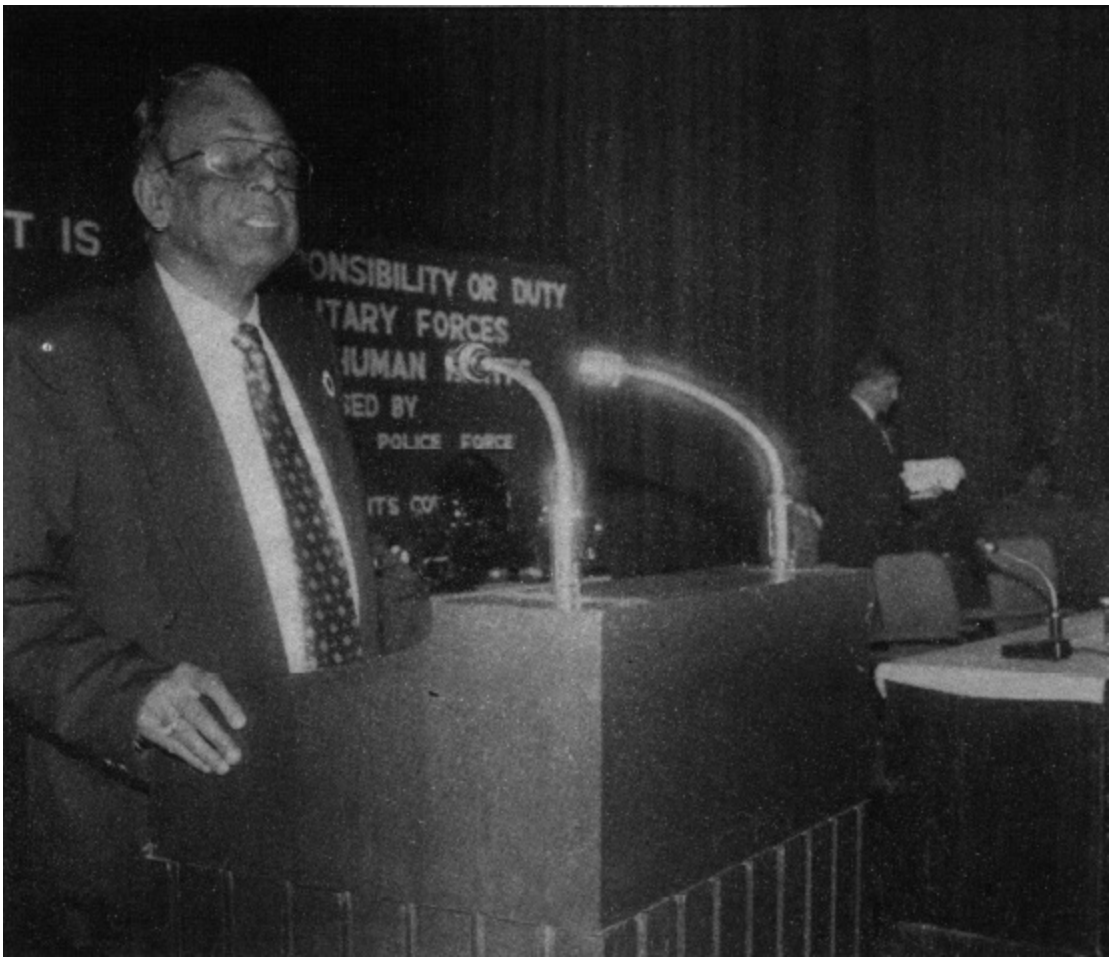
श्री वैंकटचलैय्या ने कहा कि प्रत्येक मानव को सम्मान तथा गरिमा के साथ जीने का अधिकार प्राप्त है, तथा उसके इस अधिकार का सम्मान होना चाहिए। उन्होंने कहा कि अन्यायपूर्ण तरीकों से न्याय नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि हमारे सुरक्षा बलों के पास फूलों की रक्षा के लिए लगी बाड़ का सा कर्तव्य है, मगर यह बाड़ अपने कांटों से किसी फूल को मार नहीं सकती। उन्होंने कहा कि जनता के देश के प्रति

विश्वास को रक्षा का दायित्व इन बलों के पास है, और उन्हें इस विश्वास को रक्षा करनी है।

उन्होंने प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए। प्रतियोगिता की ट्राफी आसाम रायफल ने जीती, जबकि हिंदी और अंग्रेजी के दो सत्रों में बटी इस प्रतियोगिता के हिंदी वर्ग में प्रथम पुरस्कार केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के श्रीकांत किशोर को, द्वितीय पुरस्कार सीमा सुरक्षा बल के जनार्दन यादव को तथा आसाम रायफल के सी. बनथियाल को तृतीय पुरस्कार दिया गया। अंग्रेजी सत्र के लिए प्रथम पुरस्कार आसाम रायफल के ए.एम. मदान को, द्वितीय पुरस्कार राष्ट्रीय सुरक्षा गारद के मेजर जोसफ पारेकाल को तथा तीसरा पुरस्कार केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की विमला मेहरा को दिया गया।

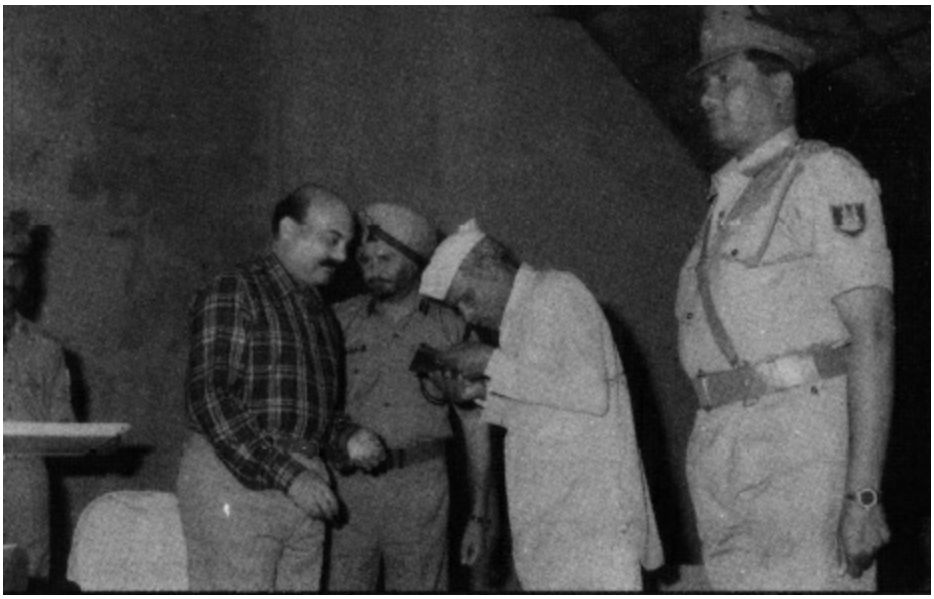
राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के महानिदेशक (जांच) श्री शंकर सेन ने इस मौके पर बोलते हुए कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं से अर्द्ध सैनिक बलों में मानवाधिकारों के प्रति और अधिक जागरूकता पैदा करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि निम्न रैंकों को अभी मानवाधिकारों के प्रति और संवेदनशील बनाए जाने तथा मानवाधिकारों से जुड़ी एक पारदर्शी संस्कृति को विकसित करने की जरूरत है।

अंत में मुख्य अतिथि के प्रति आभार व्यक्त करते हुए बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल ने कहा कि अर्द्ध सैनिक बलों के कार्मिकों को आंतरिक सुरक्षा के अपने कार्यों को अंजाम देते समय यह बात याद रखनी चाहिए कि उनका सामना अपने ही देश के नागरिकों के साथ है। उन्होंने कहा कि गलत तरीकों से कभी भी अच्छे नतीजे प्राप्त नहीं किए जा सकते तथा तरीकों का यह चयन उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि हमारा लक्ष्य ।



प्रतियोगिता के अंत में बोलते हुए राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के महानिदेशक श्री शंकर सेन

आश्रिताओं को अनुदान



कां. रामेश्वर कुरवाडे के पिता को अनुग्रह राशि भेंट करते श्री शालीग्राम

23बटालियन के कांस्टेबल रामेश्वर कुरवाडे के पिता श्री उत्तम भगवान कुरवाडे को 14 फरवरी, 1997 को ग्रुप केंद्र नागपुर में आयोजित एक सादे समारोह में 2 लाख रूपये की अनुग्रह राशि का चैक प्रदान किया गया। उन्हें यह चैक उप महानिरीक्षक जे.आर. शालीग्राम ने प्रदान किया।

कोकराझार, असम में तैनात 23 बटालियन का कांस्टेबल रामेश्वर कुरवाडे 21 फरवरी, 1996 को आतंकवादियों के एक प्राणघातक हमले में शहीद हो गया था।

इस अवसर पर दिवंगत जवान को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री शालीग्राम ने कहा कि शहीदों का बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता। कृतज्ञ राष्ट्र उनके बलिदान को हमेशा याद करता रहेगा।

इस अवसर पर ग्रुप केंद्र नागपुर के अपर महानिरीक्षक श्री गुरदीप सिंह तिवाना ने शहीद कार्मिक के आश्रितों को आश्वासन दिया कि के.रि.पु. बल उनकी हर संभव सहायता के लिए सदैव तत्पर रहेगा।

बेस अस्पताल-2 द्वारा रक्तदान



रक्त दान करती आर.ए.एफ. की एक महिला कर्मी

बेस अस्पताल-2 हैदराबाद ने 23 फरवरी, '97 को एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस मौके पर बल के 117 कार्मिकों ने रक्तदान किया। जिनमें 14 अधिकारी तथा सात महिलाएं भी शामिल थीं। के.रि.पु. बल के विशेष महानिदेशक श्री डी.आर. कार्तिकेयन ने इस रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। श्री कार्तिकेयन ने इस अवसर पर बेस अस्पताल में एक अल्ट्रा सोनोग्राफी सिस्टम का भी विधिवत उद्घाटन किया।

नीदरलैंड से आयात की गयी यह अल्ट्रा सोनोग्राफी प्रणाली हैदराबाद में बहुत ही कम अस्पतालों में उपलब्ध है। 35 लाख रूपये की कीमत वाली इस प्रणाली की स्थापना से बेस अस्पताल में मरीजों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं मिल पाएंगी।

आर.पी. तिवारी सेवानिवृत्त

श्री आर.पी. तिवारी, उप महानिरीक्षक नीमच, अपनी 34 वर्षों की गौरवपूर्ण सेवा के पश्चात् 28 फरवरी, '97 को बल से सेवानिवृत्त हुए। श्री तिवारी ने 23 मार्च, 1996 को उप महानिरीक्षक नीमच का पदभार ग्रहण किया था।



1963 में श्री तिवारी ने भारतीय सेना में ई.सी.ओ. के रूप में प्रवेश लिया तथा 30 जून, 1968 को वह के.रि.पु. बल मे राजपत्रित अधिकारी के रूप में शामिल हुये। श्री तिवारी को 1996 में सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक तथा 1995 में विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक प्रदान किया गया। 1989 में उन्हें महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क प्रदान की गयी।

जोखिम निधि लाभ

केंद्रीय जोखिम निधि से माह जनवरी, '97 में मृत्यु के 73 मामलों में कुल 50,60,500 रूपये देने स्वीकृत किए गए। इसी प्रकार अक्षमता के पांच मामलों में कुल 61,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि "बी" स्पेशल कल्याण निधि से भी इसके 13 सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 4,55,000 रूपये देने स्वीकृत किए गए।

आश्रितों को अनुदान



उप महानिरीक्षक द्वारा वीरगति प्राप्त बल के कार्मिकों की आश्रिताओं को अनुग्रह राशि के चैक भेंट

10 जनवरी, '97 को ग्रुप केंद्र जालंधर में आयोजित एक सादे समारोह में 23 बटालियन के सिपाही ड्राईवर जसबीर सिंह तथा 63 बटालियन के लांस नायक ड्राईवर हरदयाल सिंह की आश्रिताओं को अनुग्रह राशि के ड्राफ्ट भेंट किए गए। उन्हें ये ड्राफ्ट जालंधर रेज के उप महानिरीक्षक श्री पी.पी.एस. सिद्धू ने प्रदान किये।

सिपाही ड्राईवर जसबीर सिंह तथा लांस नायक ड्राईवर हरदयाल सिंह दो अलग अलग घटनाओं में आतंकवादियों द्वारा किए गए हमले में वीरगति को प्राप्त हुए थे।

कोकराझार, असम में तैनात 23 बटालियन का कांस्टेबल ड्राईवर 21 फरवरी, '96 को आतंकवादियों द्वारा किए गए एक हमले में शहीद हो गया। 2 लाख रूपये की अनुग्रह राशि का ड्राफ्ट उसकी आश्रिता दलजीत कौर ने ग्रहण किया।

63 बटालियन के लांस नायक ड्राईवर हरदयाल सिंह 15 जून, '96 को जम्मू कश्मीर विधान सभा चुनावों की ड्यूटी के दौरान डोडा जिले में आतंकवादियों द्वारा दागे गए राकेट लांचर से जख्मी हो कर शहीद हो गए। दो लाख रूपये की अनुग्रह

राशि तथा एक लाख रूपये की बीमा राशि का ड्राफ्ट हरदयाल सिंह की आश्रिता जसविंदर कौर ने ग्रहण किया।

आंतरिक सुरक्षा अकादमी के नए निदेशक श्री के.एम. माथुर

श्री के.एम. माथुर को महानिरीक्षक पद पर पदोन्नति के साथ आंतरिक सुरक्षा अकादमी माउंट आबू का निदेशक नियुक्त किया गया है। श्री माथुर इस नियुक्ति से पूर्व उप महानिरीक्षक अजमेर पद पर कार्यरत थे।

आर.ए.एफ. द्वारा सहायता कार्य

तमिलनाडू के मालापुरम जिले के पेरीतालमन्ना थाने के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में 24, दिसंबर, '86 को हुए भारी स्खलन के कारण तीन बच्चे भारी मलबे में दब गये। सूचना मिलने पर 105 आर.ए.एफ. बटालियन के जवान तत्काल घटना स्थल पर पहुंच गये तथा उन्होंने तत्काल मलबे की सफायी कर तीनों लाशों को बाहर निकाल लिया। आर.ए.एफ. की तुरंत एवं चुस्त कार्रवाई की जिला प्रशासन तथा नागरिकों ने भरपूर प्रशंसा की।

कालीन बुनाई केंद्र

भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय ने 101 आर.ए.एफ. बटालियन स्थल पर एक कालीन बुनायी केंद्र की स्थापना की है। किसी अर्द्ध सैनिक बल में स्थापित होने वाला यह पहला कालीन बुनायी केंद्र है। युनिट में कार्यरत बल के कार्मिकों के परिवारों को कालीन बुनायी का प्रशिक्षण देने के लिए इस केंद्र में भर्ती किया गया है तथा प्रशिक्षण काल के दौरान उन्हें 200 रूपये मासिक भत्ता भी दिया जाएगा। प्रशिक्षण के लिए कच्चे माल; प्रशिक्षण उपकरणों की आपूर्ति के साथ साथ प्रशिक्षकों तथा निरीक्षकों की नियुक्ति भी वस्त्र मंत्रालय ने की है। यह सभी सुविधाएं मंत्रालय द्वारा निशुल्क उपलब्ध करायी गयी हैं।

गणतंत्र दिवस परेड में बल की टुकड़ियां



राजपथ से गुजरता बल का बैंड

इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड में देश के शांति प्रहरी - केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का प्रतिनिधित्व इसके तीन दस्तों ने किया। इनमें के.रि.पु. बल का महिला दस्ता, के.रि.पु. बल का पुरूष दस्ता तथा ब्रास बैंड शामिल थे।

के.रि.पु. बल के पहले महिला दस्ते में बल की 144 महिलाकर्मी शामिल थीं, जिसका नेतृत्व 88 (महिला) बटालियन की डिप्टी कमान्डेन्ट श्रीमती अनीता सी. शर्मा तीन सब इंस्पेक्टरों के साथ कर रही थी। श्रीमती अनीता सी. शर्मा 1987 में बल के परिवार में शामिल होने वाले पहले महिला अधिकारियों के बैच से हैं। इस टुकड़ी के लिए लड़कियों का चुनाव पूरे देश में फैली टुकड़ियों में से किया गया।

बल के महिला दस्ते के पीछे बैंड दस्ते में इंस्पेक्टर पुरूषोत्तम राम के नेतृत्व में 105 बैंड वादक थे। श्री पुरूषोत्तम राम गणतंत्र दिवस परेड में भाग लेने की अपनी रजत जयंती पूर्ण कर चुके हैं। के.रि.पु. बल बैंड का गठन 1961 में किया गया था।

के.रि.पु. बल के तीसरे दस्ते में डिप्टी कमान्डेन्ट राजेन्द्र सिंह चौहान के नेतृत्व में तीन उपनिरीक्षकों तथा 144 अन्य रैंकों के जवान शामिल थे। इस दस्ते में शामिल जवानों का औसत कद छ: फुट था।

के.रि.पु. बल टुकड़ी के सभी सदस्य अंगोला कमीजों, खाकी पैंटों, सफेद चमड़े की बेल्ट तथा गहरे नीले रंग की पगड़ियों से सजे थे।

के.रि.पु. बल की टुकड़िया सलामी मंच के आगे से के.रि.पु. बल के कथानक गीत "सेवा भक्ति का यह प्रतीक सी.आर.पी.एफ. कहाता है" धुन पर मार्च करती हुयी गुजरी। परेड में शामिल परेड कमांडरों के हाथों में चमचमाती हुयी तलवारें थीं।

जबाके बाकी टुकड़ी के सदस्य अपने अपने हाथों में एस.एल.आर. थामे हुए थे।

माह जनवरी, 1997 में बल के मृत कार्मिक

के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक माह जनवरी, '97 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार परिवार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

स.उ.नि. (म.) श्रीमती कुलदीप कौर (ग्रुप केंद्र-1 अजमेर), है.कां. इंद्र सिंह (125 बटा.), सं.कमांडेंट ज्ञान प्रकाश (120 बटा.), कां./टेलर रामदेव सिंह (ग्रुप केंद्र-1 अजमेर), कां. चांदीराम (9 बटा.), कुक काशी नाथ देव (ग्रुप केंद्र मोकामाघाट), कां. देवेंद्र सिंह (11 बटा.); नायक सूरजपाल (45 बटा.), ला.ना.पी. एन. धनापालन (45 बटा.), कां. हरिशंकर शर्मा (60 बटा.), कां. एस.सी.राय (41 बटा.), कां. सी.एच. योदो गिरी गौडा (96 बटा.), वाटर कैरियर सरेंद्र सिंह (18 बटा.), कां.सरत बनिया (26 बटा.), नाई जलक नायर मियां (21 बटा.), है. का./रे.आ.एन.आर.के. नायर (2 सिग.), नाई एस. पैचिमुथू (आर.टी.सी.-2), कां/ड्रा. बीजू भा राठौर (9 बटा.), धोबी छोटे लाल (ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट) तथा स.उ.नि. (रे.आ.) सी.वी. सुकुमारण (3 सिग.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह अक्टूबर, '96 में 18 बटा. के कां. रमेश चंद गूजर, दिसंबर, 96 में 22 बटा. से धोबी कन्हैया लाल, ग्रुप केन्द्र मुजफ्फरपुर के नायक शिवाजी दूबे तथा 85 बटा. के है. कां. जगदीश राय भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

एड्स पर गोष्ठी

है.कां. राज नाथ पांडेय *2* सिंग.

1दिसंबर विश्व एड्स दिवस के रूप में मनाया जाता है। एड्स की त्रासदी से आज विश्व त्रस्त है। इस भयानक महामारी का उचित निदान अब तक संभव नहीं हो पाया है। इसकी चुनौती विश्व के वैज्ञानिकों के लिए अभी तक रहस्य बनी हुई है। हां इतना अवश्य है कि प्रकृति के साथ सहज तालमेल इस संक्रमण को फैलने से रोक सकता है।

2 दिसंबर, '96 को द्वितीय बेतार वाहिनी ने अपने मनोरंजन कक्ष में इस विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। श्रोता के रूप में द्वितीय बेतार वाहिनी के अधिकारियों एवं जवानों के अलावा स्थानीय ग्रुप केन्द्र तथा बटालियनों के जवानों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। डॉक्टर डी.एन. कार ने एड्स के विषय में विस्तार से

जानकारी दी।

इस मौके पर एड्स के विषय में बताते हुए डॉक्टर कार ने बताया कि इसका पूरा नाम "एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिसिएंसी सिण्ड्रोम" है। यह बीमारी सर्वप्रथम 1981 में संयुक्त राज्य अमेरिका में पायी गयी। भारत में इसका प्रवेश सन् 1986 में मद्रास के एक वेश्यालय से हुआ। इस महाघातक रोग का प्रवेश आंध्र प्रदेश में सन् 1987 में हुआ।

"एड्स" एक संक्रामक बीमारी है। रक्त में एच.आई.वी. के संक्रमण से यह रोग होता है। भारत में इसने इतना वीभत्स रूप ले लिया है कि वर्तमान समय में लगभग 25-30 लाख व्यक्ति इस रोग से ग्रस्त है और आशा की जाती है कि यदि इसके संक्रमण पर रोक न लगी तो भारत ही एच.आई.वी. की राजधानी बन जायेगा। लोगों में इस विषय की अनभिज्ञता एवं लापरवाही पूर्ण जीवन शैली ही इसके संक्रमण का प्रमुख कारण है।

इसके संक्रामक वायरस रक्त तथा वीर्य जैसे तरल पदार्थों में निवास करते हैं। संक्रमित व्यक्ति के रक्त, वीर्य या लार से सम्पर्क होने से यह महामारी फैलती है। नशीले तथा मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले लोगों में यह संक्रमण एक ही सुई के इस्तेमाल से फैलता है तथा एड्स की शिकार गर्भवती मां से उसके नवजात शीशु को यह रोग उपहार स्वरूप स्वत: हो जाता है। यह रोग बीमार सहयोगी के साथ लैंगिक सम्पर्क से फैलता है। समलैंगी (अर्थात् पुरूष-पुरूष के साथ) तथा विषमलैंगी (अर्थात् स्त्री-पुरूष के साथ) से प्रभावित सम्भोग के रक्त या रक्त विकार द्वारा यह रोग नये व स्वस्थ रक्त में संचरित व संक्रमित होता है।

यह संक्रमण "एच.आई.वी." वायरस द्वारा कोशिकाओं में असामान्य रूप से विकसित होता है। यह कई वर्षों तक जीवित रहता है तथा अपने को प्रभावी बनाए रखता है। व्यक्ति बाह्य रूप से स्वस्थ दिखता है किन्तु किसी रोग से शीघ्र ही ग्रसित हो जाता है। धीरे धीरे ये वायरस शरीर में स्थित श्वेत रक्त कणों को नष्ट करना शुरू करते है और किसी भी रोग से लड़ने की प्रतिरोधात्मक शक्ति को नष्ट कर देते हैं। सर्दी खांसी जैसे रोग भी दीर्घ काल तक बने रहते हैं। ये वायरस हमारे शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति को कम कर देते हैं। यदि कोई अंग कट जाय तो देर तक रक्त स्त्राव होता रहता है। चौदह से अठारह महीनों में यह रोग पूर्णत: हावी हो जाता है। अस्थमा, कैंसर, निमोनिया जैसे रोग व्यक्ति को आसानी से अपनी चपेट में ले लेते हैं।

एड्स के संदेहास्पद लक्षण

1. मात्र दो महीनों में ही व्यक्ति का 10 प्रतिशत वजन कम हो जाता है।
2. व्यक्ति को बार-बार बुखार आ जाता है जो सामान्य इलाज से ठीक नहीं होता।
3. गर्दन, जोड़ों तथा बगलों पर कुछ गिलिटयां उभर आती हैं।
4. पतली दस्त हठी बन जाती है तथा चिकित्सा से ठीक नहीं होती है।
5. आदमी आलस्य, थकावट तथा निद्रालु महसूस करने लगता है तथा काम में

अरूांचे उत्पन्न हो जाती है।
6. रात में सोते समय उसे पसीना आता है जिसे “नाइट स्वेटिंग” कहते है।
7. किसी भी काम में व्यक्ति का मन नहीं लगता तथा वह अपना जी चुराकर रहने लगता है। सकारात्मक विचार में कभी आ जाती है व जीवन नैराश्य पूर्ण लगता है।

जोखिम ग्रस्त लोग

1. संक्रमित साझेदार के साथ संभोग करने से अथवा एक से अधिक (विविध) लोगों से मैथुन सम्बन्ध रखने से।
2. नशाखोरों द्वारा संक्रमित सूइयों के प्रयोग से।
3. “एच.आई.वी.” संक्रमित रक्त ग्रहण करने से।
4. संक्रमित माताओं की संतान को।

निम्न कारणों से एच.आई.वी. संक्रमण नहीं होता

1. एक साथ उठने बैठने से।
2. एक दूसरे को आलिंगन करने से।
3. एड्स प्रभावित रोगी के कपड़ों तथा बर्तनों के इस्तेमाल करने से।
4. मच्छरों के काटने से।

इलाज *(निदान)*

1. आज तक चिकित्सा के क्षेत्र में इसका कोइ इलाज संभव नहीं हो पाया है।
2. इसके लिए सुरक्षा टीका अभी तक उपलब्ध नहीं है।

बचाव

बचाव के लिए हिदायतें

1. सुरक्षित यौन मैथुन की आदत डालें।
2. उत्तम कोटि के निरोध का प्रयोग करें।
3. अगर रक्त लेने की आवश्यकता पड़े तो एच.आई.वी. मुक्त रक्त ही ले।
4. संक्रमित सुइयों एवं सिरिंजों का इस्तेमाल न करें। इंजेक्शन लगवाते समय निश्चित करे कि एक बार इस्तेमाल होने वाली सुई (डिस्पोजेबल सिरंज) लगायी जा रही है या फिर उबाली गयी।
5. जिन माता अथवा पिता का एच.आई.वी. पोजिटिव हो वे कभी भी संतान की चाह न रखें।

गोष्ठी में एक जवान ने जानना चाहा कि वे फौजी नाई से अपने बाल, दाढ़ी, नाखून आदि किस प्रकार कटायें ताकि एक ही उस्तरे से अनेकों सम्पर्क से बचा जा सके। इस प्रश्न की प्रशंसा करते हुए डॉक्टर कार ने बताया कि कोई भी कर्मचारी नाई से जब किसी प्रकार की कटिंग के लिए जाता है तो अपना नवीन ब्लेड का टुकड़ा उसे अवश्य दे तथा यकीन करे कि उसका काम नये ब्लेड से हो तथा यूनिट स्तर पर जवानों एवं युनिटों को नये ब्लेड उपलब्ध कराये जाये, जिससे एक का इस्तेमाल किया हुआ उस्तरा उस पर प्रयोग न किया जाए। नई सुइयों की व्यवस्था भी हर अस्पताल में हो, जिससे एच.आई.वी. के संक्रमण की कोई गुंजाइश न रहने पाये।

डॉक्टर कार ने गोष्ठी में जवानों का आह्वान किया कि इस जानकारी को प्रत्येक व्यक्ति अपने दोस्त, मित्र, परिवार के अन्य, सदस्यों अड़ोस-पड़ोस तथा सम्पर्क में आने वाले लोगों तक पहुंचाए तथा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को इसकी जानकारी उपलब्ध कराये।

चेतावनी

मुझे ले चलो तुम फिर वहीं,
जहां शाम ठहरी तक रही,
है धुआं-धुआं सब कुछ जहां,
इन्सानियत है सिसक रही।

नहीं बुद्ध, न कबीर हूँ,
नहीं भीम-अर्जुन वीर हूँ,
जो आज तक हैं बरस रहीं,
उन्हीं आंखों का मैं नीर हूँ।

नहीं बात तख्त-औ-ताज की,
एक बात कल की, आज की,
सदियों ने तोड़ा है जिसे,
मैं तार हूँ उस साज की।

वो राज हूँ जो सब जानते,
ये राह सब पहचानते,

बनते हैं फिर भी नासमझ,
लते हैं खंजर तानते।

रोज मर कर जी रहा,
अपनी फटी को सी रहा,
हूँ प्यार की टूटी लहर,
शैतान उसको पी रहा।

अब भी समय है चेत लो,
अपनी मति को फेर लो,
मत बनो घृत तुम कुण्ड के,
अपने हृदय को भेंट लो।

कल बहुत पछताओगे,
इससे नहीं बच पाओगे,
नफरत के दह-दह ज्वाल में,
तुम स्वयं भी जल जाओगे।

-सहायक कमांडेंट संजय कुमार सिन्हा *105* आर.ए.एफ.



के.रि.पु. बल हाकी टीम सदस्य संजय हाकी टूर्नामेंट में जीती ट्राफी महानिदेशक महोदय को दिखाते हुए

रजि. न. 4767/87



पंजाब विधान सभा चुनावों के दौरान नागरिकों को उनके मताधिकारों के प्रयोग में मदद प्रदान करते बल के कार्मिक

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 10 अंक - 2 31 मार्च, 1997 10 चैत्र, शक 1919



के.रि.पु. बल कल्याण संगोष्ठी में केंद्रीय गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल



के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी व मेले का उद्घाटन करते हुए दिल्ली के मुख्य मंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-10 अंक-2
31 मार्च, 1997
10 चैत्र, शक 1919

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

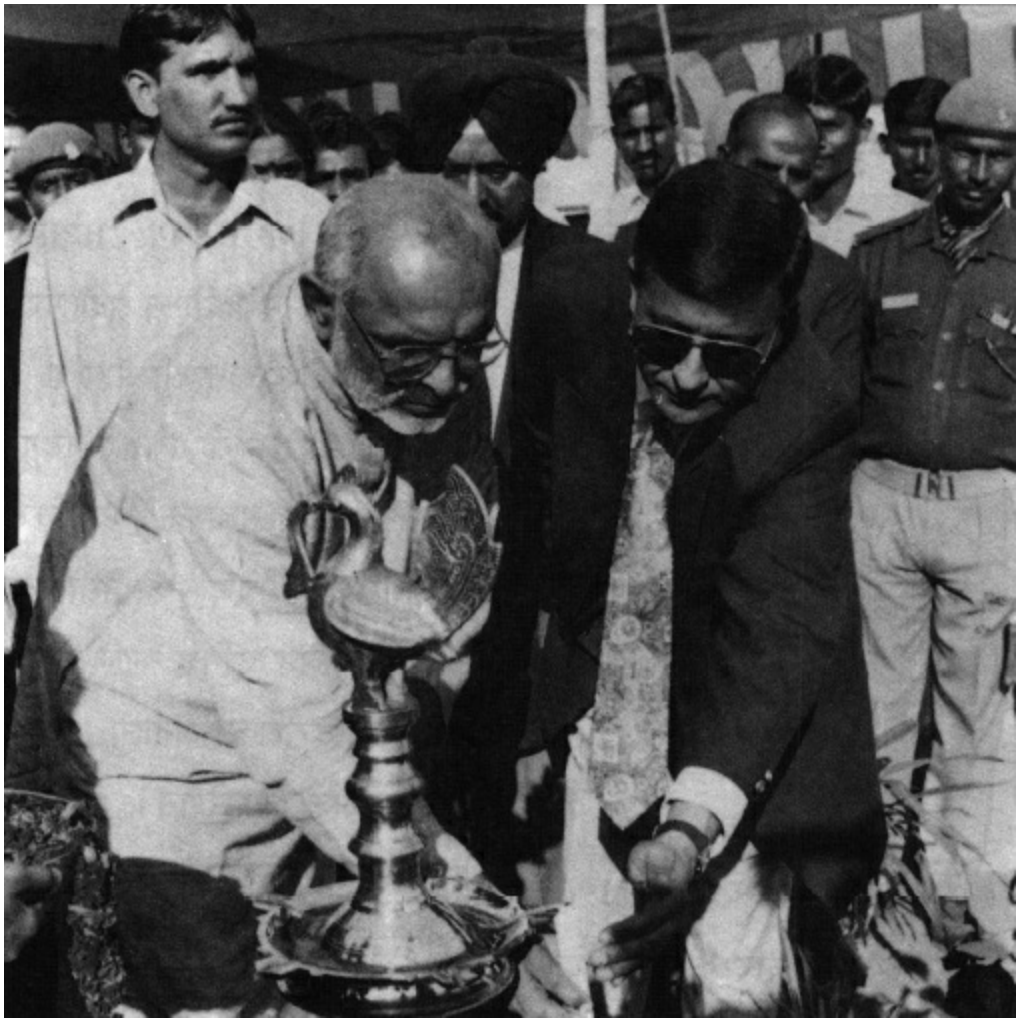
चित्र
फोटो सेक्शन
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां,
नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस
1728 कूचा दखनीराय,
दरियागंज, नई दिल्ली-2
दूरभाष : 3262279

विषय सूची



एस. के. सेठी के.रि.पु. बल के अपर महानिदेशक

के.रि.प. बल होली डे होम

समाचार

वार्षिक कल्याण सेमिनार

के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी

बराहम पुर में मेडिकल कैंप

राष्ट्रीय खेलों में बल के भारोत्तोलक चमके

सांक्षप्त समाचार

आओ हंसे

हास परिहास

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

श्री एस.के. सेठी के.रि.पु. बल के नए अपर महानिदेशक



श्री एस.के. सेठी

भारतीय पुलिस सेवा के 1965 बैच तथा हरियाणा कैडर के श्री स्वदेश कुमार सेठी ने 18 मार्च, '97 को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के अपर महानिदेशक का पदभार संभाल लिया। इससे पूर्व वह इंडियन एयरलाईंस में उप प्रबंध निदेशक (सतर्कता) के पद पर कार्यरत थे।

अपनी लंबी पुलिस सेवा के दौरान श्री सेठी कई महत्वपूर्ण प्रशासनिक एवं संचालनिक पदों पर रहे। अपनी सेवा के प्रारंभिक वर्षों में 1968 से 72 तक श्री सेठी भारत तिब्बत सीमा पुलिस में सहायक कमांडेट के रूप में चार वर्षों के लिए लेह तथा कुल्लू जैसे इलाकों में तैनात रहे। इसके बाद 1993 में इंडियन एयरलाईंस में निदेशक (सतर्कता) पद पर आने से पूर्व वह लगभग 21 साल तक राज्य सरकार में विभिन्न पदों पर रहे। इस अवधि के दौरान श्री सेठी छ: जिलों में पुलिस अधीक्षक रहे, जिनमें गुडगांव भी शामिल है। सहायक महानिरीक्षक (प्रशासन), निदेशक (प्रोसीक्यूशन), निदेशक पुलिस ट्रेनिंग कालिज मधुबन, उप महानिरीक्षक अंबाला रेंज, उप महानिरीक्षक (आपरेशन), महानिरीक्षक मधुबन पुलिस काम्पलैक्स, महानिरीक्षक (आपरेशन) तथा महानिरीक्षक अम्बाला तथा हिसार रेंज उनके अन्य महत्वपूर्ण पदभार रहे।

श्री सेठी को 1988 में सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया तथा 1971 में उन्हें पुलिस (स्पेशल ड्यूटी) पदक बार-जम्मू कशमीर तथा संग्राम पदक प्रदान किया गया।

श्री सेठी की मुख्य रूचियों में अध्ययन, लेखन तथा बागवानी शामिल हैं। उन्हें 1983 में प्रधान मंत्री रजत कप निबंध लेखन प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार प्रदान

किया गया।

के.रि.पु. बल होली डे होम

बल के कार्मिकों के कल्याणार्थ शिमला तथा ऊटी में होली डे होमस की स्थापना की गयी है। बल के कार्मिक अपनी छुट्टियों के दिनों में इन दोनों पर्यटन स्थलों पर इन आवासीय सुविधाओं का लाभ उठा पाएंगे।

शिमला में राजपत्रित तथा अराजपत्रित दोनों ही वर्गों के लिए आवासों की व्यवस्था की गयी है, जबकि ऊटी में अभी यह व्यवस्था केवल राजपत्रित अधिकारियों के लिए ही उपलब्ध है। यह आवास 15 अप्रैल से 15 जुलाई तक अधिकतम सात दिनों के लिए बुक किये जा सकेंगे। बुकिंग के लिए उप महानिरीक्षक चंडीगढ़ तथा उप महानिरीक्षक चेन्नई से संपर्क किया जा सकता है। राजपत्रित अधिकारियों के लिए कमरे के अनुसार किराया 40, 50 या 20 रूपये होगा। जबकि अराजपत्रित अधिकारियों के लिये यह किराया 10 रूपये होगा। अल्पाहार के लिए इन स्थलों में एक छोटी कैंटीन की व्यवस्था भी की गयी है।

यह सुविधा अन्य अर्द्ध सैनिक बलों के लिए भी उपलब्ध है। इन बलों के राजपत्रित अधिकारियों के लिए शिमला में कमरों का किराया 200 रूपये, तथा अराजपत्रित अधिकारियों के लिए 30 रूपये होगा जबकि ऊटी में अधिकारियों के लिए यह किराया 80 रूपये रोज होगा।

समाचार



महानिदेशालय कैंप आर.के. पुरम, नई दिल्ली में आयोजित होली मिलन समारोह में महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल भी शामिल हुए

आर.ए.एफ. ने गांव गोद लिया

आर.एफ.ए. ने बिहार के पूर्वी सिहंभूम जिले की कलमा पंचायत के अंतर्गत आने वाले गांव बियांगविल को समग्र विकास के लिए अंगीकृत किया है। 12 मार्च को गांव में आयोजित किए गए एक सादे समारोह में 106 आर.ए.एफ. बटालियन के कमांडेट प्रेमजीत सिंह ने इस आशय की घोषणा की। गरीब ग्रामीणों के लिए आर.ए.एफ. की बटालियन यहां प्रौढ़ शिक्षा, स्वास्थ्य कैंप, खेल कूद तथा अन्य सामाजोपयोगी कार्यक्रम चलाएगा।

पुलिस फैलोशिप योजना

सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद ने कर्तव्य पर मारे गये भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारियों की स्मृति में एक पुलिस फैलोशिप योजना शुरू की हैं। योजना का उद्देश्य पुलिस अधिकारियों को पुलिस से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन तथा शोध के लिए सुविधा एवं अवसर उपलब्ध कराना है।

भारतीय पुलिस सेवा के ऐसे सभी अधिकारी जो दस साल की कार्यअवधि पूरी कर चुके हो, तथा शोध से संबंधित विषय में उन्हें कम से कम तीन साल तक काम करने का अनुभव हो, इस योजना के लाभ के अधिकारी होंगे। शोध का यह कार्य अधिकारी व्यक्तिगत स्तर पर, या फिर कार्यक्षेत्र विस्तृत होने की स्थिति में अन्य अधिकारी के साथ मिल कर भी कर सकते हैं।

फैलोशिप की अवधि एक वर्ष होगी तथा इस अवधि के दौरान अधिकारी ड्यूटी/

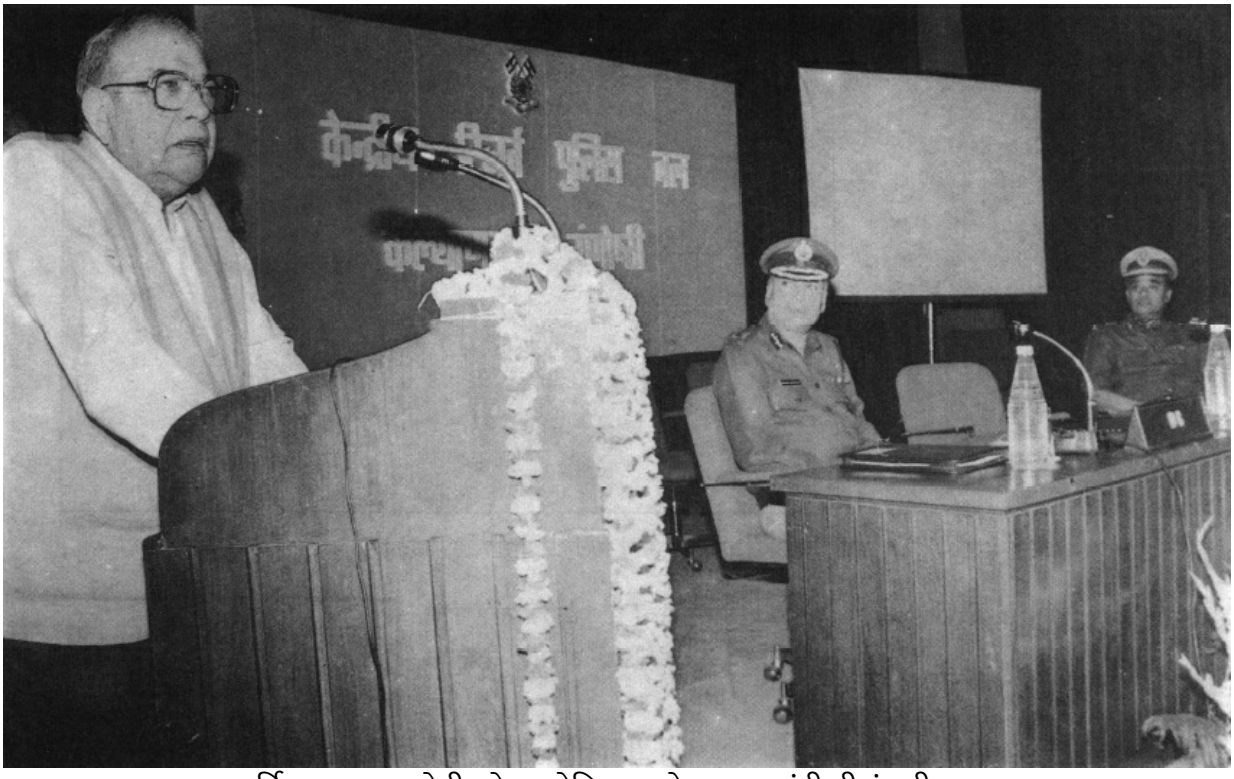
स्टडी लीव पर माना जाएगा तथा उसे उसके वेतन व भत्ते यथानुसार मिलते रहेंगे। फैलोशिप के लिए अनुदान की राशि का निर्णय एक कमेटी करेगी। फैलोशिप के लिए निर्धारित प्रफोरमा पर अकादमी को 15, जून, 1997 तक आवेदन दिये जा सकते हैं।

सेवानिवृत्त कार्मिकों को चिकित्सा सुविधा

केंद्रीय पुलिस बलों के सेवानिवृत्त कार्मिक भी अब किसी भी केंद्रीय अर्द्धसैनिक पुलिस बल के अस्पताल से चिकित्सा सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे। यह सुविधा केवल उन्हीं स्थानों पर उपलब्ध होगी, जहां सी.जी.एच.एस. सुविधा उपलब्ध नहीं है। इस सुविधा की स्वीकृति गृह मंत्रालय ने दे दी है।

केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों के अस्पतालों में इन बलों के सेवानिवृत्त कार्मिकों को उनकी स्वेच्छानुसार चिकित्सा सुविधा उसी स्थिति में मिलेगी अगर वो सी.जी.एच.एस. की सुविधा नहीं ले रहे है। यह इन कार्मिकों की इच्छा पर होगा कि वो इन बलों के अस्पतालों में चिकित्सा सुविधा लेना चाहते है, या सी.जी.एच.एस से।

वार्षिक कल्याण सेमिनार



वार्षिक कल्याण गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त

3मार्च, 1997 को नई दिल्ली स्थित स्कोप सभागार में केंद्रीय गृह मंत्री इंद्रजीत गुप्त ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पहले वार्षिक कल्याण गोष्ठी का उद्घाटन किया।

गोष्ठी में देश के विभिन्न भागों में तैनात बल के सभी रैंकों और वर्गों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। बल के कल्याण सम्बंधी महत्वपूर्ण विषयों पर नीतिगत निर्णय लेने के लिए यह एक उच्चतम समिति की बैठक थी। इस गोष्ठी में कार्यरत एवं सेवा निवृत बल के कार्मिकों के अतिरिक्त कर्तव्य पर मारे गये बल के कार्मिकों के परिवारों के कल्याण से संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा की गयी।

गृह मंत्री ने सम्मेलन में इस बात पर भी हर्ष व्यक्त किया कि इस सेमीनार में बल के प्रत्येक रैंक व वर्ग को भारी प्रतिनिधित्व दिया गया हैं जिससे कि वह कल्याण से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त कर सकें तथा उन पर नीतिगत निर्णय ले सकें।

उन्होंने इच्छा जाहिर की कि बल की गतिशीलता को कम करने के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए ताकि बल कार्मिकों को प्रशिक्षण, आराम और सामान्य पारिवारिक जीवन के लिए पर्याप्त समय मिले। उन्होंने बल के कार्मिकों को आश्वासन दिया कि सरकार उनके कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है तथा उनकी समस्याओं को कम करने के हर संभव प्रयत्न किए जाएंगे। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि 5वें वेतन आयोग में बल के कार्मिकों के वेतनमान से संबंधित मुद्दे पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि गोष्ठी के दौरान होने वाली चर्चा तथा अनुमोदनों को उनके पास भेज दिया जाए ताकि सेवारत, सेवानिवृत, विकलांग तथा कर्तव्य पर मारे गए बल के कार्मिकों के कल्याण के लिए तत्परता से उचित कदम उठाए जा सकें।



सम्मेलन के दौरान गृह मंत्री से किसी मुद्दे पर बात करते हुए महानिदेशक श्री कौशल

गृह मंत्री जी का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री एम.बी. कौशल ने कहा कि अत्यधिक तैनाती तथा गतिशीलता के कारण बल के कार्मिकों के अन्दर अस्थायित्व की भावना घर कर गयी है। वे शारीरिक तथा मानसिक रूप से तनावग्रस्त हो गए हैं। उनका पारिवारिक जीवन पूरी तरह अव्यवस्थित हो चुका हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि इन परिस्थितियों में बल के कार्मिकों एवं उनके परिवारों के कल्याण से संबंधित कार्यक्रमों का विशेष महत्व है क्योंकि अच्छी देखभाल से ही अच्छी संचालिक दक्षता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने 5वें वेतन आयोग द्वारा कांस्टेबल तथा अन्य रैंकों के वेतनमान, राशन भत्ते, जोखिम भत्ते और सेवा निवृत्ति की आयु में दी गयी भेदभावपूर्ण सिफारिशों के संबंध में बल की भावनाओं से भी अवगत कराया।

इस मौके पर गृह मंत्री को "के.रि.पु. बल में हीनता के कारण" तथा "कर्तव्य पर

मारे गए बल के कार्मिकों के परिवारों और विकलांगों का कल्याण" विषय पर दो प्रेजेन्टेशन भी दिए गए।

के.रि.पु. बल ने 260 आतंकवादी पकड़े

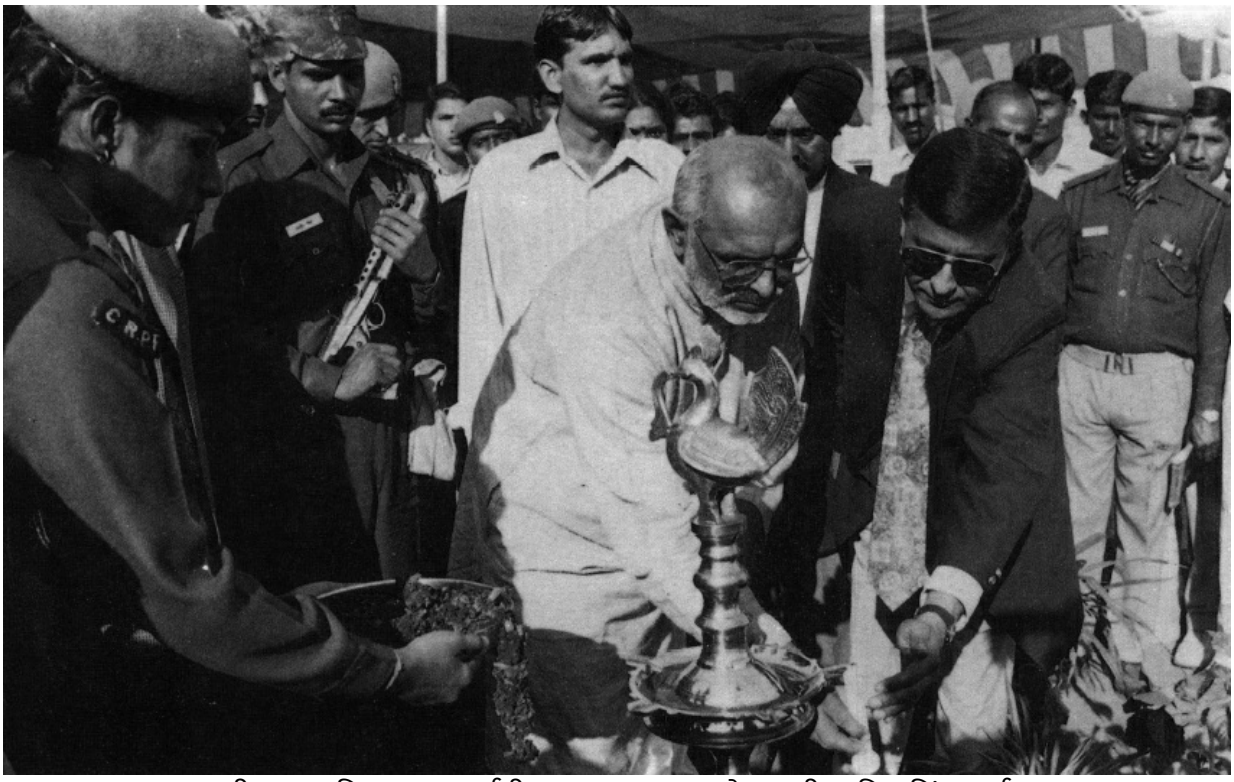
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने माह मार्च, 97 में देशभर में 260 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी 22 मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 21 आतंकवादी मारे गए।

इनमें से सर्वाधिक 142 आतंकवादियों को असम में गिरफ्तार किया गया जिनमें तीन उल्फा, चार एन. एस.सी.एन. तथा एन.एल.एम.टी., ए.टी. टी.एफ. तथा टी.एन.एस.सी. का एकएक सदस्य भी शामिल है। इनके अलावा जम्मू कशमीर में 14, आंध्र प्रदेश में 40, त्रिपुरा में 61, मेघालय में दो तथा नागालैंड में एक आतंकवादी को गिरफ्तार किया गया। जम्मू-कशमीर में मारे गए आतंकवादियों में 10 हिजबुल मुजाहीदीन तथा एक हरकत उल अंसार गुट का था। इनके अलावा असम में तीन उल्फा आतंकवादी तथा आंध्र प्रदेश में चार नक्सलवादी मारे गए।

इस दौरान बल के कार्मिकों ने 82 घातक हथियार तथा 3679 गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में चार ए.के. 47 रायफलें, 16 एक.के. 56 रायफलें, दो यू.एम.जी. 26 पिस्तौलें और रिवाल्वरें, एक जी.पी.एम.जी. तथा एक बुलेट एक्शन रायफल शामिल है। 45 हथियार अकेले जम्मू–कशमीर राज्य में ही बरामद किए गए।

इस दौरान हुयी मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में बल के दो जवान वीर गति को प्राप्त हुए तथा 31 गंभीर रूप से घायल।

के.रि.पु. बल कल्याण प्रदर्शनी



दीप प्रज्ज्वलित कर प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्री साहिब सिंह वर्मा

4से 9 मार्च, 97 तक दिल्ली में चली केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल प्रदर्शनी में 30 लाख रूपये से अधिक की बिक्री दर्ज की गयी। 9 मार्च, 97 को आयोजित एक समारोह के बीच के.रि.पु. बल अधिकारियों की कल्याण संस्था की अध्यक्षा श्रीमती आशा कौशल ने मुख्य अतिथि की हैसियत से प्रदर्शनी में अच्छी सजावट तथा ज्यादा बिक्री के लिए विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये।

दिल्ली में मुख्य मंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा ने 4 मार्च, 97 को पूर्वी किदवई नगर मैदान नई दिल्ली, में दीप प्रज्ज्वलित कर इस कल्याण प्रदर्शनी व मेले का उद्घाटन किया था।

4 से 8 मार्च, 97 तक चलने वाली इस कल्याण प्रदर्शनी एवं मेले में बल के सभी ग्रुप केंद्रों के परिवार कल्याण केंद्रों ने अपने अपने स्टाल स्थापित किए। इन स्टालों में क्षेत्रीय हस्तकरघा तथा अन्य वस्तुओं को प्रदर्शन एवं बिक्री के लिए रखा गया। इन वस्तुओं का निर्माण परिवार कल्याण केंद्रों में ही किया गया था।

मेले में लगाए गए ग्रुप केन्द्र-2 अजमेर के स्टाल को प्रथम, ग्रुप केन्द्र-एक अजमेर तथा ग्रुप केन्द्र नीमच को संयुक्त रूप से द्वितीय तथा ग्रुप केन्द्र नई दिल्ली को तीसरा पुरस्कार दिया गया।

परिवार कल्याण केन्द्रों की सालभर की गतिविधियों के आकलन के बाद ग्रुप केन्द्र नीमच के परिवार कल्याण केन्द्र को प्रथम पुरस्कार के रूप में एक ट्राफी तथा 15,000 रूपये प्रदान किये गए। हैदराबाद परिवार कल्याण केन्द्र को दूसरे स्थान पर

रहने के लिए 10,000 रूपये का इनाम दिया गया।

इस मेले और प्रदर्शनी से होने वाली आय को परिवार कल्याण केंद्र बल के विकलांग कार्मिकों, उनके बच्चों, कर्तव्य पर मारे गए बल के कार्मिकों के परिवारों तथा विधवाओं के कल्याण कार्यक्रमों पर खर्च करेंगे। इस तरह के मेले के आयोजन का मकसद बल के कार्मिकों के लिए चलायी जाने वाली कल्याण योजनाओं के लिए धन एकत्र करना हैं।

पूरे देश में फैले ग्रुप केन्द्रों ने इस प्रदर्शनी और मेले में अपने-अपने क्षेत्रों की दस्तकारी, पोटरी, वस्त्रों तथा फर्नीचर की वस्तुओं की प्रदर्शनी व बिक्री की।



मेले में एक स्टाल का निरीक्षण करते हुए श्री साहिब सिंह वर्मा

कल्याण गतिविधियों से जुड़े कुछ अन्य निजी संगठनों को भी इस मेले में अपने स्टाल लगाने के लिए आमंत्रित किया गया। इनमें खेल सामग्री, बच्चों के मनोरंजन तथा भोज्य पदार्थों के स्टाल शामिल थे। मेले में प्रवेश निशुल्क था। अमन के प्रहरी फोटो प्रदर्शनी इस मेले का एक विशेष आकर्षण था। साथ ही होम्योपैथी उपचार विधि पर भी एक स्टाल लगाया गया।

दिल्ली में लगायी जाने वाली के.रि.पु. बल की यह तीसरी प्रदर्शनी थी। पहली प्रदर्शनी का आयोजन जनवरी, '95 में किया गया था तथा इसमें सात लाख से ज्यादा

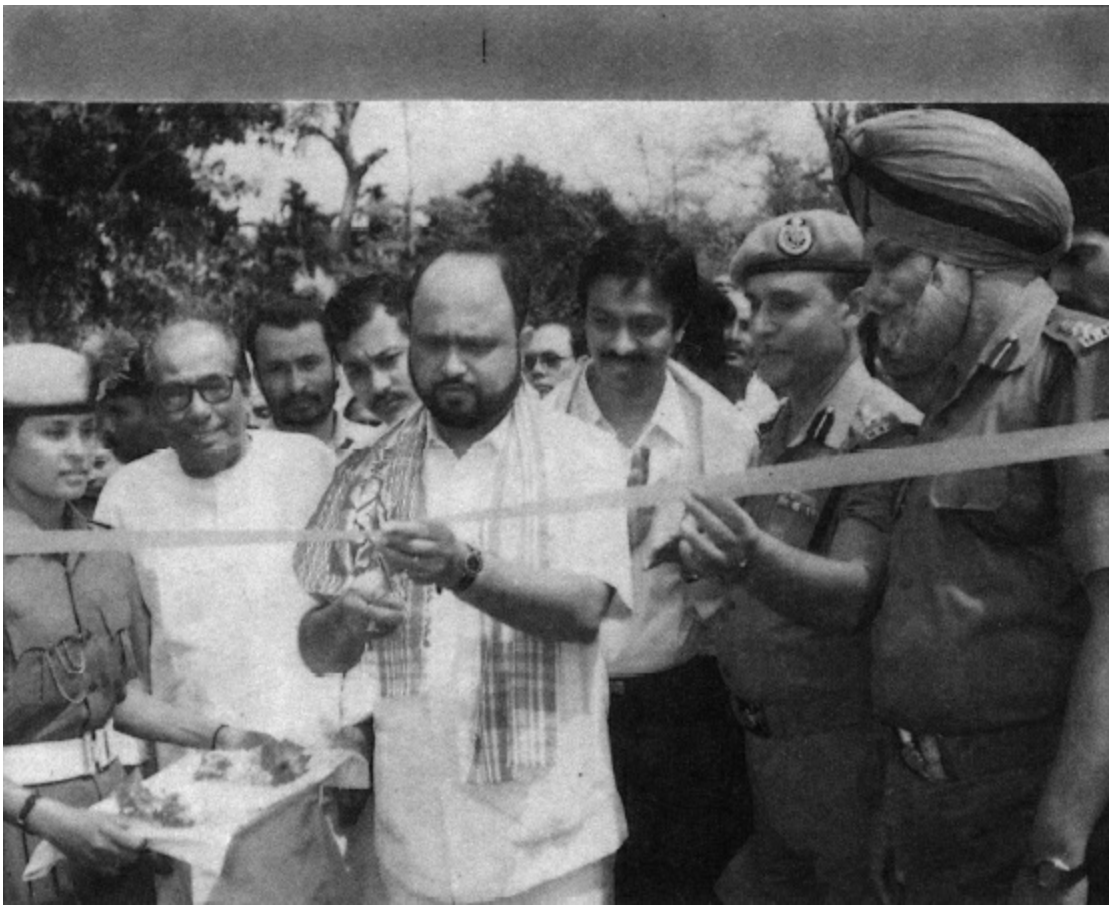
की बिक्री हुयी थी। दूसरी प्रदर्शनी जनवरी, 96 में आयोजित की गयी थी, तथा इसमें 13 लाख से ज्यादा की बिक्री हुयी थी।

इस मौके पर बोलते हुए बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल ने कहा कि के.रि.पु. बल एक बहुत बड़ा संगठन है तथा इस तरह के मेले व प्रदर्शनी से देशवासियों को इसे समग्र रूप से जानने का मौका मिलता है।



मेले में प्रथम स्थान पर रहे अजमेर ग्रुप केंद्र-२ को ट्राफी प्रदान करती हुई श्रीमती आशा कौशल

बराहमपुर में मेडिकल कैंप



मेडिकल कैंप का उद्घाटन करते हुए असम के मुख्य मंत्री श्री प्रफुल्ल कुमार महंत

बराहमपुर, गुवाहाटी में बल की 63 बटालियन तथा बेस अस्पताल-3 ने 30 मार्च, '97 को स्थानीय नागरिकों के लिए एक मैडिकल कैंप का आयोजन किया। सिविल एक्शन प्रोग्राम के तहत आयोजित इस कैंप का उद्घाटन असम के मुख्य मंत्री श्री प्रफुल्ल कुमार महंत ने किया। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में असम के स्वास्थ्य मंत्री डा. कमला कालिता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस मौके पर असम सरकार के मंत्री मुहीराम सैकिया तथा कई विधायकों सहित नागरिक तथा प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित थे।

इस मौके पर बोलते हुए श्री महंता ने कहा कि असम के दूर-दराज के दुर्गम क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लिए बल ने महत्वपूर्ण काम किया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस मेडिकल कैंप के जरिये नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल पाएंगी। उन्होंने कहा कि सरकार सन 2000 तक प्रत्येक नागरिक तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाने के लिए कृत संकल्प है।

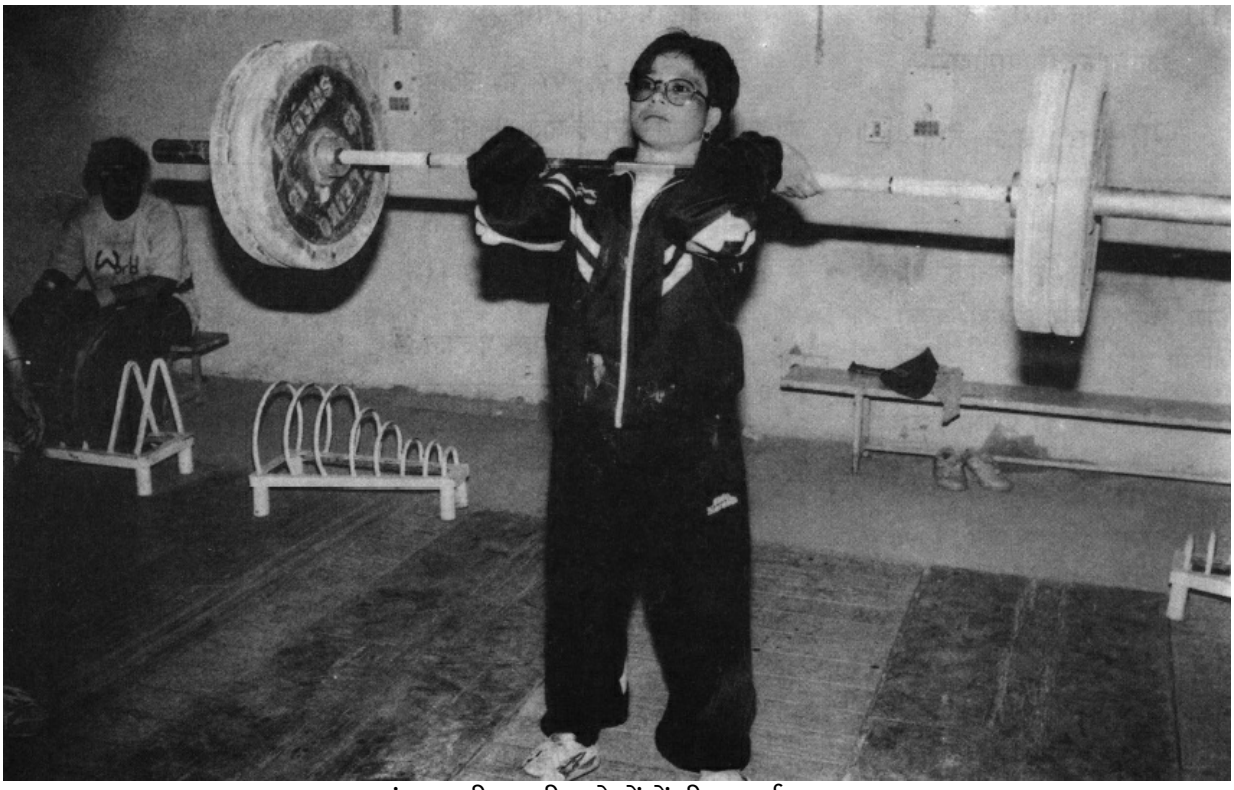
राज्य के मानव संसाधन मंत्री श्री मुहीराम सैकिया ने इस मौके पर बोलते हुए राज्य के अधिकारियों से राज्य के विकास एवं शांति के लिए कोशिशों को पुरजोर रूप से जारी रखने की अपील की।

इस के पूर्व बल के उप महानिरीक्षक श्री एम.एम. खान ने आतिथेयों का स्वागत किया तथा बताया कि यह कैंप बल द्वारा चलाए जा रहे सिविल एक्शन प्लान के तहत स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि इस तरह के कैंपों के आयोजन का उद्देश्य दूरदराज के क्षेत्रों तक चिकित्सा सुविधाए पहुंचाना है।

प्राकृतिक विपदाओं से लोगों की रक्षा करेगा के.रि.पु. बल

अग्निकांड, बाढ़ तथा प्राकृतिक विपदाओं से नागरिकों के बचाव एवं उनकी सुरक्षा के लिए ग्रुप केंद्र मोकामाघाट अपने जवानों को प्रशिक्षित करेगा। ग्रुप केंद्र के अपर महानिरीक्षक श्री जी.एल. शर्मा ने 2 दिसंबर, 96 को ग्रुप केंद्र परिसर में इस तरह का प्रशिक्षण देने वाले विद्यालय का उद्घाटन किया। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण हेतु जवानों को सभी प्रकार के आधुनिक उपकरण मुहैया कराये जाएंगे। जवानों को लाइफ जैकेट, आउट वोट मोटर्स, वोट एसाल्ट यूनिवर्सल टाइप, सर्च लाइट एवं पम्पिंग सेट आदि उपलब्ध कराएं जाएंगे। डिप्टी कमांडेंट आर.पी.राय प्रशिक्षण पाने वाले जवानों का नेतृत्व करेंगे।

राष्ट्रीय भारोत्तोलन में बल की भारोत्तोलक चमकीं



कुंजारानी - राष्ट्रीय खेलों में तीन स्वर्ण पदक

12 से 20 मार्च, 97 तक चेन्नई में चली 12वीं महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता में बल की भारोत्तोलक छायी रहीं। बल की इन महिला भारोत्तोलकों ने कई पदक बटोरे। यह प्रतियोगिता 49वीं पुरूष भारोत्तोलन प्रतियोगिता के साथ ही आयोजित की गयी। बल के भारोत्तोलकों ने संयुक्त पुलिस टीम के सदस्यों के रूप में इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

प्रतियोगिता में सहायक कमांडेट कुंजारानी देवी ने 46 किग्रा भार श्रेणी में तीन स्वर्ण पदक जीते। हाल ही में उनके घुटने के हुए आपरेशन को दृष्टि में रखते हुए यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। कुंजारानी के अतिरिक्त इंस्पेक्टर एन. लक्ष्मी, जीवन ज्योति, है.कां. रोमी देवी तथा प्रतिभा कुमारी और नायक नंदिनी देवी ने भी विभिन्न श्रेणियों में तीन-तीन स्वर्ण पदक जीते।

बल के आठ अन्य पुरूष व महिला भारोत्तोलकों ने इस प्रतियोगिता में कई पदक प्राप्त किये। हे.कां. राजेंद्र सिंह ने एक स्वर्ण पदक तथा दो रजत पदक, हे.कां. लालू साहू ने एक कांस्य पदक, हे.कां. राजेश कुमार त्यागी ने एक रजत पदक, हे.कां. उजावला यू. मनि ने दो रजत तथा एक कांस्य, हे.कां. गीतांजलि देवी ने एक रजत तथा दो कांस्य पदक, हे.कां. सुखबीर बाल ने एक रजत तथा हे.कां. सीमा थापर ने तीन कांस्य पदक इस प्रतियोगिता में जीते।

बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल ने भारोत्तोलकों की इस उपलब्धि पर भारोत्तोलकों तथा उनके कोच को बधाई संदेश भेजा।

संक्षिप्त समाचार

111 बटालियन द्वारा पल्स पोलियो अभियान में भागीदारी

गोलाघाट, असम स्थित 111 बटालियन ने 7 दिसंबर, 96 तथा 18 जनवरी, 97 को अपने क्षेत्र में पल्स पोलियो अभियान के अंतगर्त मेडिकल कैम्प स्थापित कर सैकड़ो बच्चों को पोलियो ड्राप्स दिये।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क

35 बटालियन के कांस्टेबल अशोक कुमार को 26 जून, 1996 को बोडो क्रिस्टी भवन के पास असम में आतंकवादियों के विरूद्ध चलाए जा रहे अभियान में विशिष्ट योग्यता दिखाने पर महानिदेशक महोदय ने महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा प्रशंसा पत्र प्रदान किया है।

महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क एवं प्रमाण पत्र

बल के 28 अधिकारियों एवं जवानों को जम्मू कशमीर में हुए विधान सभा चुनाव के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने के काम में महत्वपूर्ण मदद देने एवं चुनावों को सुचारू ढंग से संपन्न कराने के लिए महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क तथा प्रशंसा पत्र प्रदान किया है और 44 कार्मिकों को इन चुनावों के दौरान उनकी सराहनीय भूमिका के लिए महानिदेशक का प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया है।

जोखिम निधि लाभ

माह फरवरी, 97 में केंद्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के सात मामलों में कुल 5,07,500 रूपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के तीन मामलों में 30,400 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि "बी" स्पेशल कल्याण निधि से भी बल के 10 सदस्यों को मृत्यु के मामले में 3,50,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

73 बटालियन के कार्यों की प्रशंसा

27 से 31 दिसंबर, 97 तक बोकोजान असम में हुयी अखिल असम दौड़कूद प्रतियोगिता के लिए कार्बीयालोंग स्वायत्तशासी परिषद के अनुरोध पर 73 बटालियन ने न केवल विशेषज्ञों द्वारा खेलों के आयोजन में मार्गदर्शन प्रदान किया, अपितु स्टेडियम में ट्रेक बनाने, कैंटीन तथा स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने तथा सभी खिलाड़ियों तथा आयोजकों को सुरक्षा प्रदान करने के दायित्व को भी सफलतापूर्वक निभाया। बल की युनिट के इस सहयोगी रवैये की स्थानीय प्रशासन तथा नागरिकों ने भरपूर प्रशंसा की है।

7 दिसंबर, 96 तथा 18 जनवरी, 97 को देशव्यापी रूप से चलाए गये पल्स पोलियों कार्यक्रम में भी इस बटालियन के कार्मिकों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया तथा बोकोजान क्षेत्र के सूदूर क्षेत्रों में दवाइयों पहुंचाने तथा 47 मैडिकल कैम्प स्थापित करने में मदद दी।

23 फरवरी, 97 को इस युनिट के कार्मिकों ने एक कार से 210 किलो गांजा बरामद किया। इस क्षेत्र में इस बटालियन के जवानों की यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

माह फरवरी, 97 में बल के मृत कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह फरवरी, 97 में मृत्यु को प्राप्त हुए।

के.रि.पु. बल समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कांस्टेबल प्रणब बोरा (110 बटा.), कांस्टेबल दशरथ लाल (40 बटा.), कांस्टेबल राम नरेश यादव (40 बटा.), कुक शेर सिंह (47 बटा.), कां. / ड्राईवर योगराज (ग्रुप केंद्र बनतालाब), है.का./ड्राईवर ब्रिजेंद्र नाथ मिश्रा (31 बटा.), ला.ना./ड्राईवर एस.सी. सिंह (10 बटा.), है.कां./क्रिप्टो रवि दास (1 सिंगनल), हव. लाल साहिब सिंह (11 बटा.), लांस ना./ड्रा. जय बहादुर (52 बटा.) तथा नायक अमर सिंह बूरा (7 बटा.)

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार जनवरी माह में 7 बटा. के कांस्टेबल सतेंद्र सिंह भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

आओ हंसे

एक डाक्टर के पेट में अचानक दर्द होने लगा। उसने अपने नौकर से कहा, "जा, किसी डाक्टर को बुला ला।"

नौकर बोला, "लेकिन आप तो खुद एक डाक्टर हैं।

डाक्टर ने कहा, "लेकिन कमबख्त! क्या तुझे मालूम नहीं कि मेरी फीस बहुत ज्यादा है।"

* * *

परीक्षा से पहले अध्यापक कक्षा में आए और बोले, "बच्चों ! परीक्षा करीब आती जा रही है। प्रश्नपत्र छपने के लिए जा चुके हैं। तुम्हारी भी तैयारी पूरी हो चुकी होगी। फिर भी अगर तुम से किसी को कोई प्रश्न पूछना हो तो पूछ लो।"

तभी एक छात्र बोला, "सर एक प्रश्न है।"

"पूछो।"

"सर! प्रश्न पत्र किस प्रेस में छप रही है।"

* * *

पड़ोसी : "पंडित जी! यह गधा आपके घर के सामने मरा पड़ा है। अब तो आपको इसका श्राद्ध करना होगा।"

पंडित जी : हां, अगर तुम्हारे जैसे इसके दो चार रिश्तेदार दबाव डालेंगे तो श्राद्ध करना ही पड़ेगा।

* * *

मालिक : हमें एक नौकर की जरूरत है, लेकिन हम ऐसा नौकर चाहते हैं जो कंजूस हो।

नौकर : कंजूसी के कारण ही तो मुझे पहली नौकरी छोड़नी पड़ी थी।

मालिक : वो कैसे ?

नौकर : दरअसल, मैं कपड़े गंदे हो जाने के भय से उसे न पहनकर मालिक के कपड़े पहन लेता था।

* * *

अध्यापक : बच्चों, बिना दांत वाले दो जंतुओं का नाम बताओ ?

छात्र : सर, दादा–दादी।

* * *

एक झोला छाप डाक्टर की नेम प्लेट पर उसके नाम के नीचे लिखा था–पी पी एम एफ। इस बारे में जब एक परिचित ने पूछा तो डाक्टर ने जवाब दिया–प्राइमरी पास मिडिल फेल।

* * *

राजिक : अकबर, हमारे रायपुर जाने के लिए पैसों को इंतजाम हो गया है।

अकबर : अच्छा, कब चलें रामपुर?

राजिक : जब वहां से आने के भी पैसे इकट्ठे हो जाएं।

–संकलन आर.के. शर्मा. महानिदेशक

पत्रिका सी.आर.पी.एफ. समाचार स्वामित्व एवं प्रकाशन से सम्बन्धित अन्य विवरण

(रजिस्ट्रेशन आफ न्यूजपेपर्स सैंट्रल रूलस् के फार्म IV के नियम 8 के अधीन)

1. प्रकाशन का स्थान	– नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	– वर्ष में आठ बार
3. प्रिंटर का नाम	– जी.सी. द्विवेदी
4. नागरिकता	– भारतीय
5. पता	– ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110 003
6. प्रकाशक का नाम, नागरिकता और पता	– उपरोक्त

7. संपादक का नाम, पता और नागरिकता – उपरोक्त

8. उन लोगों के नाम व पते जो अखबार के मालिक या हिस्सेदार हों या जिनके पास कुल पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर हों। – महानिदेशक, के.रि.पु. बल, ब्लाक–1 सी.जी.ओ. काम्पलेक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003

मैं जी.सी. द्विवेदी एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी जानकारी व विश्वास के आधार पर पूर्ण सत्य हैं।

31 मार्च, 1997

ह.
जी.सी. द्विवेदी
प्रकाशक के हस्ताक्षर

हास परिहास

वर्दी में परिहास

शादी के बाद, सन् 1976 में, मेरी पोस्टिंग 38 बटालियन गंगटोक (सक्किम) में हुई। कमाण्डेन्ट ने स्वागत करते हुए सात दिन बाद घर पर चाय पीने की बात कही। मेरे घर से परेड ग्राउण्ड 100 गज की दूरी पर था। मेरी बुलन्द आवाज और सारे आदेश (कमाण्ड) घर में साफ सुनाई देते थे, जो सात दिन बाद पता चला। शुक्रवार परेड पर सुबह आठ बजे कमाण्डेन्ट एवं तीन और अफसर घर के पास पहुँचे। मैं वर्दी लगाकर कमाण्डेन्ट की रिपोर्ट दे रहा था कि मेरी पत्नी ने (जिसे सी.आर.पी. तथा परेड का बिल्कुल ज्ञान नहीं था) सभी को देखते ही जोर से कहा "गन्दे ..... हट"। मैं बौखलाया, बाकी भौंचक्के रह गये। सभी के चेहरे के भाव देखकर पत्नी ने भोलेपन से कहा" अरे क्या हुआ? ये आदेश आप तो रोज परेड पर कहते हो और सभी जवान अपने हथियार उठा लेते हैं।" (कन्धे शस्त्र जो मुंह से शायद कमाण्ड के तौर निकलता था "कन्धे धत्" और पत्नी को दूर से सुनाई पड़ता था "गन्दे हट"।)

कमाण्डेन्ट और बाकी अफसर इस सफाई को सुन कर ठहाका मार कर हँस पड़े ; मेरी साँस जो रूक सी गई थी जोर से बाहर निकली। और तब, मेरी बीबी को हैरानगी हुई कि उसने, हँसने वाली ऐसी क्या बात कह डाली।

नतीजा – अगले दिन से परेड घर से 400 गज दूर करने का आदेश दिया मैंने।

भर्ती किसी की और दु:खी कोई

मुझ में एक कमजोरी है कि जब नाई (बारबार) काम करे तो उसकी पूरी जानकारी हासिल करूं । ऐसे ही एक नाई (बारबर) के साथ हुई वार्तालाप और अन्तिम नतीजा कुछ इस प्रकार रहा : –

मैं – अरे भाई कितने साल हुये सी.आर.पी. में?

नाई – जी तीन साल से सी.आर.पी. में काम कर रहा हूं ।

मैं – हेयर कटिंग घर से सीखा या सी.आर.पी.एफ. में आने के बाद सीखा?

नाई – साहब, सी.आर.पी.एफ. में आने के बाद सीखा ।

मैं – पहले क्या करता था ?

नाई – मैं खानदानी हूं, और मोची का काम करता था ।

मैं – फिर नाई कैसे बन गया ?

नाई – जी, नौकरी ढूंढ रहा था। मेरे एक चाचा (गांव के) सी.आर.पी. में काम करते हैं । उन्होंने ही एक डी.आई.जी. साहब कहकर मुझे भर्ती करवा दिया । मोची की पोस्ट खाली नहीं थी तो बारबर में भर्ती हो गया । फिर भी कम्पनी में मोची का ही काम करता रहा ।

मैं – फिर नाई का काम कब शुरू किया?

नाई – आज सुबह सी.एच.एम. ने पकड़ लिया और आदेश दिया कि नाई भर्ती हुआ है तो बारबर का ही काम करेगा और आपके पास भेज दिया ।

मैं – (चिल्लाकर तथा घबराकर) हाय ये क्या । मेरे पर ही अपना हाथ आजमा रहा है ।

इसके पहले कि मैं सम्हलता उस मोची उर्फ नाई उर्फ बारबर ने जो मेरा हाल किया वह नीचे चित्रांकित है ।



–कमांडेंट सव्यसाची मुखर्जी
कार्यालय पु. महा.नि. (परिचालन) जम्मू कशमीर



फिलीस्तीन पुलिस संगठन प्रतिनिधिमंडल के सदस्य महानिदेशालय में बल महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल से मिलते हुए

रजि. न. 4767/87



के.रि.पु. बल महानिदेशालय में अपर महानिदेशक (उत्तर पश्चिम जोन) का कार्य भार संभालते हुए श्री एस.के. सेठी

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 11 अंक - 3 31 मई, 1997 10 ज्येष्ठ, शक 1919



जबलपुर में आए विनाशकारी भूकंप के दौरान राहत कार्यों में जुटे आर.ए.एफ. कार्मिक



सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों की दीक्षांत परेड की सलामी लेते हुए महानिदेशक श्री कौशल

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-11 अंक-3
31 मई, 1997
10 ज्येष्ठ, शक 1919

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो सेक्शन
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची



के.रि.पु. बल अधिकारियों की दीक्षांत परेड

आवडी में रक्तदान

मानवाधिकारों पर दो कोर्स सम्पन्न

जबलपुर में भूकम्प पीड़ितों को राहत

आतंकवाद विरोधी दिवस

संक्षिप्त खबरें

भुवनेश्वर में गैस एजेंसी

एड्स पर कार्यशाला

मेरी अफ्रीका यात्रा-जे.एन. कोली

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

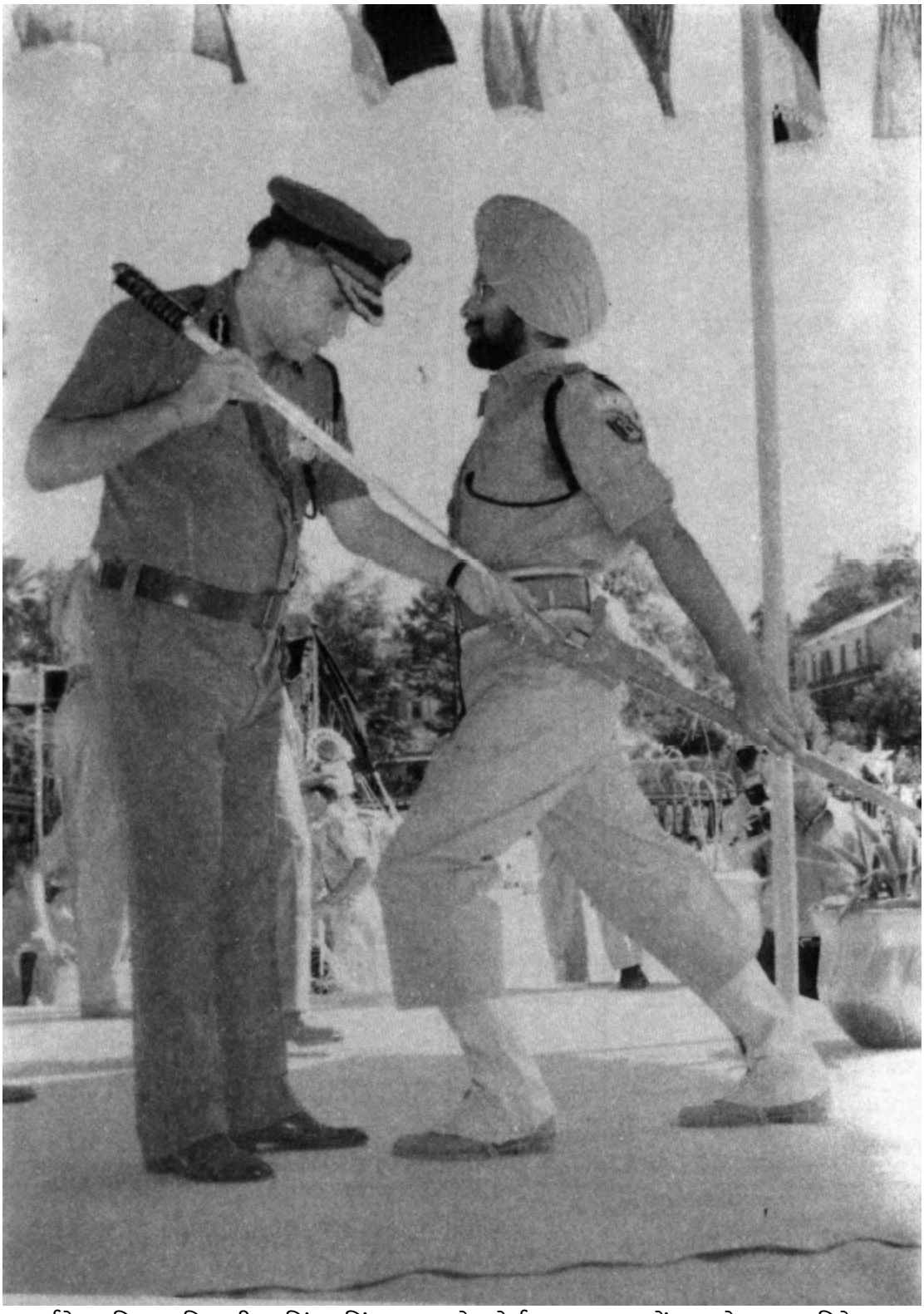
-संपादक

के.रि.पु. बल अधिकारियों की दीक्षांत परेड सम्पन्न

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल मे राजपत्रित अधिकारी पद पर सीधे भर्ती 46 पुलिस उपाधीक्षकों के 26 वें बैच की आन्तरिक सुरक्षा अकादमी, माउन्ट आबू में 9 अप्रैल, 97 को एक भव्य समारोह में दीक्षांत परेड सम्पन्न हुई। के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री मुकुंद बिहारी कौशल ने इस परेड की सलामी ली।

सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी सहायक कमांडेन्ट हरजिंदर सिंह घूमन को "स्वोर्ड आफ आनर" से सम्मानित किया गया। श्री घूमन को बाह्य विषयों, ड्रिल और हथियार चलाने में श्रेष्ठतम रहने के लिये तीन ट्राफियां दी गई। संदीप चौबे को "निदेशक का बैटन" मिला। इनके अलावा चार अन्य सफल प्रशिक्षु अधिकारियों को विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठता के लिये ट्राफियां मिलीं।

महानिदेशक श्री मुकुन्द बिहारी कौशल ने इस अवसर पर युवा अधिकारियों को श्रेष्ठ परेड के लिये बधाई दी और उज्ज्वल व सफल भविष्य की कामना की। श्री कौशल ने युवा पुलिस अधिकारियों से देश की एकता और अखंडता की रक्षा पूरे साहस और प्रतिबद्धता से करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह इसलिये और भी जरूरी हो गया है क्योंकि शान्ति स्थापना की जिम्मेदारी हम पर है और हमारा देश वर्तमान में कठिन समय से गुजर रहा है। हमारे विभिन्नताओं वाले देश व समाज में कुछ समस्यायें जटिलता के स्तर पर पहुंच गयी हैं। इससे कभी-कभी देश की अखंडता और सामाजिक परिवेश को खतरा पैदा हो जाता है। इसके फलस्वरूप देश के कुछ भागों में अर्द्ध-राष्ट्रीयता के लक्षण सामने आये हैं और इससे आतंकवाद पनपा और फैला। श्री कौशल ने अधिकारियों से कहा कि उन्हें इन तत्वों द्वारा फैलाई जाने वाली हिंसा के विरूद्ध लड़ना हैं और उसे नियंत्रित करना है। उन्होंने सलाह देते हुये कहा कि अधिकारियों को ऐसे तत्वों के साथ दृढ़ता और नियमानुकूल कठोरता के साथ निबटना चाहिये किन्तु साथ ही मानवीय दृष्टिकोण आवश्यक है क्योंकि वे सब हमारे ही दिशाहीन भाई हैं। श्री कौशल ने कहा कि ऐसा संतुलित और सक्षम अधिकारी बनने के लिये उच्च स्तर का अनुशासन और संवैधानिक नियमों के प्रति प्रतिबद्धता अपनानी और विकसित करनी होगी।



सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु अधिकारी हरजिंदर सिंह घूमन को स्वोर्ड आफ आनर भेंट करते हुए महानिदेशक

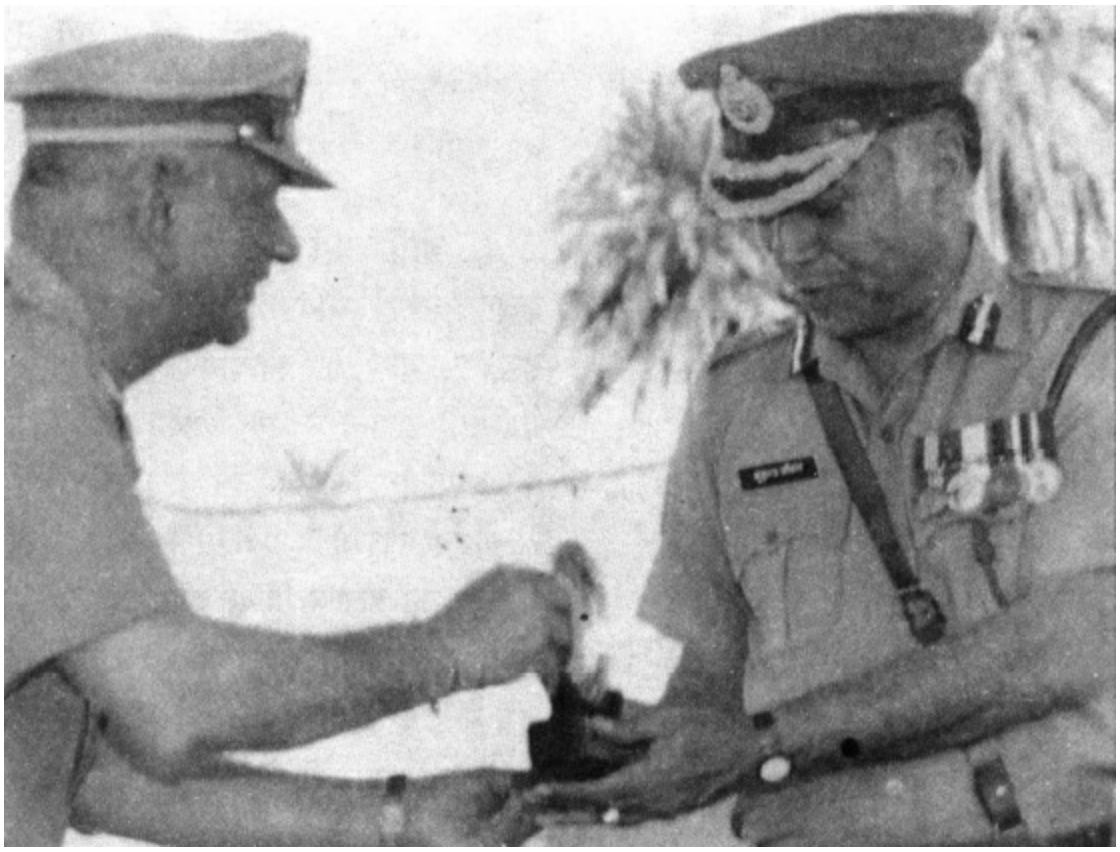


पास आउट हुये सहायक कमांडेंटों के साथ महानिदेशक श्री कौशल

इससे पूर्व आन्तरिक सुरक्षा अकादमी के निदेशक श्री कृष्ण मोहन माथुर ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और बताया कि बल के इस नये बैच का 56 सप्ताह का प्रशिक्षण 1 मार्च, 1996 को शुरू हुआ था।

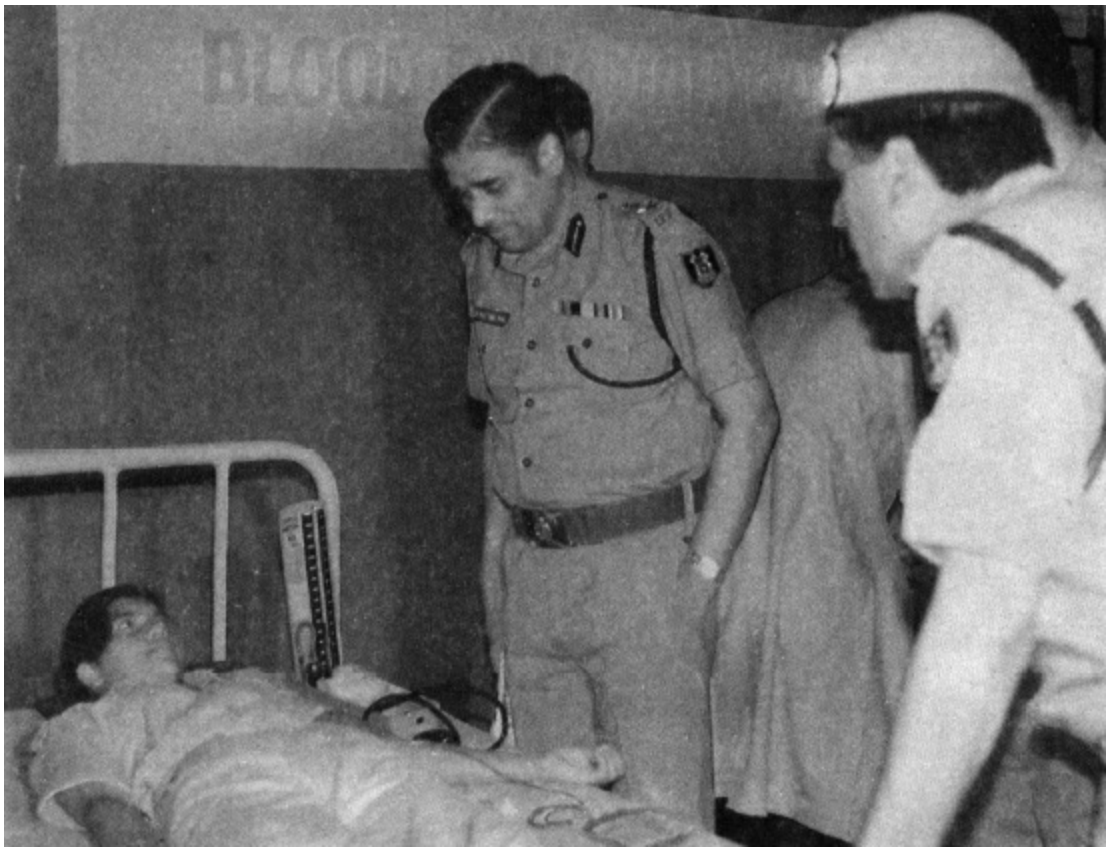
प्रारम्भ में बल के महानिदेशक को सलामी दी गई और उन्होंने परेड का निरीक्षण किया। बल की विभिन्न टुकड़ियों और सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों ने परेड कमांडर संदीप चौबे के नेतृत्व में धीमी तथा फिर तेज गति से मार्च पास्ट प्रस्तुत किया।

महानिदेशक श्री कौशल ने विभिन्न क्षेत्रों के श्रेष्ठतम युवा अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान किये। सहायक कमांडेंट घूमन के अतिरिक्त पांच अन्य अधिकारियों को ट्राफियां मिलीं। खेल, अनआर्मड कम्बैट और राक क्लाइम्बिंग में सर्वश्रेष्ठ आये विनोद टोपो को तीन ट्राफियां दी गई। अमित कुमार सिंह को आन्तरिक विषयों के लिये, कुमार जय सिंह को भाषण, विकास सोदाई को फायरिंग तथा सुरेश एस. को शारीरिक प्रशिक्षण के लिये ट्राफियां दी गई।



महानिदेशक को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए अकादमी के निदेशक डा. माथुर

आवडी में रक्तदान शिविर



रक्तदान शिविर में विशेष महानिदेशक श्री कार्तिकेयन

ग्रुप केन्द्र आवडी में 17 अप्रैल, 97 को लायंस क्लब, चेन्नई के सहयोग से एक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों सहित बल के सभी रैंकों के 1003 कार्मिकों ने रक्तदान किया। रक्त-दान करने वालों में दक्षिणी क्षेत्र के विशेष महानिदेशक श्री डी.आर. कार्तिकेयन भी शामिल थे। लायंस क्लब के अनुसार आयोजित होने वाला यह अब तक का सबसे बड़ा रक्तदान शिविर था।

रक्तदान शिविर का उद्घाटन श्री डी.आर. कार्तिकेयन ने किया तथा उनके साथ उनकी पत्नी ने भी रक्तदान में हिस्सा लिया। इस मौके पर बल के अधिकारियों सहित लायंस क्लब तथा रक्तबैंक के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

बटालियनों द्वारा जन सेवा

असम के बरपेटा जिले में कानून-व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए सी.आर.पी.एफ. की 36वीं बटालियन अपने मुख्य काम को तो बखूबी अंजाम दे रही है पर इसके साथ-साथ वह समय-समय पर ग्रामीण लोगों के लिए चिकित्सा शिविर लगाकर व अन्य तरीकों से भी मदद करती रहती है।

3 से 18 मार्च, 97 तक 36 वीं बटालियन ने मुफ्त चिकित्सा तथा औषधि वितरण का कार्य विभिन्न गांव अंचलों में शुरू किया। इस अभियान की शुरूआत 36वीं

बटालियन के डाक्टर लौरेंस बांडो के नेतृत्व में बरपेटा लाबदांगगुड़ी तथा अन्धायीबारी के बारखुण्डी एलपी स्कूल में एक मुफ्त चिकित्सा तथा औषधि वितरण शिविर के रूप में हुई। शिविर उप कमांडेंट एस भट्टाचार्य के नेतृत्व में आयोजित हुआ जिसमें नरसिंह-बाड़ी में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा हेतु स्थित फिक्सट पिकेट के प्रभारी एएसआई पी सी मेधी तथा ग्राम प्रमुख अर्जुन बसुमतारी ने भाग लिया।

शिविर में बच्चे, बूढ़े तथा वृद्ध महिलाओं की भागीदारी देखकर पता चल जाता हैं कि यह क्षेत्र चिकित्सा के मामले में कितना पिछड़ा हुआ है। शिविर में भारी संख्या में आये मरीजों का इलाज करने के साथ-साथ भारी मात्रा में औषधियां वितरित की गयीं। साथ ही विभिन्न स्थानों के स्कूलों के बच्चों में स्लेट-पेंसिल तथा खेल सामग्रियां वितरित की गयी।

बोकाजान असम स्थित 73 बटालियन ने सिविक एक्शन कार्यक्रम के तहत 26 मार्च, 97 को बोकाजान के अपर देवपानी इलाके में एक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। कैंप के दौरान इस अत्यधिक पिछड़े इलाके में लगभग 700 मरीजों का इलाज किया गया तथा उन्हें मुफ्त दवाइयां दी गयी। दस वर्ष से कम उम्र के बच्चों को नोट बुक, पेंसिल, तथा अन्य पाठ्य सामग्री भी वितरित की गयी।

इस कैंप के बाद 27 मार्च, 97 को इसी बटालियन द्वारा नामबर आदर्श गांव के एक विद्यालय में एक और मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें मलेरिय तथा हैजे जैसे रोगों से पीड़ित 925 ग्रामीणों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी गयी। इस कैंप स्थल पर एक कैंटीन की स्थापना भी की गयी जिसमें नागरिकों को सस्ती दरों पर रोजमर्रा के सामग्री उपलब्ध करायी गयी।

दस छात्रों को छात्रवृत्ति

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कार्मिकों के दस प्रतिभाशाली बच्चों को अपनी पढ़ाई के लिये 250/- रू. प्रतिमाह छात्रवृत्ति मिलेगी। ये छात्रवृत्तियां जिंदल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रदान की जायेगी।

गत वर्ष अक्टूबर में बल के महानिदेशक श्री मुकुन्द कौशल ने रोटरी पोलियो आफिस, नई दिल्ली के निदेशक श्री आर.एल. कपूर से मुलाकात होने पर उन्हें कर्त्तव्य पर मारे गये बल कार्मिकों के बच्चों के लिये कुछ छात्रवृत्तियों के लिए कहा था।

जवाब में छात्रवृतियों के लिये उपयुक्त बच्चों के नाम मांगे गये। फलस्वरूप बल के मृत और आर्थिक रूप से कमजोर कार्मिकों के 10 प्रतिभाशाली बच्चों के नाम जिंदल ट्रस्ट को भेज दिये गये हैं। इनमें आठ छात्र 5वीं से 11वीं कक्षा तक के, एक छात्र बी.ए. प्रथम वर्ष और दूसरा एम.एस.सी. प्रथम वर्ष का है।

मानवाधिकारों पर दो कोर्स सम्पन्न



प्रमाणपत्र देते हुये बल महानिदेशक श्री कौशल

आर.ए.एफ. मुख्यालय, नई दिल्ली में इस माह "अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून व मानवाधिकार" पर तीन-तीन दिन के दो कोर्स आयोजित किये गये। पहला कोर्स आर.ए.एफ. अधिकारियों के लिये था और दूसरा कोर्स के.रि.पु. बल अधिकारियों के लिये। दोनों में लगभग ३०-३० अधिकारियों ने भाग लिया और कोर्स के अंत में उन्हें प्रमाण पत्र दिये गये। इनका आयोजन अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रास समिति (आई.सी.आर.सी.), नई दिल्ली ने किया।

२१ मई, '९७ को आर.ए.एफ. अधिकारियों के लिये आयोजित पहले कोर्स के समापन पर महानिदेशक के.रि.पु. बल श्री मुकुंद कौशल ने अपने उद्बोधन में कहा कि बल के कार्मिक जनता का विश्वास जीत कर, उनके पूरे सहयोग से अपने उद्देश्य में सफलता पा सकते हैं। ये तभी संभव है, जब वे बेहद भड़काऊ तथा कठिन स्थितियों में भी मानवाधिकारों की कड़ाई से रक्षा करें। पंजाब और जम्मू कशमीर इस बात के ताजा उदाहरण हैं, जहां कि सुरक्षा बलों ने जन सहयोग प्राप्त कर स्थितियों को अपने पक्ष में कर लिया।

के.रि.पु. बल अधिकारियों के लिये आयोजित दूसरे कोर्स के २८ मई, ९७ को समापन पर महानिरीक्षक उत्तरी क्षेत्र श्री डी.पी. सिन्हा ने कहा कि बल कार्मिकों को आतंकवादियों तथा कानून व व्यवस्था भंग करने वालों से निपटने में सही तरीके अपनाने चाहिये। हर मनुष्य का सम्मान बनाये रखने वाले ये तरीके हमारे देश के संविधान की धाराओं में निहित हैं और उन्हें सारे देश की स्वीकृति प्राप्त है। श्री सिन्हा ने कहा कि आतंकवादियों के गलत तरीकों को न तो समाज की स्वीकृति प्राप्त है और न लोगों की।

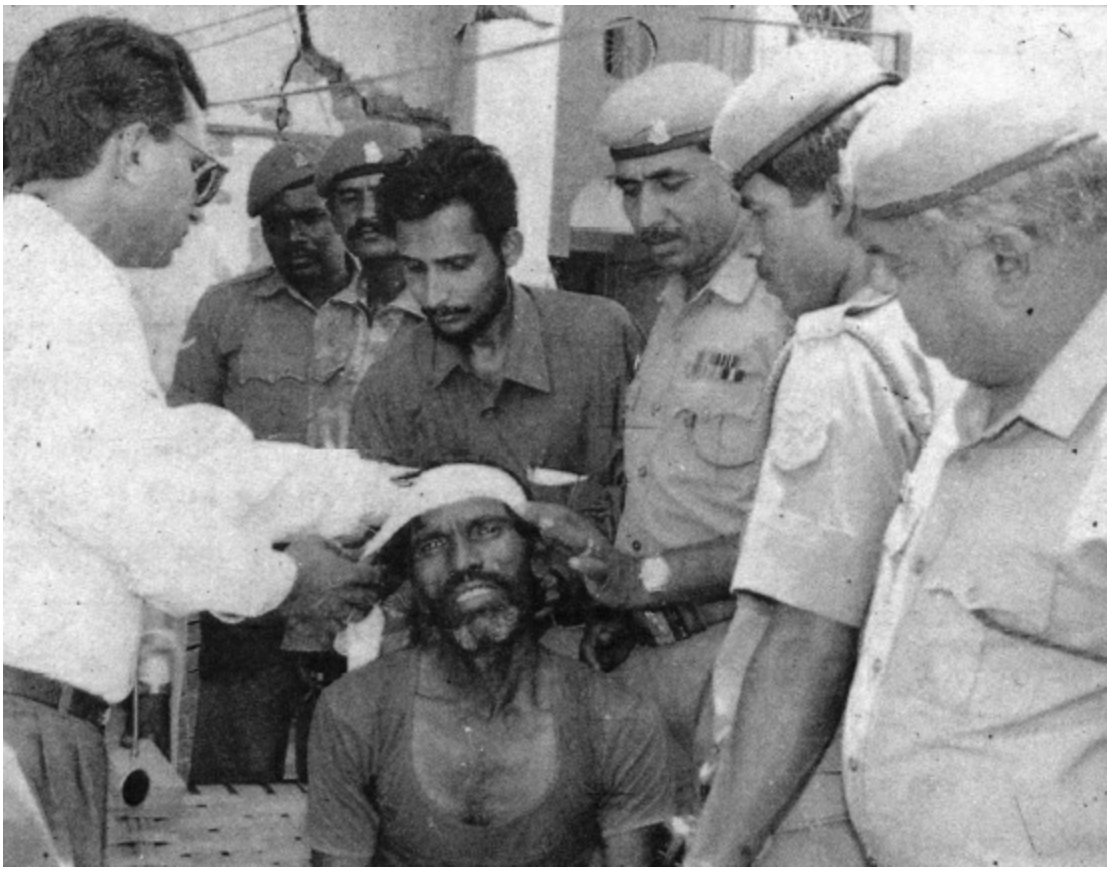
मानवाधिकार पर इन कोर्सो का संचालन अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रास समिति

(आइ.सी.आर.सी.) नइ दिल्ली के श्री प्रफुल्ल बख्शी, श्री ब्रूस बिबर व डोनेस एलिस्टोन और अवकाश प्राप्त महानिदेशक के.रि.पु. बल डा. एस. सुब्रह्मण्यन ने किया। कोर्स में मानवाधिकारों से जुड़े उन सभी पहलुओं और कानूनो पर विस्तार से प्रकाश डाला गया जिन्हें अपने कर्तव्य पालन के दौरान सैनिकों को ध्यान में रखना चाहिये।

जबलपुर में भूकम्प पीड़ितों को राहत



जबलपुर में आर.ए.एफ. कर्मी न रहने लायक घर गिराते हुये



जबलपुर में बल चिकित्सकों द्वारा घायलों का इलाज

22 मई, 1997 को सुबह आये भूकम्प और जबलपुर (मध्य प्रदेश) मे हुई जन-धन की हानि को जानकर वहां आर.ए.एफ. को भेजने का तत्काल निर्णय लिया गया। अगले दिन आर.ए.एफ. की दो कम्पनियां भोपाल से जबलपुर के लिये रवाना हो गई और साथ ही जबलपुर से निकटतम के.रि.पु. बल और आर.ए.एफ. के चार केन्द्रों से चार चिकित्सा दल दवाइयों सहित रवाना कर दिये गये।

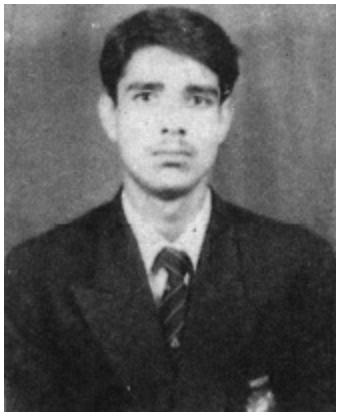
आर.ए.एफ. कर्मियों ने जबलपुर पहुंचकर वहां भूकम्प प्रभावित इलाकों में लोगों को राहत व सहायता पहुंचाई। भूकम्प से बड़े पैमाने पर क्षतिग्रस्त घरों को बल कर्मियों ने खाली करवाया, न रहने लायक घरों को गिराने में सहायता की और बहुत से घरों के पूरी तरह ध्वस्त भागों के मलवे को हटाया।

जबलपुर पहुंचे चिकित्सा दलों में डाक्टर, फार्मासिस्ट, पुरूष व महिला नर्से शामिल थीं। उन्होंने प्रभावित इलाकों में जाकर घायलों का उपचार किया। साथ ही उन्होंने इन इलाकों में सामान्य मरीजों का भी उपचार किया और दवायें दी। ये चारों चिकित्सा दल वहां भोपाल, नागपुर, इलाहाबाद और रामपुर से गये थे।

संदीप कोंतिया को भीम पुरस्कार

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सब इंस्पेक्टर संदीप कोंतिया को हरियाणा सरकार द्वारा

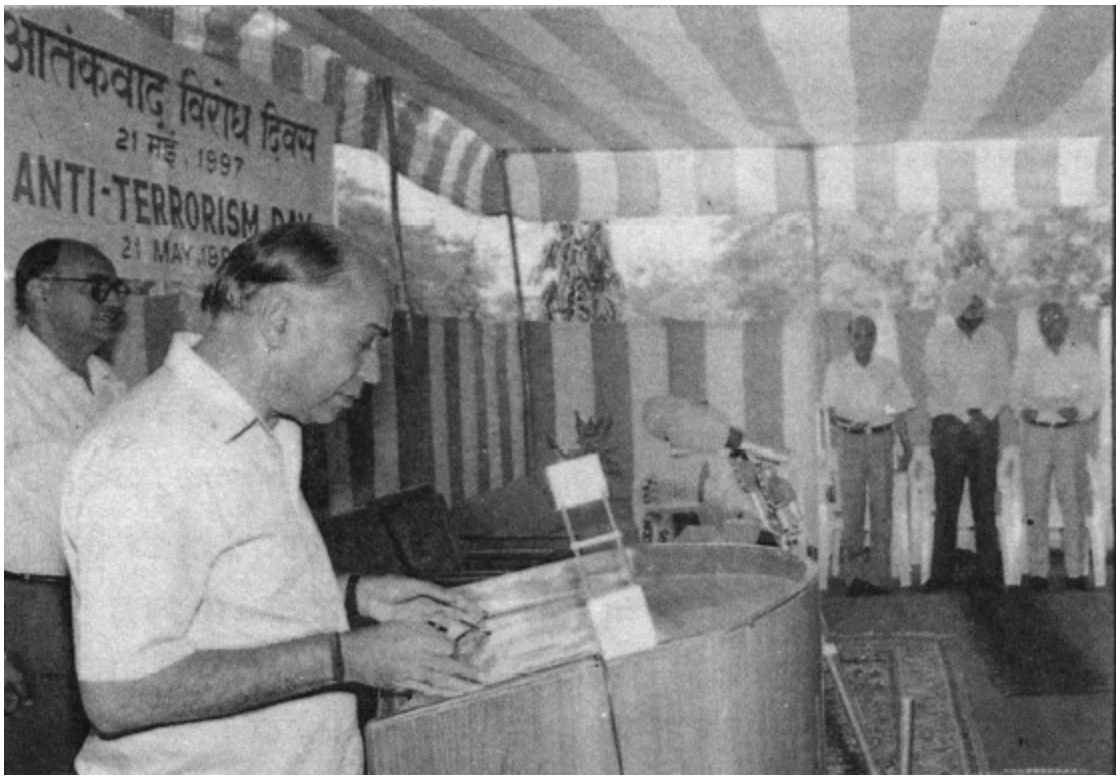
भीम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। हरियाणा सरकार के खेल विभाग ने संदीप को यह सम्मान दिया। संदीप इस समय के.रि.पु. बल की केंद्रीय हैंडबाल टीम के सदस्य हैं। उन्हें यह पुरस्कार 2 मई, 97 को चंडीगढ़ स्थित हरियाणा भवन में हरियाणा के राज्यपाल ने प्रदान किया।



संदीप कोंतिया

हैंडबाल में भीम पुरस्कार प्राप्त करने वाले संदीप पहले खिलाड़ी हैं । संदीप 1995 में ढाका में हुए यूथ कामनवेल्थ हैंडबाल चैंपियनशिप मुकाबलों में शामिल होकर स्वर्ण पदक जीत चुके हैं। प्रतियोगिता में वह सर्वश्रेष्ठ गोल दागने वाले खिलाड़ी भी रहे। 1996 में जयपुर में हुयी पहली साऊथ एशियन फेडेरेशन हैंडबाल प्रतियोगिता में भी उन्हें स्वर्ण पदक मिला। संदीप 1994, 1995 के जूनियर राष्ट्रीय खेलों तथा 1994 के पूना में हुए राष्ट्रीय खेलों में भी स्वर्ण पदक जीत चुके है। संदीप का चयन अक्टूबर, 1997 में जापान में होने वाली एशियन चैंपियनशिप की तैयारी में लगी टीम की कोचिंग में भी कर लिया गया है ।

आतंकवाद विरोधी दिवस



आतंकवाद विरोधी दिवस पर बल कार्मिकों को शपथ दिलाते हुये महानिदेशक

स्व. श्री राजीव गांधी की पुण्य स्मृति में 21 मई को पूरे देश में आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर नागरिकों ने आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष तथा आपसी भाईचारे के लिए शपथ ली। बल के मुख्यालय में कार्मिकों को यह शपथ बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल ने दिलायी। बल के कार्मिकों ने शपथ ली कि :-

"हम भारतवासी अपने देश की अहिंसा एवं सहनशीलता की परम्परा में दृढ़ विश्वास रखते हैं तथा निष्ठापूर्वक शपथ लेते हैं कि हम सभी प्रकार के आतंकवाद और हिंसा का डट कर विरोध करेंगे। हम मानव जाति के सभी वर्गों के बीच शान्ति, सामाजिक सद्भाव तथा सूझबूझ कायम करने और मानव जीवन को खतरा पहुंचाने वाली और विघटनकारी शक्तियों से लड़ने की भी शपथ लेते हैं।"

जोखिम निधि लाभ

अप्रेल और मई, 97 महीनों में केन्द्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के क्रमश: 23 मामलों में 16,67,500 रू. और 42 मामलों में 27,96,340 रू. देने स्वीकृत किए गए। इसी प्रकार अप्रेल में अक्षमता के 4 मामलों में 46,000 रू. और मई में 7 मामलों में 78,000 रू. देने स्वीकृत किए गए।

जोखिम निधि "बी" स्पेशल कल्याण योजना के अधीन अप्रेल, 97 में मृत्यु के 4 मामलों में 1,40,000 रू. और मई, 97 में 13 मामलों में 4,55,000 रू. देने स्वीकृत किए गए।

संक्षिप्त खबरें

के.रि.पु. बल ने 237 आतंकवादी पकड़े

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने माह मई, 97 में देशभर में 237 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुयी 12 मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 5 आतंकवादी मारे गए।

इनमें से सर्वाधिक 176 आतंकवादी पूर्वोत्तर राज्यों में गिरफ्तार किये गये जिसमें अकेले 124 असम व 36 त्रिपुरा में पकड़े गये। इनके अलावा जम्मू कश्मीर में 24 तथा बिहार में 30 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। जम्मू कश्मीर में पकड़े गये आतंकवादियों में 7 हिजबुल मुजाहीद्दीन, 3 अंलउमार गुट, 2 अलजेहाद तथा एक-एक जे.के. एल.एफ. एवं हरकत उल अंसार गुट के थे। पूर्वोत्तर राज्यों में त्रिपुरा के आतंकवादियों में 5 एन.एल.एफ.टी., एक-एक ए.टी.टी.एफ. व ए.टी.बी.एस.एफ. तथा 9 असम के उल्फा आतंकवादी थे।

इस दौरान बल के कार्मिकों ने 71 घातक हथियार तथा 2997 गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में 11 एक.के. 47, 12 एक.के. 56, 26 पिस्तौलें व रिवाल्वरें, 3 यू.एम.जी., 7 देश में बनी बन्दूकें तथा पिस्तोलें तथा एक राकेट लांचर शामिल है। 41 हथियार अकेले जम्मू-कश्मीर राज्य में ही बरामद किए गए।

इस दौरान हुई मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में बल के 19 बहादुर जवान वीरगति को प्राप्त हुए तथा 20 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए।

माह अप्रैल, 97 में बल के मृत कार्मिक

माह अप्रैल, 97 में बल के निम्न कार्मिक मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शौक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

नायक जे.एस.माझी (32 बटा.), सफाई कर्मचारी के.करव्पन (69 बटा.), है.कां. ईश्वरी दत्त (आर.टी.सी.-4), कां. ध्रूव नारायण सिंह (182 बटा.), कुक अब्दुल जब्बार (49 बटा.), कां. एन.एस. पठानिया (121 बटा.). का. शिवनाथ प्रसाद (116 बटा.), है.कां. शिव बालक सिंह (109 बटा.), है.कां. हरी सिंह (82 बटा.), कां. प्रेम नंदन (94 बटा.), नायक गुरचरण सिंह (53 बटा.), नायक टेलर पी. सुरेन्द्रन (ग्रु.के. आवडी), कां. ड्राइवर अभय कुमार (4 बटा.), नायक ड्राईवर एम.आर. कुटटी (ग्रु.के. पल्लिपुरम), है.कां. रविंद्र सिंह (98 बटा.), नायक के करकेटा (130 बटा.), उ.नि. गजपाल सिंह नेगी (ग्रु.के. आवडी), उ.नि. राम किशन मीना (14 बटा.), इंस्पेक्टर नाम देव पी. इंगले (78 बटा.), कां. सूरत सिंह (35 बटा.), है. कां. राम पुखर यादव

(73 बटा.) तथा ला.ना. सुखराम पाल (4 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त सूचना के अनुसार माह फरवरी, 97 में 51 बटा. के सफाई कर्मचारी पाल बाल्मिकी भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

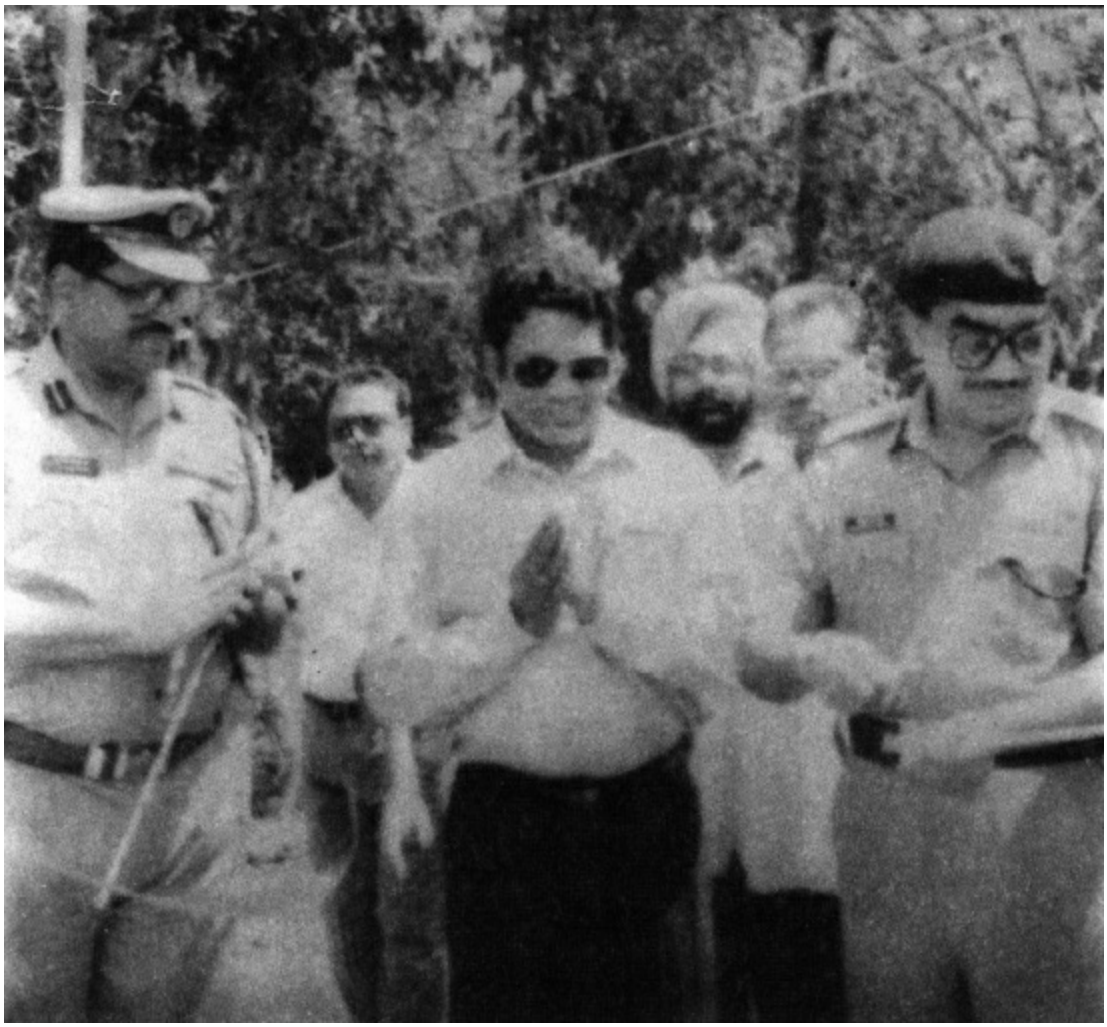
बल के कार्मिक सम्मानित

वर्ष 1995 की भांति वर्ष 1996 में भी केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ग्रुप केन्द्र, के.रि.पु. बल, पिंजौर के अपर पुलिस उप महानिरीक्षक, श्री स्वर्ण सिंह को देश भर में अधिकारी वर्ग का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्रदान किया गया है। केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद द्वारा 29 मार्च, 97 को नई दिल्ली में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में श्री जय नारायण निषात, केन्द्रीय उर्जा-स्रोत मंत्री ने शाल, प्रशस्ति-पत्र तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर श्री स्वर्ण सिंह को सम्मानित किया।

स.उ.नि. (म) एम वहीदा (ग्रु.के. नीमच) को अहिंदी भाषी कार्मिकों के लिये हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का अ.भा. तृतीय पुरस्कार मो. रऊफ अंसारी (ग्रुप केन्द्र जलंधर) को हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता में अखिल भारतीय तृतीय पुरस्कार मिला।

इनके अलावा हिन्दी टंकण प्रतियोगिता में राज्य प्रथम पुरस्कार पाने वालों में सुनील पटेल (ग्रु.के. भुवनेश्वर - 57.6 शब्द प्रति मिनट), संजय शमा (34 बटा. - 54.7 शब्द प्रति मिनट) और राम लाल (ग्रुप.के. बनतालाब - 52.3 शब्द प्रति मिनट) शामिल हैं।

भुवनेश्वर में गैस एजेंसी



ग्रुप केन्द्र भुवनेश्वर में रोहित गैस एजेंसी का उद्घाटन करते हुए पूर्वी सैक्टर के महानिरीक्षक श्री आर.पी.सिंह

देश के उत्तर पूर्वी हिस्से में 7 फरवरी, 1996 को आतंकवादियों द्वारा लगायी गयी घात में शहीद हुए 66 बटा. के सहायक कमांडेट रोहित श्रीवास्तव, है. का. ताज मुहम्मद, नायक/ड्राइवर एस. के. सिंह, नायक रेडियो आपरेटर वी.एन. श्यामजी तथा कांस्टेबल जोगेश्वर मल्लिक की स्मृति में के.रि.पु. बल कैम्प भुवनेश्वर में एक गैस एजेंसी 'रोहित सी.आर.पी.एफ. गैस एजेंसी' की स्थापना की गयी है। एजेंसी का उद्घाटन पूर्वी सेक्टर के महानिरीक्षक श्री आर.पी. सिंह ने 29 अप्रैल, 97 को किया।

एजेंसी की स्थापना भारत पेट्रोलियम कम्पनी द्वारा की गयी है तथा इस की स्थापना से कैम्पस में रहने वाले बल के कार्मिकों के 600 परिवार फायदा उठा सकेंगे। एजेंसी फिलहाल 500 नये कनेक्शन तथा 500 डबल सिलिंडर कनेक्शन प्रदान कर रही है। एजेंसी की स्थापना लगभग 1,30,000 रूपये के पूंजी निवेश से हुयी है, जिसका वहन कल्याण तथा अन्य निधियों से किया गया हैं। एजेंसी के लिए इमारत का निर्माण श्रमदान से किया गया है, तथा इस एजेंसी से होने वाली आय कल्याण निधि में जाएगी।

ज्ञान गंगा

बिना प्राणपण चेष्टा के कुछ भी नहीं प्राप्त होता है।

सर पी. सिडनी

* * *

जो अनेकों कलाओं की चुस्की लेता है वह एक को भी नहीं पी पाता है।

फुलर

* * *

धर्म एक है, यद्यपि उसके संस्करण अनेक हैं।

जार्ज बरनार्ड शा

* * *

सब मनुष्य हृदय से चाहते हैं कि सत्य उनके पक्ष में बोले, पर सत्य के पक्ष में बोलने वाले बहुत ही कम होते हैं।

आर्क बिशप हेटले

* * *

जो देश राष्ट्रीय तौर पर आत्म बलिदान करने की सामर्थ्य रखता है उसका भविष्य सुरक्षित है।

अरविन्द

संकलनकर्ता
उप निरीक्षक *(मं)*
राजेन्द्र कुमार शर्मा
महानिदेशालय

आओ हंसे

एक बार भारत, जापान व अमेरिका के प्रतिनिधि अपने देश की प्रगति का व्याख्यान कर रहे थे। अमेरिका के प्रतिनिधि ने बोला कि हमारे देश ने एक ऐसा हवाई

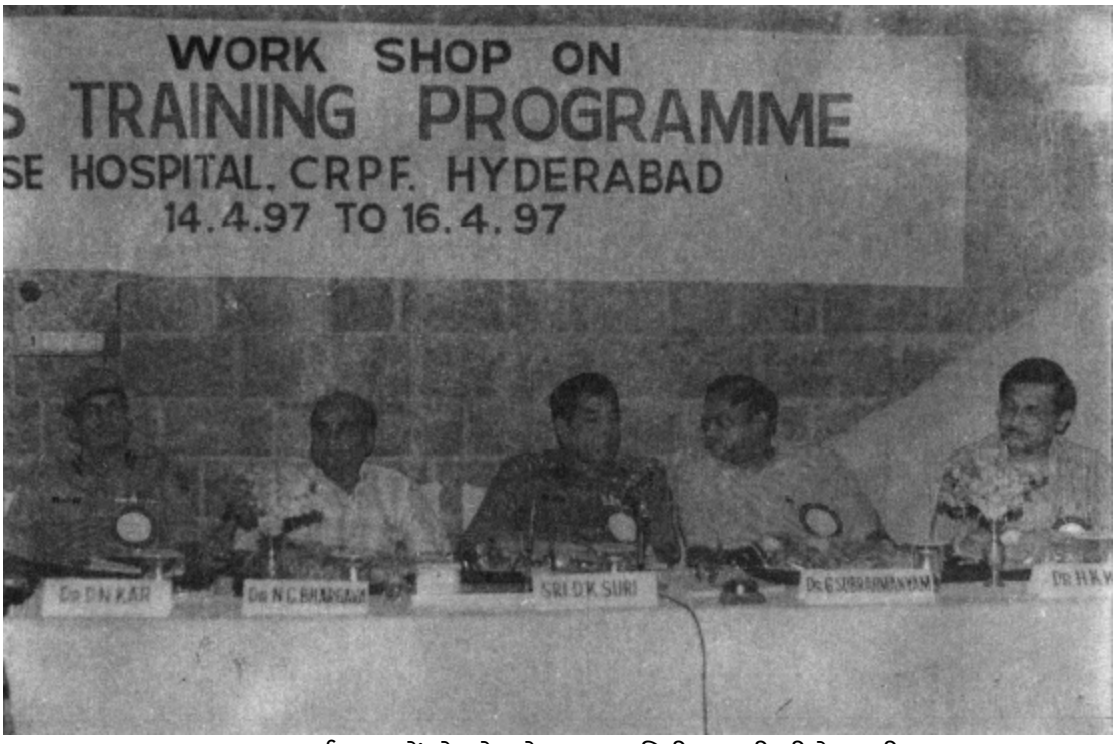
जहाज बनाया है जो आकाश को छूते हुए जाएगा, तो भारत व जापान के प्रतिनिधि बोले ऐसा कैसे हो सकता है। तो वो बोला मेरा मतलब थोड़ा सा नीचे, फिर जापान का प्रतिनिधि बोला कि हमने एक ऐसी पनडुब्बी बनाई है कि वह समुद्र में जमीन को छूते हुए चलेगी। इसमें भारत व अमेरिका के प्रतिनिधियों ने पूछा कि ऐसा कैसे सम्भव है। वो बोला मामूली सी जमीन के ऊपर चलेंगी, अंत में भारत के प्रतिनिधि से दोनों ने कहा कि आप भी कोई प्रोग्रेस बताइये। भारत में तो इस प्रकार की कोई प्रगति थी नहीं, तो भारत का प्रतिनिधि बोला कि इंडिया में नाक से खाना खाते है, इस पर वे दोनो बोले हाऊ इट इज पौसीबल ? तो वह बोला कि मेरा मतलब थोड़ा सा नीचे से।

* * *

एक बार एक मीटिंग में इंडिया के प्रतिनिधि के सामने अपने बड़प्पन को दर्शाते हुए देश की प्रगति रिपोर्ट देते हुए अमेरिका का रक्षा व कानून मंत्री बोला कि हमने इतनी प्रगति कर ली है कि कोई भी बैंक डकैती, लूटपाट, खून खराबे आदि की हम २४ घन्टे में दोषी व्यक्तियों का पता लगा लेते है एवं ..... उसकी बात पूरी होने से पहले ही इंडिया वाला बोला कि इस मामले में तुम हमारे सामने फेल हो चूंकि हमें तो 24 घन्टे पहले पता होता है कि कौन बैंक लूटेगा, खून कौन करने वाला है आदि।

उ.नि. (एम) राजेन्द्र कुमार शर्मा
महानिदेशालय

एड्स पर कार्यशाला



एड्स कार्यशाला में बोलते हुये उप महानिरीक्षक श्री डी.के. सूरी

के.रि.पु. बल बेस अस्पताल हैदराबाद ने 14 से 16 अप्रैल, 1997 तक राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, स्वास्थ्य मंत्रालय के सहयोग से एड्स पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण प्रोजेक्ट, हैदराबाद ने भी इस कार्यशाला के आयोजन मे मदद दी। कार्यशाला का आयोजन दक्षिणी क्षेत्र स्थित बल के डाक्टरो तथा अन्य चिकित्सकीय स्टाफ को एड्स के विषय में अधिक संवेदनशील करने तथा इस के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध कराने के लिए किया गया। उप महानिरीक्षक हैदराबाद श्री डी.के. सूरी ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया।

इस तीन दिवसीय कार्यशाला में विचार किया गया कि एड्स तथा एच.आई. वी. पोजीटिव मामलों से कैसे निबटा जाए तथा के.रि.पु. बल तथा अन्य नागरिक मामलों में भी इसकी रोकथाम और प्रभावित मामलों में देखभाल किस प्रकार की जाए।

कार्यशाला में दक्षिण सेक्टर के 35 प्रतिनिधि शामिल हुए और कार्यशाला मे एड्स के क्षेत्र में कार्य करने वाले विख्यात चिकित्सकों तथा अन्य विशेषज्ञों ने कार्यशाला का संचालन किया।

मेरी अफ्रीका यात्रा : आदिवासी कबीलों में गुजरे कुछ अविस्मरणीय पल

जे.एन. कोलो

दूर-दूर तक फैले सघन व भयानक जंगलों की खामोशी को चीरता हुआ हमारा पुष्पक विमान (हैली कॉप्टर) निरन्तर अपनी निर्दिष्ट दिशा की ओर बढ़ता जा रहा था। अनुमानित समय व दूरी के पश्चात् भी घने वन प्रदेश में हमें हमारा गन्तव्य स्थल कहीं परिलक्षित नहीं हो रहा था। चिन्तित मुद्रा में चालक ने पुन: मानचित्र में अपने गन्तव्य स्थल की दिशा व दूरी का आंकलन किया तथा अविलम्ब बेतार सन्देश द्वारा अपने मुख्यालय से सम्पर्क किया। उस समय हम अपने मुख्यालय से लगभग 800 कि.मी. उत्तर पूर्व क्षेत्र में आसमान में उड़ रहे थे। मुख्यालय से सम्पर्क कर सुनिश्चित किया गया कि हम सही दिशा की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन घने जंगलों व सटे हुये वृक्षों के कारण हमें भू-भाग नजर नहीं आ रहा था, परन्तु कुछ ही क्षणों में चालक की पैनी दृष्टि ने अपने लक्ष्य को खोज ही लिया और हमारा हैलीकॉपटर धरा की ओर नीचे उतरने लगा। हैलीकॉप्टर से नीचे उतरते ही सब लोग अपना-अपना सामान संभालने में लग गये थे, ताकि आगे का कार्य समय से पूर्ण हो सके। मैंने घड़ी की ओर दृष्टि घुमाई- तीन बजने को थे और सूर्यास्त से पूर्व हमें अपने-अपने तम्बू गाड़ लेना आवश्यक था, क्योंकि भयानक जंगल में जंगली जानवरों का डर था। शेर व भालू से ज्यादा डर हाथियों के झुण्डों का था, अत: अपने कैम्प के सुरक्षात्मक उपाय करने भी आवश्यक थे।

हमारे हैडक्वार्टर से लगभग 850 किमी उत्तर-पूर्व में घने जंगलों के बीच फैले इस 'सामाकेलेंगे' क्षेत्र में 'बान्तु' नामक आदिवासी कबीलों का बाहुल्य है। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से आठ सदस्यों का हमारा यह दल इस क्षेत्र के जंगली कबीलों पर सर्वेक्षण करने तथा इनको वस्त्र व दवाइयाँ उपलब्ध कराने हेतु भेजा गया था। अत: इन लोगों से सीधे सम्पर्क हेतु हमारे दल में दो स्थानीय कार्यकर्ता भी थे, जो इनकी भाषा, व्यवहार व तौर तरीकों से पूर्णत: परिचित थे। दो व्यक्ति सुरक्षा गार्ड व सहायक के रूप में तथा एक महिला सहित हम चार अधिकारी थे। सभी लोग मिल-जुल कर कार्य में जुटे हुये थे। हमने सबसे पहले एंटीना गाड़कर वायरलैस स्टेशन स्थापित किया और मुख्यालय को हमारे पहुंचने की सूचना दी। तभी हमारे एक सहायक ने थर्मस से निकालकर गर्मागर्म चाय व बिस्कुट प्रस्तुत की। शाम होने को थी, कार्य समाप्ति के पश्चात् हमने आस-पास के क्षेत्र का जायजा लेना उचित समझा - सूर्यदेव सारे दिन की थकान से उद्विग्न अपनी लालिमा को समेटते शीघ्र अस्ताचल की ओर समा जाने को बेचैन थें। पास बह रहे स्वच्छ जल के झरने की कल-कल वातावरण में मधुर संगीत बिखेर रही थी। कलरव करते पंछी पंक्ति बद्ध अपने नीड़ों की ओर लौट रहे थे। मन्द-मन्द सुगन्धित पवन हल्के झोंको के साथ जैसे हमारा स्वागत कर रही हो। घने वन प्रदेश में प्रकृति का यह मनोरम व रमणीय दश्य बरबस ही मन को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। मन कर रहा था कि प्रकृति के इस अनुपम सौन्दर्य को बस यू हीं अपलक निहारता रहू। इतने में ही सुरक्षा गार्ड ने वापस कैम्प में लौटने की सलाह दी। संध्या हो चुकी थी रात्रि की काली चादर का रंग स्याह होता जा रहा था। मैंने एक दृष्टि आसमान में दौड़ाई - चन्दा मामा मुस्करा रहे थे, हमेशा की तरह, जिन्हें

अपने शैशवकाल से मैं निहारता आ रहा था। मेरे अपनों में से यही तो एक थे जो यहाँ भी मेरे साथ थे। कैम्प की सुरक्षा व्यवस्था से हम सन्तुष्ट थे। भोजनोपरान्त अगले दिन का कार्यक्रम तय किया गया। मधुर कल्पनाओं में खोये हुये कब निद्रा देवी ने अपने आगोश में समेट लिया, पता नहीं।

अगले दिन अपने पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार हम पास के ही एक आदिवासी कबीले में गये, शायद उन्हें हमारे आगमन की पूर्व सूचना मिल चुकी थी, कबीले के सरदार सहित अन्य लोगों ने भली-भाँति हमारे दल का स्वागत किया। हमारे साथी दुभाषिये की मदद से परिचय व आपसी विचारों का आदान-प्रदान हुआ। हमने अपने प्रयोजन तथा कार्यक्रम से उन्हें अवगत कराया, तत्पश्चात् कबीले का आत्मरिक दृश्यावलोकन किया। सभी घर घास-फूस व लकड़ी से निर्मित थे, चूँकि अफ्रीका के इन जंगलों में लम्बी तथा अच्छी किस्म की घास व लकड़ी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अत: ये झोंपड़ीनुमा घर सुन्दर व मजबूत प्रतीत हो रहे थे। लगभग अर्द्ध नग्न से बालक सहमे-सहमे से हमें अजीब कौतूहल से देख रहे थे। स्त्री-पुरूषों के तन पर भी वस्त्रों का काफी अभाव था। दवाइयों व आवश्यक वस्तुओं के वितरण के पश्चात् अपने साथी दुभाषिये की मदद से हमने उनका उपयोग व तरीके भी उन्हें बताये। हमने भी उनके बारे में आवश्यक जानकारी एकत्र की। इन वनों में केला, आम सहित अन्य बहुत से फल व कन्दमूल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण इन्हें भोजन की समस्या नहीं है, फिर भी मक्का व कुछ कन्दमूल ये उगाते भी हैं। दिन में पुरूष शिकार पर निकल पड़ते हैं । मुद्रा का यहाँ प्रचलन नहीं है, बल्कि वस्तु विनिमय प्रणाली है। अत: दूसरे कबीलों से ये एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का आदान-प्रदान करते है। एक विषय पर वहाँ भिन्नता देखने को मिली - अंगोला (अफ्रीका) के शहरी जीवन में जहाँ सन्तानोत्पत्ति गृहस्थ जीवन हेतु विवाह को आवश्यक नहीं माना जाता, वहीं इन कबीलों में विवाह को नितान्त आवश्यक माना जाता है, जो कि अनुशासन व समाज-व्यवस्था का मूल आधार है।

ये लोग हमारे प्रयोजन व व्यवहार से बहुत प्रसन्न थें। स्वभाव के सीधे व सच्चे पर अपने नियमों के पक्के, लोभ-लालच व छल कपट से कोसों परे इनके निश्च्छल प्रेम व भ्रातृत्व में मानवता स्पष्ट झलकती थी। ये सब देख मुझे उस तथाकथित 'आधुनिक जगत' से खिन्नता सी महसूस हुयी जिसमें विकास व साधन सम्पन्नता तो है, लेकिन मानवीय व नैतिक मूल्यों के निरन्तर पतन के कारण कदम-कदम पर पाप, अपराध, लालच, द्वेष, ईर्ष्या व हिंसा का बोलबाला है, जिसे हमने 'कलयुग' का जामा पहना रखा है। इन जंगली कबीलों में आधुनिक साधन-सुविधाओं के अभाव में भी ये कितने सुखी हैं, यह मैंने यहाँ महसूस किया। शायद आधुनिक साधन-सम्पन्नता का आत्मिक सुख से कोई सम्बन्ध नहीं है। तभी तो एक साधन सम्पन्न राजकुमार सारी विलासिताओं को त्यागकर, ज्ञान व आर्तिमक सुख की खोज में निकल पड़ता है और बन जाता है - "गौतम बुद्ध" । वैसे मैं पलायनवादी विचारधारा का पक्षधर नहीं हूँ, पर इस शाश्वत सत्य को भी तो नहीं नकारा जा सकता। हाँ ये अवश्य है कि हम लालच, द्वेष व अहंकार से दूर रहते हुये यदि अपने कर्म योग में जुट जायें तो निश्चित रूप से

हमारी स्थिति में सुधार होगा।

अगले दिन उनके कुल देवता की पूजा का पाक्षिक जश्न था। अत: सन्ध्या समय उन्होंने हमारे दल को भी पारम्परिक रात्रि भोज पर आमन्त्रित किया। हम भी मन में उत्सुकता व अजीब कौतुहल लिये अतिथि के रूप में वहाँ पहुँचे। अब हमें इस जंगल में किसी प्रकार का भय न था। उनके सभागार में हमें आदर पूर्वक बिठाया गया। बाँस के बने गिलासनुमा पात्रों में हमें मदिरा जैसा पेय प्रस्तुत किया गया। कुछ समय पश्चात् तुरही व नंगाड़ों जैसे महावाद्यों के साथ उनका कोलाहलपूर्ण सामूहिक नृत्य प्रारम्भ हुआ। खुले पांडाल के बीचों-बीच आग जली हुयी थी, कबीले के स्त्री पुरूष चेहरे व शरीर पर विभिन्न प्रकार का लेप किये हुए, जानवरों की खाल व वृक्षों के पत्तों से शरीर को ढके विचित्र वेशभूषा से हाथ में भाले व बर्छी लिये विभिन्न मुद्राओं में नृत्य कर रहे थे। उनके पुरजोर आग्रह पर हम लोग भी उनके सामूहिक नृत्य में सम्मिलित हुये तो नगाड़ों की ध्वनि और तेज हो गयी व आसमान किलकारियों से गूंज उठा, शायद कबीले वाले अपनी हार्दिक खुशी प्रकट कर रहे थे। यह जश्न देर रात तक चलता रहा और इसी दौरान हमने भोजन भी किया। भोजन व्यवस्था अजीब थी, विभिन्न फलों व कन्दमूलों के अलावा कई जानवरों को लकड़ियों के सहारे लटकाकर नीचे से आग जलाई जा रही थी और "जिसको जितना चाहिए काट-काट ले जाय", दल के सभी सदस्य प्रसन्न थे। भोजन करते समय मैंने अपने धर्म की मार्यादा का विशेष ध्यान रखा। सारा वातावरण नगाड़ों की ध्वनि व मानवीय स्वरों की अजीब वीत्कारों-चित्कारों से गूँज रहा था। यह सम्पूर्ण दृश्य मुझे किसी फिल्म की कहानी जैसा लग रहा था - लेकिन यह यथार्थ था, इसमें फिल्मों जैसी बेतुकी बातें नहीं थी और न ही कबीले वालों की क्रूरता व वहशीपन।

एक अविस्मरणीय यादगार के रूप में वो शाम गुजरी। जश्न समाप्ति के पश्चात जब हम अपने पड़ाव की ओर लौट रहे थे तो हमारे मन में अपार प्रशन्नता थी और कबीले वालों के हाथों में जलती हुयी मशालें ताकि जंगली जानवर हमला न कर सकें।

(श्री जे.एन. कोली उप कमान्डेन्ट 94 बटा. के.रि.पु. बल वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ शांति मिशन अंगोला में पुलिस ऑबजरवर के रूप में सेवारत हैं।)



21 मई *1997* को आतंकवाद विरोधी दिवस पर बल मुख्यालय में कार्मिकों को आतंकवाद के विरूद्ध सतत संघर्ष की शपथ दिलाते हुए महानिदेशक श्री कौशल

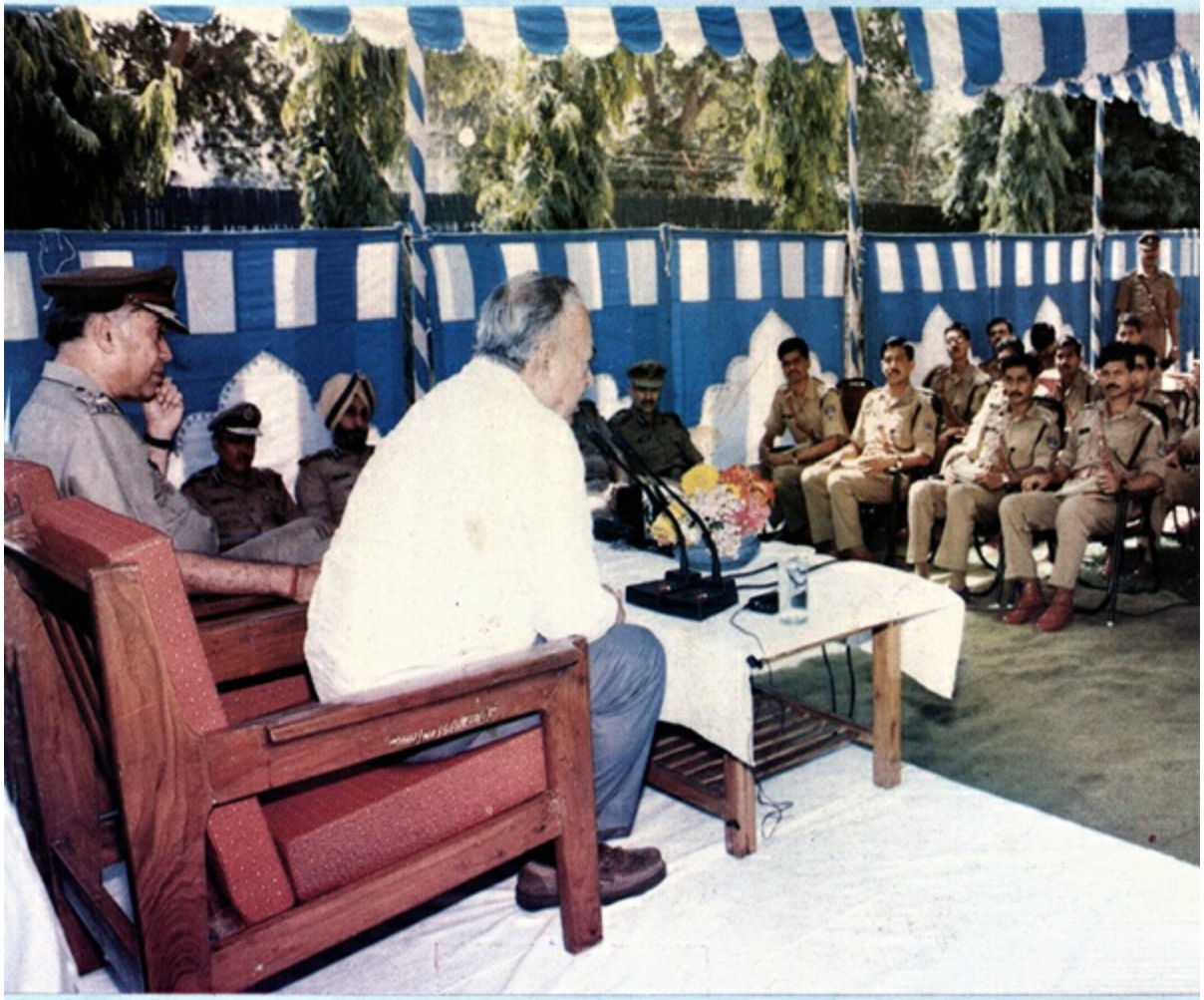
रजि. न. 4767/87



चेन्नई में हुयी राष्ट्रीय भारोत्तोलन प्रतियोगिता में जीती अपनी ट्राफी के साथ बल की भारोत्तोलक

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 10 अंक - 4 30 जून, 1997 9 आषाढ़, शक 1919



केन्द्रीय गृह मंत्री श्री इन्द्रजीत गुप्त के.रि.पु. बल के 26वें बैच के नवनियुक्त राजपत्रित अधिकारियों को सम्बोधित करते हुये



100 आर.ए.एफ. बटा. द्वारा अहमदाबाद में स्थापित बाढ़ राहत व बचाव सूचना केन्द्र

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-10 अंक-4
30 जून, 1997
9 आषाढ़, शक 1919

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो सेक्शन
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की
ओर से
जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां,
नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस
1728 कूचा दखनीराय,
दरियागंज, नई दिल्ली-2
दूरभाष : 3262279

विषय सूची



महानिदेशक की ओर से
अधिकारी जवानो के साथ निकट संबंध रखें
गोराईमारी में स्वास्थ्य शिविर
मानव गरिमा व सम्मान बनाए रखें
सिक्किम में भूस्खलन प्रभावितों की मदद
बाढ़ के दौरान राहत व बचाव
समाचार
जन्मजात-होनहार

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक



श्रीनगर में डल झील के किनारे तैनात बल का एक कार्मिक

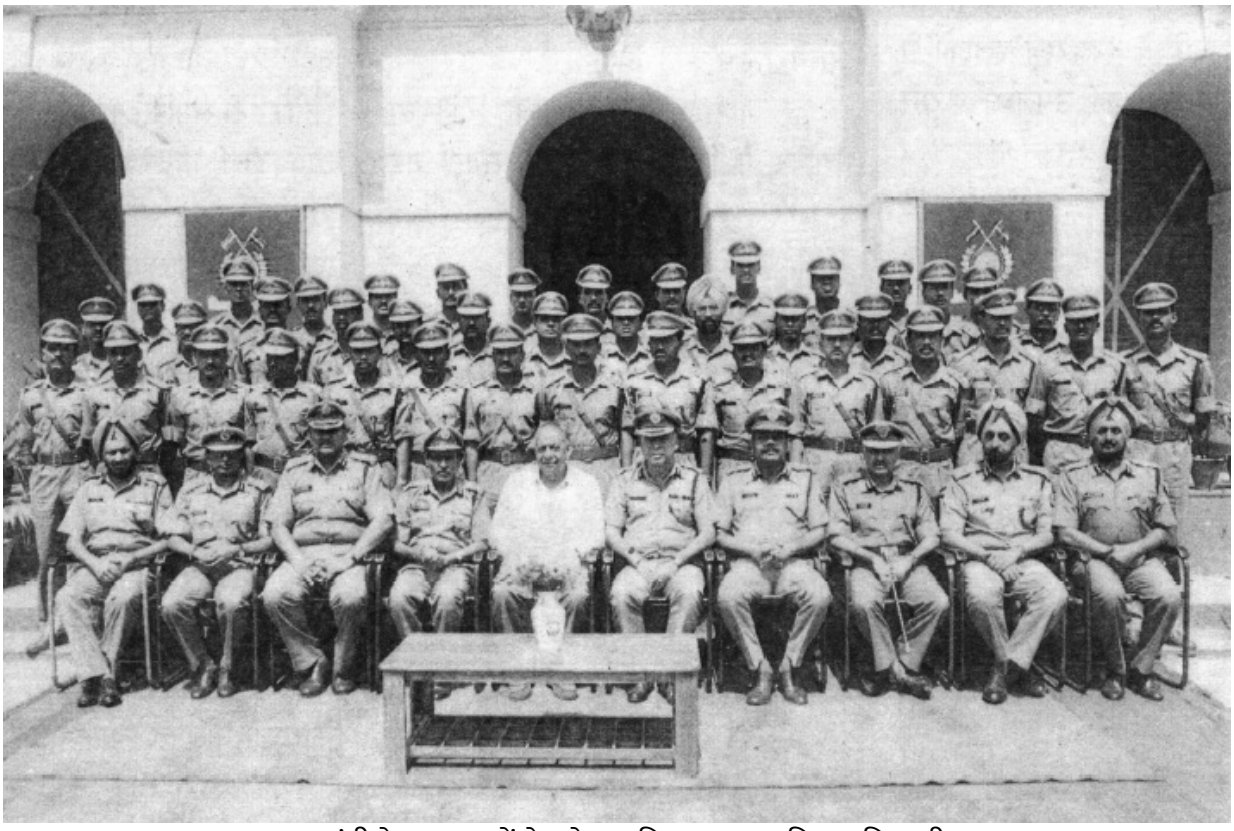
अधिकारी जवानों के साथ निकट संबंध रखें

–गृह मंत्री

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री इन्द्रजीत गुप्त ने के.रि.पु. बल के सीधे नवनियुक्त राजपत्रित अधिकारियों को जवानों के साथ अपना अधिक समय बिताने की सलाह दी है। नई दिल्ली में 10 जून, 97 को मंत्री महोदय का आशिर्वाद लेने गये 26वें बैच के नवनियुक्त राजपत्रित अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए श्री गुप्त ने कहा कि बल की छवि जवानों पर ही निर्भर करती है। राजपत्रित अधिकारियों द्वारा उन्हें प्रेरित किये जाने की आवश्यकता है। यह तभी सम्भव है जब जवानों के अपने वरिष्ठ अधिकारियों से निकट सम्बंध हों। मंत्री महोदय ने सीधे नियुक्त नए राजपत्रित अधिकारियों से बल की उच्च परम्पराओं को बनाए रखने व देश की एकता, अखण्डता व शांति के लिए निष्ठापूर्वक कार्य करने की सलाह दी।

श्री गुप्त ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की बहुआयामी ड्यूटियों को दक्षतापूर्वक तथा व्यवसायिकतापूर्वक निभाने के लिए प्रशंसा की। गृह मंत्री ने बल की अत्यधिक तैनाती पर असंतोष व्यक्त किया तथा कहा कि अत्यधिक तैनाती पर रोक लगाने के लिए तरीके निकालने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि के.रि.पु. बल कार्मिकों को विश्राम तथा प्रशिक्षण के लिए समय मिल सके। उन्होंने सीमा पर तैनाती के दौरान उनको चौकस रहने का भी आह्वान किया ताकि उग्रवादी गतिविधियां रोकी जा सकें।

श्री मुकुंद कौशल, महानिदेशक, के.रि.पु. बल ने सीधे नियुक्त नए राजपत्रित अधिकारियों की ओर से गृह मंत्री को आश्वासन दिया कि उनके परामर्श को के.रि.पु. बल कार्मिकों द्वारा अपनी ड्यूटियों के निर्वहन के दौरान ध्यान में रखा जाएगा। महानिदेशक ने मंत्रीजी को बल की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया।



गृहमंत्री के साथ *26*वें बेच के नवनियुक्त राजपत्रित अधिकारी

गोराईमारी में विशाल स्वास्थ्य शिविर

के.रि.पु. बल के गोहाटी स्थित बेस हास्पिटल-3 द्वारा 95 और 3 बटालियन के सहयोग से आसाम के कामरूप जिले में गोराईमारी (छायागांव) में 3 मई, 1997 को एक विशाल स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। आसाम के स्वास्थ्य मंत्री डा. कमल कालिता ने शिविर का उद्घाटन किया और बल के उप महानिरीक्षक, गौहाटी श्री एम.एम. खान ने समारोह की अध्यक्षता की। शिविर में 3000 से अधिक लोगों की जांच की गई और उन्हें नि:शुल्क दवायें दी गईं।

स्वास्थ्य मंत्री डा. कमल कालिता ने इस अवसर पर बल द्वारा जन साधारण के लिये स्वास्थ्य शिविर के आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि के.रि.पु. बल की भूमिका यहां के दूरदराज इलाकों में चिकित्सा सुविधाओं को उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण रही है। बल ने कानून व शान्ति की देखरेख करने के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाओं के समय बचाव व राहत कार्य में बड़ी मदद दी है। उन्होंने ऐसे शिविर भविष्य में भी आयोजित करते रहने का सुझाव दिया।

गोराइमारी में आयोजित चिकित्सा शिविर में विभिन्न क्लिनिकें लगाई गई जिनमें टी.बी. व सीने की बीमारियों, बाल रोग, स्त्री रोग, दंत चिकित्सा आंख आदि के विशेषज्ञ जांच के लिये उपलब्ध थे। खून, हिपेटाइटिस, एड्स, यूरीन आदि की वहीं पर तत्काल जांच के लिये एक लेबोरेटरी स्थापित की गई। हाईपरटेंशन, डायबटीज, कैटरेक्ट, टी.बी. और हृदय रोगों की गहन जांच की सुविधायें भी इस शिविर में उपलब्ध कराई गई। जांच के बाद सभी मरीजों को नि:शुल्क दवायें, उपलब्ध की गई। शिविर में बल के 8 विशेषज्ञ चिकित्सकों और 17 अन्य चिकित्सा कर्मियों ने सुविधायें देने में सहायता की।

शिविर को सफल बनाने में कामरूप जिला प्रशासन ने पूरा सहयोग व सहायता प्रदान की। इनमें उप आयुक्त, कामरूप, संयुक्त स्वास्थ्य निदेशक, जिला वन अधिकारी और अधिशासी अभियंता (विद्युत) का योगदान विशेष उल्लेखनीय है।



आसाम के स्वस्थ्य मंत्री डा. कालिता शिविर का उद्घाटन करते हुए



स्वास्थ्य मंत्री डा. कलिता द्वारा शिविर का निरीक्षण

मानव गरिमा व सम्मान बनाये रखें

अध्यक्ष, महात्मा गांधी मिशन, अखिल भारतीय रचनात्मक समाज श्रीमती निर्मला पाण्डे ने 16 मई, 1997 को किश्तवाड़ (जम्मू व कश्मीर) स्थित 124 बटा. मुख्यालय, के.रि.पु. बल का दौरा किया। भूतपूर्व पुलिस महानिदेशक श्री एच.एम. जोशी तथा भदरवाह के विधायक श्री शेख रहमान उनके साथ थे। उन्होंने बटालियन मुख्यालय पर स्थित अधिकारियों व जवानों को मानवाधिकारों पर सम्बोधित किया।

श्रीमती निर्मला पांडेय ने बल कर्मियों द्वारा मानव गरिमा व सम्मान को सुरक्षित रखने पर बल देते हुये कहा कि जवानों की ड्यूटियां तलवार के धार पर चलने जैसी है। बल के कंधों पर देश की सुरक्षा की एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। वे अपनी नौकरी के साथ–साथ देश की हिफाजत करके एक अहम् कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि ध्यान रखें कि अपनी ड्यूटी करते समय किसी बेगुनाह को कोई तकलीफ न हो। सभी मनुष्य इसी धरती पर वास करतें है तथा एक जैसे इन्सान हैं। सभी के साथ प्रेम से बरताव करें। प्रेम ही दुनियां की सबसे बड़ी ताकत है। भगवान जिसे हम कई नामों से पुकारते हैं, वह भी इसी प्रेम रूपी ताकत से प्राप्त किए जा सकते हैं। इन्सान से इन्सान का प्यार देखकर ही भगवान खुश होता है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी इसी प्यार मोहब्बत के बलबूते पर ही हमको अंग्रेजों से स्वाधीनता दिलवाई थी।

श्रीमती पांडेय ने कहा कि हमारे वतन की सबसे बड़ी बात यही है कि हमारे देश में विभिन्न जातियों, संस्कृति व भाषायें बोलने वाले लोग रहते है। यहां पर अनेक धर्मों के अनुयायी निवास करते हैं लेकिन फिर भी इतनी अधिक विभिन्ताओं के बावजूद,

यहां पर लोगों में प्यार देखनें को मिलता है। इसी आपसी प्यार के बल पर ही हमारा देश टिका हुआ है। पुलिस, फौज में यह प्यार ओर अधिक देखने को मिलता है। फौज में अनेक प्रान्तों के लोग इकट्ठे खाना-पीना, रहना घूमना आदि करते हैं जो कि हमारे देश की एकता को मजबूत बनाने में सहायक होता हैं। आपसे गुजारिश है कि आप इस पूंजी को बरकरार रखें। सभी को आपसी भेदभावों को छोड़कर दिल से दिल को जोड़ना है। कितनी ही बड़ी फौज क्यों न हो लेकिन यदि जवानों में आपसी भाईचारा नहीं होगा तो देश सुरक्षित नहीं रह सकता है।

श्री एच.एम. जोशी भूतपूर्व पुलिस महानिदेशक जो मिशन के साथ आए थे, ने कहा कि आप यहां पर बहुत अच्छा काम कर रहें हैं। आपकी कोई भी शिकायत हमें यहां पर नहीं मिली है। उन्होंने जवानों को उनके कर्त्तव्य संबंधी बातों को बताते हुए कहा कि आप लोग हमेशा तीन बातों का ध्यान रखें उधार लिया हुआ हमेशा वापिस करें, महिलाओं का सम्मान करें और किसी का भी मुफ्त में खाना पीना नहीं करे। श्री जोशी जो कि 1960 के दशक में के.रि.पु. बल की 4 व 11 वाहिनी को कमाण्ड कर चुके है ने जवानों को मानवाधिकारों की रक्षा करने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि बलकर्मी भारत के संविधान व कानून के रक्षक हैं। वे कभी किसी के साथ बदसलूकी न करें।

श्री शेख रहमान, एम.एल.ए. भदरवाह (डोडा) ने भी इस अवसर पर बल के सदस्यों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि आप लोग यहां पर इस तरह का वातावरण बनाये कि आम जनता आपको सहयोग दे। लोग वर्दी वाले को देखकर घबराएं नहीं बल्कि उनको अपना रक्षक समझें। यदि आप इस तरह का माहौल पैदा करेगें तो आपका मकसद जल्द समय में ही प्राप्त हो सकता है। मानवाधिकारों की रक्षा का ध्यान रखें। मानव गरिमा व आपसी भाईचारे को बनाए रखें।

पल्लीपुरम में पेट्रोल पम्प

के.रि.पु. बल की इकाइयों की सुविधा के लिये पल्लीपुरम (त्रिवेन्द्रम) मे 2 अप्रैल, 1997 से वहां एक पेट्रोल पम्प खोला गया है। विशेष महानिदेशक के.रि.पु. बल श्री डी.आर. कार्तिकेयन के प्रयास से इसे स्वीकृति मिली। केवल बल की इकाइयों के लिये शुरू किये गये इस पेट्रोल पम्प से एक बहुत बड़ी जरूरत पूरी हो गई है।

इस अवसर पर विशेष महानिदेशक श्री कार्तिकेयन द्वारा 124 बटा. के स्व. नायक/ड्राइवर जी. श्री कुमार की पत्नी श्रीमती जयश्री को 4.00 लाख रू. की अनुग्रह राशि का भुगतान किया।

सिक्कम में भूस्खलन प्रभावितों को राहत

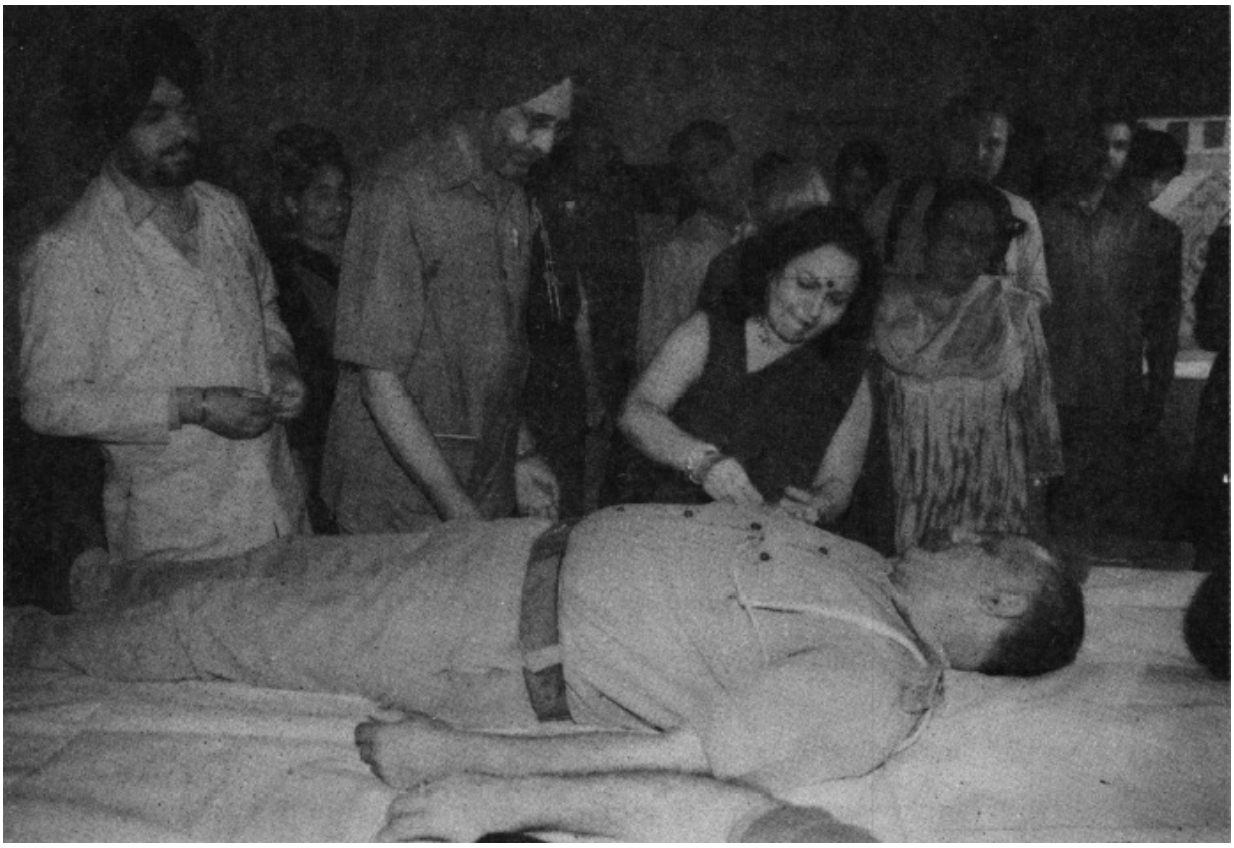
सिक्कम में गंगटोक के समीप 8 जून, 1997 की रात को हुये भूस्खलन से मार्ग अवरूद्ध हो गये और वहां जन–जीवन में भय फैल गया। इस दैवी विपत्ति से निपटने के लिये सिक्कम सरकार द्वारा सहायता मांगे जाने पर बिहार से 106 आर.ए.एफ. बटालियन की दो कम्पनियां सिक्कम रवाना कर दी गई।

आर.ए.एफ. कर्मियों ने गंगटोक पहुंचकर तत्काल प्रभावित लोगों को बचाव व राहत पहुंचाने का काम शुरू कर दिया। भूस्खलन से वहां के जीरो प्वाइन्ट और चांदमारी इलाके सबसे अधिक प्रभावित थे। इन स्थानों के प्रभावित लोगों को सामान सहित सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। दो टीमे इन इलाकों में नागरिकों के घरों व उनके सामान की सुरक्षा के लिये लगातार तैनात रहीं।

सिक्कम के मुख्य सचिव श्री के. श्रीधर राव ने महानिदेशक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल श्री मुकुन्द कौशल को भेजे गये अपने पत्र में समय पर आर.ए.एफ. की सहायता उपलब्ध कराने के लिये आभार प्रकट किया है। उन्होंने पत्र में सिक्कम सरकार की ओर से कृतज्ञता प्रकट करते हुये लिखा है कि वहां पहुंची बल की इकाइयां स्थिति से निपटने में बड़ी सहायक रहीं और उनकी मदद से गंगटोक में सामान्य स्थिति बहाल हो सकी।

मोहाली में रक्तदान शिविर

5सिगनल बटा. मुख्यालय, मोहाली (पंजाब) में भारतीय रेड क्रास सोसायटी के सहयोग से 8 मई, 1997 को एक रक्तदान शिविर लगाया गया। पंजाब के राज्यपाल की पत्नी श्रीमती रमा छिब्बर इसमे मुख्य अतिथि थीं। शिविर मे सिगनल बटालियन के 14 कर्मियों ने रक्तदान किया। मुख्य अतिथि ने बलकर्मियों द्वारा किये गये रक्तदान की सराहना की। परिवार कल्याण एसोसिएशन आफ इन्डिया के मोहाली स्थित शाखा प्रबंधक श्री आई.पी.एस. बाजवा ने 5 सिग. बटा. के कमांडेन्ट को भेजे गये अपने पत्र में शिविर को सफल बनाने के लिये आभार प्रकट किया।



पंजाब के राज्यपाल की पत्नी श्रीमती रमा छिब्बर रक्तदान शिविर में

बाढ के दौरान राहत व बचाव



आर.ए.एफ. कर्मी बाढ़ग्रस्त इलाकों में

गुजरात में जून '97 के अंतिम सप्ताह में अतिवृष्टि से बहुत बड़ा इलाका बाढ़ की चपेट में आ गया। इसमे अहमदाबाद और गांधीनगर के आस–पास का क्षेत्र लगातार वर्षा से सबसे अधिक प्रभावित हुये। सड़के व पुल डूब गये, बहुत से गावों में पानी भर गया और कई दिनों तक इस क्षेत्र का संबंध बाहर से कटा रहा।

ऐसी स्थिति में वहां वस्त्रल स्थित 100 बटा. आर.ए.एफ. कर्मी स्थानीय प्रशासन की मदद के लिये प्रभावित लोगों को बचाव व उन्हें राहत पहुंचाने में लगे रहे। बल का बटालियन मुख्यालय भी बाढ़ से बचा नहीं था किन्तु आर.ए.एफ. की तीन कम्पनियो के कार्मिकों ने वस्त्रल, रामोल, रतनपुरा, महबूबनगर, जनता नगर और महादेव नगर इलाकों से कई सौ लोगों को बचाकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। जहां नाव उपलब्ध न थी वहां लोगों की मदद से अहमदाबाद को वस्त्रल और महादेव नगर से जोड़ने वाली सड़क को गाड़ियों के आने–जाने लायक बनाया। 100 बटा. द्वारा गोद लिये गये बाढ़ग्रस्त चार गांवों में पानी के टैंकरों की मदद से पीने का पानी लगातार पहुंचाया गया।

वस्त्रल, महादेव नगर, रामोल और जनता नगर में चिकित्सा शिविर लगातार चार दिन तक लगाये गये जिनमें दो हजार से अधिक लोगों की जांच की गई और दवायें दी गई। वस्त्रल गांव में 27 जून, 97 की रात 8–30 बजे मंगाजी नाम के एक व्यक्ति की पेड़ पर से सहायता के लिये पुकार सुनकर चार आर.ए.एफ. कर्मियों ने हवा भरी ट्यूबों की सहायता से उसकी जान बचाई।

लहरों पर हवा

उमड़ती लहरों को
छूती है हवा
अतल गहराइयों तक
तरंगित करती,
सजल हो
भीगती है
हवा
जल पर
घनी होती।

–श्री संजीव मिश्र के कविता संग्रह "कुछ शब्द जैसे मेज" से साभार।

समाचार

उत्तर प्रदेश के पुलिस अधिकारियों को प्रशिक्षण

101 बटालियन (आर.ए.एफ) मुख्यालय इलाहाबाद में उत्तर प्रदेश पुलिस व पी.ए.सी. के 88 चुने हुये अधिकारियों को रैपिड ऐक्शन फोर्स की कार्यशैली और दंगा नियंत्रण के तरीकों का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम 21 अप्रैल से 11 मई, 1997 तक तीन सप्ताह चला और इस दौरान प्रशिक्षु अधिकारियों को कानून व व्यवस्था की विभिन्न स्थितियों में आर.ए.एफ. द्वारा अपनाये जाने वाले तरीकों की विस्तृत जानकारी दी गई।

पी.ए.सी. के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक श्री अजय राज शर्मा ने 21 अप्रैल, 97 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया और 11 मई, 97 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री एम. काटजू ने कार्यक्रम का समापन किया।

न्यायमूर्ति श्री एम. काटजू ने प्रशिक्षण का समापन करते हुये कहा कि भारत जैसे जनतांत्रिक देश में पुलिस बलों को अपराधियों के प्रति कठोरता से व्यवहार करना चाहिये किन्तु गरीब, असहाय और निर्दोषों के साथ उनका व्यवहार कोमल और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिये। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान के निर्माताओ ने धर्मनिरपेक्ष और समता मूलक समाज की रचना की संकल्पना की थी। भारत को छोड़कर पड़ोसी मुल्कों में आज भी कहीं कहीं मजहबी सोच की विकृति विद्यमान है जिससे उन देशो में समतामूलक समाज की स्थापना नहीं हो पाई है। इसके विपरीत हमारी सोच वर्तमान संदर्भों को समाहित करते हुये एक आधुनिक सोच है जिसमे समतामूलक समाज की संरचना का भाव निहित है।

101 बटालियन के कमांडेन्ट श्री एच.बी. सिंह ने प्रारम्भ में मुख्य आतिथि का स्वागत किया और बताया कि तीन सप्ताह के प्रशिक्षण के दौरान दंगा आदि के समय पुलिस अधिकारियों के दायित्व, आधुनिक तकनीक के आधार पर शस्त्र प्रशिक्षण और मानवीय मूल्यों व संवेदनाओं के बारे में जानकारी दी गई । इस अवधि में विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ व्याताओं के विचारों से पुलिस अधिकारियों को अवगत कराया गया । पी.ए.सी. के महानिरीक्षक पूर्वी क्षेत्र श्री वीरेन्द्र कुमार ने अंत में आभार प्रकट किया ।

देवयानी डे द्वारा 96% अंक प्राप्त



देवयानी डे

सा.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल (रोहिणी), नई दिल्ली की 10वीं की छात्रा सुश्री देवयानी डे ने इस वर्ष की सी.बी. एस.ई. परीक्षा–1997 में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं । उन्होंने हर विषय में विशेष योग्यता वाले अंक पाये हैं और 500 में से कुल मिलाकर 480 अंक प्राप्त कर समझा जाता है कि देश में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये हैं।

यहजानकारीसी.आर.पी.एफ.स्कूल, नई दिल्ली के प्रधानाचार्य श्री सूरज प्रकाश ने 4 जून, 1997 को महानिदेशालय में दी। वह उस दिन वहां समाचार पत्र प्रतिनिधियों से अनौपचारिक बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सी.आर.पी.एफ. स्कूल, नई दिल्ली के 10वीं कक्षाके छात्रों ने इस वर्ष उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

महानिदेशक, के.रि.पु. बल श्री मुकुन्द कौशल ने विद्यार्थियों को उनकी अभूतपूर्व सफलता के लिये बधाई दी और देवयानी डे को, जो बल महानिदेशालय में सहायक निदेशक श्री डी.सी.डे. की पुत्री है, 5000 रू पुरस्कार स्वरूप देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि सी.आर.पी.एफ. स्कूल के उन सब विद्यार्थियों को दो-दो हजार रूपये की राशि पुरस्कार स्वरूप दी जायेगी जिन्होंने इस साल की परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक कुल अंक प्राप्त किये हैं।

श्री सूरज प्रकाश ने आगे बताते हुये कहा कि देवयानी डे के अलावा इस स्कूल के करण कंसल ने 94.2 प्रतिशत और माणिक बतरा ने 93.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं। 10वीं की इस परीक्षा में 18 छात्रों ने हर विषय में विशेष योग्यता पाई है और 8 ने

90 प्रतिशत से अधिक अंक (एग्रीगेट) प्राप्त किये हैं। इस साल इस स्कूल के 30 विद्यार्थियों ने गणित में, 24 ने विज्ञान में, 20 ने संस्कृत में और 7 ने अंग्रेजी में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये हैं।

समाचार

नागपुर में हथकरघा केन्द्र खुला



नागपुर ग्रुप केन्द्र में हथकरघा केन्द्र का उद्घाटन

नागपुर ग्रुप केन्द्र के परिवार कल्याण केन्द्र में भारत सरकार (वस्त्र मंत्रालय) के नागपुर स्थित बुनकर सेवा केन्द्र द्वारा 14 मई, 1997 को हथकरघा केन्द्र की स्थापना की गई। इस केन्द्र में कच्चा माल बुनकर सेवा केन्द्र द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा और उत्पादित तैयार माल के विपणन की जिम्मेदारी भी उन्हीं की होगी। हथकरघा पर दैनिक जरूरियात की वस्तुएं जैसे दरियां, तौलिए, मैट, रूमाल, साफे, लुंगियों और शर्टिंग आदि के कपड़े आसानी से बनाये जा सकेंगे।

बुनकर सेवा केन्द्र, नागपुर की ओर से त्रैमासिक विकेन्द्रीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत अभी 25 महिलाओं के एक बैच को प्रशिक्षण दिए जाने की शुरूआत की गई है। इससे प्रशिक्षण लेने वाली प्रत्येक महिला को तीन महीने तक 750/- रू. प्रति माह की दर से स्टाइपेंड भी मिलेगा। ऐसे पाठ्यक्रम को आगे भी जारी रखे जाने के

लिए बुनकर सेवा केन्द्र, नागपुर ने आश्वासन दिया है। इससे एक ओर जवानों के परिवारों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा दूसरी ओर जवानों के लिए आवश्यक दैनिक प्रयोग की वस्तु दरियां एवं तौलिए आदि सामग्री का उत्पादन एवं पूर्ति हो सकेगी।

पंकज को 2000 रू. प्रतिमाह छात्रवृत्ति

ए.एल.बी. पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट, नई दिल्ली ने के.रि.पु. बल के पूर्व सहायक कमांडेन्ट स्वर्गीय श्री बी. एन. कंडवाल के पुत्र पंकज कंडवाल को एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई के लिये 2000 रू. की मासिक छात्रवृत्ति स्वीकृत की है। एम.बी.बी.एस. में पहले वर्ष के छात्र पंकज को यह छात्रवृत्ति पांच वर्ष का पाठ्यक्रम पूरा होने तक मिलती रहेगी।

ए.एल.बी. चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना जानेमाने उद्यमी व समाजसेवी श्री ए.एल. बत्रा द्वारा 1994 में की गई थी। वह बत्रा अस्पताल व चिकित्सा अनुसंधन केन्द्र (नई दिल्ली) के बोर्ड आफ ट्रस्टीज के अध्यक्ष हैं। यह ट्रस्ट शिक्षा के प्रसार, निर्धन मेधावी छात्रों को छात्रवृत्तियां देने और समाज के निर्धन व निर्बल वर्ग के लोगों को चिकित्सा सुविधायें और आर्थिक सहायता प्रदान करती है।

जोखिम निधि लाभ

माह जून, '97 में केंद्रीय जोखिम निधि से मृत्यु के 50 मामलों में कुल 35,00,400 रूपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के चार मामलों में 60,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि "बी" स्पेशल कल्याण निधि से भी इस माह बल के 9 सदस्यों की मृत्यु के मामले में 3,15,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

जून में 211 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस ने माह जून, 1997 में देशभर में 211 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई 10 मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 4 आतंकवादी मारे गये।

इनमें से सर्वाधिक 147 आतंकवादी पूर्वोत्तर राज्यों में गिरफ्तार किये गये जिसमें 121 असम में व 24 त्रिपुरा में पकड़े गये। इनके अलावा जम्मू-कश्मीर में 29 तथा बिहार में 24 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। जम्मू-कश्मीर में पकड़े गये आतंकवादियों में, 14 हिजबुल मुजाहीदीन, 3 अलउमार गुट एवं 2 हरकत-उल-अंसार गुट के थे। पूर्वोत्तर राज्यों में त्रिपुरा के आतंकवादियों में दो-दो ए.टी.टी.एफ. एवं एन.एल.एफ.टी. तथा 8 असम के उल्फा आतंकवादी थे। दो आतंकवादी आंध्र प्रदेश में पी.डब्लू.जी. गुट के मारे गये।

इस दौरान बल के कार्मिकों ने 94 घातक हथियार तथा 10514 गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में 22 ए.के. 47, 12 ए.के. 56, 28 पिस्तोले व रिवाल्वरें, 4 ए.के.एम.के., 6 देश में बनी बन्दूके, 7.315 राईफलें तथा एक-एक यू.एम.जी. व जी.पी.एम.जी. शामिल हैं। 69 हथियार अकेले जम्मू-कश्मीर राज्य में ही बरामद किये गये।

इस माह हुई मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में बल के 14 बहादुर जवान वीर गति को प्राप्त हुए तथा 36 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए।

मई में बल के मृत कार्मिक

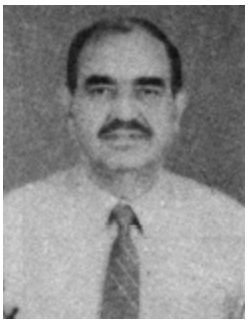
के.रि.पु. बल के निम्न कार्मिक माह मई, 1997 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है। इस माह दिवंगत कार्मिक के नाम इस प्रकार हैं -

कांस्टेबल गुलाम अहमद पिन (35 बटा.), कांस्टेबल के.एस. रन सिंह (30 बटा.), कांस्टेबल बलबीर सिंह (33 बटा.), कांस्टेबल बच्चू सिंह (33 बटा.), उप निरीक्षक जी.एस. भारती (33 बटा.), लां. नायक राम चन्द्र (33 बटा.), कांस्टेबल नरसिम्हा (33 बटा.), कांस्टेबल वी. मुलीवागनम (33 बटा.), कांस्टेबल के. नागराजन (33 बटा.), हैड कांस्टेबल टी. कीनडो (33 बटा.), हैड कांस्टेबल टी.वी. सिंह (33 बटा.), नायक मोहन लाल (33 बटा.), ला. नायक हसंमुख कुमार (33 बटा.), कांस्टेबल रणधीर सिंह (33 बटा.), कांस्टेबल नरेश कुमार (33 बटा.), कांस्टेबल टी. रेनू गोपाल (33 बटा.), कांस्टेबल/ड्रा. बिजेन्द्र सिंह (33 बटा.), कांस्टेबल बी. गांधी (33 बटा.), कांस्टेबल आर. बरूआ (33 बटा.), कांस्टेबल पी. रामाराव (110 बटा.), ला. नायक चन्पा लालमीणा (18 बटा.), कांस्टेबल एन. कृष्णामूर्ति (14 बटा.), हैड कांस्टेबल गुसाई सिंह (18 बटा.), कांस्टेबल राकेश कुमार (114 बटा.), उप निरीक्षक मुखत्यार सिंह (61/33 बटा.), हैड कांस्टेबल एस.एस. नागरे (44/23 बटा.), हैड कांस्टेबल/आर.ओ. शंकर पाल (1 सिंग. बटा.), नायक/ड्रा. रेवाल सिंह (11 बटा.) कांस्टेबल नरेश चन्द्र महतो (122 बटा.), नाई सुमदत्त (71 बटा.), नायक तोबियासन्द (58 बटा.), कांस्टेबल देवाशिश मजुमदार (93 बटा.), कांस्टेबल सल्वीन्द्र सिंह (40 बटा.), ला. नायक आदेश कुमार (83 बटा.), ला. नायक/ड्रा. मनजीत सिंह (28 बटा.), कांस्टेबल काबल सिंह (91 बटा.), श्री राम देव राम सहायक कमांडेन्ट (ग्रुप केन्द्र मोकमाघाट), सफाई कर्मचारी सुखबीर सिंह (ग्रुप केन्द्र नई/दिल्ली), कांस्टेबल टी.आर. राजेश कुमार (32 बटा.), ला. नायक दिनेश सिंह मेहता (45 बटा.), कांस्टेबल सी. टोपो (34 बटा.)।

श्री कश्यप सेवानिवृत्त

उपनिदेशक (प्रशासन) श्री वाई. एन. कश्यप ने 33 वर्ष से अधिक की अपनी उल्लेखनीय सेवा के बाद इस माह 30 जून, 97 को अवकाश प्राप्त किया। वह बल में अक्बूबर, 1968 में उप अधीक्षक पद पर नियुक्त हुये और इससे पहले 1963 मे

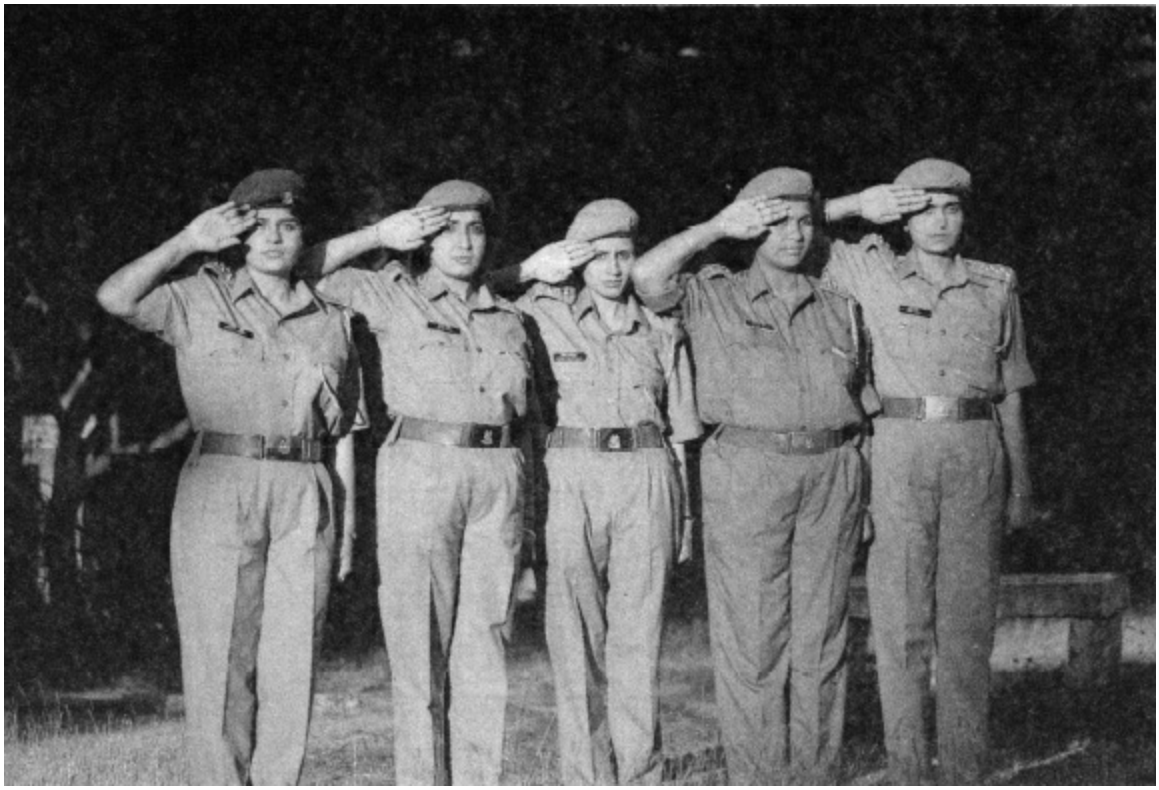
उन्होनें भारतीय स्थल सेना में कमीशन प्राप्त किया था। महानिदेशालय में उप निदेशक पद उन्होंने एक वर्ष पहले 1996 में संभाला था।



श्री वाई.एन. कश्यप

जन्मजात होनहार

-जे. रंगराजन



आवड़ी (चेन्नई) प्रशिक्षण कालेज में प्रशिक्षण ले रही बल की पांच महिला निरीक्षक

"चूड़ियां और नथनी ..... इसके बिल्कुल विपरीत हाथों में ए.के. 47 निर्बाध व विश्वास

भरी नजरें। दृढ़ निश्चय ऐसा कि जैसे किसी भी स्थिति के लिए तैयार हो। पति व बच्चों से कभी-कभार बातचीत और वह भी फोन पर यह दिल्ली की उन पांच महिला निरीक्षकों का संक्षिप्त परिचय है जो केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपी.एफ) के आवडी, चैन्नई स्थित प्रशिक्षण कालेज में आई हैं। जब भी कश्मीर अथवा देश के किसी भी भाग में बार-बार अशान्ति होने से उनकी मांग होती है, तो कर्तव्य की पुकार उन्हें अपने दूधमुहें बच्चों से भी अलग कर देती है। वर्ष में केवल 60 दिनों के लिए ही पति, पत्नि और बच्चे एक दूसरे के साथ रह पाते हैं।

इन पांच में से चार स्नातकोत्तर हैं और सभी की आयु 32 वर्ष से अधिक है। वे 10 वर्ष पहले के.रि.पु. बल में उप निरीक्षक के रूप में भर्ती हुई थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उत्तर प्रदेश के सामान्य ग्रामीण परिवारों में पैदा हुई ये उन लड़कियों को राष्ट्र की सेवा के प्रति आकर्षण ही यहां तक खींच लाया, बाद में पदोन्नत होकर वे निरीक्षक हो गई। अब प्रगति के सोपान पर आगे सहायक कमांड़ेन्ट के रूप में पदोन्नत होने के लिए वे 3 माह का प्रशिक्षण प्राप्त करने चैन्नई आई हैं। निरीक्षक तसलीमा खान, नीरजा त्यागी, नीलम बेडियाल, कविता वर्मा और रवि काला - के.रि.पु. बल की साहसी महिलाएं हैं। उनमें से निरीक्षक तसलीमा खान प्रसूति अवकाश की समाप्ति के बाद अपने 5 माह के बच्चे के साथ प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। एक बहादुर माँ जिसे मां के स्तनपान की महत्ता की जानकारी है।

“हम शादी व बच्चों के अलावा जीवन के अनेक संघर्ष पार कर चुके हैं। अत: हमारा अब नौकरी छोड़ने का कोई इरादा नहीं है। हमारी इच्छा बस कुछ कर दिखाने की है।” उन सभी ने एक आवाज में कहा। उनके बारे में संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

तस्लीमा खान : इनका मुजफ्फर नगर (उ.प्र.) के एक कृषक परिवार में जन्म हुआ। एम.ए. (राजनीति शास्त्र) की शिक्षा प्राप्त कर 1986 में उप निरीक्षक के पद पर भर्ती हुई तथा गुवाहाटी (असम) में सेवारत के.रि.पु. बल के एक लिपिक दिलावर खान के साथ 1991 में शादी की। उनके दो बच्चे हैं। 5 वर्ष की लड़की जुमा खान अपने पिता के पास रहती है तथा सोहेल खान बेटा है जो अभी 5 माह का है। मां के प्रशिक्षणरत होने पर बच्चे की देख-रेख सिक्युरिटी ऐड करता है।

तस्लीमा खान बताती है कि “उनकी सेवा के साढ़े तीन वर्ष श्रीलंका में भारतीय शांति सुरक्षा बल (आईपीकेएफ) तथा मेरठ उपद्रव के दौरान द्रुत कार्य बल (द्रुकाब) में गुजरे हैं। दो बच्चों को जन्म देने के बाद भी मैं नौकरी कर रही हूँ, यह सब मेरे पति के अत्यन्त सहयोग देने के कारण ही हो रहा है।”

नीरजा त्यागी :- इनका गाजियाबाद (उ. प्र.) में जन्म हुआ। इनके पिता रेलवे में एक सिगनल निरीक्षक हैं। एम.ए. (राजनीति शास्त्र) की शिक्षा प्राप्त करने के बाद 1986 में के.रि.पु. बल में उप निरीक्षक पद पर भर्ती हुई। 1988 में उनकी शादी केरिपुबल के ही एक निरीक्षक के साथ हुई जो प्रधान मंत्री की सुरक्षा प्रदान करने वाले विशेष सुरक्षा ग्रुप में तैनात हैं। 1990 में पैदा हुई उनकी बेटी तिराषी दूसरी कक्षा में पढ़ती है

तथा बहुत ही तेज है।

"मैं भारतीय शांति सुरक्षा फोर्स के एक अंग के रूप में 1987 में श्रीलंका गई। मुझे आग्नेयास्त्र/विस्फोटक रखने वाली महिलाओं की तलाशी की लेने की ड्यूटी दी गई थी। श्रीलंका की सेवा के लिए विशेष प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया था। 125 महिलाओं में से केवल आठ को ही प्रशस्ति पत्र दिए गए थे।

उसके पश्चात् मेरठ में दंगे शांत किए। 6 दिसम्बर, 1992 को बाबरी मस्जिद ध्वस्त होने के दौरान खेद के साथ आदेशानुसार शांतिपूर्वक सुरक्षा ड्यूटी का निर्वहन किया।

तत्पश्चात् 1994 में श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में तैनात किया गया। एक दिन मैं एक बुलेट प्रुफ ट्रक में एक जेल की सुरक्षा का पर्यवेक्षण करने के लिए गई। मैं चालक के बगल में बैठी थी। गाड़ी के पीछे की ओर दो सिपाही सुरक्षा गार्ड में थे। उग्रवादियों के हमले की आशंका को देखते हुए हमेशा की तरह कानवाय में तीन गाड़ियां थी जो एक के पीछे एक थी। सड़कों के मोड़ पार करते समय, उग्रवादियों ने गाड़ी के नीचे एक हथगोला फेंका जो सड़कपार एक गड्ढे में गिरकर फट गया। ट्रक के पीछे खड़े एक सिपाही की पीठ में हल्की चोट आई। मैंने पीछे की दो गाड़ियों को बिना रूके तेज गति से गाड़ी चलाने का निर्देश दिया जिसके फलस्वरूप किसी की जान को कोई खतरा नहीं हुआ। यदि हम रूक जाते तो उग्रवादियों का निशाना बन सकते थे। जबाब में यदि फायर खोली जाती तो कई निर्दोष लोगों की जाने जाती क्योंकि उग्रवादी सदैव निर्दोष व्यक्तियों के घरों में छुपकर ही हमला करते हैं। मेरी सूझ-बूझ तथा तत्काल निर्णय लेने के लिए उच्चाधिकारियों द्वारा प्रशंसा की गई।

मेरा बच्चा मेरी मां के घर में दिल्ली में है। मैं लगातार उसके 4 जन्म दिनों पर 1994 तक उसके साथ नहीं रही। मैं बच्चे की तुतलाती बातों को कभी भूल नहीं पाती। जब फोन पर उसे बधाई देती हूँ "मम्मी फोन से यहां पर आ जाओ मम्मी सभी मां अपने बच्चों के साथ हमेशा रहती हैं, आप ही हमारे साथ नहीं रहती।" मैं आज तक उसके इस सवाल का जवाब नहीं दे पाई।

यह पूछे जाने पर कि क्या तुम्हारे बच्चे व पिता के फोटो हैं निरीक्षक नीरजा त्यागी ने कहा कि दोनों हमेशा ही मेरी आँखों में रहते हैं।

नीलम बैंडियाल :- जन्म स्थान-उत्तर प्रदेश में देहरादून । शिक्षा-बी.ए. (अंग्रेजी)। वर्ष 1986 में उप निरीक्षक के रूप में केरिपुबल में शामिल तथा 1990 में वह परिणय सूत्र में बंध गई। पति बैंडियाल, उत्तर प्रदेश में गोडवारा सरकारी कालेज में प्रवक्ता हैं। पुत्र आयुष जिसका जन्म 1994 में हुआ था इस समय तीन वर्ष का हो चुका है। "मैंने विशेष सुरक्षा ग्रुप (एस.पी.जी.) में भी काम किया है, जब श्री राजीव गांधी, श्री वी.पी. सिंह, श्री चन्द्र शेखर व श्री वाजपेयी प्रधानमंत्री थे। इस समय मैं श्री देवेगौड़ा के सुरक्षा ग्रुप में हूँ। श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षा टुकड़ी में मेरी सेवाओं के लिए प्रशंसा प्रदान किया गया। मेरा पुत्र आयुष मेरी मां के घर देहरादून में है। मेरे पति को बच्चे को देखने के लिए चार घण्टे की यात्रा करनी पड़ती है। मुझे भी उसे देखने के लिए दिल्ली से चार घंटे की यात्रा करती पड़ती है। हम त्यौहारों की छुट्टियों में (आपस में) मिलते हैं। मेरा

पुत्र मेरी नौकरी को समझता है और कहता है - मेरी मां इंस्पेटर हैं और यादे तुम (अन्य बच्चों से) मुझें मारोगे तो मैं अपनी मां से तुम्हें गिरफ्तार करवा दूंगा," हंसते हुए इन्सपेक्टर नीलम बैंडियाल बताती हैं।

कविता वर्मा :- मूल निवास स्थान-दिल्ली। शिक्षा एम.ए. (राजनीति शास्त्र) दिल्ली में अंतर विश्वविद्यालय जूडो चैम्पियनशिप में कांस्य पदक विजेता। वर्ष 1986 में केरिपु बल में उप निरीक्षक के पद पर खिलाड़ियों के कोटे में भर्ती व 1994 में संजीव कुमार मेसन, दिल्ली टेलीफोन विभाग में क्लर्क के साथ विवाह। पुत्र सन्नी देव की आयु एक वर्ष की है।

जब 1987 में मैं शांति रक्षा टुकड़ी के हिस्से के रूप में श्रीलंका गई थी तो मैंने एके-47 सहित कई घातक हथियार तलाशी के दौरान पकड़े। मेरा पुत्र मेरी सास. श्रीमती एस.के. मेसन के पास रहता है जो कि दिल्ली के सफदरजंग हस्पताल में एक नर्स हैं। कविता वर्मा ने बताया।

रवि काला :- मूल निवास स्थान : फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश) के समीप येले गांव। शिक्षा एम.ए. (राजनीति शास्त्र) 1986 में उप निरीक्षक के पद में नियुक्ति। पति हरिन्द्र शर्मा गुजरात में मोटर व्हीकल डीलर। पुत्र साहिल हरिन्द्र शर्मा एक वर्ष का है। अब वह अपनी नानी के पास येले गांव में है। रवि काला ने पूछने पर बताया कि उन्होंने विशेष सुरक्षा ग्रुप में कार्य किया जब श्री चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री थे।

*(*दैनिक दिनमनि मगलीर मलर, चैन्नई से साभार*)*


सी.आर.पी.एफ.
समाचार
खंड - 10 अंक - 5 31 अगस्त, 1997 9 भाद्रपद, शक 1919



के.रि.पु.बल की भारोत्तोलक कुंजारानी राजीव गांधी खेल रत्न अवार्ड प्राप्त करने के बाद राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति तथा अन्य पुरस्कृत खिलाड़ियों एवं प्रशिक्षकों के साथ

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-10 अंक-5
30 अगस्त, 1997
9 भाद्रपद, शक 1919

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां,
नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस
1728 कूचा दखनीराय,
दरियागंज, नई दिल्ली-2

विषय सूची



कुंजारानी को राजीव गांधी खेल रत्न अवार्ड
गौतम कौल के.रि.पु. बल के अपर महानिदेशक
के.रि.पु. बल के 28 कार्मिकों को पुलिस पदक
प्रशिक्षण जरूरत के अनुरूप हो
के.रि.पु. बल-2002 गोष्ठी सम्पन्न
अमरनाथ यात्रियों को बल का सहयोग
गृह मंत्री का पल्लीपुरम दौरा
बरबरा वन क्षेत्र में बल की उपलब्धियां
कथाकली प्रेमी बल का कार्मिक
संक्षिप्त समाचार

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

कुंजारानी को राजीव गांधी खेल रत्न अवार्ड



राष्ट्रपति से अवार्ड ग्रहण करती हुयी कुंजारानी

राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन ने 29 अगस्त, 1997 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में भारोत्तोलन के क्षेत्र में असाधारण प्रदर्शन के लिए के.रि.पु. बल की सहायक कमांडेट कुंजारानी को राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार प्रदान किया।

1995 में गोंगझाऊ में आयोजित विश्व भारोत्तोलन प्रतियोगिता में असाधारण प्रदर्शन के लिए कुंजारानी को 1995-96 के लिए यह सम्मान दिया गया।

1991-92 में शुरू किये गये राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार में एक लाख रूपये नकद, एक पदक तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

राष्ट्रपति भवन के अशोक हाल में आयोजित भव्य समारोह में कुंजारानी के अलावा अटलांटा ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने पर लिएंडर पेईस को भी यह सम्मान दिया गया। इन के अतिरिक्त 18 अन्य खिलाड़ियों को भी अर्जुन पुरस्कार प्रदान किये गए। खिलाडियों के प्रशिक्षकों-जिन में राष्ट्रीय महिला भारोत्तोलन के प्रमुख

प्रांशिक्षक श्री संधू भी शामिल है, को द्रोणाचार्य पुरूस्कार प्रदान किये गए।

समारोह में सबसे पहले पुरस्कार ग्रहण किया पिछले कुछ वर्षों से विश्व एवं एशिया स्तर पर लगातार पदक बटोरने वाली 29 वर्षीया कुंजारानी ने।

इस मौके पर कुंजारानी ने कहा कि उसका इरादा सिडनी में 2000 में होने वाले ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतना है।

गौतम कौल ने के.रि.पु. बल में अपर महानिदेशक का पद सम्भाला



श्री गौतम कौल

भारतीय पुलिस सेवा के जाने-माने पुलिस अधिकारी श्री गौतम कौल ने के.रि.पु. बल में पदोन्नति पर अपर महानिदेशक का कार्यभार सम्भाल लिया है। इस नियुक्ति से पूर्व वह केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में पुलिस कार्यरत थे।

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में रहते हुए श्री गौतम कौल ने अनेक व्यावसायिक उपलब्धियां हासिल की। अपने आठ वर्ष के कार्यकाल के दौरान उन्होंने इस अर्द्ध-सैनिक संगठन को कई योगदान दिये।

इससे पहले श्री गौतम कौल ने दिल्ली पुलिस में मुख्य जन संपर्क नये कार्यों की शुरूआत की, जिनमें पुलिस सहायता केन्द्रों की स्थापना तथा दुपहिया वाहनों के चालकों को सुरक्षा हेलमेट पहनने को अनिवार्य करना प्रमुख है। वह चण्डीगढ़ पुलिस

के भी प्रमुख रहे हैं तथा गृह मंत्रालय में पुलिस अनुसंधान व विकास ब्यूरो में लम्बे समय तक रहे।

उन्हें 1982 में एशियाई खेलों के लिए 'एशियाड ज्योति' तथा 1992 में फिल्म पत्रकारिता के लिए 'स्वर्ण कमल' से सम्मानित किया गया। श्री गौतम कौल व्यावसायिक व सामाजिक क्षेत्र में दिल्ली में एक जानी मानी हस्ती हैं। फिल्म पत्रकारिता में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है और दिल्ली ओलम्पिक एसोसिएशन के सीनियर उपाध्यक्ष होने की हैसियत से उन्होंने खेलों को भी प्रोत्साहन दिया।

श्री गौतम कौल दिल्ली के कई सामाजिक संगठनों के प्रमुख भी हैं। 1993-95 में वह फिल्म एवं टेलीविजन संस्था, पुणे की गवर्निंग परिषद के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। हाल ही में उन्होंने एक याचिका के माध्यम से प्रधानमंत्री के साथ विचार के लिए यह मामला भी उठाया कि पुलिस को राष्ट्रीय ध्वज के इस्तेमाल की अनुमति दी जाए और इसके लिए वह प्रेस में काफी चर्चित रहे थे।

मलेरिया की रोकथाम के लिए चिकित्सा शिविर

73बटालियन द्वारा 15 जून, 1997 को असम नागालैन्ड के सीमावर्ती क्षेत्र के विवादास्पद इलाके साइन बोर्ड के खेहोखु गांव में स्थित प्राथमिक विद्यालय परिसर में मुफ्त चिकित्सा शिविर का अयोजन किया गया। इसमें दीमापुर सदर अस्पताल के डा. भोला कुमार सिंह तथा बोकाजॉन जन स्वास्थ्य केन्द्र के डा. नकुल श्याम के अलावा श्रमिकों, सेविकाओं एवं रक्त जांच विशेषज्ञों की पूरी टीम ने अहम योगदान किया।

इस शिविर में तकरीबन सात सौ से अधिक रोगियों का इलाज किया गया। उक्त मरीजों में ज्यादातर महिलाएं हैं एवं बच्चे थे। चिकित्सा शिविर में मलेरिया के कम मरीज पाये गये।

इस अवसर पर मरीजों को औषधियां मुफ्त बांटी गयी, साथ ही गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले तथा समुचित शैक्षणिक सुविधाओं के अभावग्रस्त सैकड़ों शिक्षार्थियों को मुफ्त कापी, पेंसिल तथा चौक पेन्सिल मुहैया कराये गये और अबोध बच्चों को टाफियां बांटी गई । उक्त शिविर के दौरान रियायती दर पर जलपान से लेकर दैनिक जीवन में उपयोगी सामग्रियों को अपनी कैन्टीन द्वारा लोगों को उपलब्ध कराया ।

चिकित्सा शिविर का उद्घाटन 73 बटा. के कमाण्डेन्ट, श्री के.के. जोआरदार के द्वारा किया गया ।

के.रि.पु. बल के 28 कार्मिकों को पुलिस पदक

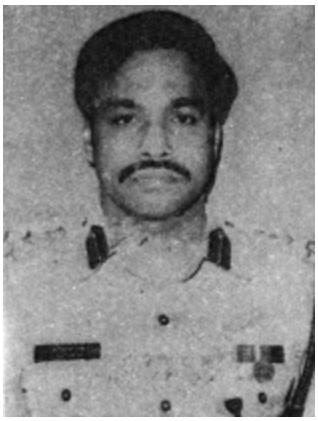
स्वतंत्रता दिवस 1997 के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति ने के.रि.पु. बल के 28 कार्मिकों की विशिष्ट तथा सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदकों से सम्मानित किया है।

इनमें से पांच कार्मिकों को राष्ट्रपति का विशिष्ट सेवाओं का पुलिस पदक और 23 कार्मिकों को सराहनीय सेवाओं का पुलिस पदक प्रदान किया गया है। पदक प्राप्त करने वाले कार्मिक इस प्रकार हैं :–

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक



पुलिस महानिरीक्षक आर.पी. सिंह *(पूर्वी सैक्टर कलकत्ता)*



पुलिस महानिरीक्षक ए. पटनायक *(बिहार सैक्टर)*



पुलिस उप महानिरीक्षक पी.पी. एस. सिद्धू (जालंधर)



कमांडेट एम.पी. चिटनिस (कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक मुम्बई)



द्वितीय कमान अधिकारी पी.एस. डाबर (एस.डी.जी.)

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक



अपर पुलिस उप महानिरीक्षक टी.आर. अरोड़ा *(ग्रुप केंद्र जालंधर)*



अपर पुलिस उप महानिरीक्षक आई.एस. गिल *(ग्रुप केंद्र–1 अजमेर)*



कमांडेट एम.एस. यादव *(एस.डी.जी.)*



कमांडेट जे.एफ. डीसूजा *(83* बटा.*)*



कमांडेट सी.एम. बहुगुणा *(8* बटा.*)*



द्वितीय कमान अधिकारी एस.एस. मान *(11* बटा.*)*



द्वितीय कमान अधिकारी मो. वसीम *(103* बटा.*)*



उप कमांडेट आर.आर. यादव *(*ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली*)*



सहायक कमांडेट बी.जी. गढ़गोली *(105* बटा.*)*



डा. एन.सी. कामथ *(*ग्रुप केन्द्र आवडी*)*



निरीक्षक के.एन. खुन्तिया *(11* बट.*)*



निरीक्षक एम.वी. कृष्णन *(2* सिग बटा.*)*



उप निरीक्षक कलम सिंह *(107* बटा.*)*



उप निरीक्षक पी.वी. मैथ्यू *(*आर.टी.सी.*–3)*



है.का. दधीबल सिंह *(49* बटा.*)*



है. कां. हीरासिंह *(8* बटा.*)*



है.कां. डी.आर. काम्बले *(*ग्रुप केन्द्र नागपुर*)*



है. कां. मोहिंदर लाल *(34* बटा.*)*



है.कां. राम कुमार *(एस.डी.जी.)*



सिस्टर इंचार्ज अन्नमा अब्राहिम *(बेस अस्पताल–2हैदराबाद)*



है.कां. चालक पौल भूजाल *(9* बटा.*)*



नायक के.पी. विश्वनाथन *(32* बटा.*)*



का. एस.सी. पाटी *(8 बटा.)*

प्रशिक्षण जरूरत के अनुरूप हो



प्रशिक्षण गोष्ठी को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह सचिव

केन्द्रीय गृह सचिव श्री के. पद्मनाभैया ने कहा है कि चूंकि के.रि.पु. बल कर्मियों की तैनाती कानून व व्यवस्था से हटकर आतंकवाद–विरोधी मुहिम पर अधिक हो रही है, उनके प्रशिक्षण में जरूरत के अनुरूप बदलाव लाया जाना चाहिये। आतंकवाद–विरोधी ड्यूटियों के दौरान कानून व व्यवस्था की अपेक्षा अलग प्रकार के हथियारों की जरूरत होती है इसलिये इन बल कर्मियों के हथियार भी आवश्यकतानुसार बदले जाने चाहिये।

श्री पद्मनाभैया 4 जुलाई, 97 को नई दिल्ली में के.रि.पु. बल प्रशिक्षण गोष्ठी के समापन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। दो दिन की इस गोष्ठी में बल के प्रशिक्षण

संस्थानों के प्रमुख और वरिष्ठ क्षेत्रीय कमांडरो ने भाग लिया।

गृह सचिव ने बल कर्मियों के समय–समय पर प्रशिक्षण पर बल देते हुये कहा कि संबंधित राज्य सरकारों के साथ बातचीत करके तैनात बल कर्मियों का कुछ भाग वापस बुलाकर उन्हें रोटेशनल प्रशिक्षण दिया जाता रहना चाहिये।

श्री पद्मनाभैया ने कहा कि आतंकवादियों द्वारा घात लगाकर किये गये हमलों आदि जैसी घटनाओं में होने वाली बल कर्मियों की हानि के कारणों का विस्तार से विश्लेषण किया जाना चाहिये जिससे भविष्य में सावधानी बरती जा सके। उन्होंने संचार व्यवस्था को सुरक्षित बनाने पर बल दिया और कहा कि जहां परिचालन कार्यों में बल कर्मियों की तैनाती और अवागमन हो वहां की संचार व्यवस्था में गोपनीयता रहनी चाहिये। परिचालनिक कार्यों की सफलता के लिये यह जरूरी है।

केन्द्रीय गृह सचिव ने बल की प्रशिक्षण पद्धति में बदलाव और उसमे आधुनिकीकरण की जरूरत बताते हुये कहा कि बल के इससे संबंधित प्रस्तावों की गृह मंत्रालय में जांच की जायेगी।

के.रि.पु. बल महानिदेशक श्री मुकुन्द कौशल ने प्रारम्भ में गृह सचिव का स्वागत किया और बल में प्रशिक्षण में गुणात्मक सुधार लाने के लिये उनसे सहायता का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के लिये अल्पकालीन और दीर्घकालीन योजना की ऐक्शन प्लान बनाई गई है जिसे खंडों में लागू करना प्रस्तावित है। इसमे बल कर्मियों को टैक्टिकल प्रशिक्षण, रोटेशनल प्रशिक्षण, तैनाती से पहले पूर्व–तैनाती प्रशिक्षण, प्रशिक्षण उपादानों में सुधार, अनुसंधान व विकास प्रकोष्ठ की स्थापना, प्रशिक्षकों को प्रोत्साहन राशि और संगठनात्मक ढांचे में सुधार शामिल है।

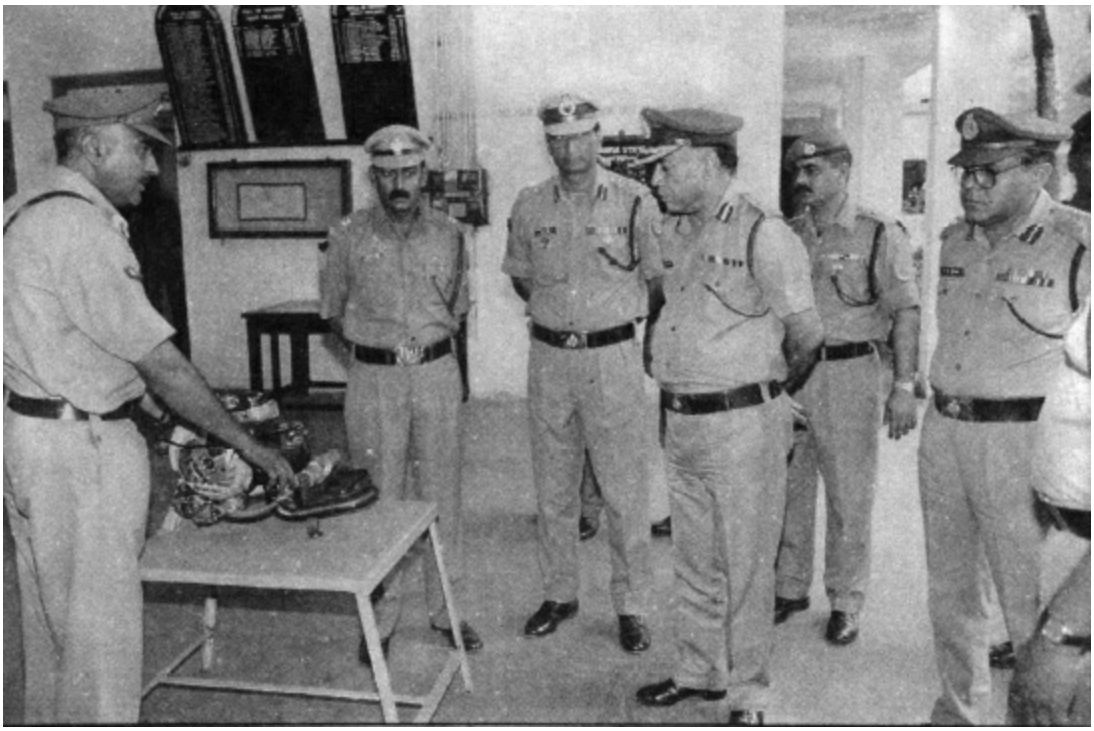
बल के केन्द्रीय प्रशिक्षण कालेज, नीमच के प्राचार्य ब्रिगेडियर गोविंद जी मिश्रा ने इस अवसर पर प्रशिक्षण की वर्तमान व्यवस्थाओं और विस्तार की भावी योजनाओं के बारे में बताया। अंत में बल के अपर महानिदेशक श्री एस.के. सेठी ने आभार प्रकट किया।

इससे पूर्व 3 जुलाई को गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए बल के महानिदेशक श्री मुकुन्द कौशल ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे हर स्तर के सब कार्मिकों के समय–समय पर प्रशिक्षण को जरूरी बताते हुये कहा कि इससे परिचालनिक (आपरेशनल) जरूरतों के अनुरूप उनके मानसिक दृष्टिकोण और दक्षता में बदलाव और सुधार आयेगा। देश की आन्तरिक सुरक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बल कर्मियों की तैनाती आतंकवाद विरोधी मुहिम पर सबसे अधिक है। इसलिये प्रशिक्षण सिलेबस उसके अनुरूप होना चाहिये। बल कार्मियों की ड्यूटी पर तैनाती के दौरान समय–समय पर 'आन दी स्पाट' प्रशिक्षण टैक्टिकल चलायें। गलतियों को सुधारने के लिये उपयोगी है किन्तु यह रोटेशनल प्रशिक्षण का स्थान नहीं ले सकता। श्री कौशल ने कहा कि गोष्ठी में परिचालनिक जरूरतों के अनुरूप प्रशिक्षण को ढालने पर विचार विमर्श करके व्यावहारिक और सकारात्मक योजना बनाई जानी चाहिये।

प्रारम्भ में अतिरेक्त महानिदेशक श्री एस.के. सेठी ने महानिदेशक का स्वागत किया और कहा कि गोष्ठी का उद्देश्य प्रशिक्षकों और उपयोगकर्ताओं के बीच विचारों का आदान–प्रदान कराना है जिससे प्रशिक्षण अधिक प्रभावी व व्यावहारिक बनाया जा सके।

गोष्ठी में प्रशिक्षण के विभिन्न पक्षों जैसे सिलेबस में बदलाव लाने, प्रशिक्षण के तरीकों, प्रशिक्षकों की जरूरत, प्रशिक्षण अनुसंधान व विकास प्रकोष्ठ और रोटेशनल प्रशिक्षण आदि पर विस्तार से चर्चा हुई। बल में पहली बार इस प्रकार की प्रशिक्षण पर गोष्ठी का आयोजन किया गया था जिसमें बल के सभी प्रशिक्षण संस्थनों के प्राचार्यों तथा क्षेत्रीय कमांडरों ने भाग लिया।

'के.रि.पु. बल – 2002' गोष्ठी संपन्न



नीमच प्रवास के दौरान महानिदेशक प्रशिक्षण महाविद्यालय में

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 11वें बैच के पुनर्मिलन समारोह के दौरान 'के.रि.पु.बल - 2002' विषय पर आयोजित दो दिवसीय गोष्ठी 28 जुलाई, 1997 को नीमच केंद्र में संपन्न हुई। के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री मुकुन्द कौशल ने गोष्ठी का समापन भाषण दिया।

के.रि.पु. बल के इतिहास में यह पहला मौका था, जबकि सीधे नियुक्त राजपत्रित

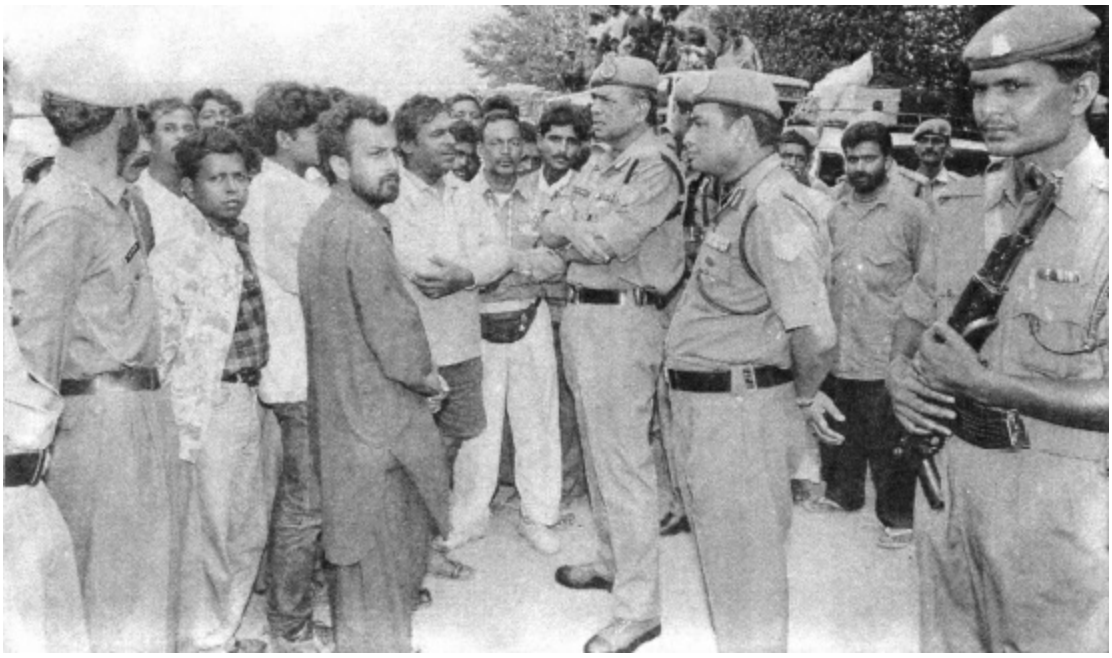
अधिकारियों के एक बैच का पुनर्मिलन आयोजित किया गया। 1971 में पास-आउट हुए 11वें बैच के 40 से अधिक अधिकारी अपनी 25 वर्षों की सेवा के बाद पुन: अपनी प्रशिक्षण स्थली पर मिले। आज ये सभी अधिकारी वरिष्ठ कमांडेण्ट स्तर के अधिकारी हैं। इस पुनर्मिलन के दौरान आयोजित गोष्ठी में सन् 2002 में बल की भूमिका तथा आवश्यकताओं से संबंधित मुद्दों पर अपने अनुभव के आधार पर चर्चा करने के बाद संचालनिक दक्षता प्राप्त करने के लिये कुछ ठोस सुझाव सुझाए गये।

इस मौके पर बोलते हुए महानिदेशक श्री कौशल ने अधिकारियों का आहवान किया कि वे अपने कर्त्तव्यों को अंजाम देते समय अपने सर्वश्रेष्ठ गुणों का प्रदर्शन करें, तभी उन्हें अपेक्षित परिणामों के साथ-साथ कार्य संतुष्टि भी मिलेगी।

इससे पूर्व एक सैनिक सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि ये गर्व का विषय है कि पंजाब, जम्मू-कश्मीर तथा देश के उत्तर-पूर्वी राज्यों में आतंकवाद को काबू में रखने तथा कानून-व्यवस्था को बनाये रखने व शांति बहाल करने में के.रि.पु. बल का बहुत बड़ा हाथ रहा है। यह देश में अकेला बल है जो राज्य पुलिस के साथ काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि बल के कार्मिकों के लिये पदोन्नतियों के अवसरों को बढ़ाया जा रहा है, जिसके परिणाम शीघ्र सामने आयेंगे।

महानिदेशक श्री कौशल ने इस अवसर पर अधिकारियों के लिये एक नव-निर्मित आवासीय खण्ड का भी उद्घाटन किया तथा केन्द्रीय प्रशिक्षण महाविद्यालय परिसर में एक पौधा रोपकर वृक्षारोपण समारोह का भी उद्घाटन किया। अपर महानिदेशक श्री गौतम कौल एवं अन्य अधिकारियों ने भी इस मौके पर वृक्ष रौंपे। इससे पूर्व 27 जुलाई, 97 को अपर महानिदेशक श्री गौतम कौल ने गोष्ठी का शुभारंभ किया। गोष्ठी से पूर्व उन्होंने नीमच स्थित शहीद स्मारक पर पुष्प चक्र भी चढ़ाया।

अमरनाथ यात्रियों को बल का सहयोग



अमरनाथ यात्रियों से उन की समस्याएं सुनते बल के अधिकारी



अमरनाथ यात्रा मार्ग में तैनात बल की महिलाकर्मी

18 से 21 अगस्त, 97 तक चली अमरनाथ यात्रा के दौरान हमेशा की तरह के.रि.पु. बल कार्मिकों ने यात्रियों की हर संभव सहायता की। इस वर्ष अमरनाथ यात्रा को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए बल की 12 कंपनियों को तैनात किया गया था।

इस दौरान बल के कार्मिकों ने यात्रियों के काफिले को जम्मू से पहलगाम तक पहुंचने और वापस लौटने में पूरी मदद व सुरक्षा प्रदान की। यात्रियों की सुरक्षा के लिए

बल ने पहलगाम, चंदनबाड़ी, शेषनाग, पंचतरणी तथा पवित्र गुफा के पास विशेष प्रबंध किये थे। यात्रा के दौरान बीच में पड़ने वाले पडावों, यात्रियों के ठहरने वाले होटलों, पार्किंग स्थलों आदि की सुरक्षा का जिम्मा के.रि.पु. बल के ही पास था।

यात्रा का नियंत्रण पहलगाम और चंदनबाडी में के.रि.पु. बल ने ही संभाला हुआ था। इस कार्य के लिए बल के पुरूष कर्मियों के अतिरिक्त महिला कर्मी तथा श्वान दल को भी तैनात किया गया था।

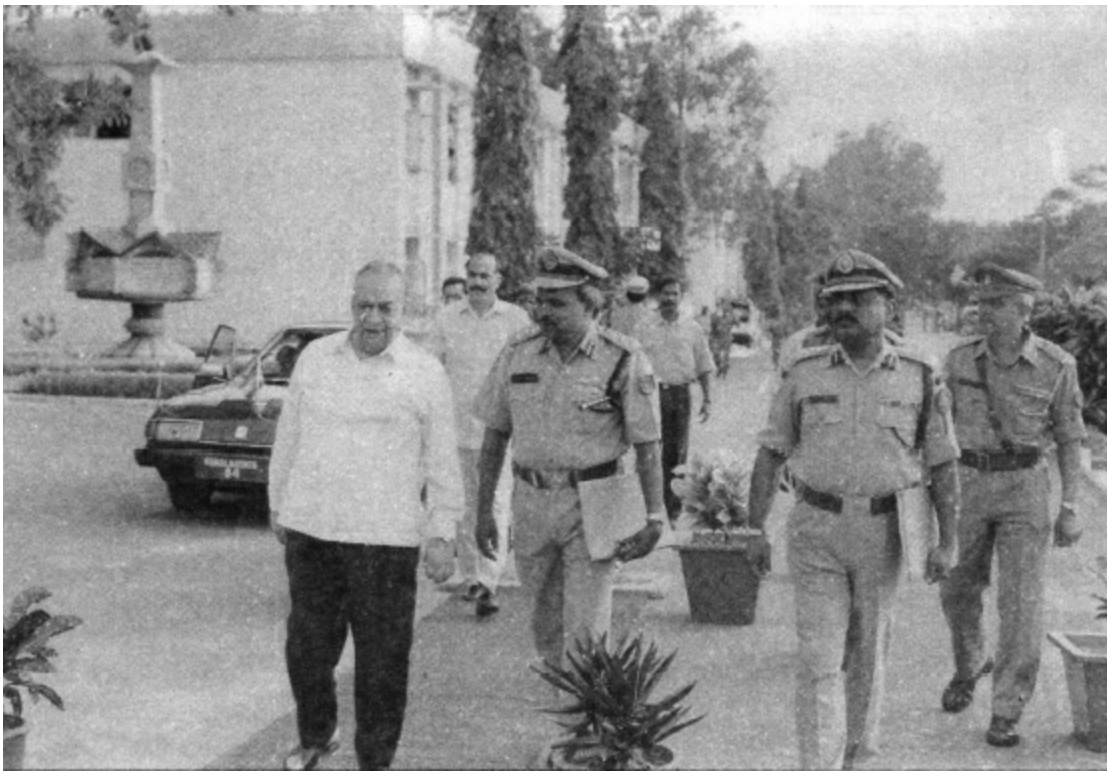
यात्रियों की सुविधा के लिए नूनवान तथा पहलगाम में सूचना केंद्र स्थापित किये गये थे जहां से यात्रियों को समस्त सूचनाएं प्रदान की जा रही थी।

नूनवान, पहलगाम तथा चंदनवाड़ी जैसे आधार कैंपों में यात्रियों के लिए मुफ्त चाय तथा जलपान आदि की व्यवस्था की गयी थी।

पहलगाम तथा चंदनबाड़ी में यात्रियों के ठहरने के लिए मुफत तम्बुओं की व्यवस्था की गयी थी। हजारों की संख्या में यात्रियों ने इस सुविधा का लाभ उठाया। पहलगाम में यात्रियों की सुविधा के लिए तम्बू में एस.टी.डी. तथा आई.एस.डी. सुविधा की भी व्यवस्था की गयी थी।

पहलगाम तथा चंदनबाड़ी में यात्रियों की सुविधा के लिए बल ने 5-5 बिस्तरों वाले अस्पताल भी स्थापित किये थे। जिसमें हजारों की तादाद में यात्रियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करायी गयी। पहलगाम में यात्रियों की सुविधा के लिए सी.एस.डी. कैंटीन सुविधा भी उपलब्ध करायी गयी थी।

गृहमंत्री का पल्लीपुरम दौरा



ग्रुप केंद्र पल्लीपुरम में आते हुए गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त

20अगस्त, 1997 को अपने केरल दौरे के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त पल्लीपुरम स्थित के.रि.पु. बल कैंप भी गये। ग्रुप केंद्र पल्लीपुरम के अपर उप महानिरीक्षक श्री के. केशवन तथा 105 आर.ए.एफ. बटा. के कमांडेट श्री टी.एस.ए. हकीम ने गृह मंत्री की आगवानी की।

गृह मंत्री ने क्वार्टर गार्ड परिवार कल्याण केंद्र, अस्पताल तथा अधिकारी मेस आदि का दौरा किया। उन्होंने क्वार्टर गार्ड में सलामी ली तथा अस्पताल में मरीजों को फल वितरित किये तथा उनका कुशल क्षेत्र पुछा। वह स्टेशन पर मौजूद अधिकारियों से भी मिले।

हैदराबाद में सद्भावना दिवस



हैदराबाद में बल के कार्मिकों को शपथ दिलाते हुए स्पेशल महानिदेशक श्री कार्त्तिकेयन

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी के जन्म दिवस 20 अगस्त को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने सद्भावना दिवस के रूप में मनाया और 20 अगस्त से 5 सितम्बर तक के पखवाड़े को 'सांप्रदायिक सामंजस्य पखवाड़े' के रूप में मनाया गया।

20 अगस्त, 97 को 'मेंहदी मंजिल' सी.आर.पी.एफ. भवन, बंजारा हिल्स में आयोजित समारोह में सी.आर.पी.एफ. के स्पेशल महानिदेशक और सी.बी.आई. के स्पेशल निदेशक श्री डी.आर. कार्तिकेयन ने अपने भाषण में कहा कि उस महान नेता श्री राजीव गांधी की याद में जिन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया, सबसे उचित कार्य यह होगा कि हम सब सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता का संकल्प लें और साथ ही प्रतिज्ञा करें कि हम अपने सभी मतभेदों को आपसी विचार-विमर्श से हल करेंगे।

बरबरा वन क्षेत्र में बल की उपलब्धियां



बरबरा वन क्षेत्र में पकड़े गये तस्करों के साथ बल के कार्मिक (ऊपर व नीचे)



उड़ीसा के वनपुर क्षेत्र में पड़ने वाला बरबरा धुलानी वन क्षेत्र के.रि.पु. बल के संरक्षण में है। इस क्षेत्र में बल की उपस्थिति के परिणाम सामने आने लगे हैं। चम्पाझार तथा झारण जैसे वन क्षेत्र जिन्हें संरक्षित वन क्षेत्र घोषित किया गया है, तथा जो अवैध कटाई के कारण काफी उजड़ गये थे, के.रि.पु. बल के प्रयासों से फिर हरेभरे दिखाई देने लगे हैं। के.रि.पु. बल ने इस क्षेत्र में वृहद रूप से वृक्षारोपण किया है।

वन क्षेत्र में वृक्षारोपण के अतिरिक्त के.रि.पु. बल कार्मिक स्थानीय नागरिकों को स्वास्थ्य सुविधाएं भी उपलब्ध कराते है। दिसंबर, 96 तक इस वन क्षेत्र में के.रि.पु. बल के कार्मिक 24 लाख रूपये से अधिक की तस्करी की जा रही अवैध वन सम्पदा को जब्त कर चुके है।

बल के कार्मिकों की यहां सतत उपस्थिति के कारण इस क्षेत्र में अवैध कटाई तथा शिकार पर भी पाबंदी लगी है।

संक्षिप्त समाचार

कथाकली प्रेमी बल का कार्मिक



रमन कुट्टी (दाएं) कथाकली नृत्य की एक मुद्रा में

के.रि.पू. बल महानिदेशालय स्थित सिगनल सेंटर में क्रिप्टोग्राफर के रूप में कार्यरत श्री रमनकुटी एक कुशल कथाकली नर्तक हैं । श्री रमन कुट्टी 1975 में केरल के प्रसिद्ध केरल कलामंडलम में कथाकली नृत्य को सीखने के लिए विद्यार्थी के रूप में शामिल हुए तथा यहां से 6वर्ष का कोर्स तथा कथाकली में दो वर्ष का स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया। सरकार द्वारा स्कालरशिप योजना के तहत भी उनका चयन किया गया। इस दौरान नवें एशियायी खेलों सहित रमन कुट्टी ने देश विदेश में कई प्रदर्शन किये।

श्री कुट्टी ने देश के लगभग हर भाग में कलामंडल कलाकारों के साथ सामूहिक एवं एकल प्रस्तुतियां दी है। उनके विदेशी दौरों में अमरीका तथा कनाड़ा के दौरे शामिल हैं। जहां उन्होंने कथाकली प्रदर्शन किया। श्री रमन कुट्टी दूरदर्शन पर भी अपना प्रदर्शन कर चुके हैं।

महानिदेशालय में सद्भावना दिवस

20अगस्त, 97 को पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री राजीव गांधी की सद्भावना दिवस के रूप में मनायी जाने वाली पुण्य तिथि के अवसर पूरे देश में फैली बल की युनिटों ने देश में भावात्मक एकता और सद्भावना को बनाए रखने की शपथ ली। महानिदेशालय के कार्मिकों को यह शपथ बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल ने दिलायी। बल के

कार्मिकों ने इस मौके पर जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा का भेदभाव किये बिना भावात्मक एकता और सद्भावना को बनाए रखने की शपथ ली। उन्होंने शपथ ली कि वे हिंसा का सहारा लिए बिना सभी प्रकार के मतभेद बातचीत और संवैधानिक माध्यमों से तय करेंगे।

जोखिम निधि लाभ

माह अगस्त 1997 में मृत्यु के 25 मामलों में केंद्रीय जोखिम निधि से कुल 17,80,500 रुपये देने स्वीकृत किये गये। इसी प्रकार अक्षमता के चार मामलों में कुल 61,500 रुपये देने स्वीकृत किये गये।

जोखिम निधि "बी" स्पेशल रिस्क फंड योजना से इसके 9 सदस्यों की मृत्यु के मामले में भी कुल 3,15,000 रुपये स्वीकृत किये गये।

माह जुलाई '97 में मृत बल के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह जुलाई '97 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

है.कां. योगेंद्र प्रसाद सिंह (36 बटा.), कां एम०के.डे. (36 बटा.), सफाई कर्मचारी जगदीश राम (81 बटा.), कां. लक्ष्मण धाने (103 बटा.), नायक मोहम्मद वाहिद अलीखान (89 बटा.), कां. रैका सेठी (52 बटा.), स.उ.नि. (एम) अंजनी कुमार (112 बटा.), कां. यशपाल (महानिदेशालय), कुक बाबू लाल (67 बटा.), कां. हरजीलाल (41 बटा.), कां. राम बाबू (74 बटा.), कां. प्रवेश कुमार (38 बटा.), है. कां. जी.के. उर्मिथन (ग्रुप के. पल्लिपुरम), नायक/रे.आ.के.एस. बाबू (116 बटा.), कां. नजीर अहमद (52 बटा.), सहायक कमांडेट आर.सी. मिश्रा (4 बटा.), सफाई कर्मचारी ए. रामुलू (91 बटा.), कां. जयबीर सिंह (119 बटा.), कां. सुखदेव सिंह (105 बटा.) तथा बारबर हरेंद्र ठाकुर (4 बटा.)।

इसके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार मई '97 में कां. सुमेर सिंह (88 बटा.) तथा जून '97 में है. कां. राधा कृष्ण (99 बटा.), नायक धमपाल (16 बटा.), नायक आजाद खान (93 बटा.), नायक/रे.आ. कैलाश चंद (1 सिग. बटा.) तथा है. कां. एच.टी. नायडू भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

के.रि.पु.बल ने 382 आतंकवादी पकड़े

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस ने माह जुलाई '97 में देशभर में 382 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। इस दौरान हुई 13 मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में 8 आतंकवादी मारे गये।

इनमें से सर्वाधिक 329 आतंकवादी पूर्वोत्तर राज्यों में गिरफ्तार किये गये जिसमें

अकेले 244 असम व 63 मणिपुर में पकड़े गये। इनके अलावा जम्मू-कश्मीर में 35 तथा आंध्र-प्रदेश में 12 आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया। जम्मू-कश्मीर में पकड़े गये आतंकवादियों में, 15 हिजबुल मुजाहीद्दीन, 5 अलजहाद गुट एवं 2 इस्लामिक फ्रन्ट गुट के थे। इसके अतिरिक्त असम में उल्फा के 15 आतंकवादी, त्रिपुरा में नेशनल लिबरेशन फ्रन्ट (एन.एल.एफ.टी.) के दो तथा आल त्रिपुरा ट्रायबल्स फ्रंट बोडो लिबरेशन टाइगर फोर त्रिपुरा ट्राइबल फोर्स (टी.टी.वाई एफ) एवं त्रिपुरा के कुकी नेशनल लिबरेशन फ्रन्ट के एक-एक आतंकवादी पकड़े गये। आन्ध्र प्रदेश के पीपुल्स वार ग्रुप (पी.डब्लू.जी) का एक आतंकवादी मारा गया एवं इसी गुट के 2 को गिरफ्तार किया गया।

इस दौरान बल के कार्मिकों ने 93 घातक हथियार तथा 9855 गोली बारूद भी बरामद किया। बरामद हथियारों में 18 ए.के. 47, 9 ए.के 56, 25 पिस्तौलें व रिवाल्वरें, 7 राकेट लांचर, 1 ग्रेनेड लांचर, 8 देश में बनी बन्दूके तथा 3 यू.एम.जी. शामिल हैं। 22 हथियार अकेले पूर्वोत्तर राज्य में ही बरामद किये गये।

इस दौरान हुई मुठभेड़ों तथा अन्य अभियानों में बल के 9 बहादुर जवान वीर गति को प्राप्त हुए तथा 24 अन्य गंभीर रूप से घायल हुए।

माह अगस्त '97 में मृत बल के कार्मिक

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अगस्त '97 में मृत्यु को प्राप्त हुए। सी.आर.पी.एफ. समाचार परिवार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

कां. दिवान सिंह (123 बटा.), कां. राम अवतार मीणा (60 बटा.), है. कां. यू.ए. मांगरे (23 बटा.), उ.नि.बी. एन. झा (106 बटा.), कां. नाहरमल मीणा (ग्रु.के. नयी दिल्ली), कां. राजेंद्र प्रसाद (70 बटा.) है.कां./ड्रा. सुखलाल हालदार (95 बटा.), कां./ड्रा.आर.एम. पांडे (1 बटा.), नायक अनावश सिंह (133 बटा.), कां.आर. गोविंद राव (58 बटा.), कां. के.एम. नायर (ग्रु.के. नयी दिल्ली), चपरासी नंदलाल मन्नी (उ.म.नि. कार्यालय भोपाल), नायक/ड्रा. आर. रविंद्रन नायर (51 बटा.), वाटर कैरियर श्री किशन (67 बटा.), कां. मेजर सिंह (117 बटा.), ला.ना. दशरथ सिंह (6 बटा.), है.कां./पी.एफ. जगन्नाथ सिंह (3 सिंग बटा.), ला.ना.एल.एस. प्रकाश (113 बटा.), तथा है.कां. धरम सिंह (19 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार माह जून '97 में कां. जगदीश चंद जोशी (ग्रु.के. इम्फाल) तथा जुलाई '97 में नायक बिर्दी नंद (77 बटा.), कां.पी. वेकेटेशन (77 बटा.), कां. अशोक सिंह गुजर (77 बटा.), कां. लखपति सिंह (77 बटा.), कां. नारायण चौहान (77 बटा.), लांस नायक शमशेर सिंह (133 बटा.) तथा है.कां. सूरत सिंह (18 बटा.) भी मृत्यु को प्राप्त हुए।



अपने केरल दौरे के दौरान केंद्रीय गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त बल के पल्लिपुरम केंद्र भी गये, और वहां वह अस्पताल में भर्ती मरीजों से भी मिले

रजि. न. 467/87



सीधे नियुक्त राजपत्रित अधिकारियों के 11वें बैच के पुनर्मिलन पर 27 जुलाई 1997 को नीमच स्थित, शहीद स्मारक पर शहीदों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए अपर महानिदेशक श्री गौतम कौल

राजभाषा अंक

सी.आर.पी.एफ. समाचार

खंड - 10 अंक - 6 30 सितंबर, 1997 8 आश्विन, शक 1919

"मानस भवन के आम जन,
जिसकी उतारें आरती ।
हे भगवान, भारतवर्ष में,
गूँजे हमारी भारती ।"

– मैथिलीशरण गुप्त

14 सितंबर, हिंदी दिवस
पर विशेष



सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-10 अंक-6
30 सितंबर, 1997
8 आश्विन, शक 1919

मुख्य संपादक
जी.सी. द्विवेदी

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो अनुभाग
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 की ओर से
जी.सी. द्विवेदी

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

विषय-सूची

महानिदेशक की ओर से
राजभाषा के प्रति सोच
विदेशियों की हिंदी सेवा
सम्पर्क भाषा हिंदी
अनुवाद प्रक्रिया
राजभाषा हिंदी के बढ़ते कदम
राष्ट्रभाषा हिंदी पर गर्व करें
भाव पुष्प
कविताएं

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

-संपादक

हिंदी द्वारा सारे भारतवर्ष को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

* * *

मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि हिंदी के बिना हमारा काम नही चल सकता।

- बंकिमचंद चटर्जी

* * *

हिंदी विश्व की सर्वाधिक सम्पन्न भाषा व संस्कृत की ज्येष्ठ पुत्री है।

-आचार्य विनोबा भावे

* * *

प्रांतीय ईया-द्वेश दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी चीज से नही।

-सुभाषचन्द्र बोस

महानिदेशक की ओर से



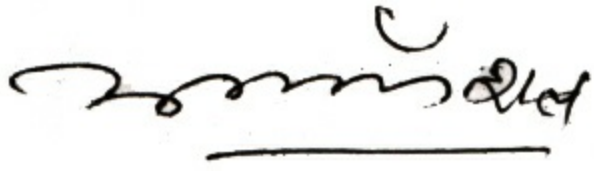
राजभाषा का सामान्य अर्थ है राज-काज चलाने की भाषा अर्थात् भाषा का वह रूप जिसके द्वारा राजकीय कार्य चलाने में सुविधा हो। ऐसी भाषा वही हो सकती है जो प्राचीन काल से पूरे राष्ट्र में हर जगह किसी न किसी रूप में बोली व समझी जाती रही है, चाहे इसके नाम समय-समय पर भिन्न-भिन्न रहे हों। हिंदी को सर्वमान्य रूप से "राजभाषा" स्वीकार कर 14 सितम्बर 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343(1) में संविधान सभा ने संघ की राजभाषा घोषित कर एक सांविधिक मान्यता प्रदान की। अत: हम सभी भारतीयों के लिए 14 सितम्बर का एक विशेष महत्व है।

यह सच है कि अभी तक सरकार भाषा के प्रश्न के साथ आंभेन्न रूप से जुड़े भावनात्मक पहलुओं के प्रति सजग रही है और उसकी यह नीति रही है कि राजभाषा हिंदी किसी पर थोपी न जाए अपितु सद्भावनापूर्ण वातावरण में इसका प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ाया जाए। तदुनसार राजभाषा अधिनियम 1963 पारित हुआ और बाद में राजभाषा नीति के अनुपालन के विचार से राजभाषा नियम 1976 बनाया गया और पूरे देश को "क", "ख" व "ग" तीन क्षेत्रों में बांटां गया तथा इनमें हिंदी प्रयोग बढ़ाने के लिए अलग-अलग टारगेट निर्धारित किए गए जो प्रतिवर्ष वार्षिक कार्यक्रम के रूप में प्रकाशित किए जाते रहे हैं। इनमें की गई व्यवस्थाओं के अनुसार ही कार्यालयों में तिमाही बैठकें, कार्यशालाएं , प्रतियोगिताएं, प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं, भर्ती परीक्षाओं, साक्षात्कारों, बैठकों, निरीक्षणों व जांच आदि में हिंदी प्रयोग की पूरी-पूरी छूट दी जाती है। फिर भी क्या कारण है कि आजादी के 50 वर्ष बीत जाने के बाद भी राजभाषा हिंदी को सरकारी कामकाज में जो स्थान मिलना चाहिए था, वह स्थान हम नहीं दिला पाए ?

आज अपेक्षा इस बात की है कि वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों को सम्मुख रखकर, सभी कार्यालय/यूनिटें। संस्थाएं अपना कार्यक्रम बनाएं। वर्तमान समय वह किस स्थिति में हैं और अपेक्षित स्थिति पर पहुँचने के लिए क्या प्रयास करने होंगे इसके निर्देश अपने अधीनस्थों को जारी करें ताकि इस कार्य में गति लाई जा सके। कुछ कार्य ऐसे होते है जिनके लिए राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियम के अनुसार शतप्रतिशत कार्य हिंदी या द्विभाषी करने अपेक्षित हैं। इनमें राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन, हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना, "क" व "ख" क्षेत्र की राज्य सरकारों तथा उनमें स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार हिंदी में करना, देवनागरी या द्विभाषी टाइपराइटरें खरीदना, हिंदी पुस्तकें खरीदना, हिंदी टाइपिंग/आशुलिपिक का प्रशिक्षण दिलाना आदि कार्य सांविधिक आवश्यकताएं हैं।

इन 50 वर्षों में हमने हिंदी में काम-काज करने के साधन तो जुटा लिए किन्तु उनका उपयोग जितना होना चाहिए, उतना नहीं हो रहा है। फायदा तभी होगा जब हम उन साधनों का स्वयं प्रयोग कर अपना पूरा काम-काज हिंदी में करना शुरू करें। हम इस ओर अग्रसर हैं और यह जानकर मुझे खुशी है कि बल के कुछ कार्यालय इस संबंध में अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहे हैं।

अंत में इस पावन दिवस पर राजभाषा कार्यान्वयन की शुभकामनाएं देते हुए मैं बल के सभी सदस्यों से आशा करता हूँ कि राजभाषा के गतिशील विकास में पूर्ण योगदान देकर देश की गौरवान्वित करें।



(मुकुन्द कौशल)
महानिदेशक

राजभाषा के प्रति सोच

- श्यौनाथ सिंह,
हिन्दी अधिकारी

आज भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र है। स्वतंत्रता का अर्थ अगर मानवोत्थान के संदर्भ में लिया जाए तो बहुत अच्छी बात है, किन्तु पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण में फंसकर अपनी संस्कृति, भाषा व धर्म को भूल जाएं और अपने ही घर में घर वालों का तिरस्कार कर, सिर उठाकर चलने को स्वतंत्रता कहें, तो मैं कहूँगा कि हम ऐसे पथ पर चलते-चलते पुन: ऐसे विकारों, आपसी कलहों व चारित्रिक हनन में फंसकर न रह जाएं कि उसमें से निकलकर वापस आने का रास्ता ही बंद हो जाए। यहां अन्य पक्षों को छोड़ते हुए मैं केवल भाषा पक्ष पर ही आपका ध्यान केन्द्रित करना चाहूंगा कि क्या राष्ट्रीयता का परिचय देने के लिए हम अपनी पीढ़ियों को कोई भाषा दे पाए हैं या कोशिश कर रहे हैं। जहां अपनी राष्ट्रीयता का परिचय देने की बात आती है तो वहां हम अंग्रेजी का प्रयोग करने में अपना सौभाग्य समझते हैं। अन्यथा क्या कारण है कि अपने किन बहुसंख्यक मित्रों-संबंधियों के लिए अंग्रेजी में निमंत्रण पत्र छपवाते हैं जो अपनी भाषा न जानकर केवल अंग्रेजी बोलते, समझते व लिखते हैं। कितने लोग ऐसे कार्यक्रमों का बहिष्कार करने का साहस जुटा पाते हैं या सामाजिक बहिष्कार न भी करें तो अपना क्षोभ व असहमति प्रकट कर पाते हैं। निजी जीवन में ही नहीं सरकारी समारोहों, सम्मेलनों व संगोष्ठियों के लिए निमंत्रण-पत्र कभी भी केवल हिंदी में नहीं छपवाए जाते या तो वे द्विभाषी या केवल अंग्रेजी में छपवाए जाते हैं। द्विभाषी छपवाने की बात भी सरकारी कार्यालयों में हिंदी अनुभाग द्वारा जोर दिए जाने के बाद ही गले उतरती हैं, आखिर अपनी भाषा के साथ ऐसा दुराग्रह क्यों ?

यदि किसी सज्जन से अंग्रेजी में छपवाने के कारण के साथ-साथ पूछ लिया जाए कि संस्कार भी अंग्रेजी में होगा या पंडित जी द्वारा बोले जाने वाले मंत्र और उनकी व्याख्या भी अंग्रेजी में होगी। प्राय: उत्तर दिया जाता है कि जल्दी में कार्ड अंग्रेजी में छप गए या बच्चों ने अंग्रेजी में छपवा लिऐ। क्या कभी हमने सोचा है कि निमंत्रण कार्ड मनुष्य की अस्मिता व सभ्यता की पहचान होती है, और उनकी अभिव्यक्ति केवल हृदय की भाषा में ही हो सकती है। निजी जीवन में यह सब करने के लिए हम स्वतंत्र हैं किन्तु जब सरकारी काम-काज में राजभाषा आदेशों के पालन का प्रश्न उठाया जाता है तो वहां भी यही कहा जाता है कि इस बार गलती से ऐसा हो गया, आगे ऐसा

नहीं होगा, किन्तु फिर भी यह सिलसिला जारी रहता है। ऐसे न जाने कितने राजभाषा संबंधी आदेशों के उल्लंघन के उदाहरण हैं जो हम जानते हुए करते रहते हैं।

एक बार त्रिवेन्द्रम में संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों के साथ वहां के पद्मनाभन मंदिर जाने का सौभाग्य मिला। मंदिर के पदाधिकारियों को संसद सदस्यों के मंदिर आने की सूचना पहले ही प्राप्त हो चुकी थी। जैसे ही परंपरानुसार मुख्य द्वार से मंदिर में प्रवेश किया कि पुजारियों ने विधिवत तिलक व दीप-धूप से माननीय सदस्यों का स्वागत किया और फर्राटेदार अंग्रेजी में वहां के बारे में बोलना शुरू कर दिया। माननीय रासा सिंह रावत, संसद सदस्य ने हंसते हुए पदाधिकारी महोदय से चुटकी ली कि क्या आपका भगवान केवल अंग्रेजी समझता है, लगता है उसे हिंदी या अन्य भारतीय भाषाएं नहीं आतीं। इसका कोई जबाब उनके पास नहीं था। जैसे ही अंदर मुख्य मूर्ति के पास पहुंचे तो भगवान की आरती संस्कृत के मंत्रों से हो रही थी, अत: यह स्पष्ट था कि भारतीय भाषाएं संस्कृत व हिंदी के कितनी नजदीक हैं। सभी दक्खिनी भाषाओं में संस्कृत का कितना प्रभाव है और यही कारण है कि जगद्गुरू शंकराचार्य का जन्म हालांकि केरल में हुआ था किन्तु जितना भी उन्होंने साहित्य लिखा वह या तो हिंदी में या संस्कृत में है।

आज कार्यालयों/मंत्रालयों/विभागों सहित अनेक स्थानों पर सभाएं गोष्ठियां सम्मेलन होते हैं, चर्चाएं की जाती हैं भारत की भाषा समस्या पर अथवा अंग्रेजी की अनिवार्यता पर। ये वो लोग हैं जिन्हें अपने देश, समाज एवं भाषा की चिंता होती है अन्यथा हाथ पर हाथ रखकर बैठने वालों की संख्या इस देश में कम नहीं है। जहां तक भाषा का प्रश्न है, यह एक ऐसा विषय है जो दुःखदायी है, इस पर हमें रोना तो आता नहीं है, परन्तु इस पर जोर से हमें अपने ही ऊपर हंसी आती है कि जब देश का विभाजन हुआ और हमने इसे स्वतंत्रता मान लिया और हिंदी को संवैधानिक रूप से राष्ट्र की राष्ट्रभाषा व राजभाषा घोषित कर दिया। साथ ही अंग्रेजी को भी सहभाषा घोषित किया गया जो राजभाषा के पक्ष में नहीं था। यही कारण है कि आज भी अंग्रेजी सरकारी कार्यालयों में छायी हुई है। विडम्बना तो इस बात की है कि अपनी भाषा को कार्यालयों के काम-काज की भाषा बनाने के लिए हमें लड़ना क्यों पड़ रहा है जबकि विदेशी भाषा अंग्रेजी फलीभूत हो रही है। रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, फार्म स्टैंड्रड ड्राफ्ट बार-बार द्विभाषी कर दिए जाने के बाद पुन: अंग्रेजी में प्रचलित हो जाते हैं। "हिंदी वर्जन विल फोलो" की जगह अंग्रेजी वर्जन विल फोलो की स्थिति लाने में हम असमर्थ क्यों हैं? आखिर लोकतंत्र में लोक भाषा के साथ यहां मजाक क्यों हो रहा है ? इससे भी अधिक देश के साथ दुर्भाग्य यह है कि संसार के सभी देशों का अपना एक नाम है किन्तु हमारे देश के नाम तो अनेक हैं, हिंदी में भारत, उर्दू में हिन्दुस्तान, अंग्रेजी में इंडिया और आर्यसमाजी इसे आर्यावर्त कहकर पुकारते हैं। ऐसा देश जिसकी न कोई राष्ट्रभाषा, न राजभाषा और न अपना नाम और नाम के साथ भी इतना विश्वासघात कि संविधान में देश का नाम इंडिया रख दिया गया और उसे सौ काल्ड "भारत" कहा गया। यह हमारा दुर्भाग्य नहीं तो क्या है?

अंग्रेजों के समय भी शायद अंग्रेजी हमारी विवशता नहीं थी, जिस प्रकार आज एक विवशता, एक अनिवार्यता गले की घण्टी बन गई है। गांन का अनपढ़ किसान भी आज सब्सीडी की खाद या चीनी आदि शब्दों का प्रयोग करते हुए मिल जाएगा क्योंकि शायद रियायती खाद या चीनी आदि शब्दों का स्वतंत्र भारत में प्रयोग वर्जित है। यह विवशता, अनिवार्यता हमारी परतंत्रता है और इससे स्वतंत्र होना हमारी प्रथम अनिवार्यता है। किसी का भी नामकरण करते समय भी अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ पा रहे हैं जैसे आर.ए.एफ. तथा पी.के.ई. आदि नाम पहले अंग्रेजी में रखे गए और बाद में उनके नाम का हिंदीकरण किया गया। ऐसे नामकरण न तो स्वाभाविक होते हैं और न ही हमारी संस्कृति के अनुसार होते हैं, जो उनका कसूर नहीं है क्योंकि भाषा का स्वाभाविक स्वरूप प्रयोग करने से बनता है। नहीं तो क्या कारण है कि सशस्त्र सेनाओं सहित अर्द्ध-सैनिक बलों में भी अब ड्रिल में पहले प्रयोग में आने वाले अंग्रेजी के अंटेशन व ईजी शब्द अब बिल्कुल अटपटे लगते हैं। इसी प्रकार कृषि भवन व उद्योग भवन की जगह लेने के लिए अंग्रेजी शब्द ढूंढने लगे तो शायद ही कोई सफलता मिल पाए।

आज सरकारी काम-काज में अंग्रेज़ी का मोह छूट नहीं पा रहा है इसके लिए हमारे बचपन से ही समय-समय पर अंग्रेजी में डाले गए संस्कारों का असर है। इसमें हमारी ओर से कोई प्रतिवाद नहीं कि बच्चों को कौन सी व कितनी भाषाएं सिखाई जाएं और किस स्कूल में पढ़ाया जाए। हमारा क्षेत्र केवल सरकारी काम-काज की भाषा तक सीमित है और जो प्रावधान नियमों में रखे गए हैं उनका अनुपालन करना व कराना है। देश की राजभाषा हिंदी है और हम सभी की यह अनिवार्य जिम्मेदारी है कि राजभाषा हिंदी को काम-काज की भाषा बनाएं, उसको उसका सम्मान दिलाएं ताकि हमें अपना खोया हुआ गौरव पुन: प्राप्त हो सके।

कुछ बातें हैं जिनका हम नित्यप्रति जीवन में अनुसरण जरूर करें। हमेशा अपना नाम हिंदी में लिखें और पूरा लिखे। नाम भी ऐसा जो भाव व ओजपूर्ण हो जो चरित्र व कर्म के निर्माण में सहायक हो तथा जिसमें गरिमा झलकती हो, निमंत्रण पत्र हिंदी में छपवाएं, बच्चे का जन्म दिन मोमबत्ती बुझाकर नहीं बल्कि दीप प्रज्वल्लित करके मनाएं, पत्र व्यवहार हिंदी में करें, दरवाजे पर नेम-प्लेट हिंदी में हो, यूनिट कार्यालय/ स्कूल, मकान, दुकान तथा बच्चों का नामकरण भारतीय परंपराओं व सभ्यता के अनुरूप करें, निरर्थक शब्दों जैसे डैडः, मम्मा शब्दों के प्रयोग से बच्चों को रोकें, भारतीय रिश्तों, परंपराओं का ज्ञान कराएं।

विदेशियों की हिन्दी सेवा

यूरोप से प्रथम बार आए डच, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, अंग्रेज, रूसी विद्वानों ने भारत में

पदार्पण करते ही हिन्दी भाषा को जानने-समझने की चेष्टा की और उसके विकास में यथाशक्ति योगदान किया। हिन्दी का पहला व्याकरण लिखने का श्रेय जॉन केटलेट को है, जिन्होंने शाह आलम के समय में डच प्रतिनिधि के रूप में मान्यता प्राप्त की थी। डच भाषा में लिखा गया यह व्याकरण लैटिन में अनूदित किया गया। श्री मैथ्यु वेच्चुर के प्रयासों से हिन्दी के दो अन्य व्याकरणों-हिन्दुस्तानी व्याकरण (1745) बेंजामिन शुल्ज़ तथा बेलिगत्ती के अल्फाबेतुम (1771) साथ अब केटलेट का व्याकरण उपलब्ध है। आगे चलकर व्याकरण के क्षेत्र में हेरासिम लेबदेफ़, जॉन शेक्सपियर, विलियम प्राइस, विलियम येट्स, पादरी आदम, वेलेण्टाइन, आर्नो, डंकन फोर्ब्स, एथरिंगटन, एडविन ग्रीव्ज के नाम उल्लेखनीय हैं जिनमें सुमेरू की तरह केन्द्रीय महत्व का केलॉग का "हिन्दी व्याकरण" है। आगे लिखे जाने वाले व्याकरणों को दिशा निर्देश इस व्याकरण से प्राप्त हुआ।

हेनरी टॉमस कोलब्रुक (1782 में सिविल सर्विस में आए) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा था: "जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रांत के लोग करते हैं, जो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनो की बोलचाल की भाषा है और जिसको प्रत्येक गांव में थोड़े–बहुत लोग अवश्य समझ लेते हैं, उसी का यथार्थ नाम हिन्दी है । " इसी समय विलकिन्स व कैरी के प्रयासों से नागरी लिपि के टाइप ढाले गए और गिलक्राइस्ट ने "हिन्दुस्तानी" की डिक्शनरी (1787–91) अंग्रेजी के साथ दो खंडों में प्रस्तुत की । फोर्ट विलियम कालेज और गिलक्राइस्ट के योगदान के उल्लेख के बिना हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास नहीं लिखा जा सकता है । कोश लेखन की परम्परा में फर्गूसन, विलियम हैटर, प्राइस, शेक्सपियर, रोएबक, फैलन, विल्सन, डंकन फोर्ब्स, थामसन, प्लाट्स, ग्रांट, ब्राउन, बेट आदि उल्लेखनीय हैं । ग्रीव्ज के प्रस्ताव पर ही नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी में "हिन्दी शब्द सागर" प्रारंभ करने का प्रस्ताव पारित हुआ । अब तो इस शब्द सागर का संशोधित संस्करण उपलब्ध है ।

हिन्दी के अनन्य प्रशंसकों में सिविल सेवा के अधिकारी विलियम बटरवर्थ बेली (1728–1860) तथा फ्रेडरिक जॉन शोर (1799–1837) थे । बेली ने हिन्दी के सार्वभौम स्वरूप की ओर संकेत करते हुए 1802 में कहा था कि "उच्चतम स्तर तक राजनैतिक तथा सैनिक पत्राचार इस भाषा में किया जाता है ।" जेम्स रॉबर्ट वेलन्टाइन ने व्याकरणिक अभ्यासों की पुस्तक 1838 में बनायी, जिसमें पहली बार हिन्दी के साथ उसके दो उपरूप ब्रज तथा दकनी भी जोड़ दिए गए ।

हिन्दी के पठन–पाठन के लिए पाठ्य सामग्री बनाने–बनवाने की ओर सर्वप्रथम ध्यान गिलक्राइस्ट का गया । 1802 में उनके द्वारा तैयार की गई "हिन्दी मैनुअल" की परम्परा में अब तक सैकड़ों पुस्तकें तैयार की जा चुकी हैं । गिलक्राइस्ट की सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए विल्सन ने लिखा था कि "बड़े श्रम और सूझ से गिलक्राइस्ट ने प्रयोगों के नियम निकाले और एक मानक स्थापित किया जो न केवल उस भाषा को सीखने वरन् उसकी रक्षार्थ आवश्यक था ।" बाद में फोर्ट विलियम कालेज के कैप्टन माउंट, कैप्टन टेलर तथा विलियम प्राइस ने भी योगदान दिया । आगे भी अनेक

विद्वानों ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए, जिनमें फेयर बैंक्स, गुम्पर्ज, हौरेस (अमेरिका). प्रो. ओदोलेन स्मेकल (भारत में चेक गणराज्य के राजदूत), प्रो. लोठार लुत्से (जर्मनी) आदि महत्वपूर्ण है । प्रो. लोठार लत्से को मानव संसाधन मंत्रालय (भारत सरकार) के अंतर्गत कार्यरत केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने 1994 में जार्जा ग्रियर्सन पुरस्कार से सम्मानित किया है ।

जर्मन विद्वान हार्नले ने हिन्दी के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए । हिन्दी की धातुओं का संग्रह "हिन्दी रूट्स" तैयार किया । तत्कालीन भारतीय सिविल सेवा के अधिकारी बीम्स तथा ग्रियर्सन ने उन्हें प्रेरित किया था, जिसके फलस्वरूप कई शोधकार्य किए । ग्रियर्सन ने घोषणा की थी कि "यही (हिन्दी) एक ऐसी भाषा है, जिसमें विभिन्न प्रांतों के लोग आपस में बातचीत करते हैं । यह भारत में सर्वत्र समझी जाती है, क्योंकि भारत की अधिकांश भाषाओं के समान है और शब्दकोश सबकी सम्मिलित सम्पति है।" लगभग यही बात 1901 की जनगणना रिपोर्ट में क्रस्ट ने कही थी कि "हिन्दी के पास ऐसा शब्दकोश और अभिव्यक्ति की ऐसी सामर्थ्य है, जो अंग्रेजी से किसी प्रकार कम नहीं ।" आगे चलकर इंग्लैंड में बर्टनपेज, फर्थ, मैकग्रैगर आदि ने शोध की दिशा में अनेक अनुसंधान कार्य किए और करवाए । इंग्लैंड के कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन किया जा रहा है ।

रूसी विद्वानों में शीर्ष पर हैं : (स्व.) ए.पी. बारान्निकोव । उन्होंने रामचरितमानस का रूसी भाषा में पद्यात्मक अनुवाद प्रस्तुत किया । इनके ही सुपुत्र बारान्निकोव ने "भाषा और साहित्य", "भारत इंडिया" "हिन्दी क्षेत्र में बहुभाषावाद" जैसी कृतियों से हिन्दी का भंडार भरा । अन्य विद्वानों में वी. एम. वेस्क्रौब्नी, ई.पी. चेलिशेव, बिकोव, राबिनोविच आदि उल्लेखनीय हैं । भारतीय भाषा शास्त्र विशेषज्ञ श्री वी.पी. लिपेरोस्की ने "आधुनिक हिन्दी में क्रिया भाव" विषय पर तथा लत्सिफेरोव ने "हिन्दी के शब्द संयोजन" पर उल्लेखनीय कार्य किया है । जोग्राफ ने "अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में हिन्दुस्तानी भाषा" की रूपरचना का कार्य किया । चेलिशेव ने "बोलियां और साहित्यिक हिन्दी" पर विचार विस्तार से व्यक्त किए हैं । हिन्दी की शब्द सामर्थ्य पर कई महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं, जिनमें से बरखूदारोव सर्वोपरि हैं । हिन्दी और हिन्दी साहित्य की अनन्य उपासिका डॉ. साजानोवा ने मध्यकालीन अष्टछाप के प्रसिद्ध भक्त कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध कार्य किया ।

"हिन्दी वाक्य रचना" पर ब्लादीमीर मिल्तसनेर का कार्य महत्वपूर्ण हैं । अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान प्रो. पोरिज्का ने हिन्दी शिक्षण के लिए चेक भाषा में पुस्तकें तैयार की । जापान के सर्वश्री प्रो. क्यूया दोई, योशिआ कि सुजुकी और तोमियो मिजोकामी, फ्रान्स की श्रीमती निकोल बलबीर, बर्मा के यू. ह. क्याइंग, इटली की श्रीमती अन्ना मारिया डी एंजलिस व हंगरी की श्रीमती एवा अरादी, पोलैंड के पी. पिक्यरस्की, कनाडा के स्टेला गन्ताल, आदि के शोधकार्यों ने नई दिशा प्रदान की है । रामकथा के विशेषज्ञ सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. कामिल बुल्के ने शब्दकोश निर्माण कर

विज्ञानियों को नई दिशा दी। डॉ स्मेकल तथा बृस्कों का योगदान भी महत्वपूर्ण हैं।

प्रवासी भारतीयों द्वारा भी हिन्दी की सेवा की जा रही है, जिसके फलस्वरूप विश्व हिन्दी सम्मेलन के द्वितीय तथा चतुर्थ सम्मेलन मारीशस में हुए। इस दृष्टि से नेपाल, इंडोनेशिया, चीन, मलेशिया, श्रीलंका, म्यांमार (बर्मा), थाइलैंड, पाकिस्तान, चीन, लाओस, कम्बोडिया, जापान, वियतनाम, ट्रिनिडाड, सूरीनाम, गुयाना, फिजी, इटली, रूस, हंगरी, फ्रांस, रूस चेक तथा स्लोवाक गणराज्य, पोलैंड, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी, रूमानिया, अमेरिका (संयुक्त राज्य) आदि में काफी कार्य हुआ है।

विदेशी विद्वानों के योगदान के बारे में दो पुस्तकें उल्लेखनीय हैं–हिन्दी के यूरोपीय विद्वान (डॉ. मुरलीधर श्रीवास्तव) और पाश्चात्य विद्वानों का हिन्दी साहित्य (डॉ. जे.एच. आनन्द)। विदेशों में सहस्रों साहित्यकार हिन्दी के उन्नयन में जुटे हुए हैं। प्रथम बार जिन पांच विद्वानों को सम्मानित किया गया, वे हैं – प्रो. स्मेकल (चको.). प्रो. दोई (जापान) पं. कमला प्रसाद (फिजी), श्री बखौरी (मारीशस) और प्रो. मैग्रैंगर (इंग्लैंड)।

– डॉ. कैलाश नाथ भाटिया की "हिन्दी : विकास और संभावनाएं" पुस्तक से साभार।

संपर्क भाषा हिंदी

– सुभाष चन्द्र "सत्य"

स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ के समारोह देशभर में आयोजित हो रहे हैं। यह वातावरण हमें आत्मनिरीक्षण का अवसर भी प्रदान करता है जिसमें यह विचार किया जाए कि इन 50 वर्षों में हमारे देश की उपलब्धियां और विफलताएं क्या रही हैं। ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिनमें आजादी के बाद की उपलब्धियों पर भारत गर्व कर सकता है। किंतु कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जिनमें हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पिछड़ गए हैं। ऐसा ही एक क्षेत्र है देश की संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी को उसका उचित स्थान प्रदान करना। स्वतंत्रता के इस 50वें वर्ष में मनाए जा रहे हिंदी दिवस पर इस विषय का विवेचन करना समीचीन होगा क्योंकि हिंदी को देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार करने की आम सहमति स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही उभरी थी जिसके फलस्वरूप 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा बनाने से संबंधित अनुच्छेद को अपनी स्वीकृति प्रदान की।

यह बात तो अब सर्वमान्य है कि इस देश की संपर्क भाषा बनने की क्षमता और अधिकार यदि किसी एक भाषा का है तो वह हिंदी ही है। संविधान में 15 भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता दी गई है, किंतु केंद्र सरकार की भाषा हिंदी स्वीकार की गई है। सीमित रूप में राजनीतिक आधार पर कुछ विरोध भले ही हो, कुल मिला कर हिंदी का राष्ट्रीय स्वरूप समूचे देश ने स्वीकार कर लिया है और अन्य प्रदेशों के लोग हिंदी सीखने के प्रयास कर रहे हैं तथा हिंदी बोलने की योग्यता

प्राप्त करने के इच्छुक हैं। इस प्रकार यह कहना गलत नहीं कि सैद्धांतिक रूप से हिंदी भारत की संपर्क भाषा बन गई है।

संपर्क भाषा – क्यों और कैसे

यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि हिंदी को पूरे देश की संपर्क भाषा कैसे माना जा सकता है ? विशेषकर इस प्रश्न का उत्तर देना इसलिए आवश्यक है कि कुछ कोनों से अब भी कभी–कभार हिंदी के अखिल भारतीय स्वरूप पर आपत्ति के स्वर सुनायी दे जाते हैं। फिर भी हिंदी का अखिल भारतीय स्वरूप भी व्यावहारिक स्तर पर उभर कर नहीं आ रहा। इसलिए भी इन आशंकाओं का निराकरण करना आवश्यक प्रतीत होता है।

हिंदी समूचे भारत की भाषा है, इसके पक्ष में सबसे पहली बात तो यही कही जा सकती है कि इसे राजभाषा के रूप में मान्यता देने और इसके प्रचार–प्रसार में हिंदी भाषी लोगों से अधिक योग अहिंदी भाषी विद्वानों, नेताओं, महापुरूषों और कार्यकर्ताओं का रहा है। आज से करीब डेढ़ सौ साल पहले ही बंगाल में आधुनिक चेतना और समाज सुधारों का आंदोलन छेड़ने वाले युगपुरूष राजा राम मोहन राय ने घोषणा कर दी थी "हिंदी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।" गुजरात में जन्म लेने वाले महापुरूष स्वामी दयानंद ने समाज को अंधविश्वासों और कर्मकांड की जड़ता से मुक्त कराने का अपना सपना साकार करने के लिए जिस भाषा को अपना माध्यम चुना और जिसमें अपनी पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना की, वह हिंदी ही थी। उन्होंने स्पष्ट कहा "हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"

महात्मा गांधी भी गुजरात के थे और अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे। किंतु वे इस सच्चाई से पूरी तरह परिचित थे कि कोई भी देश अपनी भाषा का सहारा लिए बिना प्रगति के शिखर पर नहीं पहुंच सकता क्योंकि राष्ट्रभाषा किसी राष्ट्र की वाणी होती है उन्होंने पूरे देश का दौरा करते हुए आम लोगों को बहुधा हिंदी मे संबोधित किया।

महाराष्ट्र के संत विनाबो भावे ने हिंदी और देवनागरी को लोकप्रिय बनाने के लिए जो प्रयास किए वे सर्वज्ञात हैं। राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी सीखने की अनिवार्यता को उन्होंने केवल समझाया ही नहीं उसे कार्यरूप भी दिया। उन्होंने कहा "मेरे देश में हिंदी की इज़्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।"

दक्षिण में जहां हिंदी के विरोध का हव्वा खड़ा किया जाता है, हिंदी को प्रारंभ से ही सम्मान मिलता रहा है। तमिलनाडु के नेता राजगोपालाचारी ने महात्मा गांधी के निर्देश से दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा को सहयोग दिया। उनका कहना था "हिंदी का ऋगार राष्ट्र के सभी भागों ने किया है। यह हमारी राष्ट्रभाषा है।" आज भी असंख्य दक्षिण भारतीय विद्वान और साहित्यकार हिंदी की सेवा कर रहे हैं। प्रसिद्ध विद्वान एस. सत्यमूर्ति का कहना है "दो प्रतिशत लोगों की भाषा (अंग्रेजी) राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती। हिंदी ही इसके लिए सर्वथा उपयुक्त है।"

इसके अलावा लोकनायक तिलक, काका कालेलकर, सुभाष चन्द्र बोस, बंकिम

चन्द्र चट्टोपाध्याय, शारदा चरण मित्र, केशव चन्द्र सेन, डाक्टर बी. गोपाल रेड्डी, गोविंद मेनन, डा. हरेकृष्ण मेहताब, डा. कामिल बुल्के जैसे अनेक महापुरूषों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा बनने के योग्य मान कर उसे उसका उचित स्थान प्रदान करने की अनिवार्यता पर बल दिया।

क्रमिक विकास

एक और उल्लेखनीय बात यह है कि हिंदी का अखिल भारतीय स्वरूप अचानक ही उभर कर सामने नहीं आ गया, बल्कि वह क्रमश: विकसित हुआ। स्वतंत्रता की लड़ाई में खादी, स्वदेशी, चरखा, सत्याग्रह, नशाबंदी आदि की तरह हिंदी भी राष्ट्रीय मूल्यों का प्रतीक बन गई। किसी भी देशभक्त के राष्ट्रीय कर्तव्यों में हिंदी का प्रयोग भी सम्मिलित हो गया। हिंदी सीखना और सिखाना देशभक्ति माना जाता था। इसी विश्वास के फलस्वरूप इतने बड़े देश में इतनी जल्दी हिंदी का प्रवेश हो गया। जिस देश में अधिकतर लोग निरक्षर हों, वहां इतनी तेजी से किसी भाषा का प्रयोग (सीमित रूप से सही) होने लगना किसी चमत्कार से कम नहीं है। इसी क्रमिक प्रगति की परिणति स्वाधीनता के उपरांत हिंदी को संविधान में राष्ट्रभाषा का दर्जा सरलता पूर्वक मिल जाने में हुई। क्या यह एक ऐतिहासिक राष्ट्रीय उपलब्धि नहीं है कि अत्यंत विविधतापूर्ण, सांस्कृतिक परंपराओं और अलग अलग राजनैतिक और प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित व्यवस्था वाले देश में एक भाषा सर्वसम्मति से राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर ली गई ? प्रांतवाद और संप्रदायवाद से सने आज के वातावरण को देखते हुए तो यह उपलब्धि और भी बड़ी लगती है। इस प्रकार यह निर्विवाद है कि सभी भारतीय भाषाओं में हिंदी ही राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनने योग्य है और संविधान में यह प्रतिष्ठा पाने से पूर्व ही उसका अखिल भारतीय स्वरूप विकसित हो चुका था।

हिंदी की लोकप्रियता के पोषक तत्व

हिंदी की इस क्रमिक प्रगति में स्वतंत्रता सेनानियों के प्रयासों के साथ–साथ हिंदी फिल्मों, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा अन्य जन संचार माध्यमों का उल्लेखनीय योगदान रहा। हिंदी की पत्रिकाएं और समाचार पत्रों की मांग दिनों दिन बढ़ रही है। विभिन्न संस्थानों संगठनों और समितियों की अन्य प्रांतों में होने वाली बैठकों और सम्मेलनों व सभाओं में हिंदी का ही प्रयोग होता है। परंतु इस सारी स्थिति के बावजूद यह कहना गलत है कि हिंदी व्यवहारिक दृष्टि से सचमुच राष्ट्रभाषा बन गई है।

बाधाएं

हमें यह स्वीकार करने में संकोच नहीं होना चाहिए कि हिंदी तथा–कथित अंग्रेजी साम्राज्यवाद और किन्ही बाहरी अवरोधों के कारण नहीं बल्कि अपनी ही आंतरिक बेड़ियों में जकड़ी होने के कारण पिछड़ी हुई है। यदि हिंदी भाषी लोगों के मन में

अपनी भाषा के लिए स्वाभिमान एवं आत्मगौरव हो, वे संकीर्ण एवं शुद्धतावादी दृष्टिकोण की बजाए व्यापक एवं उदार दृष्टिकोण अपनाएं, हिंदी भाषी राज्य साक्षरता के लिए सफल अभियान चलाएं और भावुकता की बजाए व्यवहार में उसे आगे बढ़ाएं तो हिंदी केवल नाम की नहीं बल्कि सचमुच समूचे देश की संपर्क भाषा एवं सही मायनों में राजभाषा बन सकती है।

जब तक हिंदी भाषी लोग अपनी भाषा के प्रयोग के साथ हीनता का भाव जोड़े रहेंगे तब तक हिंदी समूचे देश में तो दूर हिंदी प्रांतों में भी अपना उचित स्थान नहीं प्राप्त कर सकती।

व्यावहारिक प्रयोग

सरकारी स्तर पर तो हिंदी प्रयोग की सुविधाओं की व्यवस्था हो रही है, परंतु क्या उन सुविधाओं का प्रयोग भी हो रहा है ? बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों और सरकारी विभागों के फार्म आदि हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में छपे होते हैं, किंतु कितने लोग हिंदी में फार्म भरते हैं ? केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में टिप्पणी आदि लिखने की छूट है, किंतु कितने कार्यालयों में और कितनी मात्रा में हिंदी में काम होता है ? सरकारी प्रतिष्ठानों और विभागों के नामपट तो हिंदी और अंग्रेजी में होते हैं, किंतु व्यापारी, छोटे दुकानदार और उद्योगपति तो अंग्रेजी में ही नामपट लगाना लाभदायक और गौरवपूर्ण मानते हैं। कितने लोग अपने घरों पर नामपट और पता आदि अपनी भाषा में लिखते हैं ? ऐसे लोगों की संख्या क्या उंगली पर ही नहीं गिनी जा सकती जो मांगलिक अवसरों तथा गोष्ठी, सभा आदि के निमंत्रण पत्र "राष्ट्रभाषा" और अपनी मातृभाषा हिंदी में छपवाने का "साहस" कर पाते हैं ? अपनी चिट्ठियों पर हिंदी में पता लिखने वालों की संख्या भी बहुत अधिक नहीं है। हमें अपनी आत्मा में झांक कर देखना होगा कि हम कहां खड़े हैं ? यदि हम अपनी करनी को कथनी के बराबर लाने की थोड़ी सी भी कोशिश कर दें तो हिंदी के विरोध में कही जाने वाली बड़ी–बड़ी बातें स्वत: ही घटते चांद की तरह छोटी होती जाएंगी। न हिंदी में उच्च साहित्य की कमी अखरेगी और न ही इसमें अभिव्यक्ति की असमर्थता का तथाकथित दोष रह पाएगा।

ध्यान रहे !

कार्यालय से जारी होने वाले सभी परिपत्र, आदेश, ज्ञापन आदि द्विभाषी – अर्थात् हिंदी और अंग्रेजी में होने चाहिए।

* * *

ये सभी द्विभाषी जारी होते हैं यह देखने की जिम्मेदारी उनपर हस्ताक्षर करने

वालों को है ।

* * *

कहीं से भी प्राप्त हिंदी पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाने चाहिए

* * *

जिस पत्र पर हिंदी में हस्ताक्षर हों, उसका उत्तर भी हिंदी में ही दिया जाना चाहिए ।

अनुवाद प्रक्रिया – एक विवेचन

संविधान के अनुच्छेद 343 में भारत की राजभाषा "हिंदी" घोषित की गई है जिसकी लिपि देवनागरी है। इसी के अनुच्छेद 349 में केन्द्र सरकार को इसके प्रचार प्रसार का दायित्व सौंपा गया कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए एवं इसका विकास इस तरह करें कि भारत के सभी लोगों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। अनुच्छेद 343 (3) में दी गई शक्ति का प्रयोग करते हुए संसद में राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया जिसे 1967 में संशोधित किया गया। राजभाषा अधिनियम के अधीन राजभाषा नियम 1976 में बनाए गए।

राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के अनुसार केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में द्विभाषिक स्थिति शुरू हुई यह स्वाभाविक ही है कि ऐसी स्थिति में अनुवादक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। नियमों व अधिनियमों के क्रियान्वयन के लिए अनुवाद का सहारा लेना आवश्यक ही नहीं वरन् अपरिहार्य है, क्योंकि जो काम अब तक केवल एक भाषा में होता था उसमें द्विभाषिक स्थिति पैदा हो गई। सरकारी काम काज में अनुवाद प्रक्रिया का महत्व बढ़ गया। इसके लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने केन्द्रीय सरकार के सभी कार्यालयों में अनुवादकों की नियुक्तियाँ की।

किसी एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना ही अनुवाद है। वैसे तो अनुवाद प्राचीन काल से होता चला आया है और समय समय पर चिंतकों, मनीषियों एवं विचारकों, लेखकों ने विविध साहित्य को एक दूसरी भाषा में लिखा है, कहा है, अभिव्यक्त किया है। इस तरह अनुवाद प्रक्रिया कोई नई नहीं है किन्तु आज के परिप्रेक्ष्य में सरकारी काम काज में हम जिस अनुवाद की बात करते हैं वह हिंदी अनुवाद से संबंधित है जिसमें अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करना एक मात्र उद्देश्य है।

अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अनुवादक का कार्य कोई सहज कार्य नहीं है। किसी एक विषय वस्तु की बात को समझकर उसके अर्थ एवं भाव को बिना तोड़े दूसरी भाषा में कहना बड़ा ही दुष्कर कार्य होता है। इसमें गहन सूझबूझ व समझ की जरूरत होती है। अनुवादक सब ओर से नियमों में बंधा

होता है। उसे किसी ओर से यह छूट नहीं है कि वह अपनी ओर से किसी बात को जोड़े अथवा तोड़े। वह तो लेखक की बात को एक भाषा से दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों बिना अर्थ परिवर्तन के कहने का उत्तरदायी है। एक शब्द के गलत अनुवाद से बहुत बड़ा अनर्थ हो सकता है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान "अमेरिका ने जापान को अल्टीमेटम दिया। इसके उत्तर में जापान ने अपनी भाषा में जवाब दिया - "मोको सततु" जिस का अर्थ होता है - उत्तर की प्रतीक्षा करें, परंतु अमेरिका ने मोको सततु का गलत अर्थ लगाते हुए समझा - "हम चेतावनी की अवज्ञा" करते हैं। फलस्वरूप अमेरिका ने जापान के "हिरोशिमा" नगर पर एटमबम गिरा दिया। एक शब्द के गलत अनुवाद से कितना बड़ा अनर्थ हो गया यह विश्वविदित है। अत: अनुवाद की कितनी महत्ता है यह इससे समझा जा सकता है।

एक अनुवादक के लिए यह परम आवश्यक है कि उसे स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा दोनो का ही ज्ञान हो, तभी वह एक भाषा की बात को समझकर लक्ष्य भाषा में उसकी अभिव्यक्ति सुस्पष्ट, सहज एवं सरल शब्दों में कर सकता है। केवल शब्दों के अर्थो को लिख देना ही अनुवाद नहीं है वरन् भाषा की प्रकृति, शैली और अभिव्यक्ति का तरीका उचित तरह से अपनाकर ही बात को इस तरह कहा जाए कि पढ़ने वाले, सुनने वाले को आसानी से समझ में आ जाए। ऐसा ही अनुवाद सच्चा एवं अर्थपरक अनुवाद कहलाता है। अनुवाद की विशेषता यह नहीं है कि अनुवादक ने कितना समझा? वरन् यह है कि उसने जो अनुवाद किया है वह दूसरों की समझ में कितना आया? जो बात जितनी अधिक आसानी से दूसरों की समझ में आए वही अनुवाद अच्छा अनुवाद होता है। सरकारी काम काज में हिंदी अनुवाद इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसलिए सरकारी काम काज में आज हिंदी का जो रूप दिखाई देता है वह किसी प्रांत की भाषा नहीं वरन् सभी प्रातों की, सभी भाषाओं के मिले-जुलें रूपों से तैयार की गई हिंदी है, जो सरल, सुबोध और आसानी से समझ आने वाली है।

इस तरह की एक भाषा से हमारी भाषायी एकता को काफी संबल मिला है। वैसे तो अनेकता में एकता भारत की विशेषता है और भारतीय जीवन में सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है किन्तु भाषायी एकता "एकता का सूत्र" है। इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया है जबकि भाषा "एकता" का सशक्त माध्यम है और जनमानस से इसका गहन जन्मजात संबंध है।

इस तरह सरकारी कार्यालयों में हिंदी अनुवाद जहां एक ओर सरकारी काम काज जनभाषा में करने का उद्देश्य पूरा कर रहा है वहीं दूसरी ओर अप्रत्यक्ष रूप से "एकता के सूत्र" में सभी भारतीयों को पिरोने का भी काम कर रहा है। हिंदी भारत की मूल भाषा है यह देववाणी कहलाती है इसका विकास संस्कृत से हुआ है। समस्त भारतीय वांग्मय, चिंतन, ज्ञान, वेद, पुराणों, उपनिषदों की रचना संस्कृत में हुई है और इसी का आसान रूप हिंदी है। अत: बिना हिंदी के भारतीय विचारधारा का विकास, एवं हमारी उन्नति संभव नहीं है। इस विषय में भारतेन्दू हरिश्चन्द्र ने वर्षों पूर्व कहा था–

निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।

– राधेश्याम मकवाना
हिंदी अनुवादक

राजभाषा हिंदी के बढ़ते कदम

वर्षो परतंत्रता की जंजीरों में जकड़े रहे हमारे देश को राजनैतिक स्वतंत्रता मिले 50 वर्ष हो चुके हैं, किन्तु मानसिक तथा सांस्कृतिक रूप से वह आज भी परतंत्र है क्योंकि किसी भी राष्ट्र की एकता, उन्नति, उसकी प्रगति तथा उसका सम्मान तब तक सम्भव नहीं है जब तक उस देश की राजभाषा-राष्ट्रभाषा का पूर्णरूप से उस देश में प्रयोग नहीं होता। इस सम्बन्ध में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने भी कहा है:-

"राष्ट्रीय एकता के हित में यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अंग्रेजी को प्रभुता के पद से शीघ्र से शीघ्र हटाकर उसकी जगह पर देशी भाषाओं अथवा राष्ट्रभाषा हिंदी को प्रतिष्ठित कर दें/ यह राष्ट्रहित का पहला काम है जो अविलम्ब पूरा किया जाना चाहिए/"

सन् 1946 में संविधान सभा में राज्यभाषा व राष्ट्रभाषा पर विचार हुआ, अनेक समितियां गठित हुई और अन्त में विस्तृत विचार-विमर्श के बाद भारत के संविधान में 15 भारतीय भाषाओं को मान्यता दी गई जिनकी संख्या अभी बढ़कर 18 हो गई है। हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया क्योंकि वह पूरे देश में सर्वाधिक प्रयोग में लायी जाती थी तथा साथ ही यह प्रावधान रखा गया कि अगले 15 वर्षो तक जब तक कि हिंदी सरकारी काम-काज की भाषा नहीं बन जाती अर्थात भारत के लोग हिंदी में काम करने में जब तक अभ्यस्त नहीं हो जाते तब तक सरकारी काम-काज में अंग्रेजी का भी प्रयोग होता रहेगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे देश को आजाद हुए 50 वर्ष पूरे हो चुके हैं। किन्तु भाषा के सम्बन्ध में उसे पूर्ण आजादी आज तक प्राप्त नहीं हुई। इसका क्या कारण है ? इस क्षेत्र में आज तक कोई सुधार क्यों नहीं हुआ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए भारत के शुभचिंतकों तथा विचारकों ने बार-बार प्रयास किया, परन्तु इससे देश को कोई लाभ नहीं हुआ और हिंदी आज भी निःसहाय है तथा विदेशी भाषाओं के समर्थकों की पात्र बनी हुई है जिससे हमारे राष्ट्र की प्रगति नहीं हो पा रही है। इस सम्बन्ध में स्वर्गीय कवि मैथिलीशरण गुप्त जी की पंक्तियां याद दिलाती हैं :-

"मानस भवन में आर्य जन, जिनकी उतारे आरती/
हे भगवान, भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती/ "

आज देश में अपनी ही राजभाषा-राष्ट्रभाषा अंग्रेजी के दबाव के कारण अकुला

रहो है और जब तक अंग्रेजो का यह दबाव नहीं हटता, तब तक देश को यह आकुलता भी मौजूद रहेगी। इस दिशा में सरकार के साथ-साथ देशवासियों की भी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि अपना यथासंभव योगदान दें।

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर सरकार इस क्षेत्र में क्या कदम उठा रही है? इसी क्षेत्र में सरकार ने सन् 1967 में संसद के दोनों सदनों में राजभाषा नीति सम्बन्धी संकल्प पारित किया जिसे गृह मंत्रालय ने दिनांक 18 जनवरी 1968 को परिचालित किया जिसके अनुसार प्रतिवर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम तैयार कर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय आदि के लिए वर्ष में हिंदी में कार्य करने के लिए लक्ष्य निर्धारित किया जाए। इसी क्षेत्र में राजभाषा नीति के अनुपालन की दृष्टि से राजभाषा नियम 1976 के अनुसार देशभर में "क", "ख" तथा "ग" तीन क्षेत्र बनाए गए हैं। "क" क्षेत्र में उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली और अण्डमान निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं। "ख" क्षेत्र में गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य और चण्डीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र में आते हैं जबकि शेष राज्य और संघ राज्य "ग" क्षेत्र के अन्तर्गत रखे गए हैं। इस क्षेत्र में सरकार ने हिंदी को बढ़ावा देने हेतु और भी कई कदम उठाए हैं जिनमें मुख्य रूप से सरकारी विज्ञापन तथा प्रकाशन हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करना, हिंदी कार्यशालाओं/संगोष्ठियों/सम्मेलनों/हिंदी पखवाड़े तथा हिंदी दिवस का आयोजन, द्विभाषिक इलेक्ट्रानिक टाइपराईटरों, कम्प्यूटरों आदि का सरकारी विभागों, उपक्रमों में उपलब्ध करवाना मख्य है।

सरकार राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अनुसार अपनी जिम्मेदारी तो पूरी करने का प्रयास कर रही है, परन्तु इस क्षेत्र में सबसे मुख्य जिम्मेदारी उन अधिकारियों की है जो पत्र/परिपत्र/प्रलेख तथा टिप्पणी आदि पर हस्ताक्षर करते हैं। अत: हस्ताक्षर से पूर्व अधिकारीगण को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि ऐसे पत्र/परिपत्र/प्रलेख आदि हिंदी भाषा में ही जारी किए जा रहे हैं। इस तरह इसका प्रयोग बराबर बढ़ेगा।

इस सम्बन्ध में हमें स्वर्गीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के इस कथन को हमेशा याद रखना चाहिए :-

"यह सच है कि कोई भी देश अपनी मातृभाषा के द्वारा ही आगे बढ़ सकता है/ हम दूसरी भाषा सीख सकते हैं, बोल सकते हैं, लेकिन नए विचार उससे पैदा नहीं होता/ नए विचार केवल अपनी मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा के द्वारा निकल सकते हैं/ इसलिए हमें भारत की सभी भाषाओं को आगे बढ़ाना है, प्रोत्साहन देना है और हिंदी का तो एक विशेष स्थान है/ हम चाहते हैं कि जल्दी से जल्दी भारत के सभी लोग अगर हिंदी न बोल सकें तो कम से कम समझ तो सकें/"

इतने बड़े देश में जहां इतनी भाषाएं हैं, वहां देश की एकता के लिए कड़ी आवश्यक है कि कोई भाषा ऐसी हो, जिसे बोल सके, जो एक कड़ी की तरह सबको मिला-जुला कर रख सके । इसलिए हिंदी को आगे बढ़ाना हम सब भारतवासियों का काम है।

अत: अब समय का यह तकाजा है कि हमें मानसिक दासता के शिकंजों से निकलकर अपनी राजभाषा हिंदी का अपने दैनिक कार्यो में उत्साहपूर्वक पूर्णत: इस्तेमाल करना चाहिए। अपनी राजभाषा हिंदी को राष्ट्र-ध्वज के बराबर ही सम्मान देवें। आओ हम सभी मिलकर सभी स्तरों पर इसका नि:संकोच प्रयोग करें।

स.उ.नि. (मं) प्रजेश कुमार सिंह,
ग्रुप केन्द्र, भोपाल

राष्ट्रभाषा हिन्दी पर गर्व करें

हमारे देश के संविधान में जिन भाषाओं का वर्णन है उनमें राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाने का प्रावधान है। भारतीय संविधान को लागू हुए भी चार दशकों से अधिक हो चुका है, परन्तु हम अपने देश में अपनी राष्ट्रभाषा को पूर्णतया लागू करवाने में सफल नहीं हो सके हैं। यदि इस स्थिति का जायजा लिया जाता है तो हम पाते हैं कि हिन्दी (देवनागरी लिपि) को प्रयोग में लाने के प्रति हमारी उदासी इसका प्रमुख कारण है। हम सभी जानते हैं कि भारत सरकार की ओर से शिक्षा के प्रचार-प्रसार के ऊपर बहुत अधिक ध्यान दिया जा रहा है और वह अति आवश्यक भी है। परन्त समाज में कुछ गिने-चुने लोग ही मिलेंगे जो सही मायने में हिन्दी भाषा के प्रयोग के प्रति जागरूक हों।

यदि हम अपने भावों की अभिव्यक्ति चाहते हैं तो हमें अपनी मातृभाषा का अच्छा ज्ञान होना परमावश्यक है। भारत प्रान्तों में बसा हुआ है तथा हर प्रान्त की भाषा अलग है। फिर भी एक राष्ट्र होने के नाते हम सभी का एकता के सूत्र में बंध कर रहना उपयोगी तथा राष्ट्रहित में होगा। जिस तरह से विभिन्न प्रकार के फूलों को एकत्र करके एक-दूसरे के साथ पिरोकर एक अति सुन्दर माला (हार) बनायी जाती है, ठीक उसी प्रकार यदि रूचि व लगन हो तो विभिन्न प्रान्तों में रहने वाले भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के लोगों को एक सूत्र में बंध कर उनकी भावनाओं की अभिव्यक्ति की जा सकती है और यह कार्य हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी हीं कर सकती है। ऐसा होने पर हीं भारतवर्ष में राष्ट्रभाषा हिन्दी का सही मायने में प्रयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा।

हमारी मनोवृत्ति भी कुछ ऐसी बन गई है कि जो अंग्रेजी बोलते हैं उन्हें हम अधिक ज्ञानी तथा विद्वान मानते हैं हमारे देश में अनेकानेक व्यक्ति ऐसे हैं जो उच्चपदों पर आसीन है तथा वे स्वयं तो अंग्रेजी भाषा के गुलाम हैं ही अपनी संतानों को भी हिन्दी सीखने/बोलने आदि की प्रेरणा नहीं देते हैं। यदि हम चाहते हैं कि अपने देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा न हो तो हमें चाहिए कि हम अपने दायित्व को समझें तथा बचपन से हीं अपनी संतानों को भी राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रभाषा के संबंध में जानकारी दें तथा उसके प्रति उनकी अभिरूचि तथा देश की राष्ट्रभाषा के प्रति जागरूकता पैदा

करते रहें।

दूसरी और राष्ट्रभाषा हिन्दी संस्कृत भाषा की धरोहर है। यदि इसे सभी भाषाओं की जननी कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। संस्कृत एक समृद्धशाली भाषा है। यह कहना कि दक्षिण भारतीय लोग हिन्दी भाषा का विरोध करते हैं, सर्वथा गलत है। दक्षिण भारत में संस्कृत भाषा का पूर्णतया प्रचलन है और हिन्दी के कई जाने-माने विद्वान कवि सुविख्यात हैं जैसे एन. चन्द्रशेखरन नायर। फिर हम कैसे कहें कि हिन्दी भाषा का प्रचलन दक्षिण भारत में कम है। विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि अगर भारत के लोग ही अंग्रेजी को प्रश्रय देना अधिक पसन्द करते हैं तथा हिन्दी को प्राथमिकता नहीं देते हैं। ऐसा केवल इसलिए क्योंकि हिन्दी के प्रति उनकी उदासीनता है।

मैंने व्यवहार में देखा है कि एक व्यक्ति जो हिन्दी के प्रयोग, हिन्दी में पत्राचार करने की बात सुनकर अनसुनी कर देता था उसने हिन्दी भाषा के प्रति अपनी जागरूकता दिखायी तथा हिन्दी को व्यवहार में लाने के प्रति सजग हो गया फिर उसके कार्य में ऐसा निखार आया कि हिन्दी के कलेवर में स्वत: वृद्धि हो गई और अब उसे कहने पर भी वह अंग्रेजी भाषा में पत्राचार करने में आनाकानी करता है। ऐसा इसलिए कि अब उसे समझ में आ गया है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग कितना सरल एवं आसान है।

बहुधा यह देखने-सुनने को मिला कि राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में बढ़ावा देने के लिए सरकार की ओर से अनेकानेक प्रोत्साहन योजनाएं चलाई गई हैं। विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी भाषा के प्रयोग से संबंधित राजभाषा सप्ताह/पखवाड़ा आदि का आयोजन किया जाता है। इसके लिए अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं एवं पुरस्कारों का वितरण किया जाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हम भारतवासी अपने को गर्व से हिन्दुस्तानी कहते हैं परन्तु अपने देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनाने में पुरस्कार की अपेक्षा रखते हैं। इससे बढ़कर हिन्दी के प्रति उपेक्षा का दूसरा ज्वलन्त उदाहरण क्या होगा। भारत हमारी माता है और इसकी राष्ट्रभाषा भी माँ के समान है, अत: हम पुरस्कारों की अपेक्षा करने वाले भारतवासियों से यह पूछना चाहते हैं कि क्या मां की सेवा के लिए भी उन्हें पुरस्कार चाहिए ?

अत: हमें चाहिए कि हिन्दी के प्रति उदासीनता छोड़ें, उसके अधिकाधिक प्रयोग के प्रति सजग रहें और हिन्दी पढ़ने लिखने और बोलने पर गर्व करें। सरकार के द्वारा ऐसे नियम बनाए जाएं ताकि हिन्दी भाषा के प्रयोग में किसी को संकोच नहीं रह जाए। अन्यथा अभी तो राष्ट्रभाषा हिन्दी को पूरी तरह लागू करने में 50 वर्ष लगे हीं हैं, आगामी 50 वर्ष और लगेंगे और राष्ट्रभाषा की उपेक्षा होती हीं रहेगी।

- हंसराज ओझा “प्रभात”
ग्रुप केन्द्र, मोकामाघाट

भाव पुष्प

यहां हम आपको अनेक महापुरुषों, लेखकों, कलाकारों और मनीषियों एवं चिन्तकों द्वारा समय-समय पर अभिव्यक्त किए गए भाव-पुष्पों की माला से परिचित करा रहे हैं। इन सूक्तियों का उपयोग कार्यालयों में सूचनापट्टों, दीवारों आदि पर किया जा सकता है।

• उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो अर्थात हिन्दी।

– रविन्द्रनाथ ठाकुर

• हिन्दी में राष्ट्रभाषा बनने की पूरी क्षमता है।

– राजा राममोहन राय

• हिन्दी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।

– राहुल सांकृत्यागन

• हिन्दी देश की गंगा है।

– रामकुमार भुवालका

• यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है तो यह जनता की भाषा में ही चलाना होगा।

– काका कालेलकर

• अंग्रेजी और हिन्दी को साथ-साथ रखना बाघ और बकरी को एक साथ बैठाना है।

– गंगाशरण सिंह

• कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।

– महात्मा गांधी

• किसी विदेशी भाषा का किसी स्वतन्त्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा का माध्यम होना, सांस्कृतिक दासता है।

– वाल्टेर चेनिंग

• दुनिया-भर में भारत को छोड़कर कोई भी ऐसा देश नहीं मिलेगा, जहां एक विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है।

–महाकवि पी. कुंजि

• राष्ट्रभाषा की उपेक्षा से देश का भविष्य अन्धकारमय हो जाएगा।

– श्रीमती महादेवी वर्मा

• अब भी अंग्रेजी को राजभाषा बनाए जाने का आग्रह दासता के अभिशाप का अवशेष है।

– राहुल सांकृत्यायन

• अंग्रेजी को हटाए बिना हिन्दी अपने न्यायोचित स्थान पर प्रतिष्ठित नहीं हो सकती।

– जगजीवन राम

• हिन्दी के शब्द-भण्डार में कमी नहीं है, कमी है हमारी राष्ट्रीय निष्ठा की, देश-भक्ति की भावना की।

– डॉ अम्बाप्रसाद "सुमन"

• यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते है, तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है।

–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

• हिन्दी प्रचार का कार्य देश-भक्ति का कार्य है।

– गंगाशरण सिंह

• अस्सी प्रतिशत दक्षिण वासियों का हिन्दी के प्रति सम्मान-भाव है।

–डॉ राजगोपालन

• संस्कृत मां, हिन्दी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।

– डॉ कामिल बुल्के

• अंग्रेजी को बनाए रखने की नीति मानसिक दासता की द्योतक है।

– जगदगुरू शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ

• अंग्रेजी के अन्धभक्त इस देश की धरती को छोड़कर इंग्लैण्ड या अमेरिका चले जाएं।

– पी. जान

• अंग्रेजी यहां दासी या अतिथि के रूप में रह सकती है, बहूरानी के रूप में नहीं।

– कामिल बुल्के

संकलनकर्ता–
एन.पी.एस. नेगी
महानिदेशालय

जय हिन्दी

जय हिन्दी मां, जय हिन्दी मां,
हिन्दी की भाषा हो न्यारी,
अपनी भाषा सबसे प्यारी।
प्रतिवर्ष सिर्फ अंक आंकड़े कागज में बढ़ जाते हैं,
हिन्दी प्रगति वास्तविकता में हम नहीं बढ़ा पाते हैं।
नेता, अभिनेता, अधिकारी कान्वेंट को चाहें,
अनुचार इनके रहे अकेले कैसे हिन्दी अपनाएं।
जय हिन्दी मां .....
हिन्दू मुस्लिम, सिख इंसाई गर हिन्दी अपनाएंगे,
क्लेश द्वेष इनके आपस के शायद मिट जाएंगे।
जर्मनीवाले जर्मनी बोले, जापानी बोलें जापानी,
ना जाने हम क्यूं ना बोलें अपनी मीठी बानी।
जय हिन्दी मां .....
मन से जन-जन को हिन्दी, पढ़नी अपनानी होगी,
तब देखो ऊँचे पर्वत सी अपनी बानी होगी।
भूल चुके हम मातृभाषा, अब कहकर नया जमाना,
करें चेष्टा याद करें हम अपना सबक पुराना।
जय हिन्दी मां .....
अंग्रेजी को जाना होगा चूंकि अंग्रेज गए हैं,
भूल गए क्या अंग्रजों के हमने जुर्म सहे हैं।
जय हिन्दी मां .....

निरीक्षक *(अनुवादक)*
तेजवीर सिंह ढाका
ग्रुप केन्द्र, गोहाटी

निजभाषा

प्रिय देशबन्धुओ मेरे, राजभाषा का आह्वान करो।
दूर करो विदेशी भाषा को, निज भाषा का सम्मान करो।

इस देश की भाषा हिन्दी है, शुद्ध भावना युक्त यही।
इसको पढ़ना लिखना सिखो सद्मार्ग पर पहुंचावे यही।
जिस देश में अपनी भाषा हो, वह देश सदा उन्नति पर है।
वही सफल और अडिग रहे जो निजभाषा पर तत्पर है।
भाषा होगी यदि और कोई, तो उसका ही बन्धन होगा।
उसका ही फिर शासन होकर मुझ पर अनुशासन होगा।
इसलिए राजभाषा का ही, हर जगह नाम निशान रहे।
दूर विदेशी भाषा हो, निजभाषा का ही नाम रहे।
हम हिन्दुस्तानी हिन्दी भाषी हैं, यही मेरी निज भाषा है।
आओ इसका हम सम्मान करें सब, मुझको ऐसी आशा है।

स.उ.नि.
आर.के. रस्तोगी
पु.उ.म. नि. कार्यालय
गांधी नगर

हिन्दुस्तान की शान

हिन्दुत्व की पहचान यही है,
भारतवर्ष की शान यही है।
सब भाषाओं का सार यही है,
सर्वधर्म समभाव यही है।
रग-रग में हिन्दी को बसाओ।
हिन्दी भाषा को प्रबल बनाओ।
चाहे हो तुम पंजाबी, चाहे हो गुजराती।
चाहे हो तुम बंगाली, चाहे हो मद्रासी।
बिन निज भाषा ज्ञान अधूरा।
होय न हिय का सूल भी पूरा।
देवनागरी लिपि महान।
यही है हिन्दुस्तान की शान।
चाचा नेहरू और महात्मा गांधी ने अपनाया।
तिलक विवेकानन्द और टैगोर ने इसे गर्भाया।

मीरा, सूर, कबीर और तुलसी ने निज कंठों से गाया।
रामचरितमानस जैसे एक महान ग्रन्थ को पाया।
सदियों से अविराम यही है।
हिन्दुस्तान की शान यही है।
दुनिया के सब देशों की है अपनी-अपनी निज भाषा।
जो सजोंती हैं आगे उज्ज्वल भविष्य की आशा।
फ्रान्स, रोम, इटली, हो या हो रूसी हो जापानी।
ब्रिटिश अमेरिका, चीनी हो या हो पाकिस्तानी।
सब का है एक मूल आधार।
जो लाये जीवन सुख सार।
दीप से दीप जलाओ भाई,
जन-जन तक पहुंचाओ भाई।
अपनी भाषा को प्रबल बनाओ,
रग-रग में हिन्दी को बसाओ।
सबजन का उद्धार यही है।
भारत मां की पुकार यही है।
सदियों से अरमान यही है।
संस्कृति की पहचान यही है।
आओ मिलकर कसम ये खायें।
हिन्दी को हम सब अपनायें।

स.उ.नि. (मं) केबल सिंह
ग्रुप केन्द्र, भुबनेश्वर

सिपाही की पुकार

केरिपु बल के वीर सिपाही
चलो वीरता के सन्मार्ग,
हृदय वसुंधरा से निकलेगा
फिर तेरे हित में अनुराग।
केरिपु बल की मांग धरा पर
आज होती चहुं ओर,
लोह पुरूष की दीप शिखा
तुम चलो कर्तव्य पथ ओर।
समर-भूमि कर्तव्य धरा पर

शौर्य प्रदर्शन करना होगा,
मातृभूमि की रक्षा के हित
मरना होगा, मिटना होगा।
हैं असंख्य वैभव के लोलुप
उनके आगे सिर न झुकाना,
मध्य प्रदेश नीमच स्थली के
वीर न लालच मन मे लाना।
केरिपु बल के वीर सिपाही
अहंकार तुम गर्व न करना,
देश प्रेम के अमर दीप को
पल भर भी मत बुझने देना।
जगमग ज्योति जलेगी जग में
कर्म पुंज प्रकाश बिखरेगा,
जग प्रकाशमय हो जायेगा
ओलोकित पथ फूल खिलेगा।
मांग रही है धरा वसुंधरा
अपने वीर प्रहरी से दान
अब "प्रभात" संकोच करो मत
बसुधा हित में हो कुर्बान

– हंस राज ओझा "प्रभात"
ग्रुप केन्द्र मोकामाघाट



9 मई *1959* को पं जवाहर लाल नेहरू नई दिल्ली में राष्ट्र भाषा प्रचार सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए

रजि. न. 4767/87



९ मई १९५९ को नई दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन में लगाये गये अभिलेखों को देखते हुए पं० जवाहर लाल नेहरू



आर.ए.एफ. की पांचवी वर्षगांठ के अवसर पर प्रस्तुत की गयी परेड का एक दृश्य ।



श्री ए.के. टंडन को महानिदेशक पद का कार्यभार सौंपने के बाद उन से हाथ मिलाते हुए श्री मुकुंद कौशल

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड–11 अंक–7
30 नवंबर, 1997
9 अग्रहायण, शक 1919

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो सेक्शन
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक–1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 की ओर से
डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली–72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली–2 दूरभाष : 3262279

इस अंक में



श्री कौशल की बल से विदाई

के.रि.पु. बल चिकित्सा शिविरों में 6000 से अधिक का उपचार

आर.ए.एफ. की पांचवी वर्षगांठ

के.रि.पु. बल सिगनल्स

बेस अस्पताल – हैदराबाद

के.रि.पु. बल का महिला पर्वतीय साइकिल अभियान

46वीं दौड़कूद प्रतियोगिता का खिताब के.रि.पु. बल ने जीता

संक्षिप्त समाचार

एक आतंकवादी की कहानी

लेखों में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने विचार हैं। सम्पादकीय मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

–संपादक

श्री मुकुंद कौशल की के.रि.पु. बल से विदाई श्री ए.के. टंडन ने कार्यभार संभाला

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल से गृह मंत्रालय में विशेष सचिव पद पर स्थानांतरण के कारण बल के महानिदेशक श्री एम.बी. कौशल को 12 नवम्बर 1997 को बल से भावभीनी विदाई दी गई। 1963 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी श्री कौशल जनवरी 1995 में बल के परिवार में अपर महानिदेशक (उत्तर पश्चिम जोन) के रूप में शामिल हुए। सितंबर 1996 में उन्होंने बल के महानिदेशक का पदभार संभाला।

सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक श्री ए.के. टंडन ने श्री कौशल से बल के महानिदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया।

श्री टंडन भारतीय पुलिस सेवा के 1961 बैच के अधिकारी हैं तथा अक्टूबर 1996 से सीमा सुरक्षा बल के महानिदेशक है। इस नियुक्ति से पूर्व वह राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड तथा केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के महानिदेशक रह चुके हैं।

इस मौके पर बल के महानिदेशालय में श्री मुकुंद कौशल को गार्ड आफ आनर पेश किया गया तथा बल के अधिकारियों तथा जवानों ने उनको खुली जीप की रस्सी खींच कर भावभीनी विदाई दी।

इससे पूर्व एक सैनिक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री कौशल ने कहा कि वे स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं, जो उन्हें इतने विशाल पुलिस बल का नेतृत्व करने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि बल में अपने कार्यकाल के दौरान अधिकारियों एवं जवानों से मिले सहयोग तथा उपलब्धियों से वह संतुष्ट हैं। उन्होंने कहा कि के.रि.पु. बल में अपने कार्यकाल के तीन वर्षों में उन्होंने उन समस्याओं, तनावों तथा कठिनाइयों को समझा है, जिनके तहत बल के कार्मिकों को कार्य करना पड़ रहा है, अत: वह जहां कहीं भी जाएंगे, उनके दूत के तौर पर कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि बल में संवादहीनता की कमी को दूर करने के लिए कार्य प्रणाली में काफी पारदर्शिता लायी गयी है तथा बल के निम्नतम स्तर के कार्मिकों की समस्याएं उच्चतम स्तर तक सुनी जाती हैं।



सैनिक सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए श्री मुकुंद कौशल



श्री ए.के. टंडन

के.रि.पु. बल चिकित्सा शिविरों में 6000 से अधिक का उपचार



बल द्वारा लगाए गये मुफ्त चिकित्सा शिविर में रोगियों का निरीक्षण करते डाक्टर

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 14 से 16 सितंबर, 97 तक दिल्ली में दो तीन दिवसीय चिकित्सा कैंपों का आयोजन किया। यह तीन दिवसीय कैंप रेपिड एक्शन फोर्स की 103 व 108 बटालियन ने दिल्ली होम्योपैथिक मैडिकल एसोसिएशन की सहायता से स्थापित किये थे। इन कैंपों का आयोजन आजादी की 50वीं. सालगिरह के अवसर पर सालभर चलने वाले कार्यक्रमों के तहत किया गया था। महिला, पुरूषों तथा बच्चों सहित 6000 से अधिक व्यक्तियों ने तुकमीरपुर तथा सुल्तानपुरी में लगाए गए इन मुफ्त चिकित्सा शिविरों में उपचार सुविधा का लाभ उठाया।

तुकमीरपुर कैंप में होम्योपैथिक तथा एलोपैथिक दोनों ही तरह की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध थी, जबकि सुल्तानपुरी में केवल होम्योपैथिक उपचार की व्यवस्था की गयी थी। इन कैंपों में डेंगू से बचाव के लिए होम्योपैथिक दवाओं का वितरण भी किया गया। इन कैंपों में 24 होम्योपैथिक तथा चार एलोपैथिक डाक्टरों सहित भारी तादाद में अर्द्ध चिकित्सकीय स्टाफ ने सुबह से शाम तक मरीजों को देखा। मरीजों के रक्त तथा मूत्र की जांच के लिए चार प्रयोगशाला सहायक भी इन कैंपों में तैनात थे।

के.रि.पु. बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल, रैपिड एक्शन फोर्स के महानिरीक्षक श्री ए.पी. पवार तथा उप महानिरीक्षक श्रीमती विमला मेहरा ने कैंपों का दौरा कर मरीजों से बातचीत की। 103 बटालियन के कमांडेन्ट आर. घई, 108 बटालियन के कमांडेन्ट जे.एस. गिल तथा डा. जी.एस. सोनी ने लगातार इन कैंपों का निरीक्षण किया।

इन शिविरों को शुरू करने से पूर्व आर.ए.एफ. कार्मिकों ने नई दिल्ली नगर पालिका के सहयोग से कैंपों के आसपास के इलाके में वृहद सफाई अभियान चलाया। कैंप में आने वाले मरीजों को स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ डेंगू से बचने के लिए कूलरों के पानी को निकालने के तथा अन्य उपाय बताए गये।

के.रि.पु. बल चिकित्सा अधिकारियों का सम्मेलन

के.रि.पु. बल के अपर महानिदेशक श्री गौतम कौल ने बल के डाक्टरों का आह्वान किया है कि वे पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ बल की सेवा करें। उन्होंने कहा कि के.रि.पु. बल में काफी कठिन परिस्थितियों में काम करना पड़ता है अत: चिकित्सा अधिकारियों को चाहिए कि इन स्थितियों में कार्य करने के लिए अपने कौशल को बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि चिकित्सा अधिकारियों को चाहिए कि वे जवानों के स्वास्थ्य को सुधारने के लिए कार्य करें।

25 सितंबर, 97 को के.रि.पु. बल महानिदेशालय में बल के चिकित्सा अधिकारियों के सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार उनकी कार्य स्थितियों को सुधारने के लिए बहुत गंभीर हैं। उन्होंने कहा कि बल की संख्या में बढ़ोत्तरी के कारण भविष्य में मेडिकल युनिटों में बढ़ोत्तरी की संभावना है। अपर महानिदेशक उत्तर पश्चिम जोन श्री एस.के. सेठी ने भी विचार विमर्श में भाग लेते हुए बल के चिकित्सा अधिकारियों से बल की बेहतर सेवा के लिए अपने व्यवसायिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए कहा।

इससे पूर्व निदेशक (चिकित्सा) डा. के.के. सैनी ने अपने स्वागत भाषण में उन समस्याओं और कठिनाइयों का जिक्र किया, जिनमें बल के चिकित्सकीय और अर्द्ध चिकित्सकीय स्टाफ को कार्य करना पड़ता है। पूरे देश में फैले बल के ग्रुप केंद्रों तथा बटालियनों के अस्पतालों के 30 से अधिक मुख्य चिकित्सा अधिकारियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

आर.ए.एफ. की पांचवी वर्षगांठ

“आर.ए.एफ. ने अल्पसंख्यकों में विश्वास पैदा किया है”

–इंद्रजीत गुप्त



परेड की सलामी लेते हुए केंद्रीय गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त

केंद्रीय गृह मंत्री श्री इंद्रजीत गुप्त ने रेपिड एक्शन फोर्स को सलाह दी है कि वह शांति काल में कठिन श्रम करें, ताकि संकट के समय वह कारगर ढंग से अपने कर्तव्य को अंजाम दे सकें । उन्होंने जोर देते हुए कहा कि आर.ए.एफ. कर्मियों को संवेदनशील क्षेत्रों में अपने परिचितीकरण अभ्यास पर और अधिक ध्यान देना चाहिए, ताकि शांति काल में उनके द्वारा अपनी क्षमताओं को निखारने के लिए किया गया यह श्रम, संकट काल में कम प्रयासों से अधिक परिणाम हासिल कर सके और वह भी कम से कम संभव समय में ।

गृह मंत्री 1 नवंबर '97 को सिकंदराबाद, स्थित ग्रुप केंद्र रंगारेड्डी में रेपिड एक्शन फोर्स को पांचवी जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह में उसके जवानों और अधिकारियों को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। उन्होंने आर.ए.एफ. की भूमिका की प्रशंसा करते हुए कहा कि इसके गठन से अल्पसंख्यकों में विश्वास पैदा हुआ है कि सरकार उनके जीवन तथा संपत्ति की रक्षा के लिए दृढ़ है। नीले रंग की डांगरी में आर.ए.एफ. कर्मियों की तैनाती मात्रा से तनावग्रस्त क्षेत्रों में स्थितियां सामान्य हुयी हैं तथा जनता विशेष कर अल्पसंख्यकों में विश्वास लौटा है।

आर.ए.एफ. की भूमिका की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि देश में साम्प्रदायिक तनाव को घटाने में इस बल ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। कई कठिन साम्प्रदायिक स्थितियों पर आर.ए.एफ. ने सफलतापूर्वक काबू पाया है। बल को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि इस बल ने अत्यधिक अल्प समय में ही देश और जनता का विश्वास और सहयोग प्राप्त किया है। साम्प्रदायिकता के ही समान जातीय संघर्ष भी भारतीय सामाजिक ढांचे के लिए खतरनाक हैं, और आर.ए.एफ. को इन संघर्षों से निबटने के लिए भी विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए।

आर.ए.एफ. की कुशलता और कारगरता की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि कुछ राज्य सरकारें आर.ए.एफ. के ही समान अपने दंगा विरोधी पुलिस बल तैयार कर रही हैं। उन्होंने कहा कि यह प्रशंसनीय है कि आर.ए.एफ. राज्य सरकारों को इस तरह के पुलिस बल गठित करने में मदद दे रहा है। आर.ए.एफ. द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि संकट के समय पीड़ितों की मदद के लिए आर.ए.एफ. द्वारा अपनी ओर से पहल कर बचाव और राहत कार्य शुरू करना सराहनीय है। इससे यह बल जनता के दिलों के समीप आया है तथा इससे बल का मानवीय पक्ष उजागर हुआ है।

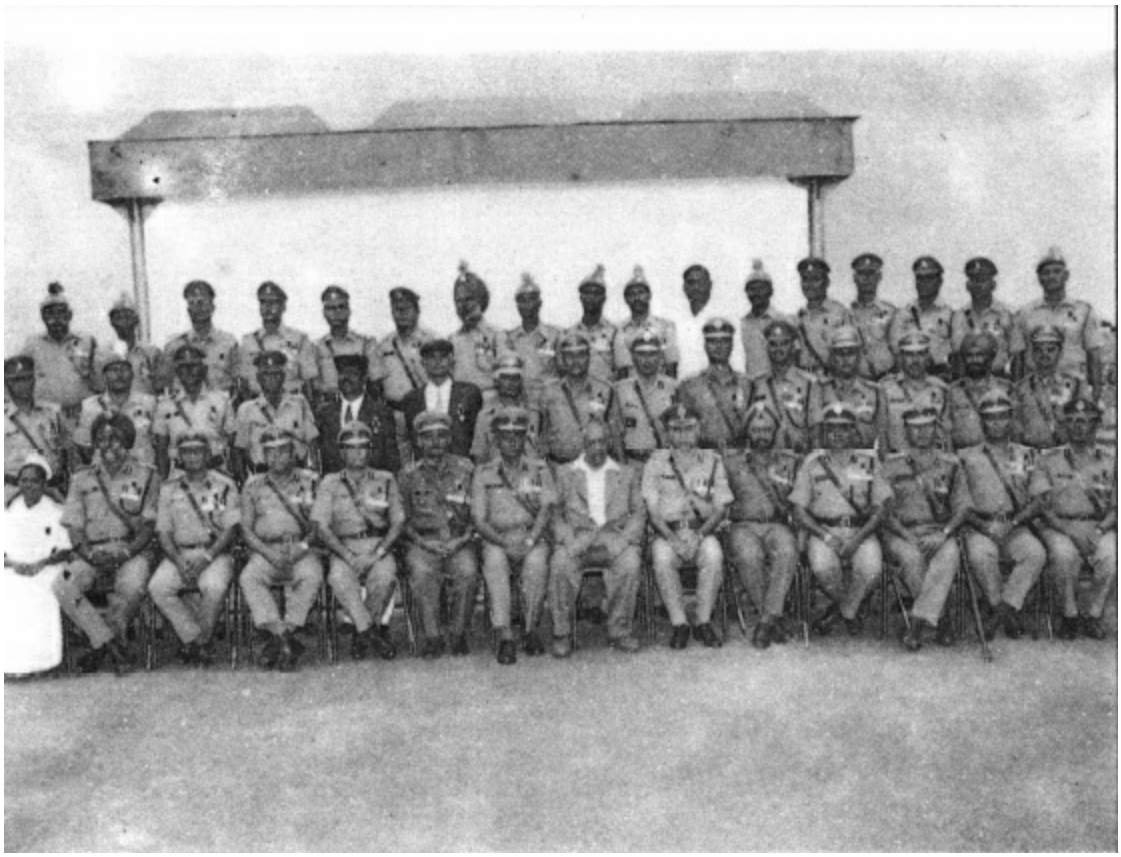
इस प्रकार आर.ए.एफ. समाज के दोस्त के रूप में देश के अन्य पुलिस बलों के समक्ष व्यवहार एवं कार्यप्रणाली की दृष्टि से एक उदाहरण हो सकता है।

इस मौके पर श्री गुप्त ने 57 के.रि.पु. बल और आर.ए.एफ. कर्मियों को सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक भी प्रदान किये। यह पदक भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्वतंत्रता दिवस-96 तथा गणतंत्र दिवस 97 के अवसर पर दिये गये थे।

इससे पूर्व मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए बल के महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल ने कहा कि बल की संचालनिक दक्षता और कार्मिकों का नैतिक बल बनाए रखने के लिए सरकार को कल्याण गतिविधियों के साथ-साथ, युनिट मुख्यालयों स्तर पर ढांचागत क्षमताओं को बढ़ाना होगा। श्री कौशल ने गृह मंत्री से आग्रह किया कि वे केरल तथा उत्तर प्रदेश सरकार से आर.ए.एफ. बटालियनों के लिए स्थायी निमार्ण हेतु जमीन दिलवाएं तथा बचाव, राहत एवं सामाजिक कार्यों हेतु धन की व्यवस्था कराएं।

इससे पूर्व श्री कौशल ने रंगारेड्डी पहुंचने पर गृह मंत्री की आगवानी की। गृह मंत्री ने इस अवसर पर एक आकर्षक परेड का निरीक्षण किया तथा सलामी ली। परेड में झांकियां भी शामिल थी।

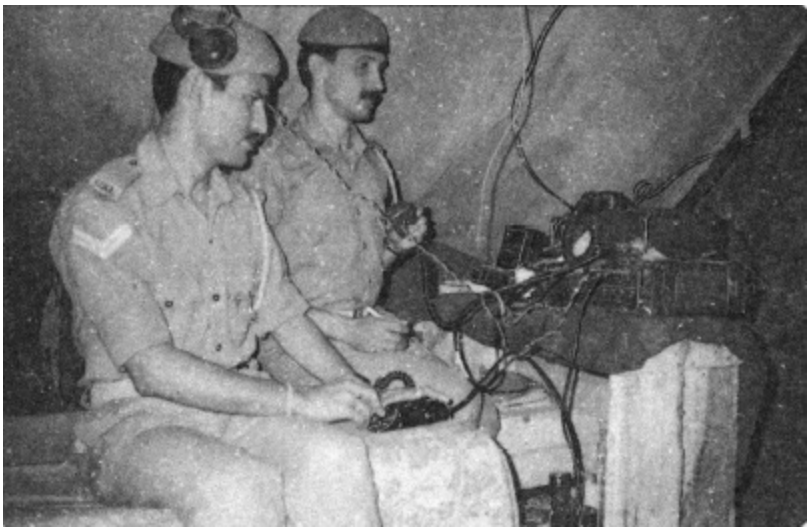
अंत में आर.ए.एफ. के महानिरीक्षक श्री ए.आर.पवार ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।



पदक प्राप्त करने वाले अधिकारियों और जवानों के साथ गृह मंत्री



इस मौके पर महानिदेशक श्री मुकुंद कौशल ने गृह मंत्री की एक स्मृति चिह्न भी भेंट किया



अमरनाथ यात्रा के दौरान स्थापित किया गया रेडियो स्टेशन



त्रिपुरा आपरेशन के दौरान बल के संचारकर्मी

अमरनाथ यात्रा के दौरान सिगनल व्यवस्था

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अमरनाथ यात्रा को सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए के.रि.पु. बल ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। गत वर्ष की त्रासदी को दृष्टि में रखते हुए इस वर्ष विशेष अहतियात बरती गयी थी। के.रि.पु. बल को तीर्थ यात्रियों को जम्मू से पहलगाम तक सुरक्षित पहुंचाने और वापस लाने कि जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। यात्रियों के काफिले की सुरक्षा के लिए बल की 5 सिगनल बटालियन ने रामबन, बनीहाल, जवाहर खल, काजी गुंद, मीर बाजार तथा अनंतनाग में अतिरिक्त रेडियो स्टेशन स्थापित किये। जिनका लिंक स्टेशन पहलगाम में स्थापित किया गया। बेस स्टेशन पहलगाम की श्रीनगर, जम्मू तथा दिल्ली के साथ एच.एफ. वी. एच.एफ. तथा

बेस्ट लिंक को तीन स्तरीय संचार सुविधा स्थापित की गयी।

इसके अतिरिक्त पहलगाम से पवित्र गुफा तक इनमारसेट संचार सुविधा भी स्थापित की गयी। यात्रा का मार्ग काफी जोखिम भरा था तथा यात्रियों के लिए आतंकवादियों का भय बराबर बना हुआ था। यात्रियों की सुरक्षा के लिए विघ्न रहित तथा स्पष्ट एवं सुचारू संचार व्यवस्था का महत्व बहुत अधिक था। सुरक्षा बलों की गतिशील तथा स्थायी टुकड़यों को प्रदान की गयी इस संतोष जनक सुविधा को सभी संबंधित अधिकारियों ने भरपूर प्रशंसा की।

सुरक्षा व्यवस्था के लिए तैनात अन्य एजेंसियों के साथ तालमेल के लिए जम्मू कशमीर पुलिस तथा अन्य पुलिस बलों के साथ भी अंतर संचार व्यवस्था स्थापित की गयी थी। सम्पूर्ण अमरनाथ यात्रा के दौरान बल के सिगनल कर्मियों द्वारा प्रदान की गयी विश्वसनीय संचार सुविधा ने सभी से प्रशंसा अर्जित की।

त्रिपुरा मे संचार व्यवस्था

त्रिपुरा में विद्रोहात्मक गतिविधियों के बढ़ जाने से यहां के.रि.पु. बल की सक्रियता भी बढ़ गयी है। प्रभावी प्रतिविद्रोहात्मक कार्यवाही के लिए यह आवश्यक है कि पूरे त्रिपुरा राज्य में उत्तम श्रेणी की संचार व्यवस्था स्थापित की जाय, त्रिपुरा राज्य में तैनात सभी सुरक्षा बलों के बीच आपसी संचार व्यवस्था समय की सबसे बड़ी जरूरत है। इस जरूरत को दृष्टि में रखते हुए सीमा सुरक्षा बल, असम राइफल्स तथा सेना की टुकड़यों को के.रि.पु. बल के रेडियो नैट के अन्तर्गत ले लिया गया है।

बल की अपनी संचार व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाने के लिए उसे ब्रस्ट ऐरर कन्ट्रोल सिस्टम फोर टेलीप्रिन्टर के जरिये बल के महानिदेशालय से जोड़ दिया गया है।

पैट्रोल, तलाशी, घेराबन्दी या इलाके पर अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए की जानेवाली कार्यवाहियों के दौरान दो वाट के वाकी-टोकी सैट के साथ आने वाली समस्याओं को दृष्टि में रखते हुए बल की यूनिटों को पर्याप्त मात्रा में चार वाट के आर.एफ. सैट प्रदान किये गये हैं, इससे घने जंगलों तथा कठिन भू भागों में कार्यरत बल की युनिटों की विश्वास की भावना में काफी इजाफा हुआ है।

बेस अस्पताल हैदराबाद

बेस अस्पताल हैदराबाद की स्थापना जुलाई 1973 में आवड़ी (मद्रास) में 50 बिस्तर के एक अस्पताल से शुरू हुई थी, 1975 में इसे हैदराबाद स्थानान्तरित कर लिया गया और तभी से यह 100 बिस्तर वाले अस्पताल के रूप में कार्य कर रहा है।

यह अस्पताल हैदराबाद रैंज तथा दक्षिण सेक्टर की हैदराबाद के आस-पास पड़ने

वाली सभी यूनेटों एवं कार्यालयों के कार्मिकों को चिकित्सा सुविधा प्रदान कर रहा है, यह अस्पताल दक्षिण सैक्टर के सभी अन्य अस्पतालों के लिए एक रैफरल अस्पताल का काम भी करता है।

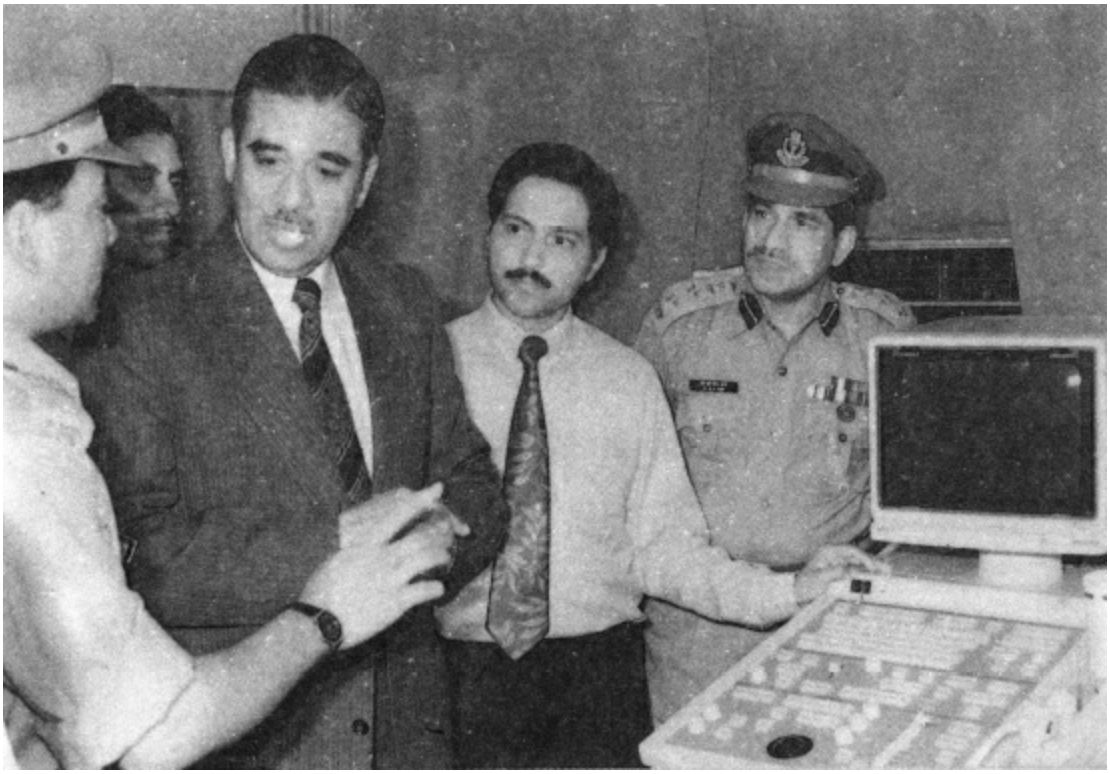
यह अस्पताल इण्डियन मैडिकल कौंसिल द्वारा शैक्षिक कार्यक्रम चलाने के लिए मान्यता प्राप्त है तथा डेक्कन मेडिकल कालेज में विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम चलाता है।

अस्पताल की दन्त चिकित्सा युनिट के लिए हैदराबाद के दन्त चिकित्सा महाविद्यालय के एक डाक्टर की सेवायें प्राप्त की गयी है।

अस्पताल में आन्ध्र प्रदेश के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक द्वारा मान्यता प्राप्त एक परिवार कल्याण यूनिट भी कार्य कर रही है, इस अस्पताल में मार्च, जून, सितम्बर तथा दिसम्बर महीनों को परिवार कल्याण माह के रूप में मनाया जाता है।

अस्पताल में आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एक क्षय रोग यूनिट भी कार्यरत है।

यह अस्पताल कई आधुनिक उपकरणों से सज्जित होने के कारंण चिकित्सा के अधिकांश क्षेत्रों में आत्मनिर्भर है।



अस्पताल में अल्ट्रा सोनोग्राफी प्रणाली का उद्घाटन करते हुए विशेष महानिदेशक श्री कार्तिकेयन

एड्स टीकाकरण तथा परिवार कल्याण के लिए इस अस्पताल द्वारा समय-समय

पर जागरण कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं। साथ ही अस्पताल में कार्यरत डाक्टरों की व्यवसायिक दक्षता को बढ़ाने के लिए भी समय-समय पर बैठकों-सम्मेलनों तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है।

देश में लगातार बढ़ते एड्स तथा डेंगू बुखार जैसी बिमारियों के खतरे को दृष्टि में रखते हुए इस अस्पताल के मुख्य चिकित्साधिकारी डा. डी.एन.कार समय-समय पर हैदराबाद, मद्रास, बंगलौर, पल्लीपुरम, मुडखेड़, शिवपुरी, भोपाल तथा अन्य ग्रुप केन्द्र अस्पतालों में अपने दौरे के दौरान इन विषयों पर कार्मिकों को जानकारी प्रदान करते रहते हैं।

अस्पताल ने हाल ही में कई आधुनिक उपकरणों की स्थापना की गई है, शीघ्र ही एक अल्ट्रासाउन्ड मशीन की स्थापना भी कर ली जायेगी।

सरकार के पल्स पोलियो आदि कार्यक्रमों में भी यह अस्पताल बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता रहा है। इस अस्पताल में एडस परीक्षण की भी व्यवस्था की गयी है।

इस वर्ष इस अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. डी.एन. कार को उनके सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का विशिष्ट सेवाओं का पुलिस पदक प्रदान किया गया, जबकि डा. पी.सी. डी. सामन्ता तथा वार्ड/सिस्टर श्रीमती प्रमिला शर्मा को सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक प्रदान किया गया है, इसके अतिरिक्त इस अस्पताल के कई कार्मिक महानिदेशक की प्रशंसा डिस्क एवं प्रशंसा पत्र से सम्मानित हो चुके है।

के.रि.पु. बल का महिला पर्वतीय साइकिल अभियान

के.रि.पु. बल ने 22 से 27 सितंबर, 1997 तक केवल महिलाओं द्वारा संचालित एक पर्वतीय साइकिल अभियान का आयोजन किया। के.रि.पु. बल के इतिहास में अपनी तरह का यह पहला अभियान 22 सितंबर, 1997 को हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से लगभग 170 कि.मी. दूर सराहन में प्रात: 11:50 बजे से शुरू हुआ। उत्तर पश्चिम (परिचालन) जोन (पंजाब व चण्डीगढ़) के महानिरीक्षक श्री तासी दावा ने अभियान दल की रवानगी से पूर्व उसके विषय में जानकारी प्रदान की। इस अभियान का आयोजन स्वतंत्रता की 50 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में सालभर चलाए जाने वाले कार्यक्रमों के तहत किया गया।

अभियान दल रामपुर, कुमारसेन, शिलारू, शिमला तथा परवानू से होता हुआ 300 कि.मी. की दूरी तय कर 27 सितंबर, 1997 को चण्डीगढ़ पहुंचा। चण्डीगढ़ पहुंचने पर उसके सम्मान के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि हरियाणा के राज्यपाल श्री महाबीर प्रसाद थे।

राज्यपाल श्री महाबीर प्रसाद ने इस रोमांचक अभियान में भाग लेने वाली महिलाओं के साहस एवं प्रदर्शन की प्रशंसा की।



शिमला से चंडीगढ़ तक के अपने साइकिल अभियान के दौरान बल की महिलाएं

बल के उत्तर पश्चिम जोन के अपर महानिदेशक श्री एस.के. सेठी ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए 1994 से बल में आयोजित किये जा रहे रोमांचक खेलों की जानकार प्रदान की। ग्रुप केन्द्र अजमेर की डिप्टी कमांडेंट सुश्री एनी थामस के नेतृत्व में अभियान में शामिल हुयी महिलाओं का समारोह स्थल पर पहुंचने के बाद मुख्य अतिथि से परिचय कराया गया। मुख्य अतिथि ने अभियान दल की सदस्याओं को गुलदस्ते तथा स्मृति चिह्न भेंट किये। इस मौके पर बल की महिला बटालियन की सदस्याओं द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

देश की आजादी की 50वीं सालगिरह के अवसर पर के.रि.पु. बल ने देश की एकता और बंधुत्व का संदेश फैलाने के लिए इस महिला पर्वतीय साइकिल अभियान का आयोजन किया था। हिमाचल प्रदेश के ऊचे पहाड़ी रास्तों पर केवल महिलाओं का यह साइकिल अभियान देश में अपनी तरह का पहला अभियान था। चण्डीगढ़ तक पहुंचने में अभियान दल ने 300 कि. मी. का सफर तय किया। अभियान के दौरान पर्वतीय जनता के बीच सद्भावना तथा राष्ट्रीय अखंडता के संदेश को फैलाने के अलावा इस अभियान ने राज्य के युवकों एवं युवतियों को रोमांचक खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

अभियान दल में ग्रुप केन्द्र-एक (अजमेर) की डिप्टी कमांडेन्ट सुश्री एन्नी थोमस (32) के नेतृत्व में 88, 103, 104, 106 तथा 135 बटालियनों की निम्न 23 महिला सिपाहियों ने भाग लिया कौशल्या देवी (30), बीना पानी (22), ई.बी. करकेता (24),

सुशीला कुजू (24), संतोष खालर (24), संतवाना हालदर (23), पी. निलोचना (23), चुमकी चौधरी (22), नीलम चरक (24), पटेल बसंती (23), गीता देवी (23), बोरम्मा (22), सोमा मण्डल (22), टी.कविता (22) तथा शांति रानी टोपावो (22)।

नीमच में कुओं का निर्माण

के.रि.पु. बल कैम्प नीमच में पानी की कमी को दृष्टी में रखते हुए दो कुओं का निमार्ण किया गया है, एक कुआं चार सिगनल बटालियन के कार्मियों ने स्वयं सेवा के आधार पर सिगनल केन्द्र के नजदीक किया है, जिसका उद्घाटन उप निदेशक (संचार) ब्रिगेडियर श्री जे.एस. साहनी ने किया। 4 सिगनल बटालियन के ही कार्मिकों ने अधीनस्थ अधिकारियों की भैस के नजदीक एक और कुंए का निर्माण किया जिसका उद्घाटन महानिरीक्षक (प्रशिक्षण एवं सम्भरण) श्री एस.एम. कैरे ने 16 जुलाई 97 को किया।

46वीं अखिल भारतीय पुलिस दौड़–कूद प्रतियोगिता

के.रि.पु. बल ने खिताब जीता



तमिलनाडु के मुख्य मंत्री से गोलाफेंक की ट्राफी प्राप्त करते हुए मुकेश

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने 46वीं अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद प्रतियोगिता की पुरूष वर्ग की ओवर आल चैम्पियनशिप 140 अंक प्राप्त कर जीत ली। 9 नवम्बर

1997 को चैन्नइ के नेहरू स्टेडियम में प्रतियोगिता में अन्तिम दिन तमिलनाडु के मुख्यमंत्री श्री करूणानिधि ने बल की टीम को यह चैम्पियन–शिप ट्राफी प्रदान की। 123 अंक प्राप्त कर पुरूष वर्ग में पंजाब दूसरे स्थान पर रहा। के.रि.पु. बल की टीम को सर्वश्रेष्ठ अनुशासनात्मक टीम का खिताब भी दिया गया।

के.रि.पु. बल के परमजीत सिंह 14 अंक प्राप्त कर प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ धावक रहें। के.रि.पु. बल की महिला टीम ने 4 × 400 मीटर रिले में एक नया रिकार्ड स्थापित किया।

जोखिम निधि लाभ

केन्दीय जोखिम निधि से माह अक्टूबर 1997 में अक्षमता के चार मामलों में कुल 60,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये। इस माह जोखिम निधि के समक्ष मृत्यु का कोई मामला विचार में नहीं आया।

इसी प्रकार जोखिम निधि "बी" स्पेशल रिस्क फंड से इसमें आठ सदस्यों की मृत्यु के मामले में कुल 2,80,000 रूपये देने स्वीकृत किये गये।

के.रि.पु. बल श्वान रामू की उपलब्धियां



श्वान रामू अपने हैंडलर कांस्टेबल एम. नारायणा के साथ

आतंकवाद से प्रभावित त्रिपुरा राज्य में विद्रोहियों की धर पकड़ में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का श्वान दस्ता भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

के.रि.पु. बल की अगरतला स्थित 33 बटालियन के लेबराडोर नस्ल के श्वान ने विशेष तौर पर पिछले महिनों में विशेष उपलब्धियां हासिल की है।

रामू नाम के इस श्वान ने 2 जून '97 को त्रिपुरा के उदयपुर इलाके में एक तलाशी अभियान के दौरान तीन खतरनाक विद्रोहियों को पकडवाने में मदद की।

25 अगस्त 97 को दलाई के अंतर्गत आने वाले शांतिर बाजार में रामू को फिर कुछ संदिग्ध लोगों की तलाश के लिए लगाया गया। यहां भी उसकी निशानदेही पर पांच संदिग्ध आतंकवादियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

6 सितंबर '97 को फिर एस.पी. अगरतला के निर्देश पर रामू को भक्तामानी पारा से गुमसिंह बारी के बीच कुछ संदिग्धों की तलाश के लिए लगाया गया। यहां भी रामू विद्रोहियों को पकड़वाने में सफल रहा।

के.रि.पु. बल के श्वान रामू तथा उसके हैंडलर कांस्टेबल एम. नारायणा की सूझबूझ तथा कारनामे की स्थानीय प्रशासन तथा अधिकारियों ने भरपूर प्रशंसा की है

।

दूरदर्शन में कार्यरत बल के अधिकारी को पुलिस पदक



श्री एन.पी. सिंह

देश के विभिन्न क्षेत्रों में आतंकवादियों द्वारा की जा रही विध्वसंक गतिविधियों में दूरदर्शन व आकाशवाणी के कर्मी और उसकी इमारतें सबसे ज्यादा उनके निशाने पर रहती है। श्रीनगर दूरदर्शन केन्द्र व अन्य सीमावर्ती दूरदर्शन केन्द्रों पर आतंकवादियों द्वारा किये जा रहे हमलों की खबरें जब तब चर्चा में आती ही रहती हैं। ऐसे में इन संस्थानों के सुरक्षा कर्मियों की जिम्मेदारियां काफी बढ़ जाती हैं। ऐसे ही सुरक्षा अधिकारियों में से एक हैं दूरदर्शन महानिदेशालय के सुरक्षा अधिकारी एन.पी. सिंह जिन्हें उनकी बहादुरी और योग्यता के लिए स्वतंत्रता दिवस पर पुलिस पदक से सम्मानित किया गया है।

उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के खेमीपुर निकियावां गांव में 15 दिसम्बर 1950 को जम्मे श्री एन.पी. सिंह 2 मार्च 1971 को सी.आर.पी.एफ. (के.रि.पु. बल) में भर्ती हुए थे। नौ जुलाई 1996 को श्री एन.पी. सिंह के.रि.पु. बल से दूरदर्शन महानिदेशालय डेपुटेशन पर कार्यरत हैं।

के.रि.पु. बल रोहिणी पब्लिक स्कूल की वर्षगांठ



स्कूल के बच्चों द्वारा लगायी गयी प्रदर्शनी को देखती हुयी श्रीमती आशा कौशल

रोहिणी पब्लिक स्कूल में के.रि.पु. बल कार्मिकों के साथ-साथ जनता को हुए लाभों और विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त उल्लेखनीय उपलब्धियों ने के.रि.पु. बल के प्राधिकारियों को एक और ऐसा स्कूल सिकन्दराबाद में 7.2 करोड़ रुपए की लागत से शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया है। रोहिणी पब्लिक स्कूल के वार्षिकोत्सव समारोह के अवसर पर अपने सम्बोधन में श्री मुकुन्द कौशल, महानिदेशक, के.रि.पु. बल ने कहा कि शैक्षिक संस्थाओं को अपने क्रियाकलापों को इस ढंग से प्रदर्शित करना चाहिए कि इस महान राष्ट्र के भावी नागरिक कहलाने वाले बच्चों में छिपी हुई प्रतिभाएं ऊभर कर सामने आ सकें।

इस अवसर पर के.रि.पु. बल वाइव्ज वेलफेयर एसोसियेशन (कावा) की अध्यक्षता श्रीमती आशा कौशल ने "सृजन" नामक स्कूल मैगजीन का विमोचन किया तथा उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा आयोजित एक प्रदर्शिनी का भी उद्घाटन किया।

श्री सूरज प्रकाश, प्राचार्य ने पहले, स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी तथा स्कूल के प्रबन्धक श्री पी.सी. जोशी ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

माह अक्टूबर '97 में बल के मृत कार्मिक

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्न कार्मिक माह अक्टूबर '97 में मृत्यु को प्राप्त हुए।

के.रि.पु. बल समाचार शोक संतप्त परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हैं।

हव. राम लाल शर्मा (70 बटा.), सिपाही टी. रामाकृष्णन (54 बटा.), ला.ना.एन. तुलासिधरन (54 बटा.), हव. आर.एस. मोरदे (109 बटा.), उप निरीक्षक विशुन कांबली (ग्रुप केन्द्र बंगलौर), सि. अशोक कुमार (76 बटा.), सि. प्रेम सिंह (7 बटा.), सि. शुकुन तुदु (108 बटा.), सि. रमेश कुमार लोबो (19 बटा.), सि. शशिकान्त मैने (66 बटा.) नायक रामप्रकाश (67 बटा.), ना. डी.एस. सोरेन (4 बटा.), ना. रमेश कुमार (4 बटा.), सि. जोगिन्दर नाथ राये (4 बटा.), ना./ड्राईवर कालू राम (4 बटा.), सि. देवेन्द्र कुमार (ग्रु.के.-2 अजमेर), सि. राज सिंह (104 बटा.), सि. कैलाश चन्द्र (131 बटा.), सि. जगदीश प्रसाद (ग्रु.के. गांधीनगर), हव.के.के. यादव (62 बटा.), ना./ड्राईवर वासुदेव पूनाजी मेसहरे (ग्रु. के. पूणे), सि.सी.के. पूनेचा (4 बटा.), बारबर महेन्द्र ठाकुर (52 बटा.), बारबर मुथुकारपन (116 बटा.), चपरासी श्रीमती आशा देवी (ग्रु.के. नीमच), ला.ना.पी. एन. मेहदी (82 बटा.), स.उ.नि./आर. ओ.राम सिंह (2 सिगनल बटा.), स.उ. नि./आर.ओ. केदार सिंह (। सिंगनल बटा.), धोबी परमाशिवम (106 बटा.), उप निरीक्षक राम सिंह (106 बटा.)।

इनके अतिरिक्त देर से प्राप्त समाचार के अनुसार अगस्त माह में नायक जयलाल पाटिल (126 बटा.), सिपाही/ड्राईवर रामास्वामी एल. (ग्रु.के. नीमच) तथा माह सितम्बर में उप निरी वालीजन (21 बटा.), निरी. जसवन्त सिंह (14 बटा.), उप.निरी. आर.एस. चौहान (92 बटा.) उप. निरी./एम.टी. नेपाल सिंह (93 बटा.), सिपाही राजेन्द्र सिंह (ग्रु.के. लखनऊ), कुक टीका राम (71 बटा.), सि.ओम प्रकाश (121 बटा.), निरी. एस. लांबा (101 बटा.), सिपाही बिजेन्द्र सिंह (107 बटा.), हव./ड्राइवर बी.के. विश्वभरम (13 बटा.), स.उ.नि. (एम) ललित कुमार गुप्ता (30 बटा.), सि.के. सैलामुथु (37 बटा.), सि.मोहम्मद इकबाल (8 बटा.) भी मृत्यु को प्राप्त हुए।

एक आतंकवादी की कहानी

15 सितंबर, 1997 का दिन जम्मू कश्मीर के कूपवाड़ा जिले के गांव मगम के रहने वाले फारूक अहमद मीर के लिए धरती का स्वर्ग कही जाने वाली कश्मीर की सुंदर धरती पर एक दूसरे जन्म का दिन है। इस दिन 30 वर्षीय फारूक अहमद मीर ने एक ए.के. 56 राइफल तथा उसके 30 सजीव कारतूसों के साथ के.रि.पु. बल अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण किया। मीर अलउमार मुजाहीदीन से संबंध रखता है।

पूछताछ के दौरान उसने जो अपनी कहानी बताई, वह घाटी के युवकों की स्थिति, उनको जबरन सीमा पार भेजे जाने, तथा वहां उन्हें दिये जाने वाले प्रशिक्षण का चिट्ठा है। 1994 में फारूक अहमद मीर कूपवाड़ा के एक हायर सेकेंडरी स्कूल का कक्षा 11 का छात्र था। अक्टूबर, 1994 में जब वह अपने सेब के बाग में गया हुआ था, तो

एक नकाबपोश बंदूक की नोक पर उसे दूसरे गांव ले गया। वहां उसे दस और नकाबधारी आतंकवादी मिले। तब उसे हथियारों का प्रशिक्षण लेने के लिए जाने को कहा गया, मगर वह इसके लिए इच्छुक नहीं था। उसके अपहरणकर्ताओं ने कहा न मानने पर उसे जान से मार डालने की धमकी दी। उसकी परीक्षाओं में शामिल होने देने की प्रार्थना तक ठुकरा दी गयी।

उसी शाम एक पाकिस्तानी गाइड के साथ मीर और नौ अन्य लड़कों को अथमुकस रास्ते से प्रशिक्षण लेने के लिए पाकिस्तान रवाना कर दिया गया। चार रात की पैदल यात्रा के बाद वह पाक अधिकृत काश्मीर के मुजफ्फराबाद इलाके में पहुंचे। उन्हें जंगल में स्थापित एक कैंप में ट्रेनिंग दी जाती शाम को उन्हें मुजफ्फराबाद में सेना के कैंप में वापिस ले आया जाता। उन्हें ए.के 56 रायफल तथा एल.एम.जी. चलाने के लिए करीब 40 दिन तक प्रशिक्षण दिया गया इस जबरन प्रशिक्षण के बाद भी फारूक मीर आतंकवाद में शामिल होने के लिये कभी प्रेरित नहीं हुआ। तीन साल तक आतंकवाद में शामिल होने के उनके लगातार दबाव को अस्वीकार करते रहने के बाद फारूक मीर बिमार पड़ गया और उसे मुजफ्फराबाद आर्मी कैंप में एक अलग-अलग स्थान पर नजरबंद बना दिया गया।

अंतत: अगस्त, 97 में तीन भारतीय तथा चार पाकिस्तानी युवकों के साथ फारूक मीर को उसी रास्ते से वापस कश्मीर में भेज दिया गया। इस पार्टी के प्रत्येक सदस्य को एक ए.के. 56 रायफल, उसकी एक मैगजीन, 30 राउंड तथा 2000 रूपये नकद दिये गये।

पाकिस्तानी युवकों को कारतूसों के साथ एक एक पिस्तौल भी दी गयी। इन युवकों के साथ दो पाकिस्तानी गाइड भी थे। जब यह पार्टी कूपवाड़ा से लगभग 20 कि.मी. पहले एक गांव के पास पहुंची तो सुरक्षा बलों के एक दल के साथ उनकी मुठभेड़ हो गयी। क्योंकि फारूक कुछ बिमार था, अत: जब गोलाबारी शुरू हुयी, तो वह पीछे हटकर जंगल में छिप गया। बाद में जब वह गांव में गया तो उसने सुना कि उस मुठभेड़ में एक पाकिस्तानी तथा तीन कश्मीरी युवक मारे गये तथा तीन पाकिस्तानी युवक सुरक्षा बलों से बचकर भागने में कामयाब हो गये। इस घटना के बाद यह छिपकर रहने लगा तथा बाद में उसने के.रि.पु. बल अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।



सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के बच्चे अपने वार्षिक उत्सव पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए

रजि. न. 4767/87



46 वीं अखिल भारतीय पुलिस दौड़कूद प्रतियोगिता की चैंपियनशिप के.रि.पु. बल ने जीती। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री [redacted] से चैंपियनशिप ट्राफी प्राप्त करते हुए उप निदेशक (प्रशिक्षण) श्री एम. मोहन राव तथा संयुक्त सहायक निदेशक (खेल) श्री डी.आर. यादव

खंड-11, अंक-8
31 दिसंबर, 1997

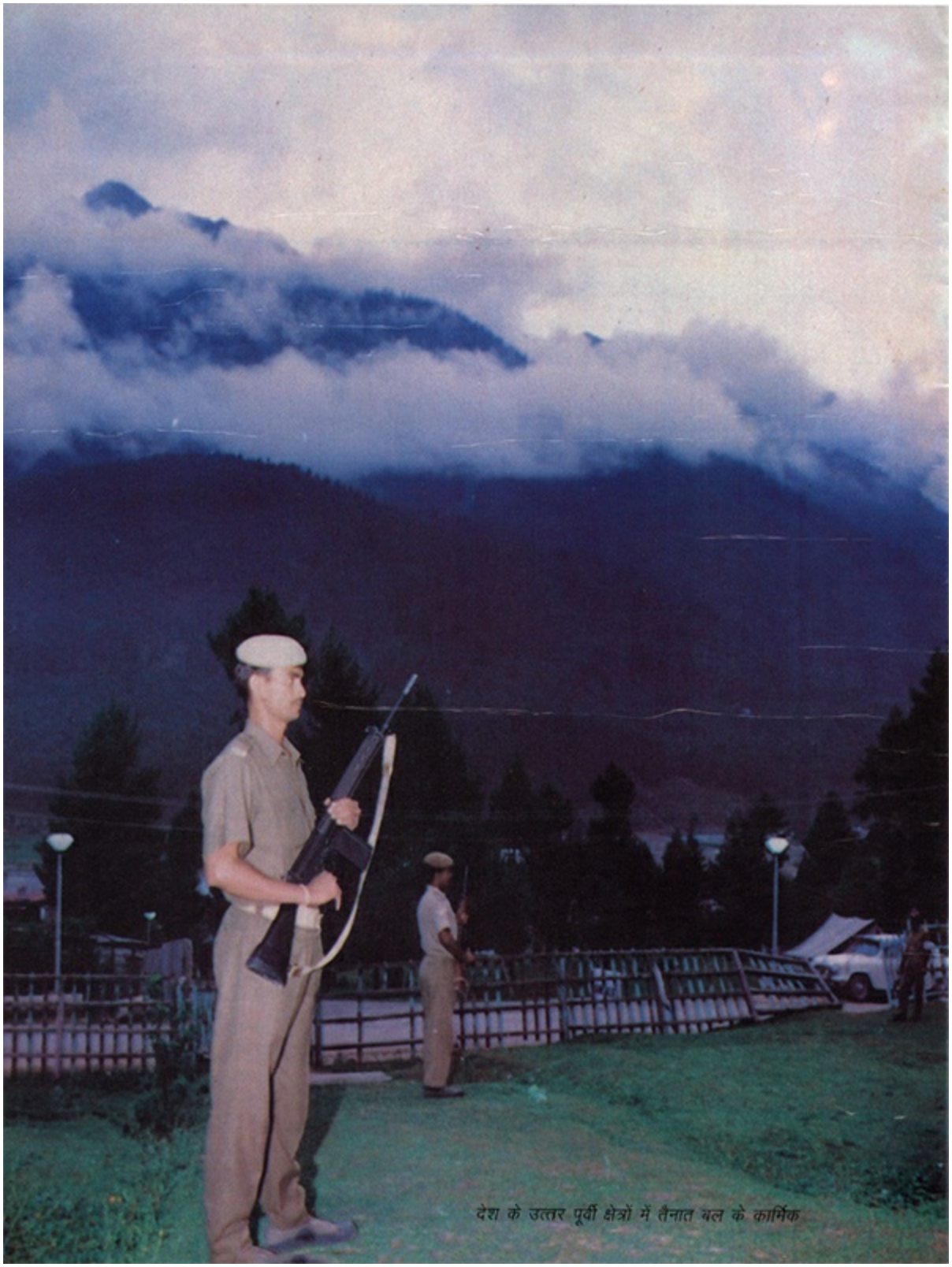
58वीं वर्षगांठ पर विशेष

सी.आर.पी.एफ.
समाचार





आजादी के 50 साल
और
केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल



देश के उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में तैनात बल के कार्मिक

सी.आर.पी.एफ.
समाचार

खंड-11 अंक-8
31 दिसंबर, 1997
10 पौष, शक 1919

मुख्य संपादक
डी.जी. महापात्र

संपादक
अनिल गुप्ता

चित्र
फोटो सेक्शन
के.रि.पु. बल महानिदेशालय

प्रकाशक
महानिदेशक के.रि.पु. बल
ब्लाक-1, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स लोधी रोड,
नई दिल्ली-110003 की ओर
से डी.जी. महापात्र

मुद्रक
सी.आर.पी.एफ., प्रेस झड़ौदा कलां, नई दिल्ली-72

कम्पोजिंग एवं प्लेट मेकिंग
न्यू रायल प्रिंट प्रोसेस 1728 कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-2 दूरभाष : 3262279

इस अंक में

 महानिदेशक की ओर से

 केरिपुबल एक दूरदर्शी बल

 केरिपुबल मानवाधिकारों के प्रति जागरूक है

 आर.ए.एफ. - मुसीबत में सच्चा साथी

 Growing up with a growing Force

 My Days in CRPF Family

 ...Still a part of CRPF Family

 CRPF-A Tradition of Achievement in Sports

 Rapid Action Force-Upto the Challenge

 CRPF Overseas

अन्य.....

आजादी के 50 वर्ष-राजभाषा का अस्तित्व

वर्ष 1997 के पदक विजेता

Naxalite Movement in A.P. & CRPF

Medical-Set up in CRPF

CRPF-Sentinels of Internal Security

महानिदेशक की ओर से

किसी के प्रति दुर्भावना नहीं, सभी के प्रति सद्भावना, सत्य के मार्ग पर अडिग रहें, आइए हम राष्ट्र के जख्मों को भरने के कार्य को पूरा करने के प्रयास करें।

-अब्राहम लिंकन



एक सार्वभौम लोकतांत्रिक गणतंत्र के रूप में, भारत ने पचास वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। यह प्रत्येक भारतीय विशेषकर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के लिए अत्यंत गौरव का अवसर है, जिसने देश की स्वतंत्रता के बाद देश की एकता व अखण्डता बनाए रखने में महत्वूपर्ण भूमिका निभायी है।

भारत, लोकतांत्रिक, धर्म निरपेक्ष मूल्यों के साथ-साथ अनेक संस्कृतियों, अनेक जातियों, अनेक पंथों, अनेक भाषाओं वाले बहुविधि समाज वाली मानवता के एकीकरण का प्रतिनिधित्व करता है। विगत *50* वर्षों के इतिहास में भारत की सबसे महत्वूपर्ण उपलब्धि यह रही है कि इसकी एकता, स्वतंत्रता व लोकतंत्र लगातार बना रहा है। भारत ने शासन व्यवस्था की संरचना धर्म के आधार पर न कर सभी नागरिकों की स्वतंत्रता व समानता के आधार पर करके नेहरू के सपनों को साकार किया है। इस प्रक्रिया में भारत को, अस्थिर बनाने और तोड़-फोड़ करने की कई बाहरी व शब्दरूनी साजिशों का सामना करना पड़ा है। हम राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के प्रबंधकों के आभारी हैं कि भारतवर्ष ईमानदारी, शान्ति व निष्पक्षता से चुनाव कराने में सफल रहा है।

भारत की स्वतंत्रता के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में, के.रि.पु. बल अपना *58*वां वार्षिकोत्सव मना रहा है। अतः इस अवसर पर हमें देश की इस सबसे बड़ी व पुरानी फोर्स द्वारा देश के निर्माण के लिए किए गए योगदान का निष्पक्ष मूल्यांकन व आत्मनिरीक्षण करना है। के.रि.पु. बल ने अपने सभी कर्तव्यों व दायित्वों का निर्वात श्रेष्ठ प्रकार से

किया है। सब कलो भी और जहां कहीं भी इस महान लोकतांत्रेक गणतंत्र को किसी संस्था को खतरा उत्पन्न माह के.रि.पु. बल हन खतरों को निष्फल करने के लिए एक मजबूती के साथ निर्णायक भूमिका के रूप में आगे आया है। बल द्वारा की जा रही विभिन्न प्रकार की ड्यूटियों में 1962, 1965 व 1971 के तीन राष्ट्रीय युद्ध, पंजाब में आतंकवाद, जम्मू व कश्मीर में युद्ध में संलग्द उग्रवादियों तथा पूर्वोत्तर में विद्रोही गतिविधियों का मुकाबला करना, साम्प्रदायिक व जातीय हिंसा से निपटना, अत्यावश्यक प्रतिष्ठानों और अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना तथा बड़े स्तर पर प्राकृतिक अथवा मानवकृत आपदाओं के दौरान बचाव व राहत सेवाएं उपलब्ध कराना शामिल है। दिनांक *21* अक्तूबर *59* को हॉट स्प्रिंग *(*लद्दाख*)* में चीनियों के साथ मुठभेड़ में के.रि.पु. बल के जिन कार्मिकों ने अपने जीवन का सर्वोच्य बलिदान दिया था उनकी याद में इस दिन पूरे देश में पुलिस स्मारक दिवस मनाए जाने के साथ ही के.रि.पु. बल के बलिदानों की गाथा अगर हो गई है।

एक मजबूत प्रजातंत्र के लिए स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव होना सबसे पहली आवस्यकता है। आजादी के बाद भारत में जितने भी चुनाव, हुए हैं उन सभी को बिना किसी अवरोध के सफलतापूर्वक संपन्न कराने में के.रि.पु. बल का बहुत बड़ा योगदान रहा है। कठिन परिस्थितियों के बावजूद, के.रि.पु. बल ने पहले पंजाब व पूर्वोत्तर राज्यों में और *1996* में जन्मू व कश्मीर में प्रजातांत्रिक प्रक्रिया बहाल करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। के.रि.पु. बल को जहां कहीं भी तैनात किया गया उसने हमेशा ही उल्लेखनीय कामता का प्रदर्शन किया तथा अपनी व्यवसायिकता के आधार पर स्थानीय पुलिस को मजबूत किया।

सांप्रदायिक दंगों और दंगों जैसी स्थितियों से निपटने के लिए के.रि.पु. बल के एक भाग के रूप में विशिष्ट रेपिड एक्शन फोर्स खड़ा किया गया था। महिलाओं व बच्चों के साथ नम्रता व आदर के साथ निपटने के लिए फोर्स में दो महिला बटालियनें भी खड़ी की गई हैं।

फोर्स के प्रति जनता के दिल में जगह बनाने तथा इसका "मानवीय-पक्ष" सागने रखने के लिए के.रि.पु. बल ने देश के विभिन्न मानों में सामुदायिक कल्याण गतिविधियां सफलतापूर्वक चलाई हैं। बल ने खेलों के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जगत में चोटी तक ख्याति प्राप्त कर नाम कमाया है।

प्रगति के मामले में, के.रि.पु.बल का केवल कलेवर ही विस्तृत नही हुआ है बल्कि ख्याति और मान-सम्मान भी बढ़ा है। वारतव में यह बड़े संतोष की बात है कि पिछले पचास वर्षों के कठिन दौर में भी के.रि.पु. बल संपूर्ण राष्ट्र के विश्वास को अटूट रखने में सफल रहा है।

गांधी जी का आदर्श लक्ष्य था स्वतंत्र भारत में वर्ण रहित समाज की स्थापना करना, परन्तु अब हम देखते हैं कि अनेक स्तरों पर वस्तुतः जातीयता बढ़ती जा रही है। साम्प्रदायिकता को अभी भी इस देश में पूरी तरह जड़ से उखाड़ फेंकने की आवश्यकता है। क्षेत्रवाद की आकांक्षा वाले उग्र व हिंसक तत्व अखण्ठ एवं सशक्त

देश की उन्नति को धमकी दे रहे हैं। देश के कई भागों में देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को निष्प्रभावी बनाने के लिए भारत के राष्ट्रीय हितों के विरोधी कुछ राष्ट्रों द्वारा उकसाए जाने के कारण आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा मिला है तथा उन्हें प्रेरित करने में मदद मिली है। सामाजिक व आर्थिक मंच पर भी भारत अशान्ति व गंभीर परीक्षण से गुजर रहा है।

देश के सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक भविष्य में बाधा बनने वाली *21*वीं सदी की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए के.रि.पु. बल को परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को बना लेना चाहिए। आजादी की कीमत चुकाने के लिए लगातार सतर्कता बरतने की आवश्यकता है और कही से व किसी भी रूप में यदि आंतरिक सुरक्षा को धमकी मिलती है तो उसका जवाब देने के लिए के.रि.पु. बल को सदेव तत्पर रहना चाहिए। फोर्स द्वारा यह तभी किया जा सकता है जब हम अपने पिछले अनुभवों से लगातार सीख लें, प्रशिक्षण व उपकरणों को अघतन बनाएं तथा उच्चस्तरीय अनुशासन और प्रेरणा बनाएं। नागरिकों के मानवाधिकारों की रक्षा के लिए फोर्स के व्यक्तियों को उनके कर्तव्यों व दायित्वों के प्रति और सजग बनाया जाना चाहिए, क्योंकि वे प्रजातंत्र के अंतिम निर्णायक हैं। जनता में और भरोसा व विश्वास बढ़ाने के लिए, फोर्स द्वारा सामाजिक सामुदायिक कल्याण कार्यक्रम चलाने से बहुत मदद मिलेगी।

बाइबल के अनुसार "आशीर्वाद प्राप्त ही, सावित रक्षक होते हैं" इसीलिए उन्हें ईश्वर के बच्चे कहा जाता है। के.रि.पु. बल, केवल शान्ति बनाने वाला ही नहीं है, बल्कि राष्ट्र का शान्ति रक्षक भी है। अतः उसे दोहरे आशीर्वाद प्राप्त है। अतः उठो और पूरी ताकत के साथ देश की सेवा के लिए प्रतिक्षा पूरी करो।

सुखे दुः खे समे कृत्वा लामालाभों जयाजयौ।
ततो युद्धाय सुज्यस्व नैंव पापमवाच्स्यसि।

सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय को समान मानते हुए युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। इस प्रकार लड़ने से पाप नहीं लगेगा।

-भगवत गीता

महेन्द्र सभरवाल

(एम.एन. सभरवाल)
महानिदेशक के.रि.पु. बल

के.रि.पु. बल – एक दूरदर्शी बल

श्रीविलास मणि त्रिपाठी, महानिदेशक के.रि.पु. बल (सेवानिवृत्त)

के.रि.प. बल का दिनांक 27 जुलाई 1939 को नीमच (म.प्र.) में उद्गम हुआ था और तबसे ही उसके कलेवर में लगातार वृद्धि होती रही है। 58 वर्षो से भी अधिक के अपने जीवन-काल में इस बल ने भिन्न-भिन्न भूमिकाएं निभाई, जैसे बाह्य आक्रमण के दौरान नागरिकों के अधिकारों व जान-माल की रक्षा करना, साम्प्रदायिक झगड़ों के साथ-साथ गंभीर व विस्तृत रूप से बिगड़ी कानून व्यवस्था, आतंकवाद और उग्रवाद, प्राकृतिक आपदाओं व चुनावों से निपटना । इस अवधि के दौरान बल में दूरदर्शिता, अनुभव व ज्ञान के विस्तृत भंडार का समावेश हुआ है जिससे संसार के किसी भी सुरक्षा बल को ईर्ष्या हो सकती है। हाल ही के वर्षो में द्रुत कार्य बल तथा दो महिला बटालियनों के बल में शामिल होने से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की महान परम्परा, सर्वत्तोमुखी प्रतिभा में उच्च श्रेणी की विशेष क्षमताएं जुड़ गई हैं।

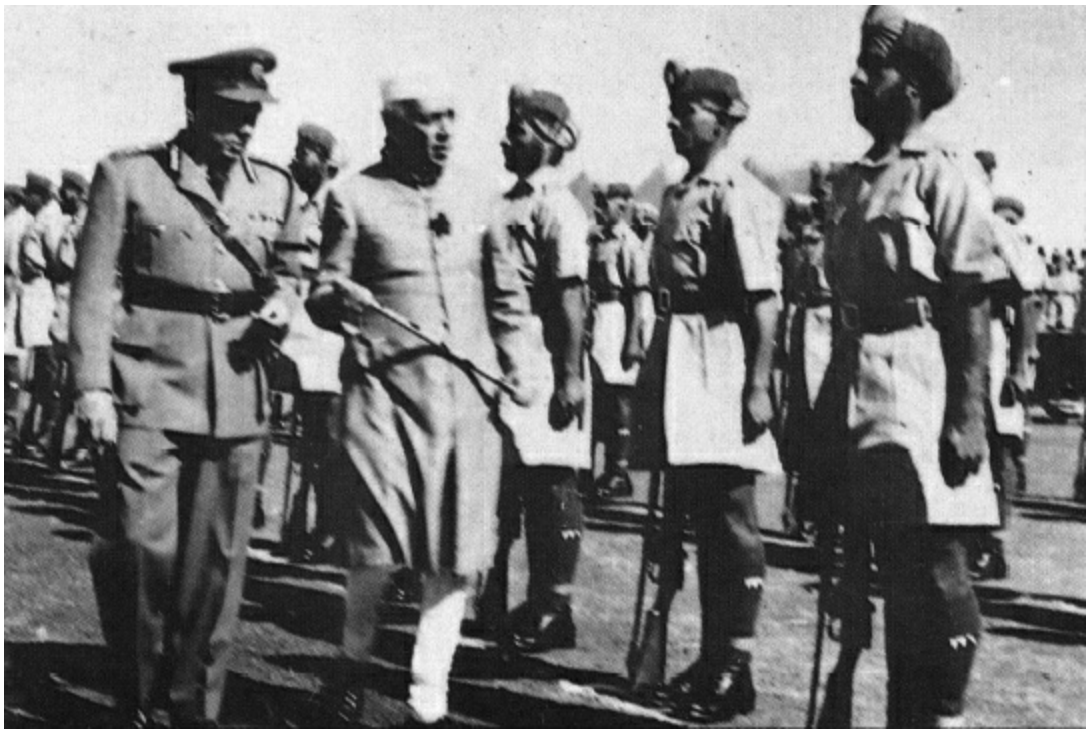
आज बल की 1.7 लाख से भी अधिक की नफरी है तथा व्यवसायिकता की महान परंपराएं, उनका संचालन व प्रशासन, विधि कानून और नियमों की कटिबद्धता पर आधारित है। के.रि.पु. बल के प्रारंभिक लीडरों ने ऑपरेशनों, लॉजिस्टिक्स, प्रशासन, प्रशिक्षण और अनुशासन के लिए स्पष्ट और विस्तृत मार्ग दर्शन देने के लिए कठिन

उद्योग किए हैं। बल में मर्यादाओं की सीमाओं का विशेषतः ध्यान रखा जाता है। अपनी कार्य प्रणाली की बदौलत ही यह अपेक्षित उत्तरदायित्वों, ध्येयों, आशाओं व क्षमताओं को प्राप्त करने में सफल रहा हैं। इसकी दीप्तिमान छवि का ही यह प्रत्यक्ष परिणाम है कि आज जनता व सरकार दोनों का ही बल में नि:संदेह भरोसा है।

बल को दंगाग्रस्त स्थितियों, आतंकवाद, उग्रवाद व विद्रोह से निपटते समय कई बार आलोचना का सामना करना पड़ा है कि उन्होंने देश के कानूनों व संविधान का उल्लंघन कर विभिन्न कार्रवाईयां की हैं जिन्हें बहुत ही उदण्डता की संज्ञा दी जा सकती है। के.रि.पु. बल को हमेशा ही ताबड़-तोड़ परिस्थिति में कार्य करना पड़ता है फिर भी इसकी महान व्यवसायिकता, निष्पक्षता तथा सही व्यवहार की वजह से ऐसी कोई शिकायत नहीं हुई है और अगर हुई हैं तो बहुत बिरली। सामाजिक हिंसाओं को सम्हालने वाले कार्मिकों की स्वस्थ मनोवैज्ञानिक रूप-रेखा होनी चाहिए ताकि उनकी जबाबी कार्रवाईयां संयत व उचित हों। के.रि.पु. बल, केन्द्रीय पुलिस संगठनों के उन गिने-चुने बलों में से एक है जिसने अपने रंगरूटों के लिए मनोवैज्ञानिक टेस्ट निर्धारित करने हेतु पहल की है।

इस बल में बेसिक सेवा के दौरान तथा विशेषज्ञ प्रशिक्षण की एक निर्धारित प्रणाली है। इसमें प्रशिक्षण संस्थाओं का एक नेटवर्क है जिनमें रंगरूट कांस्टेबलों, उप निरीक्षकों तथा सहायक कमांडेण्टों की बेसिक ट्रेनिंग चलाई जाती है। बल ने प्रशिक्षण संस्थानों, तौर-तरीकों तथा प्रशिक्षकों का दर्जा बढ़ाने तथा आधुनिक बनाने के हर प्रयास किए हैं। प्रशिक्षण प्रक्रिया में लगाए गए भारी साधनों से ड्यूटियों में उच्च

व्यवसायिक कार्यक्षमता के मामले में एक लम्बे समय तक लाभ मिलते रहेंगे। केरिपुबल ने अपने बेसिक व सेवा के दौरान चलने वाले प्रशिक्षणों में मानव अधिकारों के विभिन्न पहलुओं को शामिल करने और यह देखने के लिए कि ये आग्रह बार-बार लागू किए जाते हैं, उनकी और विशेष ध्यान दिया है। माउंट-आबू (राजस्थान) में स्थित के.रि.पु. बल की आंतरिक सुरक्षा अकादमी न केवल केरिपुबल के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण चलाती है बल्कि भारतीय पुलिस सेवा के विभिन्न रैंक के अधिकारियों तथा मजिस्ट्रेटों के लिए आंतरिक सुरक्षा के बारे में प्रशिक्षण चलाती है। केन्द्रीय सरकार के अधीन सब मिलाकर प्रशिक्षण संस्थानों की समीक्षा के दौरान इस बात पर जोर दिया गया था कि आंतरिक सुरक्षा अकादमी की महत्ता को ध्यान में रखते हुए एक उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में इसका विकास किया जाए। इस दायित्व को पूरा करने के लिए ठोस तात्कालिक कदम उठाए जाने की आवश्यकता हैं।



पंडित नेहरू बल की एक टुकड़ी का निरीक्षण करते हुए

इसके द्वारा निभाई जा रही ड्यूटियों की प्रकृति तथा विस्तृत स्वरूप को देखते हुए केरिपुबल द्वारा दूसरे संगठनों जैसे केन्द्रीय अर्द्ध-सैनिक बलों और यहां तक कि सेवा के प्रशिक्षण विशेषज्ञों की सूची बनाई जानी है। इन संगठनों के साथ उत्कृष्ट समन्वय की एक योजना बनाई गई है ताकि बल में अपेक्षित ज्ञान व जानकारियों की मुक्त रूप से उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके । जब भी मांग की गई है, केरिपुबल ने हमेशा ही आगे बढ़कर कानून व व्यवस्था, प्रति-विद्रोह आदि से निपटने में राज्य पुलिस को प्रशिक्षित करने के लिए योगदान दिया है। प्रशिक्षण, विशेषज्ञता की पर्याप्त भागीदारी में बल अग्रणी रहा है। यह सुझाव दिया जाता है कि राज्यों के साथ परिचालनिक

अनुभवों की संस्थागत भागीदारी बहुत ही लाभदायक साबित होगी।

अनुसंधान और विकास के इस युग में शस्त्रों, उपकरणों, ड्रिल और प्रक्रियाओं में नूतन सुधार व बदलाव विगत की अपेक्षा आज बड़ी तेजी से आ रहे हैं। पुरानी या अप्रचलित तकनीक हटाने तथा उसकी जगह आधुनिक उपकरण और तकनीक लाने की आवश्यकता पर हमें निरंतर नजर रखने की आवश्यकता है। कार्मिकों की सुरक्षा के साथ कोई समझौता किए बिना द्रुत कार्य बल में सम-सामयिक, हल्के और क्षमतावान, उपकरण अपनाने में बहुत ही ध्यान रखा गया है। उन्हें विशेष उपकरण उपलब्ध कराए गए है जिनसे अद्यातक निवारक उपाय किए जा सकते हैं। फोर्स ने बहुत से नूतन उपाय हाथ में लिए है जिनके परिणाम स्वरूप सुरक्षा व क्षमता में वृद्धि हुई है तथा साथ ही बचत भी हुई है। गोली-रोधी मोटर गाड़ियां, आधुनिक संचार साधन, नाइट-विजिन डिवाइसिस, पोर्टेबल तथा इलैक्ट्रिक जेनरेटर्स, अन्य उपकरण आदि की खरीद की गई है और फील्ड यूनिटों को प्रदान किए गए हैं।



उपग्रह टेलीफोन - संचार प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन

केरिपु बल एक बहुत ही गतिशील बल है और सारे देश में संचालन करता है। अपनी बार-बार तैनाती के दौरान इस बल को मुख्यतः आवास, स्थानीय, परिवहन, टेलीफोन आदि के लिए राज्य सरकारों की मद्द पर निर्भर रहना पड़ता है। हांलाकि ये सुविधाएं पर्याप्त रूप से प्रदान करने में राज्य सरकारों की ओर से हमेशा ही प्रयास रहा है फिर भी इस संबंध में संबंधित स्थानीय प्राधिकारियों के लिए स्पष्ट मार्ग-निर्देश निर्धारित करने की आवश्यकता है ताकि वास्तविक रूप से तैनाती के समय कोई व्यवधान पैदा नहीं हो। वायु, रेल, सड़क और यहां तक कि जल-मार्गों से भी बल कार्मिकों के बार-बार संचलन की व्यवस्था करनी होती है। इंडियन एअर फोर्स सहित

उन संबंधित प्राधिकारियों के साथ संपर्क को बल के पास एक बहुत ही विस्तृत प्रक्रिया है जो परिवहन आदि प्रदान करते हैं। उन प्रक्रियाओं में सुधार व आधुनिक बनाने के लिए भी के.रि.पु. बल का हमेशा प्रयास रहा है ताकि शीघ्र, क्षमता पूर्वक और जहां तक हो आराम से संचलन सुनिश्चित हो सके। फोर्स संचलन का एक महत्वूपर्ण पहलू है, फील्ड में तैनात के.रि.पु. बल बटालियनों को शस्त्र व गोला-बारूद सहित मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करना। हांलाकि यह काम संबंधित ग्रुप केन्द्रों द्वारा किया जाता है फिर भी बहुत ही बड़े पैमाने पर तैनाती के मामले में फोर्स में एक क्षेत्रीय-आपूर्ति की कामचलाऊ प्रक्रिया अपनाई है। सभी संबंधितों के प्रभावी सहयोग एवं सत्त प्रयत्नों के फलस्वरूप ही के.रि.पु. बल को न केवल अपने भावी संचलन की व्यवस्था करने में ही विशेषज्ञता प्राप्त हो गई है बल्कि यह अन्य दूसरे केन्द्रीय पुलिस संगठनों के लिए भी व्यवस्था करता है। इस पहलू का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण अशांत राज्य जम्मू-काश्मीर में पिछले संसदीय व विधान सभा चुनावों में देखने को मिला।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में संचलन के समय, के.रि.पु. बल उन राज्य प्राधिकारियों के नियंत्रण और जनरल मार्ग दर्शन मे कार्य करता है, जिनके साथ सैक्टर पुलिस महानिरीक्षक, रेंज पुलिस उपमहानिरीक्षक तथा ग्रुप केन्द्र के प्रभारी अपर पुलिस उपमहानिरीक्षक के जरिये आगे चलते रहने की समन्वय प्रक्रिया सुनिश्चित की जाती है। केरिपुबल तथा केन्द्र सरकार ने बार-बार राज्य सरकारों से अनुरोध किया है कि जहा तक संभव हो उसे सौंपे गए कार्य-क्षेत्र का विस्तार सीमित रखा जाए जिसमें फोर्स को तैनात किया जाना है । राज्यों को यह बार-बार सलाह दी गई है कि केरिपुबल को कानून व व्यवस्था की गंभीर स्थितियों में ही तैनात किया जाए। जब राज्य प्राधिकारी को निश्चित कार्य-योजना होनी चाहिए जिसमें केरिपुबल की भागीदारी हों और उन्हे एक निर्दिष्ट कार्य दिया जाना चाहिए। केवल बिगड़ती परिस्थितियों में ही तैनाती की जानी चाहिए और जब यह दिखाई देता है कि स्थिति को अन्य किसी दूसरे सिक्योरिटी फोर्स द्वारा सम्हाला जा सकता है तो बल को तुरन्त वापिस बुला लिया जाना चाहिए। वर्तमान योजना मे जैसा कि एक निश्चित ऑपरेशन स्वायत्ता की जरूरत है, फोर्स कमांडर को दी जानी चाहिए। इसी प्रकार राज्य सरकारों तथा केन्द्रीय आसूचना एजेंसियो के बीच संगत सूचनाओं व इंटेलीजेंस का आदान-प्रदान भी जरूरी है । अन्य केन्द्रीय पुलिस सगठनों तथा आर्मी के बीच मुक्त बात-चीत भी ऑपरेशनल केरिपुबल अधिकारियो द्वारा सुनिश्चित की जाती है। बहुत से मामलों मे यह प्रदर्शित हो चुका है कि ऐसे मुक्त समन्वय का ही परिणाम है कि अत्यंत सक्रिय, शस्त्र सज्जित तथा बाहर से सहायता प्राप्त आतकवादी/उग्रवादी सगठन भी शासन-प्रबंध की प्रक्रिया को भंग करने मे असफल रहे हैं।



श्रीनगर डल झील में बल के कार्मिकों की गश्त

एक अमुक क्षेत्र में केरिपुबल को भेजने से पहले केरिपुबल को समुचित अवधि का पूर्व-तैनाती प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि नागरिको की खास संवेदनाओं, खतरों और अन्य ऑपरेशनल जानकारियों के बारे में उन्हें पूरी-पूरी समझ हो सके। इससे इस बात की भी सुनिश्चितता हो जाती है कि अमुक क्षेत्र की अमुक चुनौतियो से निपटने के लिए केरिपुबल कार्मिक शारीरिक मानसिक रूप से सामंजस्य के साथ तैयार हो जाते हैं। एक अन्य सतत प्रयास यह भी रहा है कि तैनाती एक पूरी बटालियन के रूप में की जानी चाहिए ताकि सही कमान, नियत्रण व समन्वय रखा जा सके और उत्तम फल प्राप्त किए जा सकें।

खेलों के क्षेत्र मे भी केरिपुबल की उपलब्धियां बहुत ही उल्लेखनीय रही है। बल ने

बहुत से ऐसे पहलवान व खिलाडी पैदा किए है जिन्होंने राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर न केवल फोर्स के लिए बल्कि देश के लिए नाम कमाया है। इनमे से कुछ तो अपने खेल के क्षेत्र में प्रख्यात है।

केरिपुबल ने सदैव ही अनुभवो की बारीकी से जांच की है और बदलाव लाने की कोशिश की है। इसका हमेशा आधुनिकीकरण व सही प्रक्रिया पर जो रहा है ताकि आपातकालीन स्थिति से जिसका कि बारम्बार मुकाबला करना पड़ता है तत्परता व मुक्त सामरिक ऑपरेशन द्वारा एक रूटीन की तरह निपटा जा सकें। एक ऐसे युग मे जहा आंतरिक बाहरी दोनों ही खतरे पर्याप्त हैं, वहा देश को यह सुनिश्चित करना है कि अपने सुरक्षा-तंत्र का उपयोग करते हुए अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके। आंतरिक तोड-फोड तथा बाहरी हस्तक्षेप के खिलाफ लड़ाई मे दूरदर्शी केरिपुबल एक मुख्य हथियार है।

के.रि.पु. बात मानवाधिकारों के प्रति जागरूक हैं

-डा: आर.एम. पाल

भारत कानून के शासन द्वारा अधिशासित होता है और इसका उल्लंघन हमारे इस दावे को कलंकित करता है कि हमारा समाज व राष्ट्र समझदार व सभ्य है। इसी संदर्भ में हम के.रि.पु. बल जिसकी संसद द्वारा पारित अधिनियम के अंतर्गत 1949 मेरथापना की गई थी, उसकी भूमिका व कार्य निष्पादन की विवेचना कर सकते हैं। ब्रिटिश शासन काल में बल को क्राउन रिप्रेजेन्टेटिव पुलिस के नाम से जाना जाता था।

सामान्य पुरूष व महिला की मित्र

स्वतंत्र भारत के शासकों नें के.रि.पु. बल को मुख्य रूप से शांति स्थापित करने वाले बल के रूप में बहु आयामी भूमिकाएं सौंपी थी। हमारे संविधान में मानवाधिकारों व नागरिक स्वतंत्रता के हनन की अनुमति नहीं है और न ही अन्तराष्ट्रीय संधियों, जिस पर भारत ने भी हस्ताक्षर किए हैं, उनमें इसकी अनुमति है। के.रि.पु. बल को इस बात के लिए श्रेय जाता है कि इसने कई अवसरों पर अपने दायित्वों पर निर्वाह आम महिला व पुरूषों के मित्र के रूप में किया है 1 इस लेखक ने पीपुल्स यूनियन फॉर सिविलं लिबर्टीज (पी.यू.सी.एल.) के दल के एक सदस्य के रूप में 1990 में अलीगढ़ में हुए साम्प्रदायिक दंगों की जांच की थी, और उसे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इन दंगों का निशाना बने व पीड़ित हुए मुसलमानों ने के.रि.पु. बल में विश्वास व्यक्त किया था। हमें यह भी देखने को मिला कि जिस किसी मुसलमान से हम मिले उन सभी ने के.रि.पु. बल में पूरा विश्वास व्यक्त किया। एक क्षेत्र में मुसलमान निवासियों ने हमें बताया कि यदि के.रि.पु. बल नहीं होता तो हम सभी को मार दिया जाता। द्रुत कार्य

बल जो कि के.रि.पु. बल का ही एक अंग है उसने कई स्थानों पर दंगा पीड़ित लोगों की मदद कर उनका विश्वास व मित्रता हासिल की थी।

जब हम कानून की धारा की बात करते हैं तो हमें यह भी याद रखना होगा कि शासन द्वारा ऐसे नियम न बनाएं जाएं जो अवैधानिक हों अर्थात् ऐसा नियम जो हमारे गणतांत्रिक संविधान के विरूद्ध है और सोफाकिल ने तो इसे भगवान के कानून के खिलाफ कहा है।



राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वैंकट चलैय्या से मानवाधिकारों पर आयोजित वादविवाद प्रतियोगिता की एक ट्राफी ग्रहण करते हुए आर.ए.एफ. की उप महानिरिक्षक श्रीमती विमला मेहरा

हाल ही में पूर्वोत्तर व अन्य क्षेत्रों में ऐसी कई घटनाएं हुई हैं जिनमें के.रि.पु. बल के कार्मिकों पर मानवाधिकारों के उल्लंघन का आरोप लगाया गया है। इस लेखक द्वारा आंतरिक सुरक्षा अकादमी, के.रि.पु. बल, आबू पर्वत में "पीरियोडिकल वर्टिकल इन्टर-एक्शन कोर्स" में मानव अधिकारों पर बोलते समय, के.रि.पु. बल के पुलिस उप महानिरीक्षकों और पुलिस महानिरीक्षकों सहित कई अधिकारियों से चर्चा के

दौरान जो जानकारी में आया है उसके अनुसार के.रि.पु. बल के प्राधिकारी भी मानवाधिकारों के उल्लंघन के प्रति चिन्ता महसूस करते हैं और वे स्वयं आम पुरूष व महिला का विश्वास अर्जित करने में सक्षम हैं। आवश्यकता केवल मिलन-सरिता में पारदर्शिता होने की है। उनकी तरफ से खुलकर चर्चा करना और महसूस करना कि अधिकारियों और उनके जवानों को भारत की कीमत पर ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए कि कानून के शासन द्वारा शासित सभ्य राष्ट्रों के शिष्टाचार में उसको सम्मानजनक स्थान पाने के अधिकार से वंचित होना पड़े। यह इस बात का संकेत है कि के.रि.पु. बल समयानुकूल जागृत होने तथा ऐसी हालात पैदा करने में सक्षम है जिनमें मानव-अधिकारों के लिए आदर महसूस किया जाएगा।

अन्य सुरक्षा बलों के साथ के.रि.पु. बल को हमले का निशाना क्यों बनाया गया है इसका एक कारण यह है कि इसे ऐसे विद्रोहों से निपटने के कार्य पर लगाया जाता है जो कि सामाजिक-



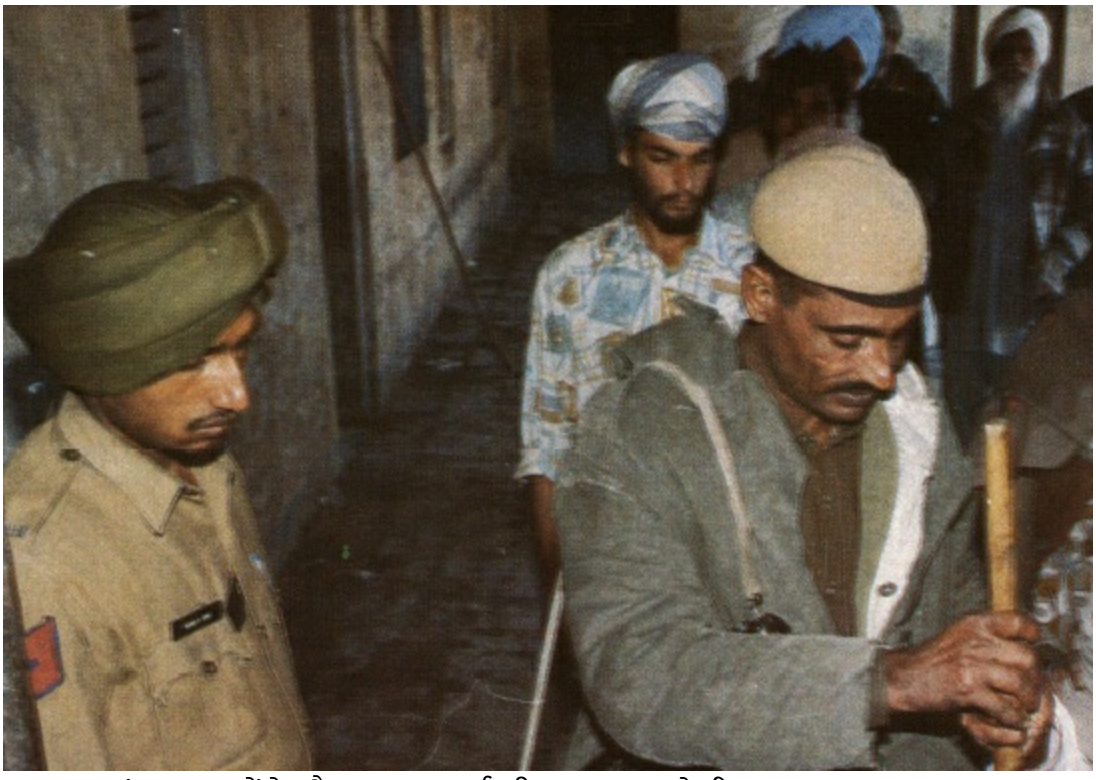
दंगों में हुयी तबाही के बाद पुनर्वास कार्यों में व्यस्त आर.ए.एफ. कर्मी

आर्थिक-राजनैतिक समस्याओं के कारण उत्पन्न हुए है और जिन्हें राजनैतिक स्तर पर सुलझाए जाने की आवश्यकता है। ऐसी समस्याओं को केवल कानून एवं व्यवस्था की समस्या के रूप में कभी नहीं सुलझाया जा सकता। यह के.रि.पु. बल के सम्मुख बड़ी भारी चुनौनी है। दूसरी समस्या जिससे उन्हें जूझना पड़ता है वह है प्राईवेट आतंकवाद की। इन दोनों मामलों में "परिणाम" दिखाने के लिए गैर-कानूनी तरीकों की कोशिश करने हेतु प्रलोभन देने का बड़ा हाथ होता है। उन्हें ऐसे प्रलोभन से बचना चाहिए।

इसमें कोइ शक नहीं है कि प्राइवेट आतंकवाद मानवाधिकारों का विनाशक है अतः इसकी भर्त्सना की जानी चाहिए। परन्तु इसका उत्तर शासकीय आतंकवाद नहीं है। वस्तुतः फोर्सों का यह कर्तव्य है कि वे प्राईवेट आतंकवाद के दबाएं, परन्तु ऐसा करते समय उन्हें कानून के शासन का उल्लंघन करने का अधिकार नहीं है। उन्हें कानूनी तरीकों का पालन करना है। उन्हें यह याद रखना चाहिए कि, जैसा कि के.रि.पु. बल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने जोर देकर कहा "एक राक्षस से लड़ते समय स्वयं राक्षस मत बनो" । जब वे कानून के शासन के विरूद्ध कार्य करते हैं, उदाहरण के लिए केवल संदेह के आधार पर लोगों का उत्पीड़न करना अथवा नकली मुठभेड़ों में लोगों को मारना आदि शासकीय आतंकवाद के उदाहरण हैं।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों सहित लोग ऐसे सुरक्षा कार्मिकों को बचाने के लिए देश के नियमों को तोड़ने मरोड़ने की नीति की वकालत करते हैं जो आतंकवाद को "समाप्त करने" के लिए, बेगुनाह नागरिकों सहित सैकड़ों लोगों को बर्बाद कर देते हैं। यह कार्य हमारे संविधान के अनुच्छेद-21 के प्रावधानों का पूरी तरह उल्लंघन है, जिसमें कहा गया है कि सिवाय कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार, किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन से वंचित नहीं किया जा सकता। इस संबंध में मैं सर्वोच्च न्यायालय के (5 फरवरी, 97 के) निर्णय का उल्लेख करना चाहूंगा, जो कि मणिपुर में फर्जी मुठभेड़ों के संबंध में दिया गया है। यह सत्य है कि मणिपुर एक अशांत क्षेत्र है और सामान्य कानून व्यवस्था को प्रभावित करने वाली काफी आतंकवादी गतिविधियों वहां मौजूद है, जो कि उस राज्य की सुरक्षा को भी प्रभावित करती होंगी। वर्तमान मामले में ऐसा प्रतीत होता है कि दो व्यक्तियों को कुछ अन्य लोगों के साथ एक झोपड़ी में से पकड़ा गया, एक ट्रक में बैठाकर काफी दूर ले जाया गया और वहां उन्हें गोली मार दी गई। इस प्रकार के क्रिया-कलापों का यहां तक कि अशांत क्षेत्रों में भी अदालतों द्वारा समर्थन नहीं किया जाएगा। निश्चय ही उन्हें प्रशासनिक तौर पर मारने का रास्ता अख्यार करने का अधिकार उन्हें प्राप्त नहीं था।

इस संबंध में इस पर ध्यान देना महत्वपूर्ण होगा कि 1990 में ब्रिटेन के आयरलैण्ड संबंधी मामलों के राज्य मंत्री ने, उत्तरी आयर-लैण्ड में पिछले 25 वर्षों से भी अधिक समय से जारी आतंकवादी गतिविधियों व हमलों के संबंध में कहा था कि "अत्याधिक नृशंस उत्तेजना में भी हम कानून के शासन का पालन करने से विचलित नहीं हुए, अतः हमारी सभ्यता आज भी बरकरार है। आतंकवादियों का यह एक उद्देश्य है कि हम दमनकारी के रूप में पहचाने जाएं तथा बड़े पैमाने पर समाज का विश्वास व समर्थन खो दें"।



पंजाब चुनावों के दौराण एक बुजुर्ग की मदद करता के.रि.पु. बल का एक जवान

सामाजिक कार्यकर्ताओं से चर्चा

पुलिस में मानवाधिकारों तथा कानून के शासन का सम्मान करने की भावना भरने का एक तरीका यह है कि सामाजिक कार्यकर्ताओं व पुलिस के बीच चर्चाओं को बढ़ावा दिया जाए। एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने या एक दूसरे के उद्देश्यों पर संदेह न करते हुए राज्य की एजेंसियों द्वारा किए गए उल्लंघन के मामलों पर चर्चा की जानी चाहिए। किसी भी प्रकार उपर्युक्त सुझाव अनुसार शुरूआत की जाए ताकि पुलिस को जनता के शत्रु के रूप में न देखकर एक मित्र के रूप में देखा जाए।

आर.ए.एफ. – मुसीबत में सच्चा साथी

–डी.जी. महापात्र



दंगों के बाद बचाव और राहत कार्यों में जुटे आर.ए.एफ. के कार्मिक

साम्प्रदायिक दंगों तथा दंगों जैसी स्थितियों से निपटने के लिए विशेष उपकरणों से सज्जित तथा प्रशिक्षित रेपिड एक्सन फोर्स, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का एक विशिष्ट अंग है। रैपिड एक्शन फोर्स के लिए के.रि.पु. बल के युवा तथा परिपक्व अधिकारियों और जवानों का चयन उनके मनोवैज्ञानिक परिक्षण के बाद किया जाता है। आर.ए.एफ. की कुल नफरी में 12 प्रतिशत संख्या महिलाओं की है।

आर.ए.एफ. की 10 बटालियनें हैदराबाद (99 बटा.), अहमदाबाद (100 बटा.), इलाहाबाद (101 बटा.), मुम्बई (102 बटा.), दिल्ली (103 बटा.), अलीगढ़ (104 बटा.), तिरूवन्नतपुरम (105 बटा.), जमशेदपुर (106 बटा.) भोपाल (107 बटा.), तथा मेरठ (108 बटा.) में स्थित है।

इन सभी बटालियनों के मुख्यालयों का चयन इस प्रकार किया गया है कि यह अपने नजदीक के संवेदनशील इलाकों पर नजर रख सकें। ये सभी बटालियनें अपने मुख्यालय के चार सौ किलोमीटर दायरे के अन्दर आने वाले इलाके की निगरानी के लिए जिम्मेदार हैं। इस प्रकार इन दस बटालियनों के मुख्यालय उत्तर पूर्व तथा जम्मू-कश्मीर को छोड़कर देश के लगभग हर संवेदनशील इलाके को कवर कर लेते हैं।

रैपिड एक्सन फोर्स के लिए सदस्यों का चयन करते समय अल्पसंख्यकों के प्रतिनिधित्व पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

इन कार्मिकों को कर्तव्य पर तैनात करने से पूर्व संवेदनशीलता से सम्बन्धित गहन प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि दंगों के दौरान उनके अन्दर निरपेक्ष भाव बना रहे।

आर.ए.एफ. के कामैक दंगों के दौरान तत्काल हरकत में आकर दंगों पर काबू पाने में सक्षम हैं, इसके लिए उन्हें अश्रु गैस सहित आधुनिक दंगा विरोधी उपकरण उपलब्ध कराये गये हैं। उनको प्राथमिक चिकित्सा, मानव अधिकारों तथा अग्निशमन से सम्बन्धित प्रशिक्षण भी दिया गया है। बचाव और राहत कार्य चलाने के लिए उन्हें विशेष दक्षता प्राप्त हैं । दंगा पीड़ितों को राहत पहुंचाने के अतिरिक्त प्राकृतिक विभीषिकांओं, दुर्घटनाओं तथा अग्निकाण्डों आदि के दौरान भी आर.ए.एफ. के कार्मिक पीड़ितों की सहायता के लिए बचाव एवं राहत कार्य चलाते हैं। आर.ए.एफ. के कार्मिकों को हिंसक साम्प्रदायिक स्थितियों में शांति स्थापित करने के लिए पूर्ण रूप से समर्पित रहने के लिए तैयार किया गया है। इसके लिए आर.ए.एफ के वरिष्ठ अधिकारियों के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, एन.आई.सी.एफ.एस. तथा अन्तराष्ट्रीय रेड क्रास समिति द्वारा समय-समय पर पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

अपने जिम्मेदारी के क्षेत्र के विषय में अधिक से अधिक जानकारी एकत्र करने तथा वहां की क्षेत्रीय, साम्प्रदायिक, भाषाई तथा जातीय समस्याओं के समझने के लिए, वहां की सड़कों तथा अन्य संचार के साधनों को जानने के लिए आर.ए.एफ. द्वारा इन क्षेत्रों में परिचितिकरण अभ्यास सत्त जारी रखा जाता है। इसके अतिरिक्त आर.ए.एफ. के. कार्मिक अपने जिम्मेदारी के क्षेत्रों के लोगों से तालमेल बैठाने तथा उनका विश्वास अर्जित करने के लिए वहां सामाजिक दृष्टि से उपयोगी प्रौढ़ शिक्षा चिकित्सा कैम्प तथा ऐसे ही अन्य कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते हैं। साम्प्रदायिक दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में आपसी सौहार्द और सद्भाव पैदा करने के लिए आर.ए.एफ. के कार्मिक इन क्षेत्रों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ खेल तथा अन्य ऐसी ही गतिविधियों को बढ़ावा देकर तनाव कम करने का प्रयास करते हैं।

साम्प्रदायिक दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में आर.ए.एफ. की तैनाती मात्र से हिंसा तथा तनाव में काफी हद तक कमी आती देखी गई है। आर.ए.एफ. की बटालियनें अपनी भूमिका की दृष्टि से राज्य सरकारों की अपेक्षाओं पर पूर्णरूप से खरी उतरी हैं तथा उन्होंने जनता तथा प्रेस की भी व्यापक प्रशंसा अर्जित की है।

सितम्बर 1994 में सूरत में प्लेग के दौरान, अगस्त-सितम्बर 1994 में मेरठ तथा इलाहाबाद में फैली हैजे की महामारी के दौरान तथा फरवरी 1995 में इलाहाबाद में कुम्भ मैले के दौरान लगाये गये मैडिकल कैम्प में आर.ए.एफ. द्वारा प्रदान की गई मानवीय सेवाओं ने सर्वत्र प्रशंसा अर्जित की। इसके अतिरिक्त भी दक्षिणी राज्यों में आये तुफानों, जबलपुर तथा सिक्किम में आये भूकम्पों का देश के विभिन्न हिस्सों में बाढ़ आपदाओं तथा रेल दुर्घटनाओं के दौरान भी आर.ए.एफ. कार्मिकों ने व्यापक स्तर पर बचाव व राहत कार्य चलाये ।



महामारी से बचाव के लिए इलाके की साफ-सफाई में जुटे बल के कार्मिक

मार्च 1995 से नवम्बर 1995 तक आर.ए.एफ. की एक कम्पनी संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत हैती में भी तैनात रही।

1992 में गठित आर.ए.एफ. ने अपने अल्प कार्यकाल के दौरान ही देश के कई भागों में शांति तथा स्थायित्व बनाए रखने में महत्वपूर्ण भुमिका निभा कर अपनी योग्यता साबित की है। इसने सही अर्थों में जरूरत के वक्त सच्चे दोस्त को अपनी छवि को स्थापित किया है।

आजादी के पचास वर्ष–राजभाषा का अस्तित्व

–श्योनाथ सिंह

खुशी की बात है कि देश की आजादी की स्वर्ण–जयन्ति मनाने का सिलसिला पूरे वर्ष निरंतर चलता आ रहा है और कुछ क्षेत्रों में अपने ढंग से एक होड़ सी लगी हुई है। विवेचन करें कि वस्तुतः आजादी के पूर्व और पश्चात में कुछ अंतर आया है। हमारे

चारित्रेक मूल्यों में सुधार हुआ है या गिरावट आई है। बचपन की आंखों में गहराया खौफ व दहशत आज भी बरकरार है। नफरत, हिंसा, जाति, धर्म, क्षेत्र, संप्रदाय व बगावत के खिलौनों को बचपन की आंखें में मात्र देखा था, मगर आज स्वयं खेल भी रहे हैं। प्रश्न चाहे राजभाषा का हो या राष्ट्रभाषा का इतनी पेशोपेश की स्थिति कभी नहीं रही, जितनी आज दिखाई पड़ रही है। अपनी ही भाषा का अपने देश में तिरस्कार हों इससे अधिक विडम्बना हमारे लिए क्या हो सकती है? अन्यथा क्या कारण है कि अंग्रेजी पढ़ने वालों को ऊंचे औहादे मिले और अंग्रेजी न पढ़ने वालों को अनपढ़ की गाली दी जाए। हम यह क्यों नहीं समझ पाते कि अब अंग्रेज गए तो फिर अंग्रेजी क्यों ? राष्ट्रीयता की पहचान के लिए जो मानदंड स्थापित कर लिए गए उन्हें लागू करने में हिचक कैसी ? मध्यकालीन संतों द्वारा देश के एक कोने से दूसरे कोने तक किए जाने वाले सामाजिक सुधार के कार्य तथा मुगलों–पठानों के बाद आम जनता के लिए जो भाषा पैदा हुई वही आगे चलकर देवनागरी लिपि में लिखी जाने पर हिंदी और फारसी लिपी में लिखी जाने पर उर्दू कहलाई। संपर्क भाषा के रूप में जनता के बीच इतना लम्बा इतिहास रहा है, फिर भी यह तोहमत लगाई जाए कि इसमें अभिव्यक्ति की शक्ति नहीं है। बहरहाल जो भी हो हमारे संविधान के अनुसार अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी भी केन्द्र सरकार के काम–काज की भाषा है, इसके प्रचार–प्रसार और विकास के लिए कार्य करना हमारा कर्तव्य है।

आज प्रत्येक सरकारी, अर्द्ध–सरकारी कार्यालयों, निगमों, उपक्रमों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाने लगा है। हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिंदी में दिया जाना है, इस अनिवार्यता को सभी ने समझ लिया है। परिणामस्वरूप सरकारी कार्यालयों में कुछ कार्य हिंदी में होने लगा है, हालांकि अभी हर जगह एक द्विभाषिक स्थिति बनी हुई है। यह स्थिति पुलिस–जनों के लिए कोई नई नहीं है, क्योंकि पुलिस का संबंध सीधे जनता से उसी की सुरक्षा और मद्द के लिए होता है। देश की अधिकांश जनता किसी न किसी रूप में राजभाषा हिंदी के साथ जुड़ी हुई है अतः पुलिस को आम जनता के हितों से जुड़े काम–काज हिंदी में ही निपटाने होते हैं। किन्तु प्रदेश अथवा केन्द्र के काम–काज की भाषा आम जनता की भाषा से अलग होने पर, इसे अपनी विभागीय कार्रवाई स्थिति के अनुसार केन्द्र तथा प्रदेश की भाषा में करनी होती है। इस तरह पुलिस द्विभाषी होती है। उसे जनता और सरकार, दोनों की भाषाओं का ज्ञान होना लाजमी है। इसके अभाव में वह अपने काम को सफलतापूर्वक अंजाम नहीं दे सकती।

किन्तु के.रि.पु. बल का जहां तक संबंध है, यह बहु–भाषा भाषियों अलग–अलग धर्मों, क्षेत्रों, वर्गों और संप्रदायों का ऐसा संगम है जिन्हें जोड़ने में अर्थात माला के अलग–अलग मोतियों को पिरोने में हिंदी एक धागे का काम करती है। इसलिए के.रि.पु. बल को मिनी इंडिया भी कहा गया है। दक्षिण भारत व पूर्वोत्तर राज्यों से बल में पदार्पण करने वाले कार्मिकों को हालांकि शुरू–शुरू में अपने दूसरे राज्यों के साथियों से परस्पर चर्चा में दिक्कत आती है, किन्तु चूंकि बल में आम बोलचाल की भाषा हिंदी है, स्पष्टता व सरलता जिसकी अपनी विशेषता है, वे शीघ्र ही फर्राटेदार

हिंदी बोलने लग जाते हैं। इस प्रकार हिंदी को पूरी तरह राजभाषा व राष्ट्र भाषा का दर्जा न भले न मिले मगर वह, आम जनता की संपर्क भाषा बन चुकी है और इसके बिना जनता का एक क्षण भी काम नहीं चल सकता।

संपर्क भाषा बनने के बाद हिंदी राजभाषा का दर्जा पाने की ओर अग्रसर है। हालांकि कागजों में उसे राजभाषा का दर्जा मिल चुका है किन्तु अभी तक काम–काज की भाषा बनाने में इसके रास्ते में उपेक्षा व रूकावटें जारी हैं। सरकारी कार्यालयों/मंत्रालयों में करीब 45 प्रतिशत हिंदी के स्टोनोग्राफर व हिंदी टाइपिंग जानने वाले मौजूद हैं लेकिन हिंदी में कार्य केवल 3 प्रतिशत करते हैं। नियम है इसलिए द्विभाषी कंप्यूटर मौजूद हैं, लेकिन इस्तेमाल केवल अंग्रेजी का होता है। इन सभी तथ्यों के बावजूद ऐसा भी नहीं है कि हिंदी प्रयोग बढ़ाने के प्रति हम तत्पर नहीं है या प्रयास नहीं किए हैं। 1975 से पूर्व के.रि.पु.बल में एक भी हिंदी का शब्द फाइलों में नहीं लिखा जाता था और पहली देवनागरी टाइपराइटर भी 1975 में खरीदी गई थी, जबकि आज 50 प्रतिशत से भी अधिक देवनागरी टाइपराइटरें कार्यालयों में मौजूद है और 30 से 35 प्रतिशत तक काम हिंदी में होता है। सभी मैनुअल, फार्म, प्रशिक्षण साहित्य, फार्म और स्टेशनरी की मदें, नामपट्ट, बोर्ड, चार्ट व सील आदि द्विभाषी बन चुकी हैं। ग्रुप केन्द्र स्तर पर सभी बल–आदेश द्विभाषी जारी हो रहे हैं। कलकत्ता, दिल्ली, बंगलौर व हैदराबाद स्थित हिंदी शिक्षण योजना के प्रशिक्षण केन्द्रों में बल के कार्मिकों द्वारा सबसे अधिक सीटों का प्रयोग किया जा रहा है। देश में हिंदी की उपेक्षा और अनादर को देखकर पैदा हुई कडुवाहट को ये कोशिशें थोड़ा बहुत तो कम कर ही देती हैं।

उपर्युक्त कडुवाहट व प्रगति के बीच हो रही कशमकश को देखते हुए, हम आशावान् है और हमारा निश्चय है कि हिंदी का इस्तेमाल बढ़ाने में धीरे–धीरे ही सही, हमारा कदम आगे की ओर बढ़ा है। हिंदी प्रयोग के संबंध में अब एक नया प्रयोग भी सामने आया है, कि विभिन्न उत्पादनों के मालिक अब अपने उत्पादनों और पैकेटों पर उनका नाम, उपयोगिता, प्रयोगविधि, निर्माता का नाम आदि हिंदी में लिखने व उनसे संबंधित विज्ञापन तथा अन्य प्रचार सामग्री हिंदी में छपवाने लगे हैं जिससे उनके उत्पादों को लोकप्रियता मिली है। इसके पीछे केवल एक ही कारण है कि भारत के लगभग सभी स्थानों पर हिंदी बोली, लिखी व समझी जाती है।



वर्ष *1997* एक विहंगम दृष्टि

वर्ष *1997* में *1* जनवरी से लेकर *30* नवंबर तक देश भर में आतंकवादियों के साथ हुयी विभिन्न मुठभेड़ों एवं अन्य अभियानों में हमने क्या खोया क्या पाया–

आतंकवादी पकड़े	–3219
आतंकवादी मारे गये	–93
आधुनिक हथियार बरामद किये	–881
गोली बारुद पकड़ा	–44,952
शहीद हुए बल के कार्मिक	–79

घायल हुए बल के कार्मिक	–205
शौर्यवीरता का पुलिस पदक बार	–1
शौर्यवीरता के पुलिस पदक	–10
विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक	–10
सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक	–54

फोटो फीचर

अमरनाथ यात्रा



हमेशा की तरह इस वर्ष भी के.रि.पु. बल ने अमरनाथ यात्रा को सुचारू रूप से संपन्न कराने में मदद की । के.रि.पु. बल द्वारा किये गये सुरक्षा तथा अन्य उपायों की यात्रियों ने भरपूर सराहना की ।





आजादी की 50वीं सालगिरह

आजादी की 50वीं सालगिरह के अवसर पर के.रि.पु. बल ने वर्ष भर चलने वाले कई कार्यक्रमों का आयोजन किया। प्रस्तुत है ऐसे ही कुछ कार्यक्रमों की चित्रमय झलक।



दिल्ली में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में के.रि.पु. बल ने शिरकत की

केवल महिलाओं का पर्वतीय साइकिल अभियान



आजादी की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर के.रि.पु. बल ने केवल महिलाओं के शिमला से चंडीगढ़ तक पर्वतीय साइकिल अभियान का आयोजन किया ।चंड़ीगढ़ पहुंचने पर टीम की सदस्यों का स्वागत हरियाणा के राज्यपाल श्री महावीर प्रसाद ने किया





आजादी की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में दक्षिण सेक्टर ने कई कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिन में वृक्षारोपण, बच्चों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता तथा रक्तदान आदि कार्यक्रम शामिल थे, इन कार्यक्रमों में दक्षिण सेक्टर के स्पेशल महानिदेशक श्री डी आर कार्तिकेयन ने भी भाग लिया,







कर्त्तव्य पर मारे गये जवानों की विधवाओं का पुनर्विवाह केरिपुबल में कल्याण गतिविधियों का प्रमुख हिस्सा है

वर्ष *1997* के पदक विजेता

शौर्यवीरता के पुलिस पदक

इन्सपेक्टर श्री किशन (119 बटा.), कांस्टेबल आर. थंगापंडी (119 बटा.), सहायक कमांडेंट दिलीप सिंह (128 बटा.), कांस्टेबल मनिन्दर सिंह (128 बटा.), हेड कांस्टेबल कुलदीप सिंह (7 बटा.), उप निरीक्षक परसुराम सिंह (73 बटा.), हैड कांस्टेबल नछत्तर सिंह (73 बटा.), वाटर कैरियर दिक्कम बहादुर (मरणोपरान्त) (43 बटा.), द्वितीय कमान अधिकारी ए. शोलापुरकर (के.औ.सु.बल में प्रतिनियुक्ति पर) तथा नायक ललिता राय (8 बटा.)

शौर्यवीरता का पुलिस पदक बार

कमांडेंट आर.एस.एच.एस. सहोता

गणतंत्र दिवस '97 के अवसर पर घोषित पुलिस पदक

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

महानिरीक्षक डी.पी. सिन्हा (उत्तरी क्षेत्र नई दिल्ली), महानिरीक्षक ए.आर. पंवार (परिचालन मणीपुर एवं नागालैंड), उप महानिरीक्षक डी.के. सूरी (हैदराबाद), अपर उप महानिरीक्षक आर.सी. पुरी (ग्रुप केन्द्र, नई दिल्ली) तथा अपर उप महानिरीक्षक आर.के शर्मा (ग्रुप केन्द्र बनतालाब)।

सराहनीय सेवाओं के लिए पुलिस पदक

अपर उप महानिरीक्षक मोहिन्दर सिंह (उ.पू. क्षेत्र शिलांग), सहायक निदेशक डी.संपत (पु.म.नि. कार्यालय हैदराबाद), सहायक निदेशक महेंद्र कपूर (आर.ए.एफ. मुख्य दिल्ली), सहायक निदेशक (प्रशासन/लेखा) एस.एस. नैयर महानिदेशालय, कमान्डेट रमेश चन्द्र (पु.उ.म.नि. नई दिल्ली कार्यालय), कमान्डेट/स.निदे. (लेखा) बी.डी.एस. चौहान (उ.प. जोन चंडीगढ़), कमान्डेंट जे.एस. गिल (123 बटा.), कमान्डेट जोगिन्द्र सिंह (महानिदेशालय), द्वितीय कमान अधिकारी/सं.स. निदेशक डी.आर. यादव (महानिदेशालय), उप कमांडेंट जे.पी. लखेरा (ग्रुप केन्द्र जालंधर), उप कमांडेट एस.पी. पोखरियाल (8 बटालियन), उप कमान्डेट एस.पी. सिंह (5 सिगनल बटालियन), सहायक कमान्डेट एम.जैड.ए. खान (101 बटालियन), मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.पी.के. कर (भुवनेश्वर), मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. श्री हर्ष

माझी (हैदराबाद), अनुभाग अधिकारी एम.आर. यादव (महानिदेशालय), निरीक्षक सोमदत्त (107 बटा आर.ए.एफ.), निरीक्षक (तकनीकी) बी.एस. राणा (सिगनल ग्रुप केन्द्र रांची), निरीक्षक बी.आर. सिंह (ग्रुप केंद्र लखनऊ), निरीक्षक रमेश चंद (65 बटालियन), निरीक्षक (एम) आर.वी. पाणीकर (महानिदेशालय) उपनिरीक्षक सी.पी. एंथोनी (60 बटा.), उपनिरीक्षक भोपाल सिंह नेगी (36 बटा.), उपनिरीक्षक तारा सिंह बिष्ट (9 बटा.), हैड कांस्टेबल (फिटर) डी.एम. पाटिल (महानिदेशालय), हैड कांस्टेबल मोहम्मद बशीर (106 बटा. आर.ए.एफ.), हैड कांस्टेबल पी. नारायणन नायर (ग्रुप केंद्र हैदराबाद), हैड कांस्टेबल पी.टी. योहनन (महानिदेशालय), नायक पी.एन. तुलसीधरन (4 बटालियन), नायक जे.एच. डूंग डूंग (2 बटा.) और सिपाही मोहर सिंह (67 बटा.)

स्वतंत्रता दिवस '97 के अवसर पर घोषित पुलिस पदक

विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक

पुलिस महानिरीक्षक आर.पी. सिंह (पूर्वी सैक्टर कलकत्ता), पुलिस महानिरीक्षक ए. पटनायक (बिहार सैक्टर पटना), पुलिस उप महानिरीक्षक पी.पी.एस. सिद्धू (जालन्धर), कमान्डैन्ट एम.पी. चिटनिस (कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक मुम्बई) तथा द्वितीय कमान अधिकारी पी.एस. डाबर (स्पेशल ड्यूटी ग्रुप, नई दिल्ली)।

सराहनीय सेवाओं के पुलिस पदक

अपर पुलिस उप महानिरीक्षक टी.आर. अरोड़ा (ग्रुप केन्द्र जालन्धर), अपर पुलिस उप महानिरीक्षक आईएस.गिल (ग्रुप केन्द्र-एक अजमेर), कमांडेन्ट एम.एस. यादव (स्पेशल ड्यूटी ग्रुप, नई दिल्ली), कमांडेन्ट जे.एम. डीसूजा (83 बटालियन), कमांडेन्ट सी.एम. बहुगुणा (8 बटा. नई दिल्ली), द्वितीय कमान अधिकारी एस.एस. मान (11 बटा. मथुरा), द्वितीय कमान अधिकारी मौहम्मद वासीम अहमद (103 बटा. आर.ए.एफ. नई दिल्ली), उप कमांडेंट आर.आर. यादव (ग्रुप केन्द्र दिल्ली), सहायक कमांडेन्ट बी.जी. गढगोली (105 बटा.आर.ए.एफ. तिरूवन्नत पुरम), मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा.एन.सी. कामथ (ग्रुप केन्द्र अवाड़ी-चैन्नई), निरीक्षक के.एन. खुनि (11 बटा. मथुरा), निरीक्षक/रेडियो आपरेटर एम.वी. कृष्णन (2 सिगनल बटा. हैदराबाद), उप निरीक्षक कलम सिंह (107 बटा. आर.ए.एफ. भोपाल), उप निरीक्षक पी.वी. मैथ्यू (आर.टी.सी. तीन तिरूवन्नतापुरम), हैड कांस्टेबल दधी बल सिंह (49 बटा. जयपुर), हैड कांस्टेबल हीरा सिंह (8 बटा. नई दिल्ली), हैड कांस्टेबल डी.आर. काम्बले (ग्रुप केन्द्र नागपुर), हैड कांस्टेबल मोहित लाल (34 बटा. असम), हैड कांस्टेबल राम कुमार (स्पेशल ड्यूटी ग्रुप नई दिल्ली), सिस्टर इंचार्ज श्रीमती नमा अब्राहिम (बेस अस्पताल-दो हैदराबाद), हैड कांस्टेबल/चालक पौल भूजाल (9 बटा. पश्चिम त्रिपुरा), नायक के.पी. बटा. श्रीनगर) तथा कांस्टेबल एस.सी. पाटी (83 बटा. लुधियाना)।

Growing up with a Growing Force

S.D. Pandey, D.G. CRPF (Retd.)

It is good to remember and be grateful for any reminding factors that may appear off and on -that one gets in life not what one wants but what one needs. My posting to Punjab as Director General Police during those turbulent times after the Blue star was perhaps such a reminding factor for me. That very short but, from all accounts, very successful' tenure was responsible' for my coming to CRPF. Shortly before this posting I was 'sounded' about going as D.G. Police of my own cadre state to which I had politely said 'no' for a 'purely personal reason', which was that I intended to put in my papers for premature retirement. Having held a post of IGP for several years and now having been DG Police - albeit for a very short while - it was time to say 'enough' and pursue my other interests. So thought I then this was what I wanted. Perhaps this was not what I needed. Good sense prevailed and I gratefully accepted my last posting.

The idea is not to go auto-biographical and reminisce about 'I did this' and 'I did that'. Equally meaningless will be the well known exercise of recounting the merits and glorious achievements of the CRPF particularly during my time. Putting all this behind me, I should still like to record what from hind sight now, appears to be my great personal gain from whatever little time I spent as DG CRPF.



Paying homage to martyrs at Hot Springs

That loyalty in any command situation is a two way traffic I had heard from one of my professional mentors during the early years of service in UP. Fortunately, I had also seen this principle being practiced and not merely preached. Being the chief of one of the biggest para-military forces of the country provided the opportunity of a life time to do something with respect to this most valuable teaching. I had no doubt at all that the ‘force’ will be loyal to you only if you are loyal to them. (I deliberately used the plural for the force in view of its strong plurality in the form of multiple and often conflicting, ‘ranks and files’) and somehow it also soon became clear that you cannot be loyal to them as long as you remain concerned solely or primarily with ‘me and mine’ only - i.e. firmly entrenched in the orientation of a ‘taker’ rather than a ‘server’.

Living as part of the ‘force’ is like living on a railway platform - this I had also heard and found true during those early years of service. On coming to CRPF one realised that the platform one was living on was not only very vast but also very populous. The ‘force’ not only sees what you do they also seem to know what you think. They judge you not merely by your actions but also by your attitude and most of the time they judge it all very correctly and mercilessly -very much like your own children do. To command a ‘force’ effectively it is necessary to command their loyalty and

that depends to a very great extent on their judgement of your loyalty to them - as understood above. No amout of cleverness - eg. image building public relations efforts, pampering in the name of welfare activities -can take the place of plain earnestness duly backed by well managed efficient actions.

That this kind of genuine earnestness alone can give one the right to come with a heavy and on all cases of professional incompetence, negligence and more particularly, of morale turpitude, also becomes clear as one gets to know and handle one's command. Looking back on those years now, I am also inclined to think that freedom from any outside interference - political or bureaucratic -also follows almost automatically if there is a smooth and strong flow of the above mentioned 'two way traffic'.



CRPF Mahilas deployed in Srinagar

No growth process is without its aches and pains. There were plenty of these for me and all the years that have rolled by since have not erazed their so sweet memory. The unbelievable overstreching of the 'force' and all its pernicious ramifications do not take long to hit you in the face. I thought of making an issue of it with the powers that be and, if necessary make myself a martyr to this cause. Mentally prepared for the battle, I was, however,

soon unhorsed - what I said and proposed was fully accepted and suitable instructions issued to all concerned. But the CRPF continued to be overstreched as ever-India needs her. In the year to come, I was left in no doubt whatsoever that the ‘force’ will continue to grow’ grow’ grow’ in numbers and otherwise, but it will continue to be as overworked and overstreched, fully deserving the nick name given to it by its own children.

The ‘lesson’ of this sunk in much after my retirement. Internalising and external situation, one must learn to, and afree to, extend oneself - ‘even when your own work is completed still toil’, as the Prophet of Islam was told. If so ‘India’ needs you, you have to give yourself to her, willingly and cheerfully. The need for withdrawal should not be forgotten and effort for it should continue most vigorously and sincerely. A time will surely come with that may be possible. Meanwhile, there as well as here, “Chalte Raho Payare”.

My Days in CRPF

Julio Ribeiro



CRPF deployment in Punjab during turbulent times

One of the good things that came my way in the CRPF was that I got to see most parts of our country. If I had not been seconded for service to the CRPF my own horizons would not have been as broad as I feel they now are. In the CRPF I was in operational control of all CRPF battalions deployed in the four Southern States. This took me often to the interior of Andhra and to almost all districts of Kerala and Tamil Nadu. There was no occasion to go to Karnataka except to recruit constables since that State was not adequately represented in the Force. But, besides the southern states, I had also to travel to other parts of the country where the eight battalions under my administrative control were deployed. This took me to Mizoram, Tripura and Sikkim in the north-east of our country.

In the CRPF I had occasion to work with police chiefs who came from different parts of India and who belonged to different cadres of the IP and latter the IPS. Mr Imdad Ali, who had initially selected me for the CRPF, belonged to the Assam cadre. He was a scion of an aristocratic Assamese family. He had old world charm and his manners were impeccable. He was followed by Mr. B.B. Mishra of the Orissa cadre. Mr. Mishra had served in the CRPF in various capacities throughout his service. He had a paternal relationship with the Force. He was a very intelligent man with a sharp intellect. When he retired I discerned a sense of loss among the rank and file of the force.

It was a feeling of anticipation that I left Bombay for Hyderabad on the 1st of March, 1973 morning to take up my new assignment as DIGP, CRPF, Hyderabad, I took over from Swinder Singh Sahni whom I had succeeded in Solapur nine years earlier. He had taken a couple of months earlier. So, his charge was being held by B.K. Tripathi, an Orissa cadre IPS officer, Tripathi explained to me the nature of my duties and the culture of the CRPF. He had been on deputation to the Force off and on right from the beginning of his service. He had served in the CRPF as an Assistant Commandant, as Commandant and now as Dy. Inspector General of Police. He was, therefore, the best guide that I could hope for.

In hindsight, however, I can say that I did not need a guide. I took to the CRPF as a duck takes to water. The CRPF was very good force. The Battalion Commanders were either from the Army or the IPS. There were also a few officers who had been directly recruited through the UPSC and the All India Civil Service Examinations. There were a few more drawn

from demobbed Short-Service Commissioned Officers of the Army.

The CRPF, like other para-military organisations, was growing through necessity. As the demand for its service from the States increased, more battalions were raised. The demands grew because of increasing law and order problems. When I joined at Hyderabad, the State of Andhra Pradesh was going through a very bad patch. Telangana was on fire a few years earlier. It was now the turn of Rayalaseema and the Eastern parts of Andhra. There were disturbances in every district outside Telangana. The local police was not able to cope simply because the extent of the disturbances was so great. The Centre was asked to send para-military reinforcement. Numerous CRPF Battallions were deployed in Vijayawada, Guntur, Vishakhapatnam, Cudappa, Ongole and other districts of the State. As DIGP, CRPF, Hyderabad Range, I had to liaise with the State authorities and discuss the deployment and duties of my troops. I was also to monitor their performance and settle their problems with the local authorities.

When deployed, the CRPF works under the control of the local police. The Superintendent of Police is authorised to order their movements and their deployment. The only requirement is that the units should not be broken below section level which means roughly six or seven men under the command of a noncommissioned officer. This is because like all para-military forces the CRPF is trained to operate a unit and not individually like policemen are trained to do. If they are asked to work as individuals they are out of depth. This difference is not easily understood by conventional police forces. Many misunderstandings arise from this lack of perception. It was the duty of the DIGP, who was usually in those days a senior IPS officer, to explain the structure and culture of the force to his own counterparts in the police of the State where his men were deployed.

This I did satisfactorily, I think. The CRPF officers and men were happy. What they wanted was some recognition for work well done. They were good at guard and sentry duties, at protecting vital installations and vulnerable points. They were even better in dispersing violent mobs when force was required to be used. Since their lathi charges were organised and effective they were feared by the mobs who used to disperse very quickly whenever they were at the receiving end of their sticks. Since the CRPF had no public contact in the normal course of their duties the political motivations of the mobs or their leaders were not material to them. They

just carried out orders and carried them out loyally and faithfully.

The only expectation that CRPF officers had was about the minimum basic facilities for their troops and for themselves - a roof over their heads or a place to camp and pitch their tents. They also needed to assure themselves of local supplies to feed their men. They had an entire complement of cooks, water carriers, barbers, dhobis and other assistants to support their requirements. They brought with them initial supplies of wheat, flour, rice and dals. What they needed were replenishment of depletive stocks and a steady supply of fresh vegetables, meat and fruits. It was the duty of the Commandant to arrange to meet these basic needs immediately after his arrival at the place of deployment. He would deploy his men for action after being briefed by the senior police officers of the district.

The Commandants kept close liaison with the district Superintendents of Police. The responsibility for controlling lawless mobs rested squarely with the local administration. The CRPF only provided the supporting manpower, well-trained and motivated. The platoon commanders of the CRPF, who were of the rank of Sub-Inspectors, and the company commanders, who were of the rank of the Dy. Superintendents of Police, were deployed with their troops in the field. The Commandant and the Asstt. Commandant, ranking with Sr. Superintendents and Superintendents of Police, respectively, did not directly take part in the actions. Their jobs were to train their men, look after their needs, keep in touch with the Superintendents of Police of the districts and ensure the quality of performance and discipline expected of their men. The DIG of the CRPF performed a similar role at a senior level and kept touch with the senior bureaucrats and police officers of the States in which his forces operated.



Paying homage to martyrs

Since the CRPF was a para-military organisation helping the local police in restoring law and order, an IPS officer could contribute substantially to its performance. He could also learn from the organisation a thing or two about man-management, in particular. The Platoon Commander was in minute-to-minute touch with his men. He had to know the problems of each men, including the problems that were not readily apparent. He had to bring all such problems to the notice of the Company Commander. The Company Commander kept in touch with the hundred men in his charge on a daily basis. He had to ensure that they were properly fed and that their emotional and other needs were attended to. Letters from home, regular leave to visit their families, schooling of their children, health of parents and wives all came within the purview of his enquiry. The Commandant and Assistant Commandant were also involved in this exercise. The physical and mental health of their men was their responsibility.

I had no difficulty at all in fitting into this pattern, I liked to be with the men and to talk to them. I liked to play games with them and I did so whenever I had the opportunity. I liked the regimental life in the mess where the officers and sometimes even their wives got together in a spirit of camaraderie. In return the officers and men also took kindly to me though very early in my tenure in the CRPF they learnt that I would never tolerate a

deliberate infringement of correct behaviour.

Their was an occasion when I had to discipline a Deputy Superintendent of Police who had made a homosexual advance towards one of the men in his Company. When some jawans in the Company voiced their disapproval, the Commandant had ordered the arrest of the jawan who had been propositioned. I flew to the location of the Company from my Headquarters at Hyderabad and reversed this order after making personal enquiries. I reinstated the jawan honourably and took severe action against the Company Commander, instead. The Commandant was reprimanded for his unfair and unjust decision in taking the side of the guilty officer.

One of the first cases I was asked to look into after I took charge as DIGP, CRPF, Hyderabad Range, was of a wanton firing by some officers of a battallion stationed at Cudappah in North Andhra. The District Magistrate of Cudappah was fond of the bottle and so was his deputy. Capitalising on the weakness of these two revenue officers for liquor the Company Commander of the CRPF company stationed in Cudappah, plied them with rum on the day of Holi. The CRPF usually got supplies of cheap rum from army canteens and their officers are in a position to oblige district officials. The Deputy Collector got so drunk that he was not able to stand. The Collector had to retire to bed early in the day. The CRPF officers, happy with their friends and themselves, then proceeded in their jeep into the town. There were drunken revellers everywhere. Some dared to obstruct them. They opened fire killing a few on the spot. The aftermath was as expected.

There was an uproar. The Government was forced to order a judicial enquiry and Justice Madhav Reddy, who later became the Chief Justice of the Bombay High Court, was appointed as the one-member Commission of Enquiry. There was much interest generated as the opposition had clutched at this straw to embarass the government. I spent many days in Cudappah going over the evidence with the CRPF officers concerned and the lawyer appointed to appear on their behalf. I also attended the court sittings and on one occasion when our lawyer was absent I was asked by the Commission to cross-examine some of the witnesses on behalf of the CRPF. Though the verdict went against the CRPF officers, my efforts to help them brought me closer to them and their colleagues and helped the process of my integration into the Force.

...Still a Part of CRPF Family

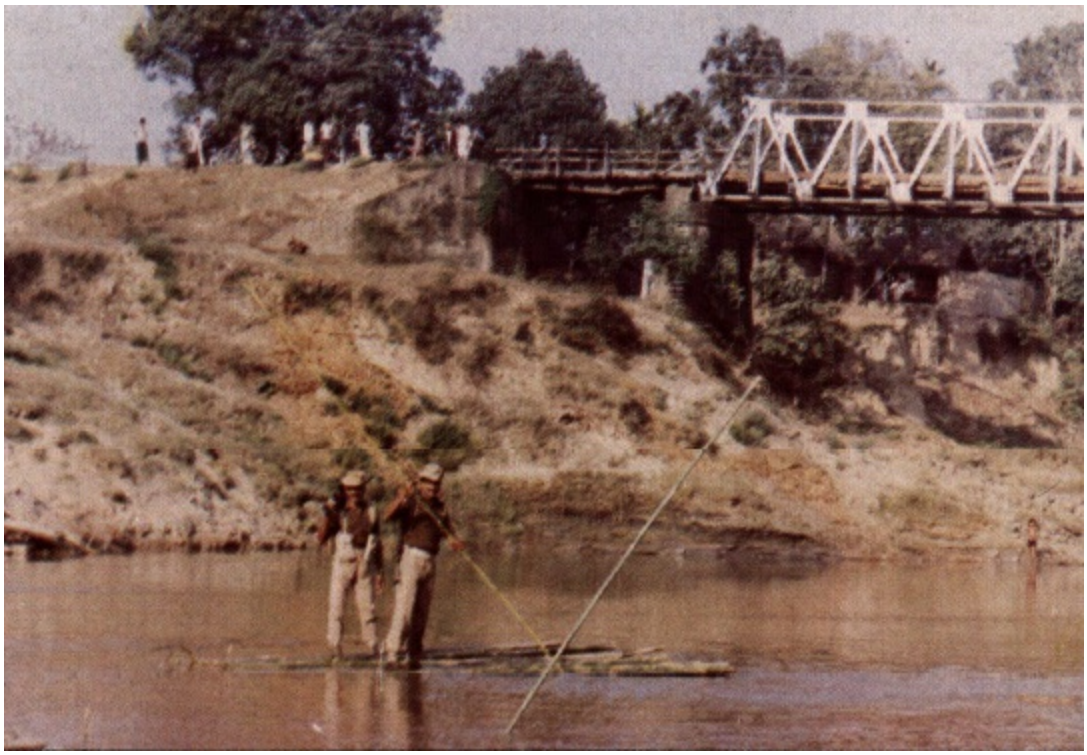
P.G. Halarnkar,
DG CRPF (Retd.)

In he natural course of events, the men of 58 Battalion CRPF had every right to be disgruntled. They had reached the calm and comfort of Delhi in the winter of 1987, after a particularly hard tenure in the turbulent North East. They had waited for this for a long time; no more did they have to live in harsh, unrelenting conditions, the shadow of death ever present.

Then the call to duty was sounded.

The call to duty is no respecter of hardship. It comes so often to the men and women of the CRPF that the natural course of events is unknown to their lives. And that is why I looked on with wonder at the calm and composed faces of the men before me. It was September 1987 and the then Director General, Shri S.D. Pandey, was addressing a Sainik Sammelan of the men of the 58 Bn men who had every right to be unhappy.

Barely half a year after they had reached Delhi, their rest was being drastically interrupted. The men of 58 Bn were the first from the CRPF being detailed for active duty in a foreign land; they were being plunged into war-torn Sri Lanka as part of the Indian Peace Keeping Force (IPKF). They must have obviously been disappointed, but not a man showed it. The call had come, and they would answer it. This incident occurred just after I had joined the CRPF and it gave me a revealing glimpse of the character of the men and women I was going to proudly command.



CRPF men in North East

I met 58 Bn again very soon. I visited them in Sri Lanka after I became Director General. By then they had been augmented by 35 Bn and some Platoons of the Mahila Bn. Working and living conditions in Sri Lanka were very difficult. It was hot, humid far from home and some of the CRPF men had died fighting the world's most dangerous guerilla army. And yet our men and women there displayed that same steely resolve I had now come to know so well accompanied by a heartwarming cheerfulness.

There was not a single request for repatriation. Inspite of my probing, the women were clear that they wanted to serve out their tour of duty in Sri Lanka. Throughout my stay in the CRPF, I had great admiration for the personnel of the Mahila Bn. They personified grit and determination. They were keen, sincere and always strived to do better than their male counterparts.



CRPF mahilas in Srilanka

Vignettes like these soon became common during my days with the CRPF. My stint in the Force was rather short, but the memories are enough to last a life time. I was in the CRPF from September, 1987 to September, 1990. It was during this period that the CRPF celebrated its Golden Jubilee. It was also a period when the Force faced some of its most challenging assignments, from Punjab to Sri Lanka.

Through it all, two things stuck in my mind; the CRPF was like a traditional Indian extended family, providing a home for thousands of brave, but often weary, men and women; and it was this tradition of togetherness and duty (not just to their country but to one another) that helped its personnel display uncommon courage and calm. I remember visiting a CRPF Company that suffered the first mortar attack in Punjab. The mortar shell had pierced through one wall and exited through the other. Many men were grievously injured by the shell's splinters. But the day's duties, as always, carried on.

Unrelenting hardship, courage under fire, and even learning to live with the death of a comrade, I realised, were a part of the CRPF jawan's life. The rigours of this life had gone into making them mentally tough and giving them their unusual resolve and calm response to a life of hard duties. This is

the reason why the CRPF is so sought after by States to handle everything from bloody insurgencies to ordinary riot situations represents India's profusion of communities, religions and regions. It is common to see men and women serving in areas that are as different to them as say Turkey would be to a Frenchman. I somehow remember the young lady from Kerala, a Pharmacist, whom I met during one of my visits to the Group Centre in Imphal. She was far, far from home, and her culture. But she was happy; she enjoyed the challenges, the camaraderie and the pleasure of living working with different people words, she was part of a the extended family culture of the CRPF.

This mingling of peoples, and the conscious effort to improve the representation of Muslims and other minority communities, gave the Force its present secular character. The CRPF's non-partisan traditions, coupled with its training and experience, are the reasons why there is always such a demand for its deployment in communally sensitive areas of India.

The extended family culture became a part of my life and my wife's. We especially got this feeling of belonging when we visited the Family Welfare Centres. These wives of activity fulfil the financial and emotional needs to the jawans' families. Most of these families were away from their homes, but the ladies had made a home away from their homes. Every Group Centre thus had a mini-India within its premises, an intermingling of diverse people and cultures. But the extended family was one. Seven years after retirement, my wife and I are still a part of that family. It is a family we will remain a part of for the rest of our lives.

CRPF - A Tradition of Achievements in Sports

S.K. Sethi
Addl. DG. (NWZ) CRPF

Many a bright stars have shone on the sports firmament of the CRPF during the last few decades. Names like G.S. Randhawa (first athlete to win Arjuna Award), Hari Chand, R.S. Bal, Khajan Singh and Kunjarani (all Arjuna Award winners) who are CRPF's gift to the world sports shall always be

remembered with pride, not only by the officers and men of the CRPF but by all the sports lovers in the country.

CRPF stepped into the year 1997, continuing its tradition of achievements in the various fields of sports. The year saw Miss Kunja Rani Devi being conferred with ‘Rajiv Gandhi Khel Ratna Award’ 95-96. She has so far won 46 international medals and was presented with Arjuna Award during the year 1990.

She further added to her tally of international medals by winning two silver and one bronze medal in the 10th Asian Senior Women’s Weight Lifting Championship held in Yangzhan, China and two silver medals in the Women’s World Weight lifting Championship in Chiangmai, Thailand during the current year. Another woman weight lifter of the CRPF, N. Laxmi also won two bronze medals in the World Weight Championship at Thailand. The CRPF women’s weight lifting team at present is the leading team in the country.



Kunja Rani Devi receiving Rajiv Gandhi Khel Ratna Award from the President of India

Rigzen Angmo, a woman athlete of CRPF, secured 1st place in the Rath Marathon during the year 96 and 2nd place during 97. She also represented India in IAAF Half Marathon Championship in Spain in September 96. Another woman athlete Mukhti Roy won two gold and a silver medal in the World Police and Fire Games held at Calgary, Canada.

CRPF Mahila Athletic Team won 2nd position in the 46th All India Police Athletic Championship-97, by securing 4 gold, 8 silver and 3 bronze medals.

The CRPF men's athletics team can also boast of many distinctions earned by it during the year. The CRPF team secured 1st position in the 46th

All India Police Athletic Championship-97 held at Chennai. The athletes in all won 6 gold, 7 silver and 6 bronze medals. Insp Paramjit Singh achieved the distinction of being the best athlete of the Meet. CRPF also won the trophy for the best disciplined team.

CRPF Sports persons also participated in the IV National Games held in Bangalore in May/June 97, representing various States/UTs and won 7 gold, 16 silver and 17 bronze medals.

Insp. Paramjit Singh, the ace athlete of the CRPF, participated in the World Police and Fire Games held at Calgary, Canada and secured three gold medals.

In the first Raja Bhalindra Singh South Asian Federation Athletic Meet recently held in New Delhi, Insp Paramjit Singh again proved his class by securing gold medal in 400 mtrs. run and Sub Inspector Mukesh Singh won a gold medal in the shotput event.

CRPF Cross-Country team won 2nd position in the 46th All India Police Aquatic and Cross-Country Championship.

The CRPF Aquatic's team too acquitted itself well during the year, by winning team championship in the 46th All India Police Aquatics Meet and Cross-Country Race - 97 at Calcutta and a number of medals in other International/National Meets.

Insp Raja Ram Tokas represented the country in 10th Aisa Pacific Swimming Championship at Pusan, South Korea and won a silver medal in 400 mtrs. individual Medlay. In the IX National Games held at Bangalore, Insp Tokas again won one silver and a bronze medal while another CRPF swimmer Kailash Nath won three bronze medals.

In the 52nd National Aquatic Championship-97 held at Thiruvananthapuram in November '97, Insp Kailash Nath who won three gold and one silver medals in the individual events, was declared the best swimmer of the championship. Insp Raja Ram Tokas and S.I. Elvis Ali Hazarika also secured a silver and a bronze medal each in the championship.



CRPF lifted this year's All India Police Athletic Championship Trophy

In the All India Police Games, the CRPF volleyball and basketball teams, secured third positions during the current year. CRPF Hockey team also won the Gurmeet Memorial Hockey tournament.

Sub Inspectors Sandeep Kountia and Jamil Ahmed represented the country in South Asia Federation Handball Championship Jaipur and won first position. The handball players of the CRPF named above, alongwith S.I. Raj Kumar Paliwal won laurels for the country, by securing silver medal in CHOGM Congress Jubilee Conference Tournament held in Edinburgh (UK) during October '97. In recognition of S.I. Kountia's achievements, the Haryana Government conferred the 'Bhim Award' upon him in May '97.

The CRPF has not lagged behind in adventure sports either. 'Abhiyyan Ganga Sagar' from Haridwar to Calcutta in '94, was followed up by the first 'CRPF Mountaineering Expedition' in May '95 which led to the scaling of the twin peaks Jogin I (6456 Mtrs) and Jogin III (6116 Mtrs) of Garhwal Himalayas.

Const. Rajan Tamang of CRPF was a member of ITBP Mount Everest Expedition Team during 96. CRPF team secured third place in the HlMEX-95 Car rally organised by the Army.

The women in the CRPF also had due share of their participation in the adventure sports. ‘All Women White Water River Rafting Expedition’ from Sri Nagar to Rishikesh was organised during Oct/Nov ’95. During the current year an ‘All Women Mountain Biking Expedition’ from Sarahan to Chandigarh was organised to commemorate the 50th Anniversary of country’s independence.

While taking steps to nurture sportsmen at the top level, the CRPF has not neglected the propogation of games and sports at the grass root levels. Inspite of the extreme pre-occupation of the force with internal security duties, the CRPF has religiously been holding competitions at the Bn, Sector and Force levels, which have immensely contributed to the performance of the sports persons of the force in the national and international meets.

Naxalite Movement in Andhra Pradesh & CRPF

D.R. Karthikeyan Spl. DG-CRPF



Explosives captured from naxalites in A.P. by CRPF

The present day naxalite movement dates back to 1880 when Salar Jung created ‘zamindari’ system resulting into oppression of peasants and the

poor with vast powers vested in Zamindars, Zahirdars, Deshmukhs etc. who were the Revenue Col. lectors on behalf of the Nazams. In order to please the Nizams. the Revenue Collectors (Zamindars, Zahirdars, Deshmukhs etc.) exploited the peasants and the poor thus making the Nizams the second richest men in the world.

ADVENT OF COMMUNISM IN TELENGANA

The ‘zamindari’ system with its present mould resulted into an imbalance in social, cultural and economic conditions of Telengana area giving birth to ‘Communism’. The communism resulted into Telengana struggle in 1946 and lasted for four years. The land of the poor were forcibly occupied and the peasants were driven off or killed. At this juncture, the country became independent. The Telengana armed struggle which is now the Left Wing Extremism did not believe in Parliamentary Democracy and had faith in annihilating the richer class. Inspite the slogan of the Father of the Nation “Land to the Tillers”, the State Government though enacted land ceiling laws but the reality remained far from this slogan.

SEEDS OF NAXALISM

Charu Mazumdar of West Bengal who was the front runners among the militants broke away from CPM and due to his belief in the Chinese model of revolution of Mao created CPM(L). The motivating theory was to create a caste structure. The CPM(L) was reasonably successful in mobilising public opinion for land grabbing, arrack strategy, people’s courts, kidnappings, damage to public property and political agitations.

POST INDEPENDENCE SCENARIO

The genesis and evolution of the naxalite movement by ‘Communist Revolutionaries’ seeking fundamental changes in the Indian Society, is inextricably tied to the peasant uprising that took place in and around Naxalbari ever since the Communist movement experienced its first split in 1964. The formation of the CPI-M out of the undivided CPI was a manifestation of the disengagement of the Pro-Soviet and Pro-Chinese idelogical divide. Within a span of 3 years, the contradiction between the

more radical Pro-Chinese groups and the larger body of moderates within the CPI(M) became intensely antagonistic and by April 1969, the CPI-Marxist Leninist with avowed revolutionary objectives, was formed.



CRPF men performing their duties in disturbed area

The Naxalbari peasant uprising in 1967 continuing until about 1972, gave rise to several structural responses all over the country involving large number of youth endowed with intellect and courage, fired by a revolutionary idealism. The naxalbari peasant revolt gave rise to a revolutionary agrarian movement, which in turn, was expected to surround, overwhelm and overpower the Urban citadels of power for bringing about a revolutionary socialist transformation.

Over the years, while undergoing innumerable cleavages on obscure ideological considerations, Left Wing Extremism has gradually gravitated towards more violent methods, in a desparate search for the elusive ‘Revolution’.

With the background of the ‘Telengana Armed Struggle’ it was natural that AP Maoists were among the first to respond to the Naxalbari uprising - first in Srikakulam and later in the North Telengana. Although the Srikakulam movement was curbed by early 70’s, the North Telengana with its dormant Telengana Armed Struggle spirit revived showed great resilience and became the epicentre of the next phase which threw up the

Peoples' War Group as the most potent group.

THE MOVEMENT & TACTICS

The PWG strength lies in the clever blend of massline tactics, through front organisations and primitive Marxist-Leninist methods like annihilations through the underground network the last operating through a well honed 'Tech-app'. The procurement of high grade weaponary and acquisition of guerilla tactics including mine laying techniques coupled with the expansive forest cover provided by the Dandakaranya have made the group a formidable one.

The year 1977-79 saw sporadic extremist violence and number of splits on ideological differences. During this period the extremists committed 37 murders and 182 other offences including dacoity/arsoning etc. By this time, the Left Wing Extremists had split into many small splinter groups including the faction under Kondapalli Seetharamaiah which came to be known as 'People's War Group'. This People's War Group later heralded the beginning of the bloodiest phase of the movement in Andhra Pradesh.

PWG & OTHER EXTREMIST GROUPS

At present there are about 12 Left Wing extremist groups active in Andhra Pradesh. Out of these extremist groups, PWG is the most powerful and contributes 80% of the total extremist crimes. These groups excluding the PWG are responsible for 24 murders and 87 other offences in 1994, 35 murders, 130 other offences in 1995 and 37 murders and 439 other offences during the year 1996.

AIMS AND OBJECTIVES OF PEOPLE'S WAR GROUP

The activities of PWG have become a major cause of concern because of their potential to affect the internal security of the State and the nation and has to be viewed as such.

It is estimated that the PWG has over 100 armed squads each consisting of 9 to 15 members, nearly 100 AK-47 rifles, large number of SLRs, .303 Rifles and other guns besides grenade launchers and has access to

detonators and high grade explosives. It has been estimated that since the movement took off in AP, about 450 weapons were snatched from security forces alone, besides killing about 1972 members of public which includes 293 police personnel. Its annual income is about 20 to 30 crores realised through systematic extortions.

The sole objective of PWG is overthrowing the lawfully established Government through protracted armed struggle and areawise seizure of power while building up base in rural and remote areas which will be eventually transformed into Guerilla Zones and later into liberated areas, which ultimately extend, surround and encircle urban centres of power. For achieving this, the PWG has been tactically espousing every conceivable grievance of the masses, real and perceived to swell its number, at times even exploiting problems which are in variance with its professed ideology. Popular issues like land assignment, social inequities, lack of basic amenities, regional imbalances, etc. are exploited to discredit the Government and sustain the movement.

The PWG has recently declared Dandakaranya and North Telengana area as Guerilla Zones; Guerilla Zone being an area where both the Government and extremist forces contend for total hold, and where neither can establish a stable Government as both lack control and both have equal strengths. The entire strategy hinges on formation of Village Committees and Village Defence Squads which are to declare autonomy as far as administering villages in these areas is concerned. The PWG after establishing Guerilla Zones in the above two areas has plans to extend further northwards spreading its movement.

Dandakaranya area appears to be their stronghold with their conference, training camps being held there regularly, sometimes for weeks together without any disturbance. There are areas such as Nanded, Nagpur and Yavatmal in Maharashtra, Jagdalpur, Raipur and Bhilai in MP, Jeypore and Koraput in Orissa and some towns in Karnataka and Tamilnadu which are being used for setting up shelters, meeting places, contacts, dumps for arms and ammunition, manufacturing units etc. besides printing presses.



CRPF personnel trained to face any situation

MODUS OPERANDI

The modus operandi of the PWG continues to be killing/attacking suspected police informants, destroying public and private property resulting into lack of willingness of industrialists to instal industries in these areas. The Government is virtually not allowed to take up any development work. Similarly the road communication system, telephone services, microwave stations etc. are also not being permitted to be installed/ constructed in these areas. In cases where the Government have taken initiative and awarded work to various contractors, the workers of such contractors are being threatened and the machineries set on fire.

Recently PWG is also suspected to be utilising 'Children Dalams' for carrying/transporting explosive devices and also training them in the art of use of explosives/IEDs. In addition, they are also being utilised to display wall posters and bring food/groceries etc. from the villages. The State Government who are well aware of these developments have issued strict orders to the District Superintendents of Police to prevail over the parents of such children to wean them away from PWG ideology.

PWG has also been conducting a number of illegal Praja Courts on family and land disputes in the villages and delivering arbitrary judgements. Those who do not follow their judgements are either bashed up or killed. The land holders are also threatened to distribute their lands to the landless, and any one who dares to cultivate the land or tries to sell it ignoring the PWG's instructions, the crops raised in the land are destroyed and the land holder subjected to punishment including capital punishment. Unable to withstand the highhandedness of extremists, many land holders have left their villages and staying in towns and cities doing some other work for their livelihood.

PWG has number of frontal organisations like Radical Students Union, Radical Youth League, Raithu Kooli Sangam, Singareni Karmika Samakya, Dandakaranya Kooli Sangam, Revolutionary Writers Association, Civil Liberties Committee, Chaitanya Mahila Samakya and Jana Natya Mandali.

They use these frontal organisations for recruitment, obtaining political mileage with the sole objective over-throwing a lawfully established Government. PWG has taken a very strong stand for abolition of liquor in the State, distribution off, and to landless and forcefully taking the harvested crops from the landlords/ traders and free distribution to poor. They have chosen women as a special target for getting better deal to them in the society. In the recent past they have been causing huge losses to security forces especially to Civil Police in remote districts by blasting the Police Stations with explosives and subsequently attacking with motive to acquire fire arms.

They have been planting mines like bucket mine and clamore mine under the recently metalled roads or on side of the tree and effectively causing fatal injuries to security forces and their property, once again with the sole aim to take away the fire arms.

Deliberate attacks by Naxalites on remote Police Stations have taken place in the recent past. Mine blasts, even on National Highways and even during day time, have resulted in killing of Police personnel.

DEPLOYMENT OF CRPF

CRPF was initially deployed in Andhra Pradesh in 1994 with the level of deployment at 8 Coys.



However, due to the spurt in Naxalite violence, the level of deployment was increased to 38 Coys and the bulk of CRPF is now deployed in Telengana region of Andhra Pradesh where the Naxalite activities are on peak. However, due to release of 3 Coys for rotational training' during 1996, the level of deployment is now 35 Coys.

The achievements gained by CRPF through various anti-naxalite operations since 1.1.97 are as under :-

(i) No. of Naxalites killed- 21

(ii) No. of Naxalites apprehended - 39

(iii) No. of weapons recovered - 33

(iv) Quantity of ammunition recovered - 278

(v) Explosives of various categories recovered - 365

During 1996, the Force has suffered the following losses :-

(i) Killed by Naxalites -

1 Const (12 Bn)

(ii) Weapons lost

One 7.62 SLR 2 Magazines with 40 rounds.

However, the redeeming feature during the last one year has been that

CRPF did not suffer any loss of life. This is mainly due to meticulous planning and strict compliance with the safety measures, which are reviewed and updated constantly by the Force leadership.



CRPF Mahila Inspectors during training session

Rapid Action Force – Upto the Challenge

- A.R. Pawar, IGP - RAF

The need for creation of a special force to deal with communal and other serious riots and to instill confidence amongst all sections of the people had been felt by the Government of India for some time. Accordingly the Rapid Action Force was set up in 1991 by converting 10 existing CRPF Battalions. Young CRPF personnel with quick reflexes, maturity and unbiased mind were selected and posted to these Bns. Five Bns. became functional during 1992 and the remaining five in April 1994. Service through effective and sensitive policing has been the motto of this important wing of the CRPF. At many times its mere presence has controlled tense situations. Over the years the force has definitely lived upto its requirement of an effective,

quick and sensitive riot control police.

Role

Besides dealing with riots and situations having religious, communal and lately caste overtones, the RAF has also rendered yeoman's service in rendering relief in natural and other calamities such as floods, earthquakes and accidents. The RAF also takes up socially useful work in the area of its responsibility with a view to establishing proper rapport with all sections of society and thereby also promotes the image of the RAF and its mother organisation the CRPF. The area of responsibility of each RAF Bn is 400 Kms around the Bn HQ. In between spells of duty the RAF undertakes intensive familiarisation exercises in the communally sensitive areas under its responsibility to familiarise itself with the area. During these exercises useful information is collected so that the force is able to perform its duties during an emergent situation more effectively and efficiently. There are 265 hyper sensitive and sensitive districts located throughout the country which are being covered through familiarisation exercises by the 10 RAF Bns.



RAF mahillas in Republic Day Parade

Training

The RAF is a highly trained and motivated force. In order to improve the operational effectiveness of the force and keep the performance of the force personnel high specialised training is imparted to all the ranks throughout the year. Each member of the force besides undergoing conversion training is made to pass through specialised courses like Human Rights, First-aid, Rescue and Relief, Disaster Management, Low Cost Housing etc. On an average every year about 10,000 RAF personnel are trained in various locations in the country. Senior Officers are given orientation training in 'Contemporary Social Realities' by IGNOU and the NICFS while middle level and subordinate officers are given sensitivity training through specially designed courses.

Encouraged by the success of RAF, various State Governments have requested the RAF to train their forces on its pattern. Inspite of the constraints of infrastructural facility and staff, the RAF has been able to train the police forces of Karnataka, Goa, Calcutta and UP.



The rescue and relief work by RAF personnel at earthquake affected Jabalpur

Composition of the Force

• Postings to RAF Bn are done by a due process of selection which includes scrutiny of service records, psychological test in order to assess their mental attitude towards secularism/communalism and an interview by the selected

officers of the RAF

• With a view to keep the Force perpetually young and effective, there is a periodic rotation of officers and men and the general tenure of officers and men would be 3 to 5 years.

• The constabulary is generally in the age group of 20 to 27 years, the junior leaders in the age group of 30 to 35 years and officers not older than 45 years

• A composite character is given to this force by giving adequate representation to all the sections of the society including minorities and other backward classes.

Features Distinguishing it from the Regular CRPF

• The Force is essentially utilised to tackle only communal/caste riots or riot-like situations.

• The organisational structure of RAF is different from that of a standard CRPF Bn. The smallest functional unit in the Force is a Riot Control Team comprising of Riot Control element, Tear Smoke element and Firing element.

• 4 Riot Control Teams make a Platoon, commanded by an Asst. Comdt., 2 Platoons make a Coy, commanded by a Dy. Comdt. and 4 Coys form a Bn Commanded by a Commandant. Thus, each Bn of the RAF has 32 Riot Control Teams.

• 1 Platoon in each Bn of the RAF comprises of women officers and personnel. The Force can deal more effectively with the situations where they face women demonstrators or where it has to carry out searches in the houses, and to provide relief to women and children victims of riots and calamities.

• For the purposes of deployment, each Team carries an element of Mahila troops along with them as part of the operational strength.

• Every member of the Force is trained in special skills for dealing with communal situations and the Units are adequately equipped with First-Aid and resuscitation equipments, so that emergency First-Aid could be provided to the victims of riots.

• Every member of the Force is trained in fire fighting so that the Force could provide fire fighting cover to the victims affected by fire at the time of

riots.

• The Force maintains ‘Zero Response Time’ and for this purpose they have been provided with vehicles independently upto the team level which make them self-sufficient and highly mobile.

• To maintain a separate identity, the RAF personnel are given a distinct and separate uniform which stands out in public. While on operational duty, they wear blue/light blue stripped overalls (dungaries).

• The personnel of RAF are being compensated for possessing specialised skills by grant of Special Duty Allowance at the rate of 10 percent of their basic pay.

• Adequate representation of minorities and weaker sections is ensured. At present the community-wise representation in the Force is as under:

Hindu	81.51%
Muslim	12.15%
Christian	1.43%
Sikhs	4.62%
Others	0.29%

The authorisation of weapons and equipments to the RAF Bns are based on the principle of use of minimum force by the security forces on such delicate duties. The weapons authorised are largely non-lethal to avoid or to minimise fatality during operations.

Keeping the above principle in view, the force is equipped with rubber truncheons, polycarbonate lathies and shields, helmets with visors, body protectors, night vision devices, other modern variety of tear smoke ammunitions, rubber bullets etc.

The RAF Units gave a creditworthy performance during the last year at all places of deployment and have also earned high appreciation from the various State Govts, public and the media by their effective and firm handling of the riotous situations. Thus during the last year the RAF handled serious communal tension in Meerut, Lucknow, Kanpur, Varanasi, Dhar (MP), Gujarat, Bihar, Maharashtra (Mumbai), Delhi, Orissa, Chennai, Pondicherry and Rajasthan. The Units also deal with other serious riots such as occured recently in Haryana.

The RAF also rendered massive relief operations on the following occasions :-

The cyclonic winds of November 1996 had left an unprecedented trail of destruction and shattered the lives in 6,91,705 households in 667 villages in A.P. 985 persons were killed and 1772 persons were missing. Further, 1,32,340 animals were killed and extensive damages were caused to 4,32,715 houses. RAF personnel assisted the local administration in carrying out rescue and relief operations on a massive scale and in providing treatment to the cyclone victims.



RAF actively participated in Pulse Polio Campaign

The ill-fated people affected by earthquakes at Jabalpur on 23.05.97 witnessed the humanitarian aspect of RAF when three Coys of 107 Bn RAF carried out rescue and relief works and by distributing medicines, providing medical aid and shifting the people to safer places.

One Coy of 106 Bn RAF carried out rescue and relief operations during June 1997 in the areas of Gangtok (Sikkim) affected by dreadful landslides and rescued people and recovered large amounts of property and valuables etc.

Three Coys of 99 Bn RAF played a vital role in organising peaceful Car festival of Lord Shri Jagannath at Puri in Orissa during July 1997.

Incessant rain in Gujarat during June 1997 caused heavy damage in terms of human life and property. RAF personnel stationed in Gujarat

carried out rescue and relief operations in this calamity. Many citizens were rescued and medical camps were established and medicines were provided to the flood affected people.

On 18.01.97 all the units of RAF had organised medical camps throughout the country to make the Pulse Polio Eradication Programme a grand success.

It is thus evident that in the short time which has elapsed since its formation, the RAF has become a force respected all over the country because of its professionalism, quick response and sensitive approach. This is evident from the continuous and high demand for the force from all parts and all states of the country for dealing with serious communal, caste and other riots.

CRPF Overseas

P.V. Subba Rao IG S/S CRPF

A foreign assignment is both a challenge and an opportunity. The challenge of working in a strange land, among unknown people, with different cultural, ethnic and socio-economic back-ground. An opportunity to display one's professionalism, versatility and innovative skills. True to its credo of 'Service and Loyalty' and reputation the CRPF wherever it went out of the country came out with flying colours.



A CRPF Jawan holding Indian tricolour with his other counter-parts in Haiti, while deployed there under UN peace keeping mission

For a CRPF person individually a foreign posting is nothing new. Their deputation with Indian Embassies abroad and U.N. assignments though deserving of mention cannot obviously be compared with the deployment of CRPF in a foreign country as an organised group. In the aftermath of Rajiv Gandhi-Jaya Wardene Accord 6 Coys of 58 Bn CRPF were airlifted to

Jaffna on 22 Sept ’87 as part of the Indian Peace Keeping Force ostensibly to relieve the moribund Sri-lankan Police of its duties in Norht-East Sri-Lanka. They were followed by 35 Bn and a Coy of 88 Mahila Bn on 14th Oct ’87. When it was realized that the CRPF was not trained to function as Civil police the force was asked to perform duties like guarding of police stations patrolling, providing escorts, cordon and search, frisking, dispersal of unlawful assemblies, traffic control, Nakabandi etc. The souring of relations between IPKF and the LTTE turned North-East Sri-Lanka into a war zone. For this traumatic change our personnel were neither trained nor equipped. Such a turn of events was aggravated further by the propensity of LTTE cadres to use explosive devices against the IPKF. The sight of mangled bodies and maimed colleagues were a frequent sight. Pathetic living conditions, lack of entertainment and living and working in a stressful environment amidst a totally hostile population were unnerving and demoralising. Heavy and unacceptable casualty rates did not help matters. Against such heavy odds our personnel displayed exceptional devotion to duty, perseverance, great courage and adaptability. A Vir Chakra, 2 Sena medals and numerous commendations from the IPKF authorities tell only a part of the story. CRPF personnel richly deserved the encomiums which came their way all too frequently.

On a smaller scale a Coy of RAF was sent to Haiti in far away Central America on 30th March ’95. Unlike our stint in Sri-Lanka the CRPF this time was a part of the UN Peace Keeping Force. Haiti was a nation in turmoil and our personnel had to operate in a totally alien land and deal with people of a different race, culture and value system. On top of that we had to function along side the US Army known for its technological refinement and luxurious life style. Our boys had to conduct presence, target and saturation patrolling guard prisons, quell prison riots, do mobile patrolling and ensure democratic processes by providing security to election officials and polling booths. That the CRPF has succeeded eminently is borne out by the large number of Coins, medals and commendations earned by our contingent from the UN authorities. CRPF personnel did not confine their achievements to the sphere of duty but showed their mettle in the field of sports too. The contingent consistently beat the US Army teams in Volley ball and got numerous trophies.



CRPF Mahilas performing their duties in Sri-Lanka

Working in exotic locations sounds attractive but it carries with it unforeseen and at times apparently insurmountable obstacles and problems. We were ill-prepared for induction in Sri-Lanka. Our role was nebulous, there was no pre-induction training, we were under equipped, and our procedures were not tailored for a war like situation. CRPF command-control structure was undermined as our Coys and platoons operated under different army formations. Above all there was the problem of morale and motivation. Our personnel had difficulty in identifying with the goals on the 'Operations' and maintaining morale and motivation at a high level was a difficult task. In Haiti our role was similar to that of US Army military police and not that of an armed police. Such constraints did not hinder our performance and CRPF can be justly proud of its overseas achievements made possible by the hard work and sacrifice of its loyal members.

Medical Set-Up in CRPF

Dr. K.K. Saini Director (Medical) CRPF



Special DG Mr. D.R. Karthikeyan inaugurating ultra sonography system in Base Hospital Hyderabad

The first medical elements of the force came into existence alongwith the creation of Crown Representative Police in 1939 consisting of two doctors and 5 para-medical staff. This medical set-up was an integral part of the battalion and meant to impart primary health care to the personnel.

As the Force grew the need of having a hospital to look after the cases needing hospital care was felt and Ist hospital was created in 1962, a 78 bedded hospital at Neemuch and the battalion medical components were made as detachments of this hospital. The medical officers in the earlier stages used to come from Army and from princely states and the para-medics were recruited locally.

During 1966-67, there was a big expansion and change in organisational set-up of the CRPF to have Group Centre pattern. This Group Centre acted as HQr. of a number of battalions. With this change, the pattern of a Group Centre hospital came into existence. This hospital formed part of the Group Centre and consisted of the number of beds directly proportional to battalions attached at the rate of 10 beds per battalion. Some battalions remained un-attached retaining its own independent medical element. These

Group Centre hospitals acted as the places for indoor management of personnel and families of attached battalions and treatment was provided in these hospitals with the help of local civil hospitals and medical colleges.

By this time the number of medical officers also became quite a bit and the CRPF was brought under the ambit of the central health service for provision of medical officers to the force.

The system of medical officers coming from Central Health Service did not prove satisfactory and hence in 1975, it was thought to have the CRPF its own cadre of medical officers who were to be combatised like the other force officers. Thus in 1975, a Medical Cadre of CRPF came into being. A little prior to this due to the requirements of force having increased Base Hospitals i.e. 100 bedded hospitals were sanctioned at New Delhi by shifting the 78 bedded hospital from Neemuch and other at Avadi later shifted to Hyderabad. Thus the focal point for specialist cover were created. In addition to it, few 50 bedded hospitals were also created.

With the creation of own Cadre, the Medical officers started joining this force and many of the medical officers went for Post Graduate Studies with few joining it directly after Post Graduation.

Thus came into being a reasonably well manned and organised medical set-up with 158 medical officers and 758 para-medics into being in 1976 which subsequently has grown to the present strength of 318 medical officers and 1334 para-medics with as many as almost 90 Post Graduates existing. Earlier there was no representation of medics at force HQrs. and a post of Medical Superintendent was created in 1978. The force kept growing with addition of Group Centres and other units and in the process the medical set-up also grew alongwith addition to quality of medicare. In 1989 the para-medical staff was also combatised to have a uniformity and sense of belonging to the force.

Now with the present setup, CRPF has the specialist facilities in the branches of Medicine, Surgery, Gynaecology, Anaesthesiology, Orthopaedics, Paediatrics, Eye, Psychiatries, Skin & VD, and Radiodiagnosis available including the modern gadgets like trend Mill test machine, Audiometry, Ultra sonography, big X-ray plants and autoanalysers etc.



All modern facilities are now available at CRPF Hospitals

All Group Centre hospitals have been sanctioned X-ray plants and Lab. equipments and in the coming days it will give much needed relief to CRPF personnel and families.

The medical set-up is still growing and composite hospitals with specialist facilities are being added in the set-up and even a super specialist CPO hospital is a conceptual thinking in Government.

We are still required to grow in much needed expertise and equipment to keep pace with the modern pace of advancement in medical science and hopeful of getting Government's clearance in due time to make the medicare service one of the best though at present it already is the best amongst the CPOs with three base hospitals, three 50 bedded hospitals, 24 Group Centre Hospitals (30-40 bedded) with sanction of one 100 bedded and three 50 bedded composite hospitals coming up in addition to Unit hospitals with every Battalion, RTC, CTC-III and ISA Mt. Abu.

CRPF Sentinels of Internal Security

Dr. Krishna Mohan Mathur, Director-ISA (Retd.)

There is no police force in the World which can be compared with Central Reserve Police Force for its mobility, multi-dimentional combat capability, reliability, professional success and commitment to the nation. Central Reserve Police Force is, in its size and tasks, unique police force in the World. CRPF has a reputation for mobility and self sufficiency in communication, transport, medical facilities, weapons and equipment. The CRPF have distinguished themselves in dealing with terrorism, insurgency, communal riots, VVIP security and maintenance of internal security. The mission of the CRPF is "maintenance of rule of law, order and internal security so as to promote social harmony and development, and national integrity, sharing its growing expertise in the management of Internal Security with the States". The CRPF mission is inspired by a shared vision of India which is committed to ensure to all its citizens, a democratic, secular and egalitarian society dedicated to the rule of law, rapid economic development, social harmony and internal security of the Country. Central Reserve Police Force, as the pioneer Central Police Force, has grown in size and responded creditably in performing an ever expanding and challenging range of tasks and responsibilities. As the main federal police force in India CRPF has to operate as a highly mobile all-India armed police; managing the widest, and the most diverse range of sensitive internal security challenges, comprising from ordinary law and order duty to VVIP security, terrorism, Insurgency and assistance in natural disasters. It is the only Central Police Organisation in the World which is capable of operating as unarmed civil police as well as armed combat force. It uses lathies, teargas, persuasion as well as sophisticated weapons. It has an inbuilt self-initiated performance audit aimed at promoting operational excellence, whether in peace areas or in insurgency and terrorist-infested areas.



CRPF men in Mund area at Punjab during the turbulent times

Central Reserve Police Force as an organisation has over the last fifty years developed high level of expertise in the management of internal security. The erosion of the civil authority in the districts and at the state level and the near collapse of the state police administration in many parts of the Country have at times become responsible for the induction and deployment of CRPF. From the time of its very inception the demand for CRPF from States/ Union territories has been constantly increasing and thus force is called upon to help the States in the maintenance of law and order and internal security of the Country as a whole. The Ministry of Home Affairs, government of India represents the fountain-head of policy in regard to internal security.

Extensive movement of the Companies (approximately 125 persons with weapons/ammunitions, stores/personnel belongings etc.) through out the length and breadth of the country, shifting locations from one theatre of operation to another causes real hardship and most hazardous conditions of work. For combating terrorism and proxy war carried out by Pakistan ISI agency, the bulk of the CRPF companies (228 companies) are deployed in Jammu & Kashmir while 348 companies are deployed for fighting insurgency in North East. In Jammu & Kashmir, CRPF has done excellent work in controlling and containing terrorism by apprehending 3219 militants and killing 93 terrorists in various encounters and raids during the

last eleven months alone.

Central Reserve Police Force has an all-India composition and its personnel are recruited from all religions, tribes, castes and communities. The role of the CRPF ranges from fighting terrorism, dealing with communal riots, conducting state, & parliamentary elections, rendering assistance and rescue operations during natural calamities and assisting local police in handling law & order problems. As the sentinels of internal security, CRPF personnel have always stood for their organisational motto -“service and loyalty”. The objectives of the CRPF are neither isolated nor exclusive. CRPF has a complementary role, derived from the Constitutional and statutory provisions to (i) lend specialist services to the states in the maintenance of internal security, arising from factors within or without the national boundaries; (ii) to support the civil authorities in the effective governance and maintenance of law and order; (iii) to protect life and property of the citizens; (iv) to aid and assist the civil police in the management of natural disaster and calamities; (v) document and share expertise, derived from the wide range of rich experience with other force and the states in the management of internal security. The primary duties of the force have been laid down in Rule 25(a) of CRPF Rules 1955 and is primarily “the restoration and maintenance of law and order” and for any other purpose as directed by the Central Government. Over the past five decades, CRPF has been performing many diversified roles with the primary object of maintenance of internal security of the Country. Increasing commitment of CRPF in North-Eastern States to combat insurgency, heavy involvement of CRPF in Jammu & Kashmir and earlier in Punjab for anti-terrorist duties, constant deployment of CRPF for VVIP and VIP protection, widespread deployment of CRPF on election duties, and effective utilization of CRPF in controlling communal riots and other agitations, have given this force a unique character as a multi-dimentional specialised force, dedicated to the mission and excellent operational effectiveness. It has an excellent record of impartiality and secular outlook with high respect for human rights even under most difficult circumstances. CRPF has an innovative culture with the highest level of dedication and discipline. Central Reserve Police Force has rendered valuable humanitarian services during natural calamities like fire, floods and droughts etc and has earned the highest appreciation from the state authorities and the public wherever they were located.



CRPF Jawan deployed in Srinagar

On 6th January, 1992 Govt. of India decided to raise 10 Bns. of CRPF as RAF (Rapid Action Force) to deal with communal riots and riot like situations. Rapid Action Force, generally seen by people as blue-uniformed police, has come out every where with flying colours and has resorted the people's sense of security. They not only control riots but also provide medicare and distribute free medicines to the really needy in riot-struck areas. Over the last few years RAF has become an important corollary of secularism and protection to minorities. RAF Units at times carry out reconnaissance exercises by marching through the sensitive areas of various cities to build up confidence and security to the people. The mere presence of RAF has a very great preventive effect on a riot like situation. In January 1996 during riots in various parts of Kamataka due to Cauvery water crises, RAF controlled these riots in a most remarkable manner.

CRPF is the only police force in the world which has two Mahila Battalions. These units have won laurels for their work wherever they have been deployed.

There is a need to recognise the human face behind these excellent

operational results. A recent study conducted by the Administrative Staff College of India, Hyderabad titled “Bench Mark Survery of working conditions of personnel in CRPF”, led to some startling revelations. Prolonged stress, social isolation, trauma due to frequent movements, constant deployment in disturbed areas and inability to look after the near and dear ones lead to (i) lack of self-esteem; (ii) abnormal behavioural patterns (iii) deterioration in physical and mental health, (iv) premature ageing; (v) chronic illness of self and family; (vi) increased cases of death in harness; (vii) operational ineffectiveness and (viii) increase in the number of fragging. There is, indeed, an urgent need to improve the service conditions and work environment of CRPF personnel who are the sentinels of Internal Security of the country. It is also necessary to restore the reserve nature of the force by evolving effective strategies for rapid entry, effective assistance and quick withdrawal. In 1996, 56 CRPF personnel sacrificed their lives on the call of duty and 110 were injured. Upto 30 Nov. 1997, 79 personnel of CRPF sacrificed their lives on the call of duty and 205 were injured. CRPF has been known for its bravery, high level of sacrifices and the highest commitment to their duties.

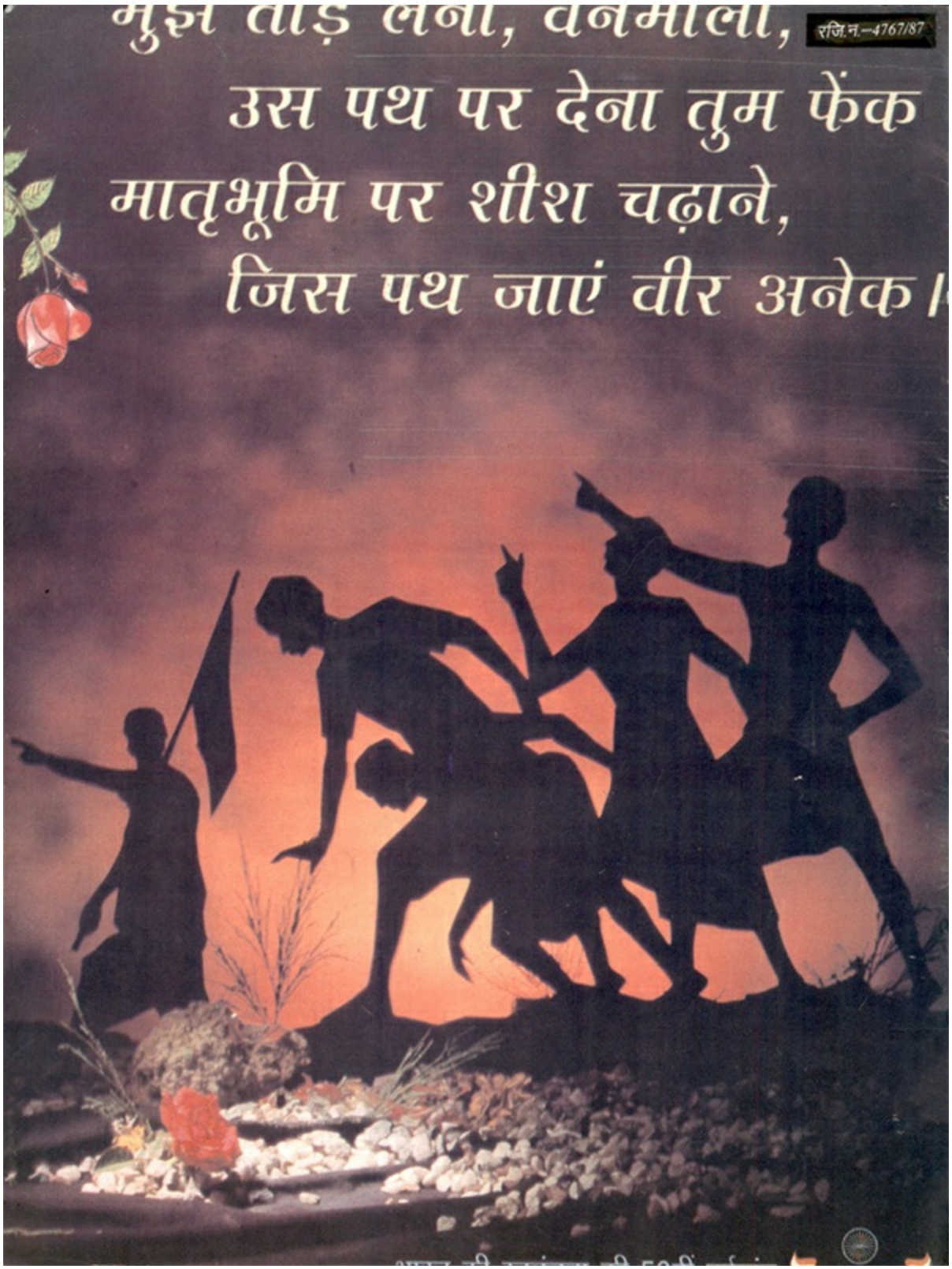


Protecting Amarnath pilgrims during Amarnath Yatra

There is an urgent need to draw a comprehensive action plan for reorganisation of CRPF with a view to reduce the deprivation factors in CRPF and to bring effective leadership, operational efficiency, a high degree of motivation and morale of the personnel. The Human Factors need to be recognised and duly compensated for deprivations. Better training, better equipment, better working and living conditions should be the focus areas for reorganisation of CRPF.



सी.आर.पी.एफ. पब्लिक स्कूल के वार्षिकोत्सव के
अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती हुई एक छात्रा


मुझे तोड़ लेना, वनमाली,
रजि.न.–4767/87
उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएं वीर अनेक।